यज्ञ मार्तण्डः

(यज्ञ यागादि काम्य प्रयोगः)

सम्पादक

डॉ० कुशेश्वर झा

(वेद विभागाध्यक्ष)

महामण्डलेश्वर कृष्णानन्द संस्कृत महाविद्यालय

कोलकाता – 700 007

प्रकाशक

वेद विद्या शोध संस्थानम्

वेद भवनम्

66A, सत्यजीत राय सरणी

कोलकाता - 700 060

प्रकाशक

वेद विद्या शोध संस्थानम्

वेद भवनम्,

66A, सत्यजीत राय सरणी

कोलकाता - 700 060

फोन : 24047166

मोबाइल : 9339455566 / 9681931166

प्रथम संस्करण : 2006 (2200 प्रतियाँ)

द्वितीय संस्करण (शिवरात्रि) : 2008 (5000 प्रतियाँ)

तृतीय संस्करण (ऋषि पंचमी) : 2014 (2200 प्रतियाँ)

पुस्तक प्राप्ति स्थान

शुभम झा
(ग्रा०पो० : साँगी)
भाया : घोघरडीहा
जिला : मधुबनी (बिहार)
फोन : 09883407049

अमरनाथ झा
शिवधाम, ग्रा०पो० : बलाराँ
भाया : लक्ष्मणगढ़
जिला : सीकर (राजस्थान)
फोन : 09982141879

सत्संग भवन
महामण्डलेश्वर कृष्णानन्द संस्कृत महाविद्यालय
24, दर्पनारायण टैगोर स्ट्रीट, कोलकाता : 700 007

मुद्रक : राजेश्वर राय ● मोबाइल : 98305 89822

डॉ० इन्द्रमोहन झा 'सच्चन'

पी-एच.डी. (आयुर्वेद)

निवास : बटेश्वर भवन, रॉटी (मधुबनी) बिहार- 847211।

प्रधानाचार्य सह अधीक्षक (1979–1994)	: पी.बी.एन. इनस्टीच्यूट ऑफ इण्डियन मेडिकल साइन्स एण्ड एस.एम.भी.सी. आयुर्वेदिक अस्पताल, रॉटी रोड, मधुबनी
सभापति (1980-1994)	: राजकीय आयुर्वेदिक एवं यूनानी चिकित्सा अधिकाय, बिहार, पटना
सदस्य (1984-2011)	: भारतीय चिकित्सा केन्द्रीय परिषद्, नई दिल्ली (स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, आयुष विभाग, भारत सरकार)
सदस्य (1988-1994)	: आयुर्वेदिक फार्मकोपिया कमिटि, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार
सदस्य (1986-1994)	: आयुर्वेदिक समिति, का. सिं.द. संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा (बिहार)
सदस्य (1992-2000)	: स्नातकोत्तर आयुर्वेद गवेषणा परिषद, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा
प्रबंध कार्यकारिणी समिति (1876-1981)	: राजकीय आवासीय विद्यालय, मधुबनी
सदस्य (1977-1982)	: जिला हरिजन कल्याण पर्षद (समाहरणालय), मधुबनी
सचिव (1977-1981)	: अ.भा. सामाजिक स्वास्थ्य संघ मधुबनी जिला शाखा
अध्यक्ष (1976-1981)	: जिला हरिजन सेवक संघ, मधुबनी

अभिमत

डॉ० कुशेश्वर झा जी द्वारा सम्पादित 'यज्ञ-मार्तण्ड' नामक पुस्तक का आद्योपान्त हमने अवलोकन किया। इस पुस्तक में यज्ञ-यगादि की प्रक्रिया तथा समस्त पूजन विधि को सरल एवं सुगम रूप में लिखा गया है। इस यज्ञ मार्तण्ड ग्रन्थ से साधारण कर्मकाण्डी ब्राह्मण भी उत्तम रूप से यज्ञ-यगादि कार्य सम्पन्न करा सकते हैं।

हम डॉ० कुशेश्वर झा जी के अथक प्रयत्न की सफलता के लिए यज्ञ पुरुष भगवान से कामना करते हैं कि ये इसी प्रकार धार्मिक ग्रन्थों का सम्पादन निरन्तर करते रहें ताकि नये कर्मकाण्डी ब्राह्मणों को दिशा निर्देश प्राप्त होता रहे।

निरन्तर धर्न कार्य तथा वेद शिक्षण के कार्य द्वारा नव वैदिकों का मार्ग प्रशस्त करने की शुभकामना!

भवदीय

डॉ० इन्द्रमोहन झा 'सच्चन'

पण्डित नन्देश्वर झा
राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त प्रधानाध्यापक
राजकीय संस्कृत विद्यालय, मधुबनी, बिहार

शुभाशंसा

डॉ० कुशेश्वर झा जी द्वारा सम्पादित 'यज्ञ-मार्तण्ड' नामक प्रथम पुष्प को मैंने सविस्तार पढ़ा। पुस्तक पढ़ने के बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि यह पुस्तक वर्तमान में नए कर्म-काण्डी ब्रह्मणों के लिए बहुमूल्य निधि है। इस पुस्तक की सहायता से सभी प्रकार के पूजा विधान, यज्ञ का स्वरूप, पंचांग पूजन, मण्डप पूजन, सभी प्रकार के यज्ञों का सम्पादन करने का विधान, भूमि पूजन तथा गृह प्रवेश का विधान बहुत ही सरल सुन्दर रीति से सम्पादित किये गये हैं।

प्रसन्नता है कि प्रस्तुत पुस्तक का प्रत्येक पृष्ठ आपकी इन्हीं आवश्यकताओं का सम्यक् समाधान उपस्थित कर देगा। कहना न होगा कि इस पुस्तक की गुणवत्ता के कारण अनेक विद्वानों ने इसे अपने विषय का सर्वगुण सम्पन्न महोदधि कहा है और उन विद्वानों ने स्वयं में भी इससे समस्त पूजन-विधियों में सदैव मार्गदर्शन प्राप्त किया है ।

आशा है कि सद् गृहस्थ भी अत्यन्त अनिवार्य आवश्यकता को सन्नति और समाधान देकर, यह पुस्तक ईश्वराराधन में आपको आत्म शक्ति प्रदान करे और प्रभु आपकी विधिपूर्वक सम्पन्न की गई समस्त पवित्र क्रियाओं को सहर्ष स्वीकार करेंगे। आपकी तत्तविषयक मनोकामनाओं को सकृत एवं स्वल्पकाल में ही पूर्ण करेंगे ।

भवदीय
पण्डित नन्देश्वर झा

भूमिका

''भूयिष्ठां ते नमऽ उक्तिं विधेम''

जो शब्द राशि अकृत् अर्थात् किसी पुरुष के द्वारा बुद्धि पूर्वक रचित नहीं है, जो ब्रह्म परम्परा से प्राप्त है एवं नियत स्वरवर्णपदानु पूर्विक सुरक्षित है वही शब्दराशि आम्नाय कहलाता है । इस आम्नाय नामधारी शब्दराशि के द्वारा मानवों का अभ्युदय एवं निः श्रेयस प्राप्तिका उपाय जो प्रत्यक्ष एवं अनुमान के द्वारा भी अगोचर है ऐसे अलौकिक उपाय का बोध कराने के कारण उस शब्दराशि को वेद कहा जाने लगा ।

"इष्ट प्राप्ति अनिष्ट परिहार्यो: अलौकिकं उपायं यो ग्रन्थो वेदयति स वेद:"

"विद्-ज्ञाने" धातु से वेद शब्द बनता है जिसका अर्थ होता है ज्ञान ।

"विद्यते ज्ञायते लभ्यते अनेनेति वेद"

अर्थात् जिससे ज्ञान की प्राप्ती होती है उसे हम वेद कहते हैं ।

"प्रत्यक्षेनानुमित्यावा यस्तु पायो न विद्यते ।
एनं विदन्ति वेदेन तस्मात् वेदस्य वेदता ।।"

जो प्रत्यक्ष तथा अनुमान के द्वारा न जाना जा सके ऐसे वस्तु का जो बोध करावे उसे हम वेद कहते हैं ।

प्राचीन भारतीय परम्परा के अनुसार ये वेद सर्वप्रथम ऋषियों के ह्रदय मे उतरे थे । लोक कल्याणार्थ परमात्माने वेदों का सृष्टि (प्रकाश) किया । स्वयं वेद इस बात के साक्षी हैं कि वेद उसी परमात्माकी वाणी है -

"तस्माद यज्ञात् सर्वहुत ऋच: सामानि जज्ञिरे । छन्दांसि जज्ञिरे तस्मादय्जुस्तस्माद जायत ।।" (यजु: 31/7) उपनिषद में वेदों को परमात्माका नि:श्वास माना गया है । जिस प्रकार मनुष्यके नि:श्वास अनायास आते जाते रहते हैं, उसी प्रकार ये वेद भी परमात्मा से निकलते रहते हैं । सायण भी इस मत का अपने ''ऋग्भाष्य'' मे प्रतिपादन करते हुए लिखते हैं :-

''यस्य नि:श्वसितं वेदा यो वेदेभ्यो-खिलं जगत् ।
निर्ममे तमहं वन्दे विद्यातीर्थं महेश्वरम् ।।''

अर्थात् जिस परमात्मा के वेद नि:श्वास के समान है, और जिसने वेदों से सारे संसार का निर्माण किया, उस विद्या के सागर परमात्मा को प्रणाम । वेदों के अन्दर प्राचीन ऋषियों के ज्ञान का अगाध भण्डार भरा पड़ा है । वेदों के द्वारा ऋषियों ने संसार के सभी ज्ञान का प्रकाश किया है । संसार में कोई ज्ञान ऐसा नहीं है, जो वेदों में नहीं हो । इस प्रकार सारे ज्ञान का आदि स्रोत परमेश्वर हीं हैं । जिस प्रकार महर्षि व्यास ने अपने महाकाव्य महाभारत के विषय में कहा था कि: – **''यदिहाऽस्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्''** । अर्थात् जो इसमे है, वही अन्यत्र है और जो इसमें नहीं है, वह दूसरी जगह भी नहीं है । वही वेदों के वारे में भी कहा जा सकता है ।

वेदों के बारे में वैदिक परम्परा में बड़ा महत्व है । सबका आधार वेद माना गया है । मनु कहते हैं-**'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्'**–मनुस्मृति: । सम्पूर्ण वेद धर्म के मूल हैं । अर्थात् सभी धर्म इसी वेद के आधार पर स्थित है । अब प्रश्न उठता है कि धर्म क्या है । इसका अर्थ भी मनुस्मृति ही देती है ।

''धारणाद् धर्म मित्याहुः धर्मो धारयते प्रजाः ।''

धारण करणे के कारण धर्म कहा जाता है, और यही धर्म प्रजाओं का धारण करता है । जो ज्ञान प्रजाओं को धारण करता है, प्रजाओं की हर तरह से उन्नति करता है उनका आध्यात्मिक आधिदैविक और आधिभौतिक अर्थात् हर तरह का अभ्युदय करता है, वही धर्म है । यह धर्म वेदों का विषय है ।

धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः ।
तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मा नो धर्मो हतो वधीत् ।।
श्रेयोऽभ्युदयसाधनो धर्मः

बुधस्मृति ;

उपर्युक्त स्मृति के वचन से स्पष्ट हो जाता है कि इस लोक तथा परलोक में जितनी भी उन्नतियाँ होती हैं, सभीकी प्राप्तिका एक मात्र उपाय धर्म है । 'धर्म' सम्पूर्ण जगत् की प्रतिष्ठा है और धर्म पर हीं सम्पूर्ण संसार है । धर्मात्मा व्यक्ति सबका आश्रय है । धर्मात्मा पुरुष के पास सभीलोग उपश्रय या सहायता के लिए जाते हैं । बड़े-बड़े ऋषि महर्षि सन्त आदि के दर्शन मात्र से प्राणी का कष्ट दूर हो जाता है । धर्म के आचरण से पाप नष्ट हो जाते हैं । धर्म में सब कुछ प्रतिष्ठित है । यही कारण है कि धर्मज्ञ मनीषीगण धर्म को ही सर्वोपरि मानते हैं- धर्मो विश्वस्य जगत: प्रतिष्ठा । लोके धर्मिष्ठ प्रजा उपसर्पन्ति धर्मेण पापमपनुदन्ति धर्मे सर्वे प्रतिष्ठितम् । तस्माद्धर्मं परमं वदन्ति । धर्मपालक का रक्षक स्वयं धर्म होता है । जो धर्म का तिरस्कार करता है वह अधोगति को प्राप्त करता है । 'धृञ्' धातु से निष्पन्न ''धर्म'' शब्द का अर्थ धारण करना, पालन करना, आश्रय देना आदि है – **'धरतिलोकोऽनेन, धरति लोकं वा', धरति विश्वम् इति, धरति लोकान् ध्रियते वा जनैरिति'** (अमर कोष) वैदिक बाङ्मय में जगत के धारण-तत्त्वका नाम धर्म है—धारणाद्धर्ममित्याहुर्धर्मो धारयते प्रजा: लौकिक और पार लौकिक उत्कर्ष तथा आवागमनके बन्धन से निवृत्ति धर्म ही करवाता है ।

प्रत्येक वस्तुको जिस प्रयोजन के लिये भगवानने रचा है, उस प्रयोजन की परिपूर्त्ति करना ही उस वस्तु का धर्म है । अग्नि का धर्म है ताप देना-पका देना । जलका धर्म है-शुद्ध करना और पीने से प्राणरक्षण करना ।

इसी तरह मानव का धर्म है संसार में जितने जीव उत्पन्न हैं, उन सबकी जीवनयात्रा सुविधा से जैसे चले ऐसा लक्ष्य निर्धारित करें जो धर्म वेदों मे और शास्त्रों में विहित है, उनके आचरण से और जनसमुदाय का भला करना यही धर्मका रक्षण है । इस कलियुग में सभी धर्मों का लोप होता जा रहा है । अनाचार-अत्याचार -अभिचार आदि की दिन प्रतिदिन वृद्धि होती जा रही है । इसके लिए आवश्यक है कि धर्मशास्त्रों में निर्दिष्ट नियमों का पालन किया जाय । (1) संध्या, (2) स्नान, (3) जप, (4) देवताओं कि पूजा, यज्ञ-यागादि (5) अतिथि-सत्कार (6) वलिवैश्वदेव इन छ: कर्मों को नियमित रूप से करते रहना चाहिये ।

सभी व्यक्ति को अपने वर्णाश्रम धर्मके अनुसार चलना चाहिये । भगवान श्रीराम के राज्य में सवलोग सुखी क्यों थे ।

"वर्णाश्रम निज-निज धरम निरत वेद पथ लोग ।
चलहि सदा पावहि सुखहि नहि भय शोकन रोग ।।"

धर्म शास्त्र में मनुष्य योनि से मुक्ति के लिये पञ्चमहायज्ञ करने का विधान है-

''अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम् ।।

वेद पढ़ाना ब्रह्मयज्ञ है, श्राद्ध-तर्पण-पिण्डदान करना पितृयज्ञ है। देवताओंका पूजन हवन देवयज्ञ है । वलिवैश्वदेव भूत यज्ञ है तथा अतिथि का सेवा करना मनुष्य यज्ञ है ।

यज्ञ-शब्दार्थ

'यज्' धातुसे 'यज-याच-यत-विच्छ-प्रच्छ-रक्षो नङ्' (3/3/90) इस पाणिनीय सूत्रसे 'नङ्' प्रत्यय करने पर 'यज्ञ' शब्द बनता है । वैयाकरणसिद्धान्त के अनुसार कतिपय आचार्यों ने 'यज देवपूजासङ्गतिकरणदानेषु' इस पाणिनीय सूत्रके अनुसार 'यज्' धातुका देवपूजा, सङ्गतिकरण और दान इन तीन अर्थोंमें प्रयोग किया है । अर्थात् यज्ञमें देवपूजा होती है, देवतुल्य ऋषि - महर्षियों का सङ्गति-करण होता है और दान भी होता है । **देवपूजा** - यजनं इन्द्रादि - देवानां पूजनं सत्कारभावनं यज्ञः । 'इन्द्रादि देवों का पूजन तथा सत्कार यज्ञ कहा जाता है । जिससे देवताओं की पूजा की जाय उसे यज्ञ कहते हैं । **सङ्गतिकरण** - यजनं धर्म-देश-जाति-मर्यादारक्षायै महापुरुषाणामेकी-करणं यज्ञः । 'धर्म, देश, जाति (वर्णाश्रम) की मर्यादा की रक्षा के लिये महापुरुषों को एकत्रित करना यज्ञ कहलाता है । **दान** - इज्यते देवतोद्देशेन श्रद्धापुरस्सरं द्रव्यादित्यागः । जिसमें श्रद्धापूर्वक देवताओं के उद्देश्य से द्रव्य का त्याग किया जाय उसे यज्ञ कहते हैं ।

यज्ञ-शब्द के कतिपय व्युत्पत्तिजन्य अर्थ

(1) येन सदनुष्ठानेन इन्द्रप्रभृतयो देवाः सुप्रसन्नाः सुवृष्टिं कुर्युस्तद् यज्ञपदाभिधेयम् ।

(2) येन सदनुष्ठानेन स्वर्गादिप्राप्तिः सुलभा स्यात् तद् यज्ञपदाभिधेयम् ।

(3) येन सदनुष्ठानेन सम्पूर्णं विश्वं कल्याणं भजेत् तद् यज्ञपदाभिधेयम् ।

(4) येन सदनुष्ठानेन आध्यात्मिक-आधिदैविक-आधिभौतिकतापत्रयोन्मूलनं सुकरं स्यात् तद् यज्ञपदाभिधेयम् ।

(5) यागाङ्गसमूहस्य एकफलसाधनाय अपूर्ववान् कर्म-विशेषो यागः ।

(6) मन्त्रैर्देवतामुद्दिश्य द्रव्यस्य दानं यागः ।

'जिस सदनुष्ठानद्वारा इन्द्रादि देवगण प्रसन्न होकर सुवृष्टि प्रदान करें उसे यज्ञ कहते हैं । जिस सदनुष्ठानद्वारा स्वर्गादिकी प्राप्ति सुलभ हो उसे यज्ञ कहते हैं । जिस सदनुष्ठानद्वारा संसारका कल्याण हो उसे यज्ञ कहते हैं । जिस सदनुष्ठानद्वारा आध्यात्मिक, आधिदैविक एवं आधिभौतिक विपत्तियाँ दूर हो उसे यज्ञ कहते हैं । यागाङ्ग समूह के एक फलसाधनार्थ अपूर्वसे युक्त कर्म-विशेष को यज्ञ कहते हैं । वैदिक मन्त्रों के द्वारा देवताओंको उद्देश्य करके किये हुए द्रव्यके दानको यज्ञ कहते हैं ।' **यज्ञ - शब्दके कतिपय वेद-प्रतिपाद्य अर्थ (1) यत्र प्रक्षेपाङ्गको देवतोद्देशपूर्वको द्रव्यत्यागोऽनुष्ठीयते स यागपदार्थः** । 'जहाँ पर देवताको उद्देश्य कर अग्निमें द्रव्यका प्रक्षेप किया जाय, उसे 'यज्ञ' कहते हैं ।' **(2) यज्ञः कस्मात् ? प्रख्यातं यजति कर्मेति नैरूक्ताः** ।

यज्ञ के भेद

प्रधानतया यज्ञ दो प्रकारके होते हैं - श्रौत और स्मार्त्त । श्रुति-प्रतिपादित यज्ञोंको श्रौतयज्ञ और स्मृतिप्रतिपादित यज्ञोंको स्मार्त्त यज्ञ कहते हैं । श्रौतयज्ञ में केवल श्रुतिप्रतिपादित मन्त्रोंका प्रयोग होता है और स्मार्तयज्ञ में वैदिक, पौराणिक और तान्त्रिक मन्त्रोंका प्रयोग होता है ।

यज्ञकी प्राचीनता - हिन्दू-जातिका प्राचीन धर्मग्रन्थ वेद है । वेदों में कर्मकाण्ड, उपासनाकाण्ड और ज्ञानकाण्ड इन तीन विषयों का मुख्यतः वर्णन मिलता है, किन्तु इन तीनों में प्रधान स्थान 'कर्मकाण्ड' को ही प्राप्त है । इसीलिये वेदों में यज्ञ-यागादि विविध क्रिया-कलाप का विशेषरूप में वर्णन मिलता है। अतः यज्ञ ही वेदों का मुख्य विषय है । वेदों का मुख्य विषय यज्ञ होने मात्र से यज्ञ नहीं हो सकते और यज्ञों के बिना वेद-मन्त्रों का ठीक-ठीक सदुपयोग नहीं हो सकता । अतः स्पष्ट है कि वेद हैं तो यज्ञ है और यज्ञ है तो वेद है ।

'यज्ञ करने से मनुष्य देवलोकों को प्राप्त करता है, हवन करने से पापों का नाश होता है, जप करने से सभी कामनाओं को प्राप्त करता है और सत्य-भाषण से परम-पद को प्राप्त करता है ।'

यज्ञेन देवा जीवन्ति यज्ञेन पितरस्तथा ।
देवाधीनाः प्रजाः सर्वा यज्ञाधीनाश्च देवताः ।।
यज्ञो हि भगवान् विष्णुर्यत्र सर्वं प्रतिष्ठितम् ।
यज्ञार्थं पशवः स्त्रष्टा देवास्त्वौषधयस्तथा ।।

यज्ञार्थं पुरुषाः स्त्रष्टाः स्वयमेव स्वयंभुवा ।
यज्ञश्च भूत्यै सर्वस्य तस्माद्यज्ञपरो भवेत् ।।
यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्विषैः ।
धनं यद्यज्ञशीलानां देवस्वं तं विदुर्बुधाः
यज्ञेन सम्यक् पुरुषस्तु नाके,सम्पूज्यमानस्त्रिदशैर्महात्मा ।
प्राप्नोति सौख्यानि महानुभावाः, तस्मात्प्रयत्नेन यजेत यज्ञैः ।।
(विष्णुधर्मोत्तरपुराण 162/1-4,7)

'यज्ञ से देवगण और पितृगण जीवित रहते हैं । देवताओं के आधीन समस्त प्रजा रहती हैं और यज्ञ के आधीन समस्त देवता रहते हैं । यज्ञ ही भगवान् विष्णु हैं । यज्ञ के लिये देवताओं तथा औषधियों की सृष्टि की गई है । स्वयम्भू ने यज्ञ के लिये ही मनुष्यों की सृष्टि कर उनसे कहा - यज्ञ सब का कल्याण करनेवाला है, अत: यज्ञ में तत्पर रहो । यज्ञ के अवशिष्ट भाग का भोजन करनेवाले समस्त पापों से मुक्त हो जाते हैं, यज्ञ-शीलों के धन को पण्डितों ने देवस्व (देवधन) कहा है । यज्ञ के द्वारा श्रेष्ठ महात्मा पुरुष स्वर्ग में जाकर देवताओं के द्वारा भलीभाँति पूजित होते हैं और यज्ञकर्त्ता पुण्यात्मा पुरुष स्वर्ग में जाकर अनेक प्रकार की सुखप्रद वस्तुओं की प्राप्ति करते हैं । अत: प्रयत्नपूर्वक यज्ञों द्वारा भगवान् का यजन करना चाहिये ।'

भारत धर्मप्राण देश है । हमारे धर्मशास्त्र, वेद, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, श्रीमदभगद्गीता, पुराण आदिके माध्यम से मनुष्य के कर्तव्य का वोध कराया गया है -

वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः ।
एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम् ।।

इस प्रकार मनुष्य अपने सत्कर्म के माध्यम से समस्त रोगशोक से निवृत होकर मोक्ष को प्राप्त होता है । इस दृष्टि कोण से यज्ञ-मार्तण्ड नामक प्रथम पुष्प आप लोगों के सामने स्थापित करने का प्रयास किया है ।

अपने माता पिता के चरणकमल में सादर समर्पित यह
''यज्ञ-मार्तण्ड'' नामक प्रथम पुष्प ।

सम्पादकस्य

[परिचयः]

खेला-शर्म-तनूजन्मा रूपनाथो महामतिः ।
वेदाचार - रतोनित्यं स्वधर्मपरिपालकः ।। १।।
चत्वारो यज्ञिरे पुत्राः तस्य पुण्यप्रभावतः ।
तेषां ज्येष्ठः कुलश्रेष्ठो माननीयो मनोहरः ।।२।।
समाज-सम्मतो नित्यं दैशिकं पदमाप्तवान् ।
तदात्मजेषु यः श्रेष्ठो "वबुआ" ख्यो भागीरथः ।।३।।
निष्णातः कर्मकाण्डेषु सदाचारपरायणः ।
समाजे बहुशो यज्ञे आचार्यत्वंचकार ह ।।४।।
तस्य पुत्रास्त्रयो जाता गुणशीलसमन्विताः ।
अनन्तगुणसम्पन्नास्तेषां श्रेष्ठो महामतिः ।।५।।
"अनन्त" नाम्ना विख्यातः सो भूदस्मत्पितामहः ।
श्रीधरो मध्यमस्तेषां गार्हस्थ्ये निपुणः सदा ।।६।।
"पीताम्बरः" कनिष्ठोऽस्ति वेदविद्याविशारदः ।
श्रौते कर्मणि गार्ह्ये च गतिस्तस्य न रुध्यते ।।७।।
व्याख्याता सर्ववेदानां प्रतिष्ठाता शिवस्य च ।
विद्वत्समाजे विख्यातः समग्रे भारताजिरे ।।८।।
अस्य शिष्याः प्रशिस्याश्च विराजन्ते शताधिकाः ।
वंगे बिहारे सर्वत्र प्राध्यापकपदे स्थिताः ।।९।।
अतोऽयं वैदिककुले पितामह इवाधुना ।
भीष्मवत् पूज्यते लोके सोऽयमस्मत्पितामहः ।।१०।।
साङ्ग्यां मधुबन्या जातो ग्रन्थकर्त्ता कुशेश्वरः ।
काशिनाथस्य तारायां 'सूर्य' शिष्यः शिवप्रियः ।।११।।

विषयानुक्रमणिका

पुस्तक लोकार्पण समारोह
"यज्ञ मार्तण्ड"
के प्रथम संस्करण का लोकार्पण करते हुए
पुरी पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य
स्वामी निश्चलानन्द सरस्वतीजी महाराज
के संग सम्पादक
डॉ. कुशेश्वर झा
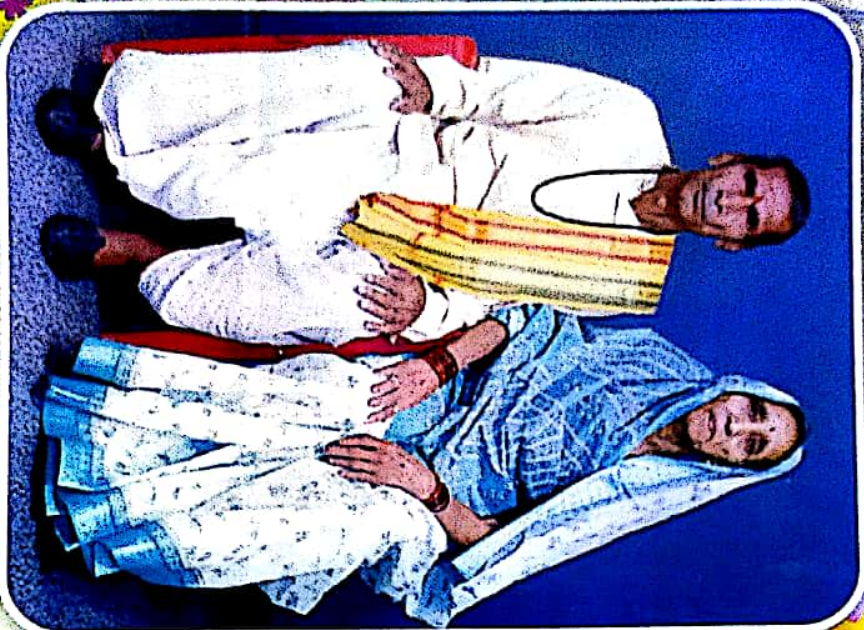
यज्ञ मार्तण्ड का यह पुष्प
माता-पिता के चरणों में
सादर समर्पित

सम्पादक : डॉ० कुशेश्वर झा

प्रथम पूज्य गणपति महाराज
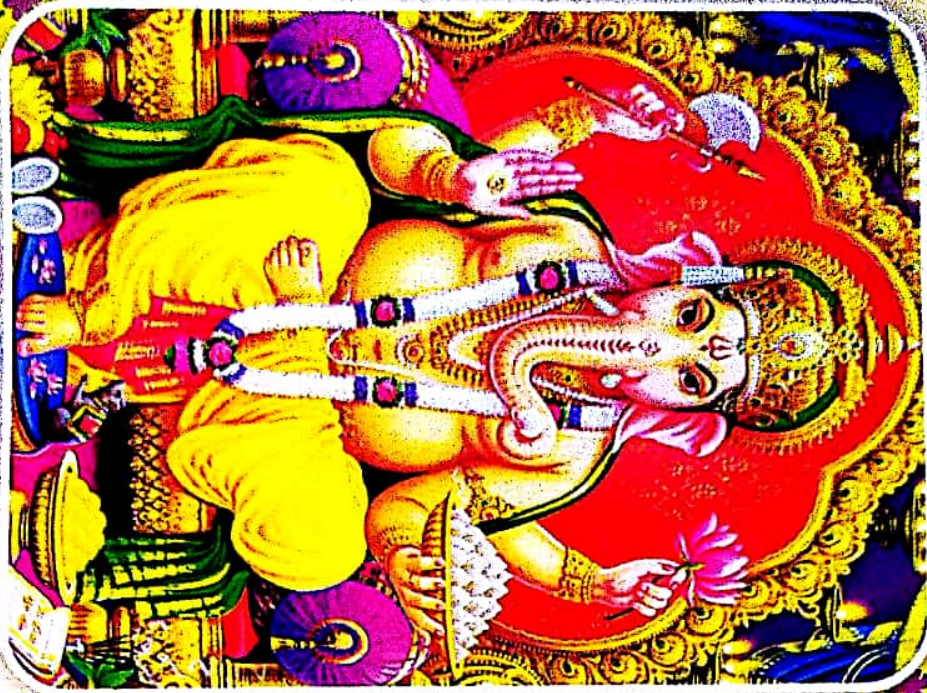
ॐ गं गणपतये नमः ।

पाशाङ्कुशौ मोदकमेकदन्तम् करैर्दधानं कनकास्थम् ।
हारिद्रखण्डऽप्रतिमं त्रिनेत्रं पीतांकुशं रात्रिगणेशमीडे ॥

सपत्नीक यजमान नित्यक्रिया सम्पन्न कर शुभमुहूर्त में पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख अपने आसन पर बैठें तथा पत्नी को अपने दाहिने तरफ बैठावें ।

रक्षादीपं प्रज्वाल्य ग्रन्थिबन्धनं तिलकं च कृत्वा कर्मपात्र पूजनं कुर्यात्।

अथ कर्मपात्र पूजनम्—

अङ्कुशमुद्रया तीर्थ आवाहयेत् ।
ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती ।
नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥
ॐ अपांपतये वरुणाय नमः । सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि पूजयामि नमस्करोमि । धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य मत्स्य मुद्रया आच्छाद्य लेलिहान् मुद्रया अवगुण्ठ्य ॐ वं वमित्यष्टधा जपेत् ॥

शरीर शुद्धिः —

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥
ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु-३ आत्मानं पूजासामग्रीं च सम्प्रोक्ष्य आचमनं कुर्यात् ।

आचमनम् —

ॐ केशवाय नमः ॐ नारायणाय नमः ।
ॐ माधवाय नमः । इति मन्त्रेण त्रिराचम्य
ॐ गोविन्दाय नमः । इस मन्त्र से अंगुठा के द्वारा ओष्ठ को पोछें ।

पवित्री धारणम् —

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवऽ
उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्य्यस्य
रश्मिभिः। तस्यते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम् ॥

आसन शुद्धिः —

ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः
कूर्मो देवता आसनोपवेशने विनियोगः ।
ॐ ह्रीं आधार शक्तये नमः । ॐ कं कम्बलासनाय
नमः । ॐ विं विमलासनाय नमः । ॐ पं परमसुखा-
सनाय नमः । ॐ कूर्माय नमः । ॐ अनन्ताय नमः ।

आसनं स्पृष्ट्वा पठेत् —

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥

शिखा बन्धनम् —

ॐ चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजः समन्विते ।
तिष्ठ देवि शिखामध्ये चामुण्डे चापराजिते ॥

भस्मधारणम् —

ॐ अग्निरिति भस्म । ॐ वायुरिति भस्म । ॐ जलमिति
भस्म । ॐ स्थलमिति भस्म । ॐ व्योमेति भस्म ।
ॐ सर्वं ह वा इदं भस्म । ॐ मन एतांसि चक्षूंषि भस्मानीति ।

उपर लिखित मन्त्र से भस्म को अभिमन्त्रित कर नीचे लिखे मन्त्र से यथास्थान भस्म लगावें —

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः (ललाटे) ॐ कश्यपस्य
त्र्यायुषम् (ग्रीवायां) ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषं (बाहुमूले)
ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् इति हृदि ।

मंगल तिलकम् —

स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽ अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥

घण्टापूजनम्—

ॐ सर्ववाद्यमयी घण्टायै नमः । सर्वोपचारार्थे
गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि पूजयामि ।
ॐ आगमार्थन्तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम् ।
घण्टानादं प्रकुर्वीत् पश्चाद् घण्टां प्रपूजयेत् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः घण्टास्थाय गरुडाय नमः ॥

धूप पूजनम् —

ॐ गन्धर्व दैवत्याय धूप पात्राय नमः ।
सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ॥

शंख पूजनम् —

ॐ शंखादौ चन्द्रदैवत्यं कुक्षौ वरुणदेवता ।
पृष्ठे प्रजापतिश्चैवमग्रे गंगा सरस्वती ॥
त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया ।
शंखे तिष्ठन्ति विप्रेन्द्र तस्माच्छंखं प्रपूजयेत् ॥

ॐ ह्रीं आधारशक्तये नमः । ॐ शंखस्थ देवतायै
नमः । सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ।
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय इति अष्टवारं
जपित्वा शंखमुद्रां प्रदर्शयेत् ।
ॐ त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे ।
निर्मितः सर्वदेवैश्च पांचजन्य नमोऽस्तु ते ॥

शंख गायत्री —

ॐ ह्रीं पाञ्चजन्याय विद्महे पावमानाय
धीमहि । तन्नो शंखः प्रचोदयात् ॥

दीपपूजनम् —

ॐ अग्नि ज्योति ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योति-
र्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा । अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वचः स्वाहा
सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥
ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ॥

भो दीप देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत् ।

यावत् कर्म समाप्तिः स्यात् तावत्त्वं सुस्थिरो भव ॥

भूतापसारणम् —

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिता ।

ये भूता विघ्नकर्तारः ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् ।

सर्वेषामविरोधेन पूजा कर्म समारभेत् ।

त्रोटक्याः दिग्बन्धनम् । वाम पादेन भूमौ त्रिवारं

ताडयित्वा देवा आयान्तु, यातु धानाः अपयान्तु

ॐ विष्णो देवयजनं रक्षस्व । इति भूमिं स्पृशेत् ।

अथपञ्चगव्यविधि: —

गोमूत्रम्— एकस्मिन् ताम्रपात्रे पलाशपत्रपुटे वा

ॐ भू० गायत्र्या इति कापिलेयं गोमूत्रम् ।

गोमयम्— ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।

ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् । इति गोमयम् ।

दुग्धम् —

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्ण्यम् ।

भवा व्वाजस्य सङ्गथे ॥ इति पयः ॥

दधि —

दधि क्राव्णोऽ अकारिषं जिष्णोरश्वस्य व्वाजिनः । सुरभिनो मुखाकरत्प्रणऽ आयूंषि तारिषत् ॥ इति दधि ।

घृतम् —

ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामाऽसि प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि, इति घृतम् ।

कुशोदकम् —

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनो र्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् । इति कुशोदकम् ।

प्रायश्चित्तम्

पंचगव्य प्राशनम्—

ॐ यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति-मामके ।

प्राशनात्पञ्चगव्यस्य दहत्यग्निरिवेन्धनम् स्वाहा ॥

इति मंत्रेण त्रिवारं पंचगव्यं प्राशयेत् ॥

ततः प्रधानगोनिष्क्रियसङ्कल्पः ॥ देशकालौ सङ्कीर्त्य अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं मम जन्मप्रभृति अद्यदिनं यावत् ज्ञाताऽज्ञात-सकामाऽकाम-सकृदसकृत्कृतकायिक-वाचिक-मानसिक-सांसर्गिक-स्पृष्टाऽस्पृष्ट-भुक्ताऽभुक्त पीताऽपीत-लेह्यालेह्य चोष्या चोष्य सकलपातका तिपातकोपपातक - लघुपातक- सङ्करीकरण-मलिनीकरण-अपात्रीकरण-जातिभ्रंशकर-प्रकीर्णकपातकानां मध्ये सम्भावितानां पापानां निरासार्थ श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थ पर्षदुपदिष्टं गोनिष्क्रयद्रव्यदानप्रत्याम्नाय-द्वाराऽङ्गीकृताऽमुकप्रायश्चित्तस्य संसिद्ध्यर्थं यथायथानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दातुमहमुत्सृजे ॥

गां प्रार्थयेत् —

ॐ गवामङ्गेषु तिष्ठन्ति भुवनानिचतुर्दश ।

यस्मात्तस्माच्छिवं मे स्यादिह लोके परत्र च ॥

गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः ।

गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम् ॥

यज्ञात्पूर्वदिने स्वदेहशुद्ध्यर्थं यज्ञाधिकारप्राप्त्यर्थं चायुतगायत्री जपं कुर्य्यात् –

देशकालौ संकीर्त्य ज्ञाताज्ञातपापक्षयार्थं करिष्यामाण ''अमुक'' यज्ञाधिकारप्राप्त्यर्थं गायत्र्याऽयुतजपमहं करिष्ये । इति संकल्प्य गायत्रीम् अयुतं जपेत् ॥

स्वस्तिवाचनम्—

ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासोऽ अपरीतास उद्भिदः । देवा नो यथा सदमिद् वृधेऽ असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे ॥ देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानाᳩ रातिरभिनोनिवर्तताम् ।

देवानाᳬ सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे ॥ तान्पूर्वयानिविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिं दक्षमस्त्रिधम् । अर्यमणं वरुणᳬ सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् । तन्नो वातो मयोभु वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः । तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतं धिष्ण्या युवम् ॥ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम् । पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥ स्वस्ति नऽ इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽ अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥ पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः । अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसागमन्निह ॥ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाᳬ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः। शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम् । पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः ॥ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः । विश्वे देवा अदितिः पञ्च जना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् ॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षᳬ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वᳬ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥ यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु । शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥ सुशान्तिर्भवतु ॥

ॐ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः । लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः । उमामहेश्वराभ्यां नमः । वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। शचीपुरन्दराभ्यां नमः । मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः । इष्टदेवताभ्यो नमः । कुलदेवाताभ्यो नमः । ग्रामदेवताभ्यो नमः । स्थानदेवताभ्यो नमः । वास्तुदेवताभ्यो नमः । सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः । सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः । ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः ।

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः ।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।
सङ्ग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥
अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः ।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये ! शिवे ! सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके ! गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम् ।
येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनो हरिः ॥
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव ।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि ।
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः ।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ॥
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥
स्मृतेः सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते ।
पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम् ॥
सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः ।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः ॥
विश्वेशं माधवं दुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम् ।
वन्दे काशीं गुहां गंगां भवानीं मणिकर्णिकाम् ॥
वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥
ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः ॥

सङ्कल्पः —

कुशपुष्पफलाक्षतद्रव्यं चादाय सङ्कल्पं कुर्यात् ।। ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे अमुकक्षेत्रे (वाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने आनन्दवने गौरीमुखे त्रिकण्टकविराजिते इति काश्यां सङ्कल्पे विशेषः) वा प्रजापतिक्षेत्रे बौद्धावतारे, भागीरथ्याः अमुकभागे (नर्मदायाः अमुकभागे वा) अमुकसंवत्सरे अमुकायने मार्त्तण्डे अमुक ऋतौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथाराशिस्थान-स्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रोत्पन्नः अमुकशर्माहं (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्) सपत्नीकोऽहं मम कायिकाद्यखिलपापक्षयपूर्वकधर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधपुरुषार्थसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थममुककामनासिद्ध्यर्थं वा एकषष्ट्युत्तरशतधा मन्त्रविभागपक्षेण (अमुकविभागपक्षेण वा) घृताक्ततिलद्रव्येण हवनद्वारा सनवग्रहमखम् अमुकयज्ञ कर्म करिष्ये, इति सङ्कल्पः ।। तदङ्गविहितं गणेशपूजनपूर्वकं पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं वसोर्द्धारापूजनमायुष्यमन्त्रजपं साङ्कल्पिक नान्दीश्राद्धमा-चार्यादिवरणानि च करिष्ये ।।

संकल्पितार्थाः सिद्धयः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः ।
शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्रानामुदयस्तव ।।

।। अथ श्रीगणेशाम्बिकापूजनम् ।।

आवाहनम् —

हे हेरम्ब त्वमेह्येहि अम्बिकात्र्यम्बकात्मज ।
सिद्धिबुद्धिपते त्र्यक्ष । लक्षलाभपितुर्पितः ।।
नागास्यं नागहारं त्वां गणराजं चतुर्भुजम् ।
भूषितं स्वायुधैर्दिव्यैः पाशाङ्कुशपरश्वधैः ।।
आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतोः ।।
इहागत्य गृहाण त्वं पूजां यागं च रक्ष मे ।।

मन्त्रः —

ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳ हवामहे व्वसो मम । आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धिबुद्धिसहिताय श्री मन्महा गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि, स्थापयामि ।

भगवत्या गौर्या आवाहनम् —

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम् ।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम् ।।
ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन ।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः गौरीमावाहयामि, स्थापयामि ।

प्रतिष्ठा —

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु । विश्वे देवास इह मादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ ।।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च ।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः
गणेशाम्बिके ! सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम् ।
प्रतिष्ठापूर्वकम् आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि गणेशा० नमः ।

आसनम् —

पुरुष एवेदঃ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् ।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥
आगच्छ भगवन् देवस्थाने चात्र स्थितो भव ।
यावत्पूजां करिष्यामि तावत्त्वं सन्निधौ भव ॥
आसनार्थे पुष्पं समर्पयामि ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशा० नमः ।

पाद्यम्—

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः ।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥
यद्भक्तिक्लेशसंपर्कात्परमानन्द विग्रहः ।
तस्मै ते चरणाब्जाय पाद्यं शुद्धाय कल्पये ॥
पादयोः पाद्यं समर्पयामि । ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशा० नमः ॥

अर्घ्यम्—

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः ।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि ॥
तापत्रयहरं दिव्यं परमानन्दलक्षणम् ।
तापत्रय विनिर्मुक्तस्तवार्घ्यं कल्पयाम्यहम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः अर्घ्यम् समर्पयामि ।

आचमनीयम्—

ॐ ततो विराडजायत विराजो ऽअधि पूरुषः ।
स जातोऽअत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुर : ॥
सर्वतीर्थसमायुक्तं सुगन्धि निर्मलं जलम् ॥
आचम्यार्थं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः आचमनं समर्पयामि ।

स्नानम्—

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् ।
पशूँस्ताँश्चक्रे व्वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये ॥
गंगासरस्वती रेवापयोष्णी नर्मदा जलैः ।
स्नापितोऽ सि मया देव तथा शांन्ति कुरुष्व मे ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशा० नमः स्नानीयम् जलं समर्पयामि ॥

पयस्नानम्—

ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः ।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥
कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम् ।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पयः स्नानं समर्पयामि।
पुनः शुद्धोदकस्नानम् समर्पयामि ।

दधिस्नानम्—

ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः ।
सुरभि नो मुखा करत्प्रण आयूঁषि तारिषत् ॥
पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम् ।
दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ भूर्भवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दधिस्नानं समर्पयामि ।

घृतस्नानम्—

ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम ।
अनुष्वधमा वह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम् ॥
नवनीत समुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम् ।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, घृतस्नानं समर्पयामि ।

मधुस्नानम्—

ॐ मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः ।
माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳ रजः ।
मधु द्यौरस्तु नः पिता ॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँऽ अस्तु सूर्यः ।
माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥

पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु ।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मधुस्नानं समर्पयामि ।

शर्करास्नानम्—

ॐ अपाꣳ रसमुद्वयसꣳ सूर्ये सन्तꣳ समाहितम् । अपाꣳ रसस्य यो रसस्तं वो गृहणाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ॥

इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम् ।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेंशाम्बिकाभ्यां नमः, शर्करास्नानं समर्पयामि ।

पञ्चामृतस्नानम्—

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः ।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित् ॥
पञ्चामृतं मयानीतं पयो दधि घृतं मधु ।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि ।

गन्धोदकस्नानम्—

ॐ अꣳशुना ते अꣳशुः पृच्यतां परुषा परुः ।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसोऽ अच्युतः ॥
मलयाचलसम्भूतंचन्दनेन विनिःसृतम् ।
चन्दनं देवदेवेश स्नानार्थं प्रति गृह्यताम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशा० नमः, गन्धोदकस्नानं समर्पयामि ।

शुद्धोदकस्नानम्—

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽ आश्विनाः
श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा
यामाऽ अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः ॥
गङ्गा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती ।
नर्मदा सिन्धुकावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ भूर्भवः स्वः गणेशा० नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ।

वस्त्रम्—

ॐ युवा सुवासाः परिवीतऽ आगात् सऽ उ श्रेयान् भवति जायमानः । तं धीरासः कवयऽ उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः ॥

शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम् ।
देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयछ मे ॥
ॐ भूर्भवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि ।
वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

उपवस्त्रम्—

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमासदत्स्वः।
व्वासोऽ अग्ने विश्वरूपꣳ सं व्ययस्व विभावसो ॥
यस्याभावेन शास्त्रोक्तं कर्म किञ्चिन्न सिध्यति ।
उपवस्त्रं प्रयच्छामि सर्वकर्मोपकारकम् ॥
ॐ भूर्भवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि ।
उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

यज्ञोपवीतम्—

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो व्वेनऽ आवः ।
स बुद्ध्न्याऽ उपमा अस्य व्विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च व्विवः ॥
ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि ।

चन्दनम्—

ॐ त्वां गन्धर्वाऽ अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः ।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत ॥
श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ भूर्भुस्वः स्वः गणेशा० नमः, चन्दनानुलेपनं समर्पयामि ।

अक्षतम्—

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रियाऽ अधूषत ।
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजा न्विन्द्र ते हरी ॥
अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः ।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतान् समर्पयामि ।

पुष्पम्—

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुंम ऽइषाणसर्व्वलोकं म ऽइषाण ॥
मन्दापारिजाताद्या पाटली केतकी तथा ।
मरुवामोगरं चैव गृहाणाशु नमो नमः ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पुष्पं समर्पयामि ।

पुष्पमालां—

ॐ ओषधीः प्रति मोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः ।
अश्वाऽ इव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः ॥
माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो ।
मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पुष्पमालां समर्पयामि ।

दूर्वां कुरान्—

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ।
एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥
दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान् ।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि ।

विल्वपत्रम्—

ॐ नमो विल्मिने च कवचिने च नमो व्वर्मिणे च वरूथिने च नमः ।
श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुब्भ्याय चाहनन्याय च ।
त्रिशाखैर्विल्वपत्रैश्च अच्छिद्रैः कोमलैः शुभैः ।
तव पूजां करिष्यामि गृहाण परमेश्वर ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, विल्वपत्रम् समर्पयामि ।

अबीर-गुलालम्—

ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः ।
हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान्
पुमाँ सं परि पातु विश्वतः ॥
अबीरं च गुलालं च हरिद्रादिसमन्वितम् ।
नाना परिमलं द्रव्यं गृहाण परमेश्वर ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशा० नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि ।

सिन्दूरम्—

ॐ सिन्धोरिव प्राद्ध्वने शूघनासो व्वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः ।
घृतस्य धाराऽ अरुषो न व्वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः ॥
सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम् ।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सिन्दूरं समर्पयामि ।

सुगन्धिद्रव्यम्—

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥
दिव्यगन्धसमायुक्तं महापरिमलाद्भुतम् ।
गन्धद्रव्यमिदं भक्त्या दत्तं वै परिगृह्यताम् ॥
ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि ।

धूपम्—

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्व तं योऽस्मान् धूर्व्वति तं धूर्व्वयं व्वयं धूर्व्वामः।
देवानामसि वह्नितमꣳ सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम् ॥
वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः ।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपमाघ्रापयामि ।

दीपम्—

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ।
अग्निर्व्वर्चो ज्योतिर्व्वर्चः स्वाहा सूर्यो व्वर्चो ज्योतिर्व्वर्चः स्वाहा ॥
ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ॥
साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया ।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दीपं दर्शयामि ।
हस्तप्रक्षालनम् ।

नैवेद्यम्—

ॐ नाभ्याऽ आसीदन्तरिक्षꣳ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत ।
पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ऽ अकल्पयन् ॥
ॐ प्राणाय स्वाहा । ॐ अपानाय स्वाहा । ॐ व्यानाय स्वाहा ।
ॐ उदानाय स्वाहा । ॐ समानाय स्वाहा ।
शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च ।
आहारो भक्ष्य भोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं निवेदयामि ।
नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

करोद्वर्तनम्—

ॐ अꣳ शुना ते अꣳ शुः पृच्यतां परुषा परुः ।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसोऽ अच्युतः ॥
चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम् ।
करोद्वर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशा० नमः, करोद्वर्तनकं चन्दनं समर्पयामि ।

ऋतुफलम्—

ॐ याः फलिनीर्याऽ अफलाऽ अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः ।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वꣳ हसः॥
इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव ।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ॥
ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि ।

ताम्बूलम्—

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्मऽ इध्मः शरद्धविः ॥
पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम् ।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मुखवासार्थे एलालवंग-पूगीफलसहितं ताम्बूलं समर्पयामि ।

दक्षिणाम्—

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽ आसीत् ।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा व्विधेम ॥
हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः ।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि ।

आरार्तिक्यम्–

ॐ आ रात्रि पार्थिवꣳ रजः पितुरप्रायि धामभिः ।
दिवः सदाꣳसि बृहती वि तिष्ठसऽ आ त्वेषं वर्त्तते तमः ॥
ॐ इदꣳ हविः प्रजननं मेऽ अस्तु दशवीरꣳ सर्व्वगणꣳ स्वस्तये ।
आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि ।
अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त ॥
कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम् ।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आरार्तिकं समर्पयामि ।

पुष्पाञ्जलिः —

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥
नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च ।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तो गृहाण परमेश्वर ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ।

प्रदक्षिणा—

ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः ।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ।
यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च ।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणपदे पदे ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि ।

विशेषार्घ्यम्—

रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक ।
भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात् ॥
द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो ।
वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद ॥
अनेन सफलार्घ्येण फलदोऽस्तु सदा मम ।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, विशेषार्घ्यं समर्पयामि ।

प्रार्थना

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय
लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय
गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥
भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय
सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय ।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय
भक्तप्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते ॥
नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः
नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः ।
विश्वरूपस्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे
भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक ॥
लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥
त्वां विघ्नशत्रुदलनेति च सुन्दरेति
भक्तप्रियेति सुखदेति फलप्रदेति ।
विद्याप्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति
तेभ्यो गणेश वरदो भव नित्यमेव ॥
या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः ।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशा० नमः,
प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि ।
गणेशपूजने कर्म यन्न्यूनमधिकं कृतम् ।
तेन सर्वेण सर्वात्मा प्रसन्नोऽस्तु सदा मम ॥
अनया पूजया गणेशाम्बिके प्रीयेताम् न मम ॥
इति जलं प्रक्षिपेत् ॥

कलश-स्थापनम्

कलशमें रोलीसे स्वस्तिकका चिह्न बनाकर गले में मौली लपेटें और कलशको एक ओर रख लें। कलश स्थापित किये जानेवाली भूमि अथवा पाटेपर कुङ्कुम या रोलीसे अष्टदलकमल बनाकर निम्न मन्त्रसे भूमिका स्पर्श करें -

भूमिं स्पृशेत्—

ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृꣳह पृथिवीं मा हिꣳसीः ॥

धान्यप्रक्षेपः —

ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वो दानाय त्वा व्यानाय त्वा । दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धां देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रति गृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोऽसि ॥

कलश-स्थापनम्—

ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः । पुनरूर्जा निवर्तस्व सा नः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्मा विसताद्रयिः ॥

कलशे जलम्—

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद ॥

चन्दनम्—

ॐ त्वां गन्धर्वाऽ अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः ।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत ॥

सर्वौषधिः —

ॐ याऽ ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा ।
मनै नु बभ्रूणामहꣳ शतं धामानि सप्त च ॥

दूर्वा—

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ।
एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च

पञ्चपल्लवः —

ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता ।
गोभाजऽ इत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम् ॥

सप्तमृत्तिका -

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः ।

पूगीफलम्—

ॐ याः फलिनीर्याऽ अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः ।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वꣳहसः ॥

पञ्चरत्नम्—

ॐ परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत् दधद्रत्नानि दाशुषे ।

हिरण्य प्रक्षेपः —

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽ आसीत् ।
सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

वस्त्रम्—

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्म वरूथमासदत्स्वः ।
वासोऽ अग्ने विश्वरूपꣳ सं व्ययस्व विभावसो ॥

पूर्णपात्रम्—

ॐ पूर्णा दर्वि परा पत सुपूर्णा पुनरा पत ।
वस्नेव विक्रीणावहाऽ इषमूर्जꣳ शतक्रतो ॥

श्रीफलम्—

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्वलोकं मऽ इषाण ।

कलशे वरुणम् आवाहयेत्—

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः ।
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशꣳ स मा नऽ आयुः प्रमोषीः ॥
अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि स्थापयामि ।
ॐ अपां पतये वरुणाय नमः ।

कलशे देवानाम् आवाहनम्—

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः । मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥ कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा । अर्जुनी गोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती ॥ कावेरी कृष्णवेणा च गङ्गा चैव महानदी । तापी गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा ॥ नदाश्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथा पराः । पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै ॥ सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः । आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः ॥ ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथवर्णः । अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशन्तु समाश्रिताः ॥ अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा । आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारिकाः ॥

प्रतिष्ठा –

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं
यज्ञꣳ समिमं दधातु । विश्वे देवासऽ इह मादयन्तामों३ म्प्रतिष्ठ ॥
कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु ।

।। इति षोडशोपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत् ।।

प्रार्थना -

देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम् ॥
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः ।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः ॥
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः ।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः ॥
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः ।
त्वत्प्रसादादिमां पूजां कर्तुमीहे जलोद्भव ।
सानिध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा ॥
नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय ।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते ॥
पाशपाणे नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक ।
पुण्याहवाचनं यावत् तावत् त्वं सुस्थिरो भव ॥
ॐ अपां पतये वरुणाय नमः ।
ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि ।

समर्पणम्—

अनया पूजया कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताः प्रीयन्तां न मम ।

पुण्याहवाचनम्—

अवनिकृतजानुमण्डलः कमलमुकुलसदृशमञ्जलिं
शिरस्याधाय दक्षिणेन पाणिना सुवर्णपूर्णकलशं
धारयित्वा स्वमूर्ध्ना संयोज्य आशिषः प्रार्थयेत् ।

यजमानः —

ॐ दीर्घा नागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णुपदानि च ।
तेनायुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु ।

ब्राह्मणाः —

अस्तु दीर्घमायुः ।

यजमानः —

ॐ त्रीणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गोपाऽ अदाभ्यः । अतो धर्माणि धारयन् ॥ तेनायुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु इति भवन्तो ब्रुवन्तु ।

ब्राह्मणाः —

अस्तु दीर्घमायुः ।

यजमानः —

ॐ अपां मध्ये स्थिता देवाः सर्वमप्सु प्रतिष्ठितम् ।
ब्राह्मणानां करे न्यस्ताः शिवा आपो भवन्तु नः ॥
ॐ शिवा आपः सन्तु

ब्राह्मणाः —

सन्तु शिवा आपः ।

यजमानः —

लक्ष्मीर्वसति पुष्पेषु लक्ष्मीर्वसति पुष्करे ।
सा मे वसतु वै नित्यं सौमनस्यं तथास्तु नः ॥ सौमनस्यमस्तु ।

ब्राह्मणाः —

'अस्तु सौमनस्यम् ।

यजमानः —

अक्षतं चास्तु मे पुण्यं दीर्घमायुर्यशोबलम् ।
यद्यच्छ्रेयस्करं लोके तत्तदस्तु सदा मम ॥ अक्षतं चारिष्टं चास्तु ।

ब्राह्मणाः —

अस्त्वक्षतमरिष्टं च

यजमानः – (चन्दन) गन्धाः पान्तु ।

ब्राह्मणाः – सौमङ्गल्यं चास्तु ।

यजमानः – (अक्षत) अक्षताः पान्तु ।

ब्राह्मणाः – आयुष्यमस्तु ।

यजमानः – (पुष्प) पुष्पाणि पान्तु ।

ब्राह्मणाः – सौश्रियमस्तु ।

यजमानः – (सुपारी-पान) सफलताम्बूलानि पान्तु ।

ब्राह्मणाः – ऐश्वर्यमस्तु ।

यजमानः – (दक्षिणा) दक्षिणाः पान्तु ।

ब्राह्मणाः – बहुदेयं चास्तु ।

यजमानः – (जल) आपः पान्तु ।

ब्राह्मणाः – स्वर्चितमस्तु ।

यजमानः – (हाथ जोड़कर) दीर्घमायुः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिः श्रीर्यशो विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं बहुधनं चायुष्यं चास्तु ।

ब्राह्मणाः – तथास्तु ।

यजमानः – (अक्षत लेकर) यं कृत्वा सर्ववेदयज्ञ क्रिया करण-कर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते, तमहमोङ्कारमादिं कृत्वा ऋग्यजुः सामाथर्वाशीर्वचनं बहुऋषिमतं समनुज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये, वाच्यताम्-३ इति विप्राः ।

ॐ द्रविणोदाः पिपीषति जुहोत प्रचतिष्ठत । नेष्ट्रादृतुभिरिष्यत ॥१॥ सवितात्त्वा सवानाᳪ सुवतामग्निर्गृहपतीनाᳪ सोमोव्वनस्पतीनाम् । बृहस्पतिर्व्वाच ऽइन्द्रो ज्ज्यैष्ठ्याय रुद्रः पशुब्भ्यो मित्रः सत्यो व्वरुणो धर्म्मपतीनाम् ॥२॥ न तद्रक्षाᳪसि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमजᳪ ह्येतत् । यो बिभर्ति दाक्षायणᳪ हिरण्यᳪ स देवेषु कृणुते दीर्घ मायुः स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः ॥३॥ उच्चा ते जातमन्धसो दिवि सद्भूम्यां ददे । उग्रᳪ शर्म्म महि श्रवः ॥४॥ उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे । अभि देवाँ२ऽ इयक्षते ॥५॥

यजमानः – व्रतजपनियमतपः स्वाध्याय क्रतु-शम-दम-दया-दान-विशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम् ।

ब्राह्मणाः - समाहितमनसः स्मः ।

यजमानः - प्रसीदन्तु भवन्तः ।

ब्राह्मणाः - प्रसन्नाः स्मः ।

पात्रद्वयं संस्थाप्य —

प्रथम पात्रे - ॐ शान्तिरस्तु । ॐ पुष्टिरस्तु । ॐ तुष्टिरस्तु । ॐ वृद्धिरस्तु । ॐ अविघ्नमस्तु । ॐ आयुष्यमस्तु । ॐ आरोग्यमस्तु । ॐ शिवमस्तु । ॐ शिवं कर्मास्तु । ॐ कर्मसमृद्धिरस्तु । ॐ धर्मसमृद्धिरस्तु । ॐ वेदसमृद्धिरस्तु । ॐ शास्त्र समृद्धिरस्तु । ॐ धनधान्यसमृद्धिरस्तु ॐ पुत्रपौत्रसमृद्धिरस्तु । ॐ इष्टसम्पदस्तु ।

द्वितीय पात्रे - ॐ अरिष्टनिरसनमस्तु । ॐ यत्पापं रोगोऽशुभमकल्याणं तद् दूरे प्रतिहतमस्तु ।

पुनः प्रथम पात्रे - ॐ यच्छ्रेयस्तदस्तु । ॐ उत्तरे कर्मणि निर्विघ्नमस्तु । ॐ उत्तरोत्तरमहरहरभिवृद्धिरस्तु । ॐ उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्ताम् । ॐ तिथिकरणमुहूर्त नक्षत्रग्रहलग्नसम्पदस्तु। ॐ तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रग्रहलग्नाधिदेवताः प्रीयन्ताम् । ॐ तिथिकरणे समुहूर्ते सनक्षत्रे सग्रहे सलग्ने साधिदेवते प्रीयेताम् । ॐ दुर्गा पाञ्चाल्यौ प्रीयेताम् । अग्निपुरोगा विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम् । इन्द्रपुरोगा मरुद्गणाः प्रीयन्ताम् । ॐ ब्रह्मपुरोगाः सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम् । ॐ विष्णुपुरोगाः सर्वे देवाः प्रीयन्ताम् । ॐ माहेश्वरीपुरोगा उमामातरः प्रीयन्ताम् । ॐ वसिष्ठपुरोगा ऋषिगणाः प्रीयन्ताम् । ॐ अरुन्धतीपुरोगा एकपत्न्यः प्रीयन्ताम् । ॐ ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम् । ॐ श्रीसरस्वत्यौ प्रीयेताम् । ॐ श्रद्धामेधे प्रीयेताम् । ॐ भगवती कात्यायनी प्रीयताम् । ॐ भगवती माहेश्वरी प्रीयताम् । ॐ भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम् । ॐ भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम् । ॐ भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम् । ॐ भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम् । ॐ भगवन्तौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम् । ॐ सर्वाः कुलदेवताः प्रीयन्ताम् । ॐ सर्वा ग्रामदेवताः प्रीयन्ताम् । ॐ सर्वा इष्टदेवताः प्रीयन्ताम् ।

द्वितीय पात्रे - ॐ हताश्च ब्रह्मद्विषः । ॐ हताश्च परिपन्थिनः । ॐ हताश्च विघ्नकर्तारः । ॐ शत्रवः पराभवं यान्तु । ॐ

शाम्यन्तु घोराणि । ॐ शाम्यन्तु पापानि । ॐ शाम्यन्त्वीतयः । ॐ शाम्यन्तूपद्रवाः ।

प्रथम पात्रे - ॐ शुभानि वर्धन्ताम् । ॐ शिवा आपः सन्तु । ॐ शिवा ऋतवः सन्तु । ॐ शिवा अग्नयः सन्तु । ॐ शिवा आहुतयः सन्तु । ॐ शिवा वनस्पतयः सन्तु । ॐ शिवा औषधयः सन्तु । ॐ शिवा अतिथयः सन्तु । ॐ अहोरात्रे शिवे स्याताम् ।

ॐ निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽ ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥

ॐ शुक्राङ्गारकबुधबृहस्पतिशनैश्चरराहुकेतुसोमसहित आदित्यपुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम् । ॐ भगवान्नारायणः प्रीयताम् । ॐ भगवान्पर्जन्यः प्रीयताम् । ॐ भगवान्स्वामी महासेनः प्रीयताम् । ॐ पुरोऽनुवाक्यया यत्पुण्यं तदस्तु । ॐ याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु । ॐ वषट्कारेण यत्पुण्यं तदस्तु । ॐ प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु ।

यजमान:- ॐ एतत्कल्याणयुक्तं पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये ।

ब्राह्मणा: - वाच्यताम् ३॥

यजमान: - ॐ ब्राह्मं पुण्यमहर्यच्च सृष्ट्युत्पादनकारकम् ।
वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः ॥

भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः पुण्यं पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु ।

ब्राह्मणा: - ॐ पुण्याहम् ३॥

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः ।
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीह मा ॥

यजमान: - पृथिव्यामुद्धृतायां तु यत्कल्याणं पुरा कृतम् ॥
ऋषिभिः सिद्ध गन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः ।

भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु ।

ब्राह्मणा: - ॐ कल्याणम् ३॥

ॐ यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः ।
ब्रह्मराजन्याभ्याꣳ शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च ।

प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृद्ध्यतामुप मादो नमतु ।

यजमानः –ॐ सागरस्यतु या ऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृता ।
सम्पूर्णा सुप्रभावा च तां चः ऋद्धिं ब्रुवन्तु नः ॥
भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु ।

ब्राह्मणाः – ॐ ऋद्ध्यताम् ३॥
ॐ सत्रस्य ऋद्धिरस्यगन्म ज्योतिरमृता अभूम । दिवं पृथिव्या अध्याऽरुहामाविदाम देवान्त्स्वर्ज्योतिः ॥

यजमानः – ॐ स्वस्तिस्तु याऽविनाशाख्या पुण्यकल्याणवृद्धिदा ।
विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्तिं ब्रुवन्तु नः ।
भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणाय अमुकर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु ।

ब्राह्मणाः – ॐ आयुष्मते स्वस्ति ३॥
ॐ स्वस्ति नऽ इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥

यजमानः – ॐ समुद्रमथनाज्जाता जगदानन्दकारिका ।
हरिप्रिया च माङ्गल्या तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः ॥
भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः श्रीरस्तु इति भवन्तो ब्रुवन्तु ।

ब्राह्मणाः – ॐ अस्तु श्रीः ।
ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विश्वनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणामु म्मऽ इषाण सर्वलोकं मऽ इषाण ॥

यजमानः – ॐ मृकण्डसूनोरायुर्यद् ध्रुवलोमशयोस्तथा ।
आयुषा तेन संयुक्ता जीवेम शरदः शतम् ॥

ब्राह्मणाः – ॐ शतं जीवन्तु भवन्तः ३॥

ॐ शतमिन्नु शरदोऽ अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम् ।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः ॥

यजमानः – ॐ शिवगौरीविवाहे या या श्रीरामेनृपात्मजे ।
धनदस्य गृहे या श्रीरस्माकं सास्तु सद्मनि ॥

ब्राह्मणाः – ॐ अस्तु श्रीः ३॥
ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीय ।
पशूनाᳩ रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा ॥

यजमानः – प्रजापतिर्लोकपालो धाता ब्रह्मा च देवराट् ।
भगवाञ्छाश्वतो नित्यं स नो रक्षतु सर्वतः ॥

ब्राह्मणाः – ॐ भगवान् प्रजापतिः प्रीयताम् ।
ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता वभूव ।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽ अस्तु वयᳩ स्याम पतयो रयीणाम ॥

यजमानः – आयुष्मते स्वस्तिमते यजमानाय दाशुषे ।
श्रिये दत्ताशिषः सन्तु ऋत्विग्भिर्वेदपारगैः ॥
देवेन्द्रस्य. यथा स्वस्ति यथा स्वस्ति गुरोर्गृहे ।
एकलिङ्गे यथा स्वस्ति तथा स्वस्ति सदा मम ॥

ब्राह्मणाः – ॐ आयुष्मते स्वस्ति ।
ॐ प्रति पन्थामपद्महि स्वस्तिगामनेहसम् ।
येन विश्वाः परि द्विषो वृणक्ति विन्दते व्वसु ॥
ॐ पुण्याहवाचनसमृद्धिरस्तु ॥

यजमानः – अस्मिन् पुण्याहवाचने न्यूनातिरिक्तो यो विधिरुपविष्टब्राह्मणानां वचनात् श्रीमहागणपतिप्रसादाच्च परिपूर्णोऽस्तु ।

ब्राह्मणाः - अस्तु परिपूर्णः ।

दक्षिणा संकल्पः - कृतस्य पुण्याहवाचनकर्मणः समृद्ध्यर्थं पुण्याहवाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो इमां दक्षिणां विभज्य अहं दास्ये ।

ब्राह्मणाः – ॐ स्वस्ति ।

अभिषेकः

अभिषेके पत्नी वामतः —

पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः ।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥१॥
ॐ पञ्च नद्यःसरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः ।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित् ॥२॥
ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो वरुणस्य
ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद ॥३॥
ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः ।
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा ॥४॥
ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।
सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पते ष्ट्वासाम्राज्येना-
भिषिञ्चाम्यसौ ॥५॥
देवस्यत्त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्ब्बाहुब्भ्यां पुष्णोहस्ताब्भ्याम् ।
सरस्वत्यै व्वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्म्राज्ज्येनाभिषिञ्चामि ॥६॥
ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।
अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभि षिञ्चामि सरस्वत्यै
भैषज्येन वीर्यायान्नाद्यायाभि षिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै
यशसेऽभिषिञ्चामि ॥७॥
ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव । यद्भद्रंतन्न
आ सुव ॥८॥
ॐ धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः ।
सचेतसो विश्वेदेवा यज्ञं प्रावन्तु नः शुभे ॥९॥
ॐ त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄँः पाहि शृणुधी गिरः ।
रक्षा तोकमुतत्मना ॥१०॥
ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः ।
प्र प्रदातारं तारिष ऊर्ज्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ॥११॥

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः
शान्तिरोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म
शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥१२॥
यतो यतः समीहसे ततो नोऽ अभयं कुरु ।
शं न्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥१३॥
सुशान्तिर्भवतु ।
सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः ।
एते-त्वामभिषिञ्चन्तु सर्वकामार्थसिद्धये ॥
शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु । अमृताभिषेकोऽस्तु ॥

षोडशमातृका-चक्रम्

पूर्व

आत्मनः कुलदेवताः १६	लोकमातरः १२	देवसेना ८	मेधा ४
तुष्टिः १५	मातरः ११	जया ७	शची ३
पुष्टिः १४	स्वाहा १०	विजया ६	पद्मा २
धृतिः १३	स्वधा ९	सावित्री ५	गौरी १ गणेश

अथ षोडशमातृकापूजनम् ।

यजमानः देशकालौ सङ्कीर्त्य 'करिष्यमाणामुककर्माङ्गत्वेन षोडशमातृकापूजनं करिष्ये' इति सङ्कल्प्य, आग्नेय्यां पीठे (कोष्ठषोडशके) संस्थापितासु प्रतिमास्वक्षतपुञ्जेषु वा प्राक्संस्था उदक्संस्था वा सगणाधिपा गौर्यादिषोडशमातृकाः संस्थापयेत् ।

गणेश – ॐ गणानां त्वा गणपतिᳬ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिᳬ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिर्ठ० हवामहे व्वसो मम । आहमजानि गर्ब्भधमा त्वमजासि गर्ब्भधम् ॥

समीपे मातृवर्गस्य सर्वविघ्नहरं सदा ।
त्रैलोक्यवरदं देवं गणेशं स्थापयाम्यहम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः गणपतिमावाहयामि स्थापयामि ॥१॥

गौरी – ॐ आयं गौः पृश्निरक्क्रमीदसदन्नमातरं पुरः । पितरं च प्प्रयन्त्स्वः ॥

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां भैरवप्रियाम् ।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्य्यै नमः गौरीमावाहयामि स्थापयामि ॥२॥

पद्मा – ॐ हिरण्यरूपा ऽउषसो व्विरोक ऽउभाविन्द्रा ऽउदिथः सूर्य्यश्च । आरोहतं व्वरुण मित्र गर्त्तं ततश्चक्षाथाम-दितिं दितिं च मित्रोऽसि व्वरुणोऽसि ॥

पद्मिनीं पद्मवदनां पद्मनाभो-परिस्थिताम् ।
जगत्प्रियां पद्मवासां पद्मामावाहयाम्यहम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः पद्मायै नमः पद्मामावाहयामि स्थापयामि ॥३॥

शची – ॐ निवेशनः सङ्गमनो व्वसूनां व्विश्श्वा रूपाऽभिचष्टे शचीभिः देव ऽइव सविता सत्त्यधर्म्मेन्द्रो न तस्थौ समरे पथीनाम् ॥

दिव्यरूपां विशालाक्षींशुचिमण्डलधारिणीम् ।
रत्नमुक्ताद्यलङ्कारां शचीमावाहयाम्यहम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः शच्यै नमः शचीमावाहयामि स्थापयामि ॥४॥

मेधा – ॐ मेधां मे व्वरुणो ददातु मेधामग्निः प्प्रजापतिः । मेधामिन्द्रश्च व्वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा ॥

विश्वस्मिन् भूरिवरदां जरां निर्जरसेविताम् ।
बुद्धिप्रबोधिनीं सौम्यां मेधामावाहयाम्यहम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः मेधायै नमः मेधामावाहयामि स्थापयामि ॥५॥

सावित्री – ॐ सविता त्त्वा सवानाᳬ सुवतामग्निर्ग्गृहपतीनाᳬ सोमो व्वनस्प्पतीनाम् । बृहस्प्पतिर्व्वाच ऽइन्द्रो ज्येष्ठ्याय रुद्रः पशुब्भ्यो मित्रः सत्त्यो व्वरुणो धर्म्मपतीनाम् ॥

जगत्सृष्टिकरीं धात्रीं देवीं प्रणवमातृकाम् ।
वेदगर्भां यज्ञमयीं सावित्रीं स्थापयाम्यहम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः सावित्र्यै नमः सावित्रीमावाहयामि स्थापयामि ॥६॥

विजया – ॐ व्विज्ज्यं धनुः कपर्द्दिनो व्विशल्ल्यो बाणवाँ २ ॥ उत । अनेशन्नस्य या ऽइषव ऽआभुरस्य निषङ्गधिः ॥

सर्वास्त्रधारिणीं देवीं सर्वाभरणभूषिताम् ।
सर्वदेवनुतां ध्यातां विजयां स्थापयाम्यहम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः विजयायै नमः विजयामावाहयामि स्थापयामि ॥७॥

जया – ॐ बह्वीनां पिता बहुरस्य पुत्रश्चिश्च्श्चा कृणोति समनावगत्य । इषुधिः सङ्काः पृतनाश्च सर्व्वाः पृष्ठे निनद्धो जयति प्प्रसूतः ॥

सुरारिमथिनीं देवीं देवानामभयप्रदाम् ।
त्रैलोक्यवन्दितां देवीं जयामावाहयाम्यहम् ॥
ॐ भूर्भुव : स्वः जयायै नमः जयामावाहयामि स्थापयामि ॥८॥

देवसेना – ॐ इन्द्र ऽआसान्नेता बृहस्पतिर्द्दक्षिणा यज्ञः पुर ऽएतु सोमः । देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम् ॥

मयूरवाहनां देवीं खड्गशक्तिधनुर्धराम् ।
आवाहये देवसेनां तारकासुरमर्दिनीम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः देवसेनायै नमः देवसेना मावाहयामि स्थापयामि ॥९॥

स्वधा – ॐ पितृब्भ्यः स्वधायिब्भ्यः स्वधा नमः पितामहेब्भ्यः स्वधायिब्भ्यः स्वधा नमः प्प्रपितामहेब्भ्यः स्वधायिब्भ्यः स्वधा नमः ।

अक्षन् पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धद्ध्वम् ॥

कव्यमादाय सततं पितृभ्यो या प्रयच्छति ।
पितृलोकार्चितां देवीं स्वधामावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधायै नमः स्वधामावाहयामि स्थापयामि ॥१०॥

स्वाहा – ॐ स्वाहा प्पाणेब्भ्यः साधिपतिकेब्भ्यः । पृथिव्यै स्वाहाग्नये स्वाहान्तरिक्षाय स्वाहा व्वायवे स्वाहा । दिवे स्वाहा सूर्य्याय स्वाहा ॥

हविर्गृहीत्वा सततं देवेभ्यो या प्रयच्छति ।
तां दिव्यरूपां वरदांस्वाहामावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहायै नमः स्वाहामावाहयामि स्थापयामि ॥११॥

मातृ – ॐ आपो ऽअस्मान् मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्प्वः पुनन्तु । व्विश्श्वठं० हि रिप्रं प्पवहन्ति देवीरुदिदाब्भ्यः शुचिरा पूत ऽएमि । दीक्षातपसोस्तनूरसि तां त्वा शिवाꣳ शग्मां परिदधे भद्रं व्वर्ण्णं पुष्यन् ॥

आवाहयाम्यहं मातृः सकला लोकपूजिताः ।
सर्वकल्याण रूपिण्योवरदा दिव्यभूषिताः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मातृभ्यो नमः मातृरावाहयामि स्थापयामि ॥१२॥

लोकमातरः – ॐ रयिश्श्च मे रायश्श्च मे पुष्टं च मे पुष्टिश्श्च मे व्विभु च मे प्प्रभु च मे पूर्ण्णं च मे पूर्ण्णतरं च मे कुयवं च मेऽक्षितं च मेऽन्नं च मेऽक्षुच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥

आवाहये लोकमातृर्जयन्तीप्रमुखाः शुभाः ।
नानाभीष्टप्रदाः शान्ताः सर्वलोकहितावहाः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः लोकमातृभ्यो नमः लोकमातृरावाहयामि स्थापयामि ॥१३॥

धृतिः – ॐ यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्श्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु । यस्मान्न ऽऋते किञ्चन कर्म्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥

सर्वहर्षकरीं देवीं भक्तानामभयप्रदाम् ।
हर्षोत्फुल्लास्यकमलां धृतिमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः धृत्यै नमः धृतिमावाहयामि स्थापयामि ॥१४॥

पुष्टि – ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम् ।
उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीय माऽमृतात् ॥

पोषयन्ती जगत्सर्वं शिवां सर्वार्थसाधिकाम् ।
बहुपुष्टिकरीं देवीं पुष्टिमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः पुष्ट्यै नमः पुष्टिमावाहयामि स्थापयामि ॥१५॥

तुष्टि – ॐ अङ्गान्यात्मन् भिषजा तदश्विनात्मानमङ्गैः समधात् सरस्वती । इन्द्रस्य रूपठं० शतमानमायुश्चन्द्रेण ज्ज्योतिरमृतं दधानाः ॥

आवाहयामि सन्तुष्टिं सूक्ष्मवस्त्रान्वितां शुभाम् ।
सन्तोषभावयित्रीं च रक्षन्तीमध्वरं शुभम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः तुष्ट्यै नमः तुष्टिमावाहयामि स्थापयामि ॥१६॥

आत्मनः कुलदेवता – ॐ प्पाणाय स्वाहाऽपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा चक्षुषे स्वाहा श्श्रोत्राय स्वाहा व्वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा ॥

आत्मनो देवतां देवीमैश्वर्यसुखदायिनीम् ।
वंशवृद्धिकरीं नित्यामाह्वये च कुलाम्बिकाम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकनाम्न्यै आत्मनः कुलदेवतायै नमः अमुकनाम्नीमात्मनः कुलदेवतामावाहयामि स्थापयामि ॥१७॥

'गौर्यादिषोडशमातृभ्यो नमः' इत्यावाह्य 'ॐ मनो जूतिः०' इति प्रतिष्ठाप्य षोडशभिरुपचारैः पूजनं कुर्यात् ।

पुष्पाञ्जलिः – गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया । देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः ॥ धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता । गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्यास्तु षोडश ॥

मुखे ते ताम्बूलं नयनयुगले कज्जलकला,
ललाटे काश्मीरं विलसति गले मौक्तिकलता ।
स्फुरत्कांची शाटी पृथुकटितटी हाटकमयी,
भजामित्वां गौरीं नगपतिकिशोरीमविरतम् ॥

ततः ॐ आयुरारोग्यमैश्वर्यं दद्ध्वं मातरो मम । निर्विघ्नं सर्वकार्येषु कुरुध्वं सगणाधिपाः ॥ 'अनया पूजया सगणेशगौर्यादि षोडशमातरः प्रीयन्ताम्' इति वदेत् ।

॥ इति षोडशमातृकापूजनम् ॥

वसोर्द्धारा-पूजनम्

यजमानः – आचमनं-प्राणायामादिकं कृत्वा सङ्कल्पं कुर्यात्। देशकालौ सङ्कीर्त्य 'करिष्यमाणामुककर्माङ्गत्वेन वसोर्द्धारापूजनं करिष्ये' इति सङ्कल्प्य मातृपूजासन्निहिते कुड्ये यथाचारं कुङ्कुमेन एकं द्वौ त्रीन् चतुरः पञ्च षट् सप्त बिन्दूनधोऽधः क्रमेण कृत्वा तप्तघृतेनसप्तसु बिन्दुषु सप्तधाराःपञ्चधारा वा यथासम्भवं प्राक्संस्था उदक्संस्था वा प्रादेशमात्रीः कुर्यात् । तत्र मन्त्रः — ॐ व्वसोः पवित्रमसि शतधारं व्वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम् । देवस्त्वा सविता पुनातु व्वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा । ततः 'ॐ कामधुक्षः' इत्येतावतैव मन्त्रेण ता धारा (सप्तबिन्दून्) ऊर्ध्वभागे गुडादिना मिथः श्लिष्टाः कुर्यात् । ततस्तेषु सप्तसु बिन्दुषु क्रमेण देवता आवाहयेत् ।

वसोर्द्धारा-चक्रम्

पूर्व

卐 ॥ श्रीः ॥ 卐
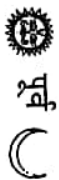
सरस्वतीः, प्रज्ञाः, स्वाहाः, मेधाः, धृतिः, लक्ष्मीः, श्रीः

१. श्रीः – ॐ मनसः काममाकूतिं व्वाचः सत्यमशीय । पशूनाᳩ रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा ॥

सुवर्णपद्महस्ता तां विष्णोर्वक्षःस्थले स्थिताम् ।
त्रैलोक्यवल्लभां देवीं श्रियमावाहयाम्यहम् ॥
ॐ भू० श्रियै नमः श्रियमावाहयामि स्थापयामि ॥१॥

२. लक्ष्मी – ॐ श्रीश्च्च ते लक्ष्मीश्च्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुं म ऽइषाण सर्व्वलोकं म ऽइषाण ॥

शुभलक्षणसम्पन्नां क्षीरसागरसंवृताम् ।
चन्द्रस्य भगिनीं सौम्यां लक्ष्मीमावाहयाम्यहम् ॥
ॐ भू० लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि ॥२॥

३. धृति – ॐ भद्रं कर्ण्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः । स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाᳩ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥

सर्वहर्षकरीं देवीं भक्तानामभयप्रदाम् ।
हर्षोत्फुल्लास्यकमलां धृतिमावाहयाम्यहम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः धृत्यै नमः धृतिमावाहयामि स्थापयामि ॥३॥

४. मेधा – ॐ मेधांमेव्वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः । मेधामिन्द्रश्च्च व्वायुश्च्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा ॥

सदसत्कार्यकरणक्षमां बुद्धिविशालिनीम् ।
भव्यकार्येशुभकरीं मेधामावाहयाम्यहम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः मेधायै नमः मेधामावाहयामि स्थापयामि ॥४॥

स्वाहा – ॐ प्राणाय स्वाहाऽपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा चक्षुषे स्वाहा श्श्रोत्राय स्वाहा व्वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा ॥

हविर्गृहीत्वा सततं देवेभ्यो या प्रयच्छति ।
तां दिव्यरूपां वरदां स्वाहामावाहयाम्यहम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहायै नमः स्वाहामावाहयामि स्थापयामि ॥५॥

प्रज्ञा – ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः । पितरं च प्रयन्त्स्वः ॥

प्रणवस्यापि जननीं रसनाग्रस्थितां सदा ।
प्रागल्भ्यदात्रीं चपलां प्रज्ञामावाहयाम्यहम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः प्रज्ञायै नमः प्रज्ञामावाहयामि स्थापयामि ॥६॥

सरस्वती – ॐ पावका नः सरस्वती व्वाजेभिर्व्वाजिनीवती । यज्ञं व्वष्टुधियावसुः ॥

सरस्वतीं सुरैर्वन्द्यां धातृपुत्रीं क्षमाकरीम् ।
विद्वज्जनस्य सत्कर्त्रीं देवीमावाहयाम्यहम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः सरस्वत्यै नमः सरस्वतीमावाहयामि स्थापयामि ॥७॥

श्रीर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती । माङ्गल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैता घृतमातरः ॥ वसोर्द्धारादेवताभ्यो नमः ।

इत्यावाह्य ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनो त्त्वरिष्टं य्यज्ञꣳ समिमं दधातु । व्विश्वे देवास ऽइह मादयन्तामोꣳ प्रतिष्ठ ॥ वसोर्द्धारादेवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु । इत्यक्षतैस्तन्त्रेण प्रतिष्ठाप्य षोडशोपचारैः पञ्चोपचारैर्वा सम्पूज्य प्रार्थयेत् ।

यदङ्गत्वेन भो देव्यः पूजिता विधिमार्गतः ।
कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन क्रतूद्भवम् ॥
या सा पद्मासनस्था विपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी,
गम्भीरावर्तनाभिः स्तनभरनमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया ।
या लक्ष्मीर्दिव्यरूपैर्मणिगणखचितैः स्नापिता हेमकुम्भैः
सा नित्यं पद्महस्ता वसतु मम गृहे सर्वमाङ्गल्ययुक्ता ॥
अनया पूजया वसोर्द्धारादेवता प्रीयन्ताम् न मम ॥

षड्विनायक पूजनम्

मोदश्चैव प्रमोदश्च सुमुखो दुर्मुखस्तथा ।
अविघ्नो विघ्नहर्ता च षडेते विघ्ननायकाः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मोदाय नमः मोदमावाहयामि स्थापयामि ॥१॥
ॐ भूर्भुवः स्वः प्रमोदाय नमः प्रमोदमावाहयामि स्थापयामि ॥२॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सुमुखाय नमः सुमुखमावाहयामि स्थापयामि ॥३॥
ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्मुखाय नमः दुर्मुखमावाहयामि स्थापयामि ॥४॥
ॐ भूर्भुवः स्वः अविघ्नाय नमः अविघ्नमावाहयामि स्थापयामि ॥५॥
ॐ भूर्भुवः स्वः विघ्नहर्त्रे नमः विघ्नहर्तारमावाहयामि स्थापयामि ॥६॥

आयुष्यमन्त्र जपम्

पूजक अञ्जलि में पुष्प ग्रहण करें तथा ब्राह्मण आयुष्यमन्त्र का पाठ करें ।

यजमानः – देशकालौ सङ्कीर्त्य 'करिष्यमाणामुककर्मणोऽमङ्गलनाशार्थमायुष्यमन्त्रजपं करिष्ये' इति सङ्कल्प्य, आयुष्य मन्त्रान् पठेत् ।

आयुष्यमन्त्र – ॐ आयुष्यं वर्चस्यꣳ रायस्पोषमौद्भिदम् । इदꣳ हिरण्यं वर्चस्वज्जैत्रायाविशतादु माम् ॥१॥

ॐ न तद्रक्षाꣳसि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमजꣳ ह्येतत् । यो बिभर्ति दाक्षायणꣳ हिरण्यꣳ स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः ॥२॥

ॐ यदाबध्नन् दाक्षायणा हिरण्यꣳ शतानीकाय सुमनस्यमानाः तन्मऽ आ बध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम् ॥३॥

अश्वस्थामादिऋषयो वशिष्ठप्रमुखास्तथा ।
मार्कण्डेप्रभृत्यः सर्वे सन्तु शिवार्चकाः ॥१॥
जमदग्निः कश्यपश्च दीर्घमायुः करोतु मे ।
अन्ये ऋषिगणा देवा इन्द्राद्याश्च सशक्तिकाः ॥२॥
भूसुराः सुतपोनिष्ठाः सत्यव्रतपरायणाः ।
दीर्घमायुः प्रयच्छन्तु सर्वकामस्य सिद्धये ॥३॥
यदायुष्यं चिरं देवाः सप्तकल्पान्तजीविनः ।
ददुस्तेनायुषा युक्ता जीवेम शरदः शतम् ॥४॥
दीर्घा नागास्तथा नद्यः समुद्रा गिरयो दिशः ।
अनन्तेनायुषा तेन जीवेम शरदः शतम् ॥५॥

सत्यानि पञ्चभूतानि विनाशरहितानि च ।
अविनाश्यायुषा तद्वज्जीवेम शरदः शतम् ॥६॥
शतं जीवन्तु भवन्तः । इत्यायुष्यमन्त्रजपः ।

पुष्पार्पणम्–आयुष्यमन्त्र श्रवण के बाद अञ्जलि के पुष्पों को सप्तघृत-मातृका-मण्डलपर अर्पण कर दें ।

दक्षिणा-संकल्प –

ॐ अद्य कृतैतदायुष्यवाचनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं चायुष्यवाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथाशक्ति मनसोद्दिष्टां दक्षणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे ।

रक्षा-विधानम्

बायें हाथ में अक्षत, पीली सरसों, द्रव्य और मौली लेकर दाहिने हाथ से ढककर नीचे लिखे मन्त्र से अभिमन्त्रित करें–

ॐ गणाधिपं नमस्कृत्य नमस्कृत्य पितामहम् ।
विष्णुं रुद्रं श्रियं देवीं वन्दे भक्त्या सरस्वतीम् ॥
स्थानाधिपं नमस्कृत्य ग्रहनाथं निशाकरम् ।
धरणीगर्भसम्भूतं शशिपुत्रं बृहस्पतिम् ॥
दैत्याचार्यं नमस्कृत्य सूर्यपुत्रं महाग्रहम् ।
राहुं केतुं नमस्कृत्य यज्ञारम्भे विशेषतः ॥
शक्राद्या देवताः सर्वाः मुनींश्चैव तपोधनान् ।
गर्गं मुनिं नमस्कृत्य नारदं मुनिसत्तमम् ॥
वसिष्ठं मुनिशार्दूलं विश्वामित्रं च गोभिलम् ।
व्यासं मुनिं नमस्कृत्य सर्वशास्त्रविशारदम् ॥
विद्याधिका ये मुनयः आचार्यांश्च तपोधनाः ।
तान् सर्वान् प्रणमाम्येवं यज्ञरक्षाकरान् सदा ॥

अब निम्नलिखित मन्त्रों से दसों दिशाओं में अक्षत तथा पीली सरसों छोड़ें–

पूर्वे रक्षतु वाराह आग्नेय्यां गरुडध्वजः ।
दक्षिणे पद्मनाभस्तु नैर्ऋत्यां मधुसूदनः ॥
पश्चिमे चैव गोविन्दो वायव्यां तु जनार्दनः ।
उत्तरे श्रीपती रक्षेदैशान्यां तु महेश्वरः ॥
ऊर्ध्वं रक्षतु धाता वो ह्यधोऽनन्तश्च रक्षतु ।
एवं दश दिशो रक्षेद् वासुदेवो जनार्दनः ॥
रक्षाहीनंतु यत्स्थानं रक्षत्वीशो ममाद्रिधिक् ॥
यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा ।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु ॥
अपक्रामन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः ।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् ।
सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे ॥

अथ साङ्कल्पिक-नान्दीश्राद्धविधिः

यजमानः – कुशाद्यासने प्राङ्मुख उपविश्य देशकालौ सङ्कीर्त्य करिष्यमाणामुककर्मणि साङ्कल्पिकनान्दीश्राद्धं करिष्ये' इति सङ्कल्प्य ।

सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः । मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः । पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः । मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः । इत्युक्त्वा सर्वत्र पात्रे सकुशयवाक्षतजलं प्रक्षिपेत् ।

आसनदानम्–सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः नान्दीश्राद्धेक्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः । मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः नान्दीश्राद्धेक्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्त्यो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः । पितृ-पितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः नान्दीश्राद्धेक्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः । मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः नान्दीश्राद्धेक्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः ।

गन्धादिदानम्—अत्रापः पान्तु । इमे वाससी सुवाससी । इमानि यज्ञोपवीतानि सुयज्ञोपवीतानि । अयं वो गन्धः सुगन्धः । इमे अक्षताः स्वक्षताः । इमानि पुष्पाणि सुपुष्पाणि । अयं वो धूपः सुधूपः । अयं वो दीपः सुदीपः । इदं नैवेद्यं सुनैवेद्यम् । इमानि ऋतुफलानि सुऋतुफलानि । इदं ताम्बूलं सुताम्बूलम् । इदं पूगीफलं सुपूगीफलम् ।

सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः । मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः । पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः । मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ।

भोजननिष्क्रयदानम्–सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्ताऽऽमान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः । मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः

नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्ताऽऽमान्ननिष्क्रियभूतं द्रव्यममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः । पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्ताऽऽमान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः । मातमह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तामान्न-निष्क्रियभूतं द्रव्यममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः ।

स-क्षीरयवकुशजलदानम्–सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम् । मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः प्रीयन्ताम् । पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम् । मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम् । ततः 'अघोराः पितरः सन्तु' इति पूर्वाग्रां जलधारां दद्यात् ।

आशीर्ग्रहणम्—यजमानः कृताञ्जलिः प्रार्थयेत्-

गोत्रन्नो वर्धतां दातारो नोऽभिवर्धन्तां वेदाः सन्ततिरेव च । श्रद्धा च नो मा व्यागमद् बहु देयं च नोऽस्तु ॥ अन्नं च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि । याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चन ॥ एताः सत्या आशिषः सन्तु । द्विजाः—'सन्त्वेताः सत्या आशिषः' ।

दक्षिणादानम्–सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्याभ्युदयिकस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलक-यव-मूलनिष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये । मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्याभ्युदयिकस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलक-यव-मूलनिष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये । पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्याभ्युदयिकस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलक-यव-मूलनिष्क्रयिणीं दक्षिणां

दातुमहमुत्सृज्ये । मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्याभ्युदयिकस्यनान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलक-यव-मूलनिष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये ।

माता-पितामही चैव तथैव प्रपितामही ।
पिता पितामहश्चैव तथैव प्रपितामहाः ॥
मातामहस्तत्पिता च प्रमातामहकस्तथा ।
एते भवन्तु मे प्रीताः प्रयच्छन्तु च मङ्गलम् ॥

ॐ इडामग्ने पुरुदꣳसꣳ सनिं गोः शश्वत्तमꣳ हवमानाय साध । स्यान्नः सुनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्त्वस्मै ॥१॥ ॐ उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे । अभि देवाँ२ ऽइयक्षते ॥२॥

यजमानः — 'अनेन नान्दीश्राद्धं सम्पन्नम्' । 'सुसम्पन्नम्' इति ब्राह्मणाः ।

विसर्जनम् — ॐ व्वाजेवाजेऽवत व्वाजिनो नो धनेषु व्विप्रा ऽअमृता ऽऋतज्ञाः । अस्य मद्ध्वः पिवत मादयद्ध्वं तृप्ता यात पथिभिर्द्देवयानैः ॥

अनुव्रजनम् — ॐ आ मा व्वाजस्य प्रसवो जगम्म्यादेमे द्यावापृथिवी व्विश्वरूपे । आ मा गन्तां पितरा मातरा चा मा सोमो ऽअमृतत्वेन गम्म्यात् ॥ विश्वेदेवाः प्रीयन्तामिति । यजमानः— 'मयाऽऽचरितेऽस्मिन् साङ्कल्पिकनान्दीश्राद्धे न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्टब्राह्मणानां वचनाच्छ्री-गणपतिप्रसादाच्च परिपूर्णोऽस्तु' । 'अस्तु परिपूर्णः' इति ब्राह्मणाः । अनेन साङ्कल्पिकनान्दीश्राद्धेन नान्दीमुखाः पितरः प्रीयन्ताम् । इति साङ्कल्पिकनान्दीश्राद्धविधिः ।

[illegible]

[illegible] कर्मा णि, पुन [illegible] [illegible] [illegible] इति वदेत् । ॐ [illegible] । दक्षिणा श्रद्धामाना [illegible] । यजमानः [illegible] सम्पूज्य, तस्य दक्षि[illegible] [illegible] दाक्षायणा हिरण्य[illegible] [illegible] आ बध्नामि शत[illegible] [illegible] आचार्यं प्रार्थयेत्—ॐ बृहस्पत [illegible] भाति क्क्रतुमज्जनेषु । यद्दीदय[illegible] [illegible] द्रविणं धेहिचित्रम् ॥ आचार्यस्तु यथा स्वर्गे [illegible] । तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्नाचार्यो भव सुव्रत ॥ यावत्कर्म समाप्येत तावत्त्वमाचार्यो भव ॥ 'भवामि' इत्याचार्यो वदेत् ।

अथ ब्रह्मवरणम् । यजमानः— 'अस्मिन् अमुकयाग-कर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैरमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे' । ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो व्वेन ऽआवः । स बुद्ध्न्या ऽउपमा ऽअस्य व्विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च व्विवः ॥ यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्ववेदविशारदः । तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम ॥

अथ सदस्यवरणम् । यजमानः— 'अस्मिन् अमुकयाग-कर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैरमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं सदस्यत्वेन त्वामहं वृणे' । ॐ सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्म्यम् । सनिं मेधामयासिषꣳ स्वाहा ॥ त्वन्नो गुरुः पिता माता त्वं प्रभुस्त्वं परायणः । आपद्विमोक्षणार्थाय सदस्यो भव मे मखे ॥

अथोपद्रष्टा वरणम् । यजमानः— 'अस्मिन् अमुकयागकर्मणि

एभिर्वरणद्रव्यैरमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं गाणपत्यत्वेन त्वामहं वृणे । ॐ गणानान्त्वा०

अथोपद्रष्टा वरणम् । यजमानः— 'अस्मिन् अमुकयागकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैरमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं उपद्रष्टृत्वेन त्वामहं वृणे' । ॐ ऋतये स्तेनहृदयं व्वैरहत्याय पिशुनं व्विविक्त्यै क्षत्तारमौपद्रष्ट्ट्यायानुक्षत्तारं बलायानुचरं भूम्ने परिष्कन्दं प्प्रियाय प्प्रियवादिनमरिष्ट्या ऽअश्वसादꣳ स्वर्गाय लोकाय भागदुघं व्वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारम् ॥ भगवन् सर्वकर्मज्ञ सर्वधर्मभृतां वर । वितते मम यज्ञेऽस्मिन्नुपद्रष्टा भव द्विज ॥

अथ ऋत्विग्वरणम् । यजमानः— 'अस्मिन् अमुकयागकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैरमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं ऋत्विक्त्वेन (होतृत्वेन) त्वामहं वृणे' । ॐ ब्राह्मणासः पितरः सोम्म्यासः शिवे नो द्यावापृथिवी ऽअनेहसा । पूषा नः पातु दुरितादृतावृधो रक्षा माकिर्न्नो ऽअघशꣳस ऽईशत ॥ भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वधर्मभृताम्बर । वितते मम यज्ञेऽस्मिन् ऋत्विक् त्वं मे मखे भव ॥

एवमेव चतुरोऽष्टौ वा द्वारपालान् वृणुयात् ।

अथ पूर्वद्वारपालवरणम् । ॐ अग्निमीडे पुरोहितम्० । ऋग्वेदः पद्मपत्राक्षो गायत्रः सोमदैवतः । अत्रिगोत्रस्तु विप्रेन्द्र द्वारपालो मखे भव ।

अथ दक्षिणद्वारपालवरणम् । ॐ इषे त्वोर्ज्जे त्त्वा० । कातराक्षो यजुर्वेदस्त्रैष्टुभो विष्णुदैवतः । काश्यपेयस्तु विप्रेन्द्र द्वारपालो मखे भव ।

अथ पश्चिमद्वारपालवरणम् । ॐ अग्न आयाहि वीतये० । सामवेदस्तु पिङ्गाक्षो जाग्रतः शक्रदैवतः । भारद्वाजस्तु विप्रेन्द्र द्वारपालो मखे भव ॥

अथ उत्तरद्वारपालवरणम् । ॐ शन्नो देवीः० । बृहन्नेत्रोऽथर्ववेदोऽनुष्टुभो रुद्रदैवतः । वैशम्पायन विप्रेन्द्र द्वारपालो मखे भव ॥

अथ मधुपर्कः

देशकालकीर्तनान्ते यजमानः वृतान् ऋत्विजः मधुपर्केणाऽहं अर्चयिष्ये ॥ स्वशाखया (वा यजमानशाखया सर्वेषां मधुपर्कः) मधुपर्कं कुर्यात् ॥ तद्यथा ॥ ततः आचार्यादीनेकतन्त्रेणाऽऽसनेषु प्राङ्मुखानुपवेश्य ॥ यजमानः स्वयं च उदङ्मुख उपविश्याऽऽचम्य प्राणानायम्य (कृताञ्जलिपुटः यजमानः) ॐ साधु भवन्तः आसताम् अर्चयिष्यामो भवतः ॥ (ब्राह्मणाः) ॐ अर्चय ॥ ऋत्विक्सङ्ख्यया विष्टरान् गृहीत्वा ॥ (आचार्यः) ॐ विष्टराः विष्टराः विष्टराः ॥ (यजमानः) विष्टराः प्रतिगृह्यन्ताम् ॥ (ब्राह्मणाः) ॐ विष्टराः प्रतिगृह्णीमः ॥ ततो यजमानहस्ताद्विष्टरं गृहीत्वा ॥ ॐ वर्ष्मोऽस्मि समानानामुद्यतामिव सूर्यः ॥ इमं तमभितिष्ठामि यो मा कश्चाभिदासति ॥ इति मन्त्रेण ब्राह्मणाः प्रत्येकं विष्टरं उदगग्रं स्वासनतले स्थापयेयुः ॥ ततो यजमानः पाद्यपात्रमादाय ॥ (आचार्यः) ॐ पाद्यानि पाद्यानि पाद्यानि ॥ (यजमानः) पाद्यानि प्रतिगृह्यन्ताम् ॥ (ब्राह्मणाः) पाद्यानि प्रतिगृह्णीमः ॥ ततो यजमानहस्तात् पाद्यपात्रमादाय ॥ ॐ विराजो दोहोऽसि विराजो दोहमशीय मयि पाद्यायै विराजो दोहः ॥ इति मन्त्रेण प्रथमं दक्षिणचरणं तत्पश्चाद्वामचरणं च क्रमेण स्वयं प्रक्षालयेत् ॥ ततः पूर्ववद्विष्टरान् गृहीत्वा पूर्ववन्मन्त्रं पठित्वा (ब्राह्मणाः) स्वस्तचरणयोरधस्तादुत्तराग्रं दद्युः ॥ (ततो आचार्यः) अर्घाः अर्घाः अर्घाः ॥ (यजमानः) अर्घाः प्रतिगृह्यन्ताम् ॥ (ब्राह्मणाः) अर्घान् प्रतिगृह्णीमः ॥ ॐ आपः स्थ युष्माभिः सर्वान् कामानवाप्नवानि ॥ इति मन्त्रेण (ब्राह्मणाः) अर्घपात्रं शिरसाभिवन्द्य ॐ समुद्रं वः प्रहिणोमि स्वां योनिमभिगच्छत ॥ अरिष्टस्माकं वीरा मा पराचेतिमत्पयः ॥ इति मन्त्रं पठनैशान्यां दिशि जलं क्षिपेत् ॥ ततो यजमानः आचमनीयान्याचमनीयान्याचमनीयानि-आचमनीयानि प्रतिगृह्यन्ताम् ॥ (ब्राह्मणाः) आचमनीयानि प्रतिगृह्णीमः ॥ ततो यजमानः हस्तादाचमनीयपात्रमादाय ॥ ॐ आ मा गन्यशसा सꣳसृज वर्चसा तं मा कुरु प्रियं प्रजानामधिपतिं पशूनामरिष्टिं तनूनाम् ॥ इति मन्त्रेण

सकृदाचामेत् द्विः तूष्णीम् ॥ ततो यजमानः कांस्यपात्रे दधि, मधु-घृतानि कांस्यपात्रपिहितान्यादाय ॥ (आचार्यः) मधुपर्का मधुपर्का मधुपर्काः ॥ (यजमानः) मधुपर्काः प्रतिगृह्यन्ताम् ॥ (ब्राह्मणाः) मधुपर्कान् प्रतिगृह्णीमः ॥ यजमानहस्तस्थमेव तत्पात्रमुद्घाट्य ॥ ॐ मित्रस्य त्वा चक्षुषा प्रतीक्षे इति मन्त्रेण वीक्ष्य ॥ ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ॥ इति मन्त्रेण गृहीत्वा सव्ये पाणौ निधाय दक्षिणानामिकया ॥ ॐ नमः श्यावाश्यायाऽन्नशने यत्त ऽआविद्धं तत्ते निष्कृन्तामि ॥ इति मन्त्रेण प्रादक्षिण्येन मधुपर्कमालोड्य किञ्चितद्भूमौ क्षिप्त्वा पुनरेवं द्विवारं अनेन मन्त्रेणाऽऽलोड्य भूमौ निःक्षिपेत् (ततः पात्रं भूमौ निधाय) ॥ ॐ यन्मधुनो मधव्यं परमꣳ रूपमन्नाद्यं तेनाहं मधुनो मधव्येन परमेण रूपेणाऽन्नाद्येन परमो मधव्योऽन्नादोऽसानि ॥ इति मन्त्रेणाऽनामिकांगुष्ठाभ्यां त्रिः प्राश्य प्रतिप्राशने चैतन्मन्त्रपाठः ॥ शेषमसञ्चरदेशे धारयेत् ॥ ततः आचम्याऽङ्गानि स्पृशेत् ॥ ॐ वाङ्मऽम आस्येऽस्तु इति काराग्रेण मुखालम्भनम् ॥ ॐ नसोर्मे प्राणोऽस्तु ॥ इति दक्षिणवामनासारन्ध्रद्वये ॥ ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु ॥ इति दक्षिणवामचक्षुषी । ॐ कर्णयो र्मे क्षोत्रमस्तु इति दक्षिणवामकर्णयोः॥ ॐ बाह्वो र्मे बलमस्तु ॥ इति दक्षिणवामजान्वोः ॥ ॐ ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु ॥ इति युगपदूरू ॥ ॐ अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु ॥ इति शिरःप्रभृति सर्वाङ्गाणि उभाभ्यां हस्ताभ्यामालभ्याऽचामेत् ॥ ततो गावो गावो गावः इति यजमानेनोक्ते (ब्राह्मणाः) ॐ माता रूद्राणां दुहिता वसूनाꣳ स्वसाऽऽदित्यानाममृतस्य नाभिः ॥ प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मा गामनागामदितिं वधिष्ट मम चामुष्ययजमानस्योभयोः पाप्मा हतः ॥ ॐ उत्सृजत तृणान्यतु इत्युच्चैर्ब्रूयात् ॥ गोदानम् ॥ कृतस्य मधुपर्कादिपूजनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थम् इमानि गोनिष्क्रयभूतानि द्रव्याणि नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दातुमहमुत्सृजे ॥

इति ऋत्विजो वृत्वा प्रार्थयेत् ॥

ब्राह्मण प्रार्थना

ब्राह्मणाः सन्तु मे शास्ताः पापात्पान्तु समाहिताः ।
देवानां चैव दातारस्त्रातारः सर्वदेहिनाम् ॥१॥
जपयज्ञैस्तथा होमैर्दानैश्च विविधैः पुनः ।
देवानाञ्च ऋषीणाञ्चतृप्त्यर्थं याजकाः स्मृताः ॥२॥
येषां देहे स्थिता वेदाः पावयन्ति जगत्त्रयम् ।
रक्षन्तु सततं ते मां अस्मिन् यज्ञे व्यवस्थिताः ॥३॥
ब्राह्मणा जङ्गमं तीर्थं त्रिषु लोकेषु विश्रुतम् ।
येषां वाक्योदकेनैव शुद्ध्यन्ति मलिना जनाः ॥४॥
पावनाः सर्ववर्णानां ब्राह्मणा ब्रह्मरूपिणः ।
सर्वकर्मरता नित्यं वेदशास्त्रार्थकोविदाः ॥५॥
श्रोत्रियाः सत्यवाचश्च देवध्यानरताः सदा ।
यद्वाक्यामृतसंसिक्ता ऋद्धिं यान्ति नरद्रुमाः ॥६॥
अङ्गीकुर्वन्तु कर्मैतत्कल्पद्रुमसमाशिषः ।
यथोक्तनियमैर्युक्ता मन्त्रार्थे स्थिरबुद्धयः ॥७॥
यत्कृपालोचनात् सर्वा ऋद्धयो वृद्धिमाप्नुयुः ।
अस्मिन् यागे मया पूज्याः सन्तु मे नियमान्विताः ॥८॥
अक्रोधनाः शौचपराः सततं ब्रह्मचारिणः ।
ग्रहध्यानरता नित्यं प्रसन्नमनसः सदा ॥९॥
अदुष्टभाषणाः सन्तु मा सन्तु परनिन्दकाः ।
ममापि नियमा ह्येते भवन्तु भवतामपि ॥१०॥
ऋत्विजश्च यथा पूर्वं शक्रादीनां मखेऽभवन् ।
यूयं तथा मे भवत ऋत्विजो द्विजसत्तमाः ॥११॥
अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्चिता मया ।
सुप्रसन्नैः प्रकर्तव्यं कर्मेदं विधिपूर्वकम् ॥१२॥

ततो यजमानदक्षिणहस्ते कङ्कणबन्धनम् – ॐ यदाबध्नन् दाक्षायणा हिरण्यꣳ शतानीकाय सुमनस्यमानाः । तन्म ऽआ बध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम् ॥

ततो यजमानपन्त्याः वामहस्ते कङ्कणबन्धनम् ।

ॐ तं पत्नीभिरनु गच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वा हिरण्यैः ।
नाकं गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठे ऽअधि रोचने दिवः ॥
अमुकयज्ञफलावाप्त्यै कङ्कणं सूत्रनिर्मितम् ।
हस्ते बध्नामि सुभगे त्वं जीव शरदां शतम् ॥

यजमानः – 'यथाविहितं कर्म कुरु'। (एकतन्त्रपक्षे-कुरुध्वम्) ।

ब्राह्मणः – 'यथाज्ञानं करवाणि' । (एकतन्त्र-पक्षे करवामः) ।

इत्याचार्य-वरणम् ।

अथ दिग्रक्षणम्

आचार्यः – देशकालौ सङ्कीर्त्य 'अस्मिन् अमुकयागकर्मणि यजमानेन वृतोऽहमाचार्यकर्म करिष्ये' इति सङ्कल्प्य वामहस्ते गौरसर्षपान् गृहीत्वा दिग्रक्षणं कुर्यात् –

ॐ रक्षोहणं व्वलगहनं वैष्णवीमिदमहं तं व्वलगमुत्किरामि यं मे निष्ट्यो यममात्यो निचखानेदमहं तं व्वलगमुत्किरामि यं मे समानो यमसमानो निचखानेदमहं तं व्वलुगमुत्किरामि यं मे सबन्धुर्य्यमसबन्धुर्न्निचखानेदमहं तं व्वलगमुत्किरामि यं मे सजातो यमसजातो निचखानो त्कृत्याङ्किरामि ॥१॥

रक्षोहणो वो व्वलगहनः प्रोक्षामि व्वैष्णवान्रक्षोहणो वो व्वलगहनोऽवनयामि व्वैष्णवान्रक्षोहणो वो व्वलगहनोऽवस्तृणामि व्वैष्णवान्रक्षोहणौ वां व्वलगहना ऽउपदधामि व्वैष्णवी रक्षोहणौ वां व्वलगहनौ पर्य्यूहामि व्वैष्णवी व्वैष्णवमसि व्वैष्णवास्थ ॥२॥

ॐ रक्षसां भागोऽसि निरस्तꣳ रक्ष ऽइदमहꣳ रक्षोऽभितिष्ठामीदमहꣳ रक्षोऽवबाध ऽइदमहꣳ रक्षोऽधमं तमो नयामि । घृतेन द्यावापृथिवी प्रोर्ण्णुवाथां व्वायो व्वे स्तोकानामग्निराज्यस्य व्वेतु स्वाहा स्वाहाकृते ऽऊर्द्ध्वनभसं मारुतं गच्छतम् ॥३॥

ॐ रक्षोहा व्विश्वचर्षणिरभि योनिमयोहते । द्रोणे सधस्थमासदत् ॥४॥
अपसर्पन्तु ते भूतायेभूताभूमिसंस्थिताः ।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥१॥
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् ।
सर्वेषामविरोधेन यज्ञकर्म समारभे ॥२॥

यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा ।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गन्छतु ॥३॥
भूतानि राक्षसा वापि येऽत्र तिष्ठन्ति केचन् ।
ते सर्वेऽप्यपगच्छन्तु ग्रहयागं करोम्यहम् ॥४॥

इति मन्त्रैः पूर्वादिदिक्षु सर्षपान् विकिरेत् । उदकोपस्पर्शः । इति दिग्रक्षणम् ।

अथ मण्डप प्रवेशः

अथ पञ्चगव्यादिकरणम् – एकस्मिन् पात्रे पञ्चगव्यं सम्पादयेत्। तद्यथा—ॐ तत्सवितुर्व्वरेण्यं भर्ग्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ इति गोमूत्रम् ।

ॐ गन्धाद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ इति गोमयम् ।
ॐ आप्यायस्व समेतु ते व्विश्वतः सोमव्वृष्ण्यम् ।
भवाव्वाजस्य सङ्गथे ॥ इति पयः ॥
ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णो रश्वस्य व्वाजिनः ।
सुरभि नो मुखा करत्प्रण ऽआयूꣳषि तारिषत् ॥ इति दधि ॥
ॐतेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि धाम नामाऽसि ।
प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि ॥ इत्याज्यम् ।
ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनो-
र्व्वाहुभ्यां पूष्णोहस्ताभ्याम् ॥ इति कुशोदकम् ॥

इति प्रणवेन यज्ञकाष्ठेनालोड्य – ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऽऊर्ज्जे दधातन । महे रणाय चक्षसे ॥१॥
यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेहनः । उशतीरिव मातरः ॥२॥
तस्मा ऽअरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपो जनयथा च नः ॥३॥

इति त्रिभिर्मन्त्रैः कर्मभूमिं सम्प्रोक्षेत् । ततः कृताञ्जलिः – ॐ स्वस्ति न ऽइन्द्रो व्वृद्धश्श्रवाः स्वस्ति नः पूषा व्विश्ववेदाः । स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो ऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥

इति मन्त्रं वारत्रयं पठित्वा भूमौ प्रादेशं कृत्वा 'देवा आयान्तु । यातुधाना अपयान्तु । विष्णो देवयजनं रक्षस्व' इति वदेत् । इति पञ्चगव्यादिकरणम् ।

अथ वास्तुपूजनम्

ततो वास्तुवेदीपश्चिमदिशि उपविश्याऽऽचम्य प्राणानायम्य ॥ देशकालौ सङ्कीर्त्य अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं प्रारिप्सितस्य अमुकयागकर्मणः साङ्गतासिद्धये मण्डपाङ्ग वास्तुपूजनं करिष्ये, इति सङ्कल्पं कुर्यात् ॥ ततः वास्तुवेद्यां ईशानादिक्रमेण आग्नेयादिक्रमेण वा चतुर्षु कोणेषु लोहशङ्कून् रोपयेत् ॥

तत्र मन्त्रः – विशन्तु भूतले नागा लोकपालाश्च सर्वतः ॥
मण्डपेऽत्राऽवतिष्ठन्तु आयुर्बलकराः सदा ॥

इति प्रतिरोपणमन्त्रावृत्तिः ॥ ततः शङ्कुपार्श्वेषु सदीप-दधि-माषाऽक्षतबलिं दद्यात् ॥

अग्निभ्योऽप्यथ सर्पेभ्यो ये चान्ये तान् समाश्रिताः ।
बलिं तेभ्यो प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम् ॥१॥
नैर्ऋत्याधिपतिश्चैव नैर्ऋत्यां ये च राक्षसाः ।
बलिं तेभ्यो प्रयच्छामि पुण्यमोदन मुत्तमम् ॥२॥
वायव्याधिपतिश्चैव वायव्यां ये समश्रिताः ।
बलिं तेभ्यो प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम् ॥३॥
ईशान्याधिपतिश्चैव ईशान्यां ये च राक्षसाः ।
बलिं तेभ्यो प्रयच्छामि गृहणन्तु सततोत्सुकाः ॥४॥

ततो वास्तुवेद्यां वस्त्रं प्रसार्य सुवर्ण शलाकया कुङ्कुमेन च नव रेखाः प्राक्पश्चिमायताः नव च दक्षिणोदगायताः कुर्यात्, तद्यथा ॥ ॐ शान्तायै नमः ॥१॥ ॐ यशोवत्यै नमः ॥२॥ ॐ कान्तायै नमः ॥३॥ ॐ विशालायै नमः ॥४॥ ॐ प्राणवाहिन्यै नमः ॥५॥ ॐ सत्यै नमः ॥६॥ ॐ सुमत्यै नमः ॥७॥ ॐ नन्दायै नमः ॥८॥ ॐ सुभद्रायै नमः ॥९॥ इति नव रेखाः प्रागपरागायताः कृत्वा ॥ ततः ॥ ॐ हिरण्यायै नमः ॥१॥ ॐ सुव्रतायै नमः ॥२॥ ॐ लक्ष्म्यै नमः ॥३॥ ॐ विभूत्यै नमः ॥४॥ ॐ विमलायै नमः ॥५॥ ॐ प्रियायै नमः ॥६॥ ॐ जयायै नमः ॥७॥ ॐ बलायै नमः ॥८॥ ॐ विशोकायै नमः ॥९॥ इति नव रेखाः दक्षिणोत्तरायताः कृत्वा मध्यकोष्ठचतुष्टयं एकीकृत्य ततः कोणेषु रेखां दद्यात् ॥ तत्र शिख्यादीनावाहयेत् ॥

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पति धियं जिन्वमवसे हूमहे व्वयम् ।
पूषा नो यथा व्वेद सामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः शिखिने नमः । शिखिनमा॰ स्थापयामि ॥१॥
ॐ शन्नो व्वातःपवताꣳ शन्नस्तपतु सूर्य्यः॥ शन्नः कनिक्रदद्देवः-पर्ज्जन्यो ऽअभिवर्षतु ॥ ॐ पर्जन्याय नमः पर्जन्यमावा॰ स्था॰ ॥२॥
ॐ मर्म्माणि ते व्वर्मणा च्छादयामि सोमस्त्वाराजा-मृतेनानुवस्ताम् ॥
उरोर्व्वरीयो व्वरुणस्ते कृणोतु जयन्तन्त्वानु देवा मदन्तु ॥
ॐ जयन्ताय॰ जयन्तमा॰ ॥३॥
ॐ आयात्विन्द्रो वस ऽउपन इह स्तुतः सधमादस्तु शूरः ॥
व्वावृधानस्तविषीर्य्यस्य पूर्व्वीर्द्यौर्न्नक्षत्रमभि भूति पुष्यात् ॥
ॐ कुलिशायुधाय॰ कुलिशायुधमा॰ ॥४॥
ॐ बण्महाँ ऽअसि सूर्य्य वडादित्य महाँ ऽअसि ।
महस्ते सतो महिमा पनस्यऽतेद्धादेव महाँ ऽअसि ॥
ॐ सूर्याय॰ सूर्यमा॰ ॥५॥
ॐ व्व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् ॥ दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥ ॐ सत्याय॰ सत्यमा॰ ॥६॥
ॐ आत्वाहार्षमन्तरभूद्ध्रुवस्तिष्ठाविचाचलिः ॥ व्विशस्त्वा सर्व्वा व्वाञ्छन्तु मा त्वद्राष्ट्रमधिभ्रशत् ॥ ॐ भृशाय॰ भृशमा॰ ॥७॥
ॐ यावाङ्कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती ॥ तया यज्ञं मिमिक्षतम् ॥
ॐ आकाशाय॰ आकाशमा॰ ॥८॥
ॐ व्वायो ये ते सहस्त्रिणोरथासस्तेभिरगहि ॥ नियुत्वान्सोमपीतये ॥
ॐ वायवे॰ वायुमा॰ ॥९॥
ॐ पूषन्तवव्रतेव्वयन्नरिंष्येम कदाचन । स्तोतारस्त ऽइहस्मसि ॥
ॐ पूष्णे नमः पूषणमा॰ ॥१०॥
ॐ तत्सूर्य्यस्य देवत्वन्तन्महित्वं मद्ध्या कर्तोर्विततꣳ॰ सञ्जभार ॥
यदेदयुक्त हरितः सधस्थादाद्रात्रीर्वासस्तनुते सिमस्मै ॥
ॐ वितथाय॰ वितथमा॰ ॥११॥
ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया ऽअधूषत ॥ अस्तोषत स्वभा

नवो व्विषा नविष्ठया मतीयोजा न्विन्द्रते हरी ॥
ॐ गृहक्षताय० गृहक्षतमा० ॥१२॥
ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा ॥ स्वाहा घर्म्माय स्वाहा घुर्म्मःपित्रे ॥ ॐ यमाय० यममा० ॥१३॥
ॐ गन्धर्व्वस्त्वा व्विश्शवावसुः परिदधातु व्विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽ ईडितः ॥ इन्द्रस्य बाहुरसिदक्षिणो व्विश्वस्यारिष्ट्यैयजमानस्य परिधिरस्यग्निरिड ईडितः ॥ मित्रावरुणौ त्वोत्तरतः परिधत्तान्ध्रुवेण धर्म्मणा व्विश्शवस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिड ईडितः ॥ ॐ गन्धर्वाय० गन्धर्वमा० ॥१४॥
ॐ सौरी वलाका शार्गः सृजयः शयाण्डकस्ते मैत्राः सरस्वत्यै शारिः पुरुषवाक्श्वाविद्भौमीशार्दूलोव्वृकः पृदाकु स्ते मन्यवेसरस्वते शुकः पुरुषवाक् ॥ ॐ भृङ्गराजाय० भृङ्गराजमा० ॥१५॥
ॐ मृगो न भीमः कुचरोगिरिष्ठाः परावतऽआजगन्था परस्याः ॥ सृकर्ठ०सर्ठ शाय पविमिन्द्रतिग्मं व्विशत्रून्ताढि-व्विमृधो नुदस्व ॥
ॐ मृगाय० मृगमा० ॥१६॥
ॐ उशन्तस्त्वानिधीमह्युशन्तः समिधीमहि । उशन्नुशत ऽआवर्हपितृन्हविषे ऽअत्तवे ॥ ॐ पितृगणेभ्यो० पितृगणान् आवा० ॥१७॥
ॐ द्वेव्विरूपे चरतः स्वर्त्थे ऽअन्यान्या व्वत्समुपधापयेते ॥ हरिरन्यस्यां भवति स्वधावाञ्छुक्रो ऽअन्यस्यां ददृशे सुवर्च्चाः ॥
ॐ दौवारिकाय० दौवारिकमा० ॥१८॥
ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवर्ठ० रुद्रा ऽउपश्रिताः ॥ तेषाᳩ सहस्रयोजनेव धन्वानि तन्नमसि ॥
ॐ सुग्रीवाय० सुग्रीवमा ॥१९॥
ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च्च वो नमो नमो व्वातेभ्यो व्वातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च्च वो नमो नमो व्विरूपेभ्योविश्वरूपेभ्यश्च्च वो नमः ॥
ॐ पुष्पदन्ताय० पुष्पदन्तमा० ॥२०॥

ॐ इमम्मे व्वरुणश्रुधी हवमद्या च मृडय ॥ त्वामवस्युराचके ॥
ॐ वरुणाय० वरुणमा० ॥२१॥
ॐ यमश्विना नमुचेरासुरादधि सरस्वत्यसुनो दिन्द्रियाय । इमन्तᳩ शुक्रम्मधुमन्तमिन्दुᳩ सोमᳩ राजानमिह भक्षयामि ॥
ॐ असुराय० असुरमा० ॥२२॥
ॐ शन्नो देवीरभिष्टये आपो भवन्तु पीतये ॥ शं य्योरभिस्रवन्तु नः ॥ ॐ शोषाय०शोषमा० ॥२३॥
ॐ एतत्तेरुद्राऽवसन्तेन परो मूजवतोऽतीहि ॥ अवततधन्वा पिनाकावसः कृत्तिवासा ऽअहिᳩ सन्नः शिवोतीहि ॥
ॐ पापाय० पापमा० ॥२४॥
ॐ द्रापेऽअन्धसस्पते दरिद्र नीललोहित । आसां प्रजाना मेषां पशूनाम्माभेर्म्मा रोङ्मो च नः किञ्चनाममत् ॥
ॐ रोगाय० रोगमा० ॥२५॥
ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येतिबाहुंज्याया हेतिम्परिबाधमानः ॥ हस्तघ्नो व्विश्वा व्वयुनानि व्विद्वान्पुमान्पुमाᳫं सम्परि पातु व्विश्वतः ॥
ॐ अहये० अहिमवा० ॥२६॥
ॐ अवतत्य धनुष्ट्वर्ठ० सहस्राक्ष शतेषुधे ॥ निशीर्य्यशल्या-नाम्मुखा शिवो नः सुमना भव । ॐ मुख्याय० मुख्यमावा० ॥२७॥
ॐ इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः ॥ यथा शमसद्विपदे चतुष्पदे व्विश्वं पुष्टङ्ग्रामे ऽअस्मिन्ननातुरम् ॥
ॐ भल्लाटाय० भल्लाटमावा० ॥२८॥
ॐ सोमᳩ राजानमवसेऽ ग्निमन्वारभामहे ॥ आदित्यान्विष्णुᳩ सूर्य्यम्ब्रह्माणञ्च वृहस्पतिᳫं स्वाहा ॥
ॐ सोमाय० सोममा० ॥२९॥
ॐ नमोऽस्तु सर्प्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ॥ ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्प्पेभ्यो नमः ॥ ॐ सर्पेभ्यो० सर्पान्० आ० ॥३०॥
ॐ इड ऽएह्यदित ऽएहि काम्म्या ऽएत ॥ मयि वः कामधरणम्भूयात् ॥ ॐ अदित्यै० अदितिमा० ॥३१॥
ॐ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्म्माता स पिता स पुत्रः ॥

विश्वे देवा ऽअदितिः पञ्चजना अदितिर्ज्जातमदितिर्ज्जनित्वम् ॥
ॐ दित्यै० दितिमा०॥३२॥
ॐ अप्स्वग्ग्नेसधिष्टव सौषधीरनु रुध्यसे ॥ गर्ब्भे सञ्जायसे पुनः ॥ ॐ अद्भयो० अपः आवा० ॥३३॥
ॐ हस्तऽ आधाय सविताविभ्रदभ्रि हिरण्ययीम् ॥ अग्ग्नेर्ज्ज्योतिर्न्निचाय्य पृथिव्या ऽअद्ध्या भरदानुष्टुभेन च्छन्दसाङ्गिरस्वत् ॥ ॐ सावित्राय नमः सावित्रमा०॥३४॥
ॐ अषाढं युत्सु पृतनासु पप्रिं स्वर्षामप्सां व्वृजनस्य गोपाम् ॥ भरेषुजां सुक्षितिं सुश्रवसञ्जयन्तन्त्वामनुमदेम सोम ॥
ॐ जयाय० जयमा० ॥३५॥
ॐ नमस्ते रुद्रमन्यवऽ उतोत ऽइषवे नमः ॥ बाहुब्भ्यामुत ते नमः ॥ ॐ रुद्राय० रुद्रमा ॥३६॥
ॐ यदद्य सूरऽ उदिते नागा मित्रो ऽअर्य्यमा ॥ सुवाति सविता भगः ॥ ॐ अर्यम्णे अर्यमणमा०॥३७॥
ॐ व्विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव ॥ यद्भद्रं तन्नऽ आसुव । ॐ सवित्रे० सवितारमा० ॥३८॥
ॐ व्विवस्वन्नादित्यैष तेसोमपीथस्तस्मिन्मत्स्व ॥ श्रदस्मै नरो व्वचसे दधातन यदाशीर्द्दा दम्पती व्वाममश्नुतः ॥ पुमान्पुत्रो जायते व्विन्दते व्वस्वधा व्विश्वाहारप एधते गृहे ॥
ॐ विवस्वते० विवस्वन्तमा०॥३९॥
ॐ सबोधि सूरिर्म्मघवा व्वसुपतेव्वसुदावन् ॥ युयोध्यस्मद्द्वेषांसि व्विश्वकर्म्मणे स्वाहा ॥ ॐ विबुधाधिपाय नमः विबुधाधिपमा० ॥४०॥
ॐ मित्रस्य चर्षणीधृतोवो देवस्य सानसि । द्युम्नञ्चित्रश्रवस्तमम् ॥
ॐ मित्राय० मित्रमा० ॥४१॥
ॐ नाशयित्री बलासस्यार्शसऽ उपचितामसि । अथो शतस्य यक्ष्माणांपाकारोरसि नाशनी ॥ ॐ राजयक्ष्मणे० राजयक्ष्माणमा० ॥४२॥
ॐ स्योना पृथिवि नो भवान्नृक्षरा निवेशनी ॥ यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः । ॐ पृथ्वीधराय० पथ्वीधरमा० ॥४३॥

ॐ आते व्वत्सो मनो यमत्परमाच्चित्सधस्थात् ॥ अग्ग्ने त्वाङ्गामयागिरा । ॐ आपवत्साय० आपवत्समा० ॥४४॥
ॐ ब्रह्म यज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुच्चोव्वेनऽ आवः ॥ स बुध्न्याऽउपमाऽ अस्य व्विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च व्विवः॥
ॐ ब्रह्मणे० ब्रह्माणमा० ॥४५॥
ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान् स्वावेशोऽ अनमीवो भवानः । यत्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥
ॐ वास्तोष्पतये० वास्तोष्पतिमा० ॥ ४६॥
ॐ यन्ते देवी निर्ऋतिराबबन्ध पाशङ् ग्रीवास्वविनृत्यम ॥ तन्तोव्विष्याम्यायुषोनमद्ध्यादथैतम्पितुमद्धि प्रसूतः ॥ नमोभूत्यैचेदंचकार ॥ ॐ चरक्यै० चरकीमा० ॥४७॥
ॐ अक्षराजाय कितवं कृतायादिनवदर्शन्त्रेतायै कल्पिनन्द्वापरायाधिकल्पिन मास्कन्दाय सभास्थाणुम्मृत्यवे गोव्यच्छमन्तकाय गोघातङ्क्षुधे यो गाव्विकृन्तन्तं भिक्षमाणऽ उपतिष्ठति दुष्कृताय चरकाचार्य पाप्मने शैलगम् ॥ ॐ विदार्य्यै० विदारीमा० ॥४८॥
ॐ इन्द्रस्य क्क्रोडोऽदित्यै पाजस्यं दिशांजत्रवो ऽदित्यै भसज्जीमूतान्हृदयौ पशेनान्तरिक्षं पुरीतता नभऽ उदर्येण चक्रवाकौ मतस्नाभ्यान्दिवं व्वृक्काभ्याम्गिरीन्प्लाशिभिरुपलान्प्लीन्हाव्वल्मीकान्क्लोमभिर्ग्लौभिर्गुल्मान्हिराभिः स्रवन्ती र्ह्रदान्कुक्षिभ्यांसमुद्रमुदरेण व्वैश्वानरं भस्मना ॥
ॐ पूतनायै० पूतनामा० ॥४९॥
ॐ यस्यास्ते घोरऽ आसन्जुहोम्येषाम्बन्धानामवसर्ज्जनाय ॥ यान्त्वा जनो भूमिरिति प्रमन्दते निर्ऋतिन्त्वाहम्परिवेद व्विश्वतः ॥
ॐ पापराक्षस्यै० पापराक्षसीमा० ॥५०॥
ॐ यदक्रन्दः प्रथमञ्जायमानऽ उद्यन्त्समुद्द्रा दुतवा पुरीषात् ॥ श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहूऽ उपस्तुत्यम् महिजातन्तेऽअर्व्वन् ॥
ॐ स्कन्दाय० स्कन्द० ॥५१॥
ॐ यदद्य सूरऽ उदिते नागामित्रोऽ ऽअर्यमा ॥ सुवाति सविता भगः ॥ ॐ अर्यमणे० अर्यमणमा० ॥५२॥

ॐ हिंकाराय स्वाहा हिंकृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहाऽवक्रन्दाय स्वाहाप्प्रोथते स्वाहा प्रप्पोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा व्वलगते स्वाहा सीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्प्रबुद्धाय स्वाहा व्विजृम्भमाणाय स्वाहा व्विचृत्ताय स्वाहा सꣳ हानाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहायनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा ॥ ॐ जृम्भकाय० जृम्भकमा० ॥५३॥

ॐ का स्विदासीत्पूर्व्वचित्तः किꣳस्विदासीद् बृहद्वयः ।
का स्विदासीत्पिलिप्पिला का स्विदासीत्पशङ्गिला ॥
ॐ पिलिपिच्छाय० पिलिपिच्छ० ॥५४॥

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ हवे हवे सुहवꣳ शूरमिन्द्रम् ।
ह्वयामिशक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳ स्वस्ति नो मघवाधात्विन्द्रः ॥
ॐ इन्द्राय० इन्द्रमा० ॥५५॥

ॐ त्वन्नोऽअग्ने व्वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडोऽ अवयासिसीष्ठाः ।
यजिष्ठो व्वह्नितमः शोशुचानो व्विश्वा द्वेषाꣳसिं प्प्रमुमुग्ध्यस्मत् ॥
ॐ अग्नये० अग्निमा० ॥५६॥

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा । स्वाहा घर्म्माय स्वाहा घर्म्मः पित्रे ॥ ॐ यमाय० यममावा० ॥५७॥

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहितस्करस्य ।
अन्यमस्मदिच्छ सातऽ इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ।
ॐ निर्ऋतये० निर्ऋति० ॥५८॥

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः ।
अहेडमानो वरुणेहबोध्युरु सꣳ समान्नऽ आयुः प्रमोषीः॥
ॐ वरुणाय० वरुणमा० ॥५९॥

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरꣳ सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम् । व्वायोऽ अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयम्पात स्वस्तिभिः सदानः ॥ ॐ वायवे० वायुमा० ॥६०॥

ॐ व्वयꣳ सोम व्व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः ॥ प्रजावन्तः सचेमहि ॥ ॐ सोमा० सोममा० ॥६१॥

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियञ्जिन्वमवसेहूमहे व्वयम् ॥
पूषा नो यथा व्वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥
ॐ ईशानाय० ईशानमा० ॥६२॥

ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्व्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतो सजोषाः ।
यः सꣳ सते स्तुवते धायि पज्रऽ इन्द्रज्ज्येष्ठाऽ अस्माँ२ ॥
ऽअवन्तु देवाः ॥ ॐ ब्रह्मणे० ब्रह्माण० ॥६३॥

ॐ स्योना पृथिवि नो भवान्नृक्षरानिवेशनि ॥ यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः ॥ ॐ अनन्ताय० अनन्त० ॥६४॥

ॐ मनोजूतिरिति प्रतिष्ठाप्य ॥ मण्डलदेवताभ्यो नमः, इति सम्पूज्य ॥ मण्डलोपरि ॐ महीद्यौरित्यादि कलशं संस्थाप्य ॥ तत्र वरुणं सम्पूज्य कलशोपरि वास्तुप्रतिमा मग्न्युत्तारणपूर्वकमावाह्य पूजयेत् ॥

अग्न्युत्तारणम्

देशकालौ संकीर्त्य० अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं अस्यां वास्तु मूर्तौ अवघातादिदोषपरिहारार्थम् अग्न्युतारणं देवतासान्निध्यार्थं प्राणप्रतिष्ठां च करिष्ये ॥ प्रतिमा पत्रे निधाय घृतेनाऽभ्यज्य तदुपरि जलधारां दुग्धधारांवा पातयेत् ॥ तत्र मन्त्राः ॥

ॐ समुद्रस्य त्वावकयाग्ने परिव्व्ययामसि ।
पावको ऽअस्मभ्यꣳ शिवो भव ॥१॥
हिमस्य त्वा जरायुणाग्ने परिव्व्ययामसि ।
पावको ऽअसम्भ्यꣳ शिवो भव ॥२॥
उप ज्ज्मन्नुप वेतसेऽवतर नदीष्वा ॥ अग्ग्ने पित्तमपामसि
मण्डू कि ताभिरागहि सेमं नो यज्ञं पावकवर्ण्णꣳ शिवं कृधि ॥३॥
अपामिदं न्ययनꣳ समुद्रस्य निवेशनम् ।
अन्न्याँस्ते ऽअस्मत्तपन्तु हेतयः० ॥४॥
अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया ।
आ देवान्वक्षि यक्षि च ॥५॥
स नः पावक दीदिवोऽग्ने देवाँ२॥ इहावह ॥
उप यज्ञꣳ हविश्च नः ॥६॥

पावकया यश्चितयन्त्या कृपा क्षामनरुरुच ऽउषसो न भानुना ।
तूर्व्वन्न यामन्नेतशस्य नू रण ऽआयो घृणेन ततृषाणोऽ अजरः ॥७॥

नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्तेऽ अस्त्वर्चिषे ॥ अन्याँस्ते॰ ॥८॥
नृषदे व्वेडवप्सुषदे व्वेड्वर्हिषदे वेड्वनसदे व्वेड् स्वर्विदिव्वेट् ॥९॥
ये देवा देवानां यज्ञिया यज्ञियानाᳬ संवत्सरीणमुप भागमासते ।
अहुतादो हविषो यज्ञे ऽअस्मिन्त्स्वयं पिबन्तु मधुनोघृतस्य ॥१०॥
ये देवा देवेष्वधि देवत्त्वमायन्ने ब्रह्मणः पुर ऽएतरो ऽअस्य ।
येब्भ्यो न ऽऋते पर्वते धाम किञ्चन न ते दिवो न पृथिव्या ऽअधि स्नुषु ॥११॥

प्राणदा ऽ अपानदा व्यानदा व्वर्च्चोदा व्वरिवोदाः ।
अन्याँस्ते ऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावको ऽअस्मभ्यᳬ शिवो भव ॥१२॥

एवमग्न्युत्तारणं कृत्वा ॥ ततो मूर्तिहस्तेन स्पृश्य प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् ॥ ॐ आँ ह्रीं क्रों यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ क्षँ हँ सः सोऽहं अस्य वास्तुमूर्तेः प्राणाः इह प्राणाः ॥ ॐ आँ ह्रीं क्रों यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ क्षँ हँ सः सोऽहं अस्य वास्तुमूर्तेः जीव इह स्थितिः ॥ ॐ आँ ह्रीं क्रों यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ क्षँ हँ सः सोऽहं अस्य वास्तुमूर्तेः वाङ्मनस्त्वक्-चक्षुः-श्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपाद पायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा । ॐ मनोजूति॰ अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु॰ ॥ इति वास्तुपुरुष प्रतिष्ठितो वरदो भव ॥ पञ्चामृतेन संस्नाप्य कलशोपरि स्थापयेत् ।

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशोऽअनमीवो भवा नः यत्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥
आगच्छ भगवन् वास्तो सर्वदेवैरधिष्ठित ।
भगवन् कुरु कल्याणं यज्ञेऽस्मिन्सन्निधौ भव ॥

ॐ भू॰ वास्तुपुरुषमा॰ वास्तोष्पतये नमः इति पञ्चोपचारैः षोडशोपचारैः सम्पूज्य ॥ अर्घ्यं दद्यात् ॥

ॐ पूज्योऽसि त्रिषु लोकेषु यज्ञरक्षार्थहेतवे । विनार्चनं न सिद्ध्यन्ति यज्ञदानान्यनेकशः ॥ अयोने भगवन् भर्ग ललाटस्वेदसम्भव । गृहाणार्घ्यं मया दत्तं वास्तो स्वामिन् नमोऽस्तु ते । इत्यर्घ्यं दत्वा ॥ प्रार्थना ॥ यथा मेरुगिरेः शृङ्गं देवनामालयः सदा ॥ तथा त्वं मम यज्ञेस्मिन् सुस्थिरो भव सर्वदा ॥ ततो वास्तुपश्चिमत उपविश्य पायसबलिं दद्यात् ॥ ॐ शिखिने एष पायसबलिर्न मम (शारदातिलके तु होमो नोक्तः) ॥

त्रिसूत्रीवेष्टनम्

ततः ईशानादारभ्य ईशानपर्यन्तं त्रिसूत्र्या मण्डपं वेष्टयेत् । तत्र मन्त्राः — ॐ कृणुष्व पाजः प्रसितिं न पृथ्वीं याहि राजेवामवाँ२ ॥ ऽइभेन ॥ तृष्वीमनु प्रसितिं द्रूणानोऽस्तासि विद्ध्य रक्षसस्तपिष्ठैः ॥१॥ तव भ्रमास ऽआशुया पतन्त्यनुस्पृश धृषता शोशुचानः ॥ तपूᳬष्यग्ने जुह्वा पतङ्गानसन्दितो व्विसृज व्विष्वगुल्काः ॥२॥ प्रति स्पशो व्विसृज तूर्णितमो भवा पायुर्व्विशो ऽअस्या ऽअदब्धः ॥ यो नो दूरे ऽअघशᳬसो यो ऽअन्त्यग्ने मा किष्टे व्यथिरादधर्षीत ॥३॥ उदग्ने तिष्ठ प्रत्यातनुष्व न्यमित्राँ२॥ ओषतान्तिग्महेते ॥ यो नो ऽअरातिᳬ समिधान चक्रे नीचा तं धक्ष्यतसं न शुष्ककम् ॥४॥ ऊर्ध्वो भव प्रतिविद्ध्याद्ध्यस्मदाविष्कृणुष्व दैव्यान्यग्ने ॥ अव स्थिरा तनुहि यातुजूनां जामिमजामिं प्रमृणीहि शत्रून् ॥५॥ इति रक्षोघ्नसूक्तम् ॥

ॐ पुनन्तु मा पितरः सोम्यासः पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु प्रपितामहाः ॥ पवित्रेण शतायुषा । पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु प्रपितामहाः । पवित्रेण शतायुषा ॥ व्विश्वमायुर्व्यश्नवै ॥१॥

अग्न ऽआयूᳬषि पवस ऽआसुवोर्ज्जमिषं च नः ॥ आरे वाधस्व दुच्छुनाम् ॥२॥

पुनन्तु मा देवजना : पुनन्तु मनसा धियः ॥ पुनन्तु व्विश्वा भूतानि जातवेद : पुनीहि मा ॥३॥

पवित्रेण पुनीहि मा शुक्रेण देव दीद्यत् ॥ अग्ने क्रत्वा क्रतूँर॥ रनु ॥४॥
यत्ते पवित्रमर्चिष्यग्ने व्विततमन्तरा ॥ ब्रह्म तेन पुनातु मा ॥५॥
पवमानः सो अद्य नः पवित्रेण व्विचर्षणिः ॥ यः पोता स पुनातु मा ॥६॥
उभाभ्यं देव सवितः पवित्रेण सवेन च ॥ मां पुनीहि व्विश्वतः ॥७॥
व्वैश्वदेवी पुनती देव्यागाद्यस्यामिमा बह्व्यस्तन्वो व्वीतपृष्ठाः ॥
तया मदन्तः सधमादेषु व्वयᳬ स्याम पतयो रयीणाम् ॥८॥
इति पवमानसूक्तम् ॥

अथ मण्डपपूजनम्

आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ सङ्कीर्त्य ।। अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं करिष्यमाणसनवग्रमखअमुकयागकर्मणि मण्डपपूजां करिष्ये । तत्राऽऽदौ षोडशस्तम्भपूजा ।।

(१) ततो मध्यवेदीशानस्तम्भे रक्तवर्णं ब्रह्माणं पूजयेत् –

एह्येहि विप्रेन्द्र पितामहादौ हंसाधिरूढ त्रिदशैकवन्द्य ।
श्वेतोत्पलाभास कुशाम्बुहस्त गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते ।।
ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सरुचो व्वेन ऽआवः ।
स बुध्न्या उपमा ऽअस्य व्विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च व्विवः ।।
ॐ भू० ब्रह्मन्निहागच्छ इह तिष्ठ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं आवाहयामि ।।
ततो गन्धादिभिः सम्पूज्य ।। नमस्कारः ।
विद्याधराय वेदाय ज्ञानगम्याय सूरये ।
कमण्डल्वक्ष मालास्रुक् स्रुवहस्ताय ते नमः ।।

प्रार्थना - कृष्णाजिनाम्बरधर पद्मासन चतुर्मुख ।
जटाधर जगद्धातः प्रसीद कमलोद्भव ।। इति प्रार्थ्य ।।

ॐ सावित्र्यै नमः ।। ॐ वास्तुदेवतायै नमः ।। ॐ ब्राह्म्यै नमः ।। ॐ गङ्गायै नमः ।। इमाः सम्पूज्य स्तम्भमालभेत् ।।

महावेद्यां तमीशाने ऋजुं वसुकरात्मकम् ।
सर्वविघ्नविनाशार्थं स्तम्भं चैवालभाम्यहम् ।।

ॐ ऊर्द्ध ऽऊ षुण ऽऊतये तिष्ठा देवो न सविता ।। ऊर्द्धो व्वाजस्य सनिता यदञ्जिभिर्व्वाघद्भिर्व्वि ह्वयामहे ।। ततः स्तम्भशिरसि ।। ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमी-दसदन्मातरं पुरः ।। पितरं च प्रयन्त्स्वः ।। ॐ नागमात्रे नमः ।।

अथ शाखाबन्धनानि पूजयेत् –

नमोऽस्तु शाखाबन्धाय सुदृढाय महात्मने ।
महामण्डपरक्षार्थं नतयः सन्तु मे सदा ।।

ॐ यतो यतः समीहसे ततो नो ऽअभयं कुरु । शं नः कुरु प्रजाब्भ्योऽभयं नः पशुभ्यः ।। ॐ सर्पेभ्यो नमः, अनेन कृतार्चनेन मध्यवेदीशान्कोणस्थितस्तम्भाधिष्ठातृदेवताःप्रीयन्ताम् ।।१।।

(२) ततो मध्यवेद्याग्नेयकोणस्तम्भे कृष्णवर्णं विष्णुं पूजयेत्-

आवाहयेत् तं गरुडोपरि स्थितं रमार्द्धदेहं सुरराजवन्दितम् ।
केशान्तकं चक्रगदाब्जहस्तं भजामि देवं वसुदेवसूनुम् ।।
पद्मनाभं हृषीकेशं कंसचाणूरमर्दनम् ।
आगच्छ भगवन्विष्णो स्तम्भेऽस्मिन्सन्निधो भव ।।

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा ।।

ॐ भू० विष्णो इहागच्छ इह तिष्ठ विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि ।।

गन्धादिभिः सम्पूज्य ।। नमस्कारः ।।

नमस्ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते पुरुषोत्तम ।
नमस्ते सर्वलोकात्मन् विष्णवे ते नमो नमः ।।

प्रार्थना - देवदेव जगन्नाथ विष्णो यज्ञपते विभो ।
पाहि दुःखाम्बुधेरस्मान् भक्तानुग्रहकारक ।।

ॐ लक्ष्म्यै नमः ।। आदित्यायै नमः ।। वैष्णव्यै नमः ।। वसुदायै नमः ।। सम्पूज्य ।। स्तम्भमालभेत् ।।

महावेद्याश्चाग्निकोणे सुदृढं वस्त्रशोभितम् ।
सर्वकार्यप्रसिद्ध्यर्थं स्तम्भं चैवालभाम्यहम् ।।

ॐ ऊर्द्धऽऊ षु ण० ।। स्तम्भशिरसि ॐ आयं गौः० ।। नागमात्रे नमः ।। शाखोद्बन्धनानि पू० ।। ॐ यतो यतः० ।। ॐ सर्पेभ्यो नमः ।।२।।

(३) महावेद्यां नैर्ऋत्यकोणे स्तम्भं श्वेतं शङ्करं पूजयेत्-

एह्येहि गौरीश पिनाकपाणे शशाङ्कमौले वृषभाधिरूढ ।
देवादिदेवेश महेश नित्यं गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते ।।
गङ्गाधर महादेव पार्वतीप्राणवल्लभ ।
आगच्छ भगवन्नीश स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव ।।
ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त ऽइषवे नमः ।
बाहुभ्यामुत ते नमः ।।

ॐ भू० शम्भो इहाऽऽगच्छ इह तिष्ठ शम्भवे नमः शम्भुमावाहयामि ।। सम्पूज्य नमस्कारः ।।

वृषारूढाय देवाय पार्वतीपतये नमः ॥
वरदायाऽर्द्धकायाय नमश्चन्द्रार्द्धमौलिने ॥

प्रार्थना - पञ्चवक्त्र वृषारूढ त्रिलोचन सदाशिव ।
चन्द्रमौले महादेव मम स्वस्तिकरो भव ॥

गौर्य्यै नमः ॥ ॐ माहेश्वर्यै नमः ॥ ॐ शोभनायै नमः ॥ ॐ भद्रायै नमः ॥ सम्पूज्य ॥ स्तम्भमालभेत् ॥ ॐ उर्ध्द ऽऊ षु ण० ॥ स्तम्भशिरसि ॥ ॐ आयं गौः० ॥ ॐ नागमात्रे नमः ॥ ततः शाखोद्वन्धनादि पूजयेत् ॥ उद्वन्धन ॥

नमस्तेऽस्तु मण्डपं रक्ष मेऽधुना ।
अतस्त्वां पूजयाम्येव नित्यं मे वरदो भव ॥ ॐ यतो यतः० ॥३॥

(४) महावेद्यां वायव्यकोणे पीतस्तम्भे इन्द्रं पूजयेत् –

एह्येहि वृत्रघ्न गजाधिरूढ सहस्रनेत्र त्रिदशैकराज ।
शचीपते शक्र सुरेश नित्यं गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते ॥
शचीपते महावाहो सर्वाभरणभूषित ।
आगच्छ भगवन्निन्द्र स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव ॥
ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ हवे हवे सुहवꣳ शूरमिन्द्रम् ।
ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥
ॐ भू० इन्द्रेहाऽऽगच्छेह तिष्ठ इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयेत् ॥

सम्पूज्य नमस्कारः ॥

पुरन्दर नमस्तेऽस्तु वज्रहस्त नमोऽस्तु ते ।
शचीपते नमस्तुभ्यं नमस्ते मेघवाहन ॥

प्रार्थना - देवराज गजारूढ पुरन्दर शतक्रतो ।
वज्रहस्त महाबाहो वाञ्छितार्थप्रदो भव ॥

ॐ इन्द्राण्यै नमः ॥ ॐ आनन्दायै नमः ॥ ॐ विभूत्यै नमः ॥ ॐ अदित्यै नमः ॥ सम्पूज्य ॥ स्तम्भमालभेत् ॥ ॐ ऊर्ध्द ऽऊ षु ण० ॥ स्तम्भशिरसि ॥ ॐ आयं गौः० ॐ नागमात्रे नमः ॥ शाखोद्वन्धनादि पूजयेत् ।

तिर्यक्काष्ठयुते देवि रज्जुपाशयुते सदा ।
महामण्डपरक्षार्थमर्चयिष्यामि त्वां मुदा ॥ ॐ यतो यतः ०॥४॥

(५) ततो बाह्ये ईशाने रक्तस्तम्भे सूर्यम् –

आवाहयेत् तं द्विभुजं दिनेशं सप्ताश्ववाहं द्युमणिं ग्रहेशम् ।
सिन्दुरवर्णं प्रतिभावभासं भजामि सूर्यं कुलवृद्धिहेतोः ॥
सप्तहस्त महाबाहो सप्तश्वेताश्ववाहन ।
आगच्छ भगवन् भानो स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव ॥
ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च ।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥
ॐ भू० सूर्येहागच्छेह तिष्ठ ॥ सूर्याय नमः सूर्यमावाहयामि ॥

सम्पूज्य नमस्कारः ।

नमः सवित्रे जगदेकचक्षुषे जगत्प्रसूतिस्थितिनाशहेतवे ।
त्रयीमयाय त्रिगुणात्मधारिणे विरिञ्चि नारायण शङ्करात्मने ॥

प्रार्थना - पद्महस्त रथारूढ पद्मासन सुमङ्गल ।
क्षमां कुरु दयालो त्वं ग्रहराज ! नमोऽस्तु ते ॥

ॐ शौर्यै नमः ॥ ॐ भूत्यै नमः ॥ ॐ सावित्र्यै नमः ॥ ॐ मङ्गलायै नमः ॥ सम्पूज्य ॥ स्तम्भमालभेत् ॥ ॐ ऊर्ध्द ऽऊ षुण० ॥५॥

(६) ईशानपूर्वयोर्मध्ये श्वेतस्तम्भे गणेशम् –

आवाहयेत् तं गणराजदेवं रक्तोत्पलाभासमशेष बन्धम् ।
विघ्नान्तकं सिद्धिकरं गणेशं भजामि रौद्रं सहितं च सिद्ध्या ॥
लम्बोदरं महाकायं गजवक्त्रं चतुर्भुजम् ।
आगच्छ गणनाथस्त्वं स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव ॥

ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳ हवामहे व्वसो मम ॥ आहमजानि गर्ब्भधमा त्वमजासि गर्ब्भधम् ॥

ॐ भू० गणपते इहाऽऽगच्छ इह तिष्ठ ॥ गणपतये नमः गणपतिमावाहयामि ॥ सम्पूज्य नमस्कारः ॥

नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरुपाय ते नमः ।
नमस्ते रुद्ररुपाय करिरुपाय ते नमः ॥

प्रार्थना - लम्बोदर महाकाय सततं मोदकप्रिय ।
गौरीसुत गणेश त्वं विघ्नराज प्रसीद मे ॥

ॐ सरस्वत्यै नमः ॥ ॐ विघ्नहरायै नमः ॥ ॐ जयायै नमः ॥ सम्पूज्य ॥ स्तम्भमालभेत् ॥ ॐ ऊर्ध्व ऽऊ षु ण० ॥६॥

(७) पूर्वाग्नेययोर्मध्ये कृष्णवर्णस्तम्भे यमम् -

एह्येहि दण्डायुध धर्मराज कालाञ्जनाभास विशालनेत्र ।
विशालवक्षःस्थल रौद्ररुप गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते ॥
चित्रगुप्तादिसंयुक्त दण्डमुद्गरधारक ।
आगच्छ भगवन् धर्म स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव ॥

ॐ यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्य्यस्य त्वा तपसे ॥ देवस्त्वा सविता मद्ध्वानक्तु पृथिव्याः स౦ स्पृश स्पाहि ॥ अचिरसि शोचिरसि तपोऽसि ॥

ॐ भू० यमेहाऽऽगच्छेह तिष्ठ यमाय नमः यममावा० ॥ सम्पूज्य नमस्कारः ॥

ईषत्पीन नमस्तेऽस्तु दण्डहस्त नमोऽस्तु ते ।
महिषस्थ नमस्तेऽस्तु धर्मराज नमोऽस्तु ते ॥

प्रार्थना - धर्मराज महाकाय दक्षिणाधिपते यम ।
रक्तेक्षण महावाहो मम पीडां निवारय ॥

ॐ सन्ध्यायै नमः ॥ ॐ आञ्जन्यै नमः ॥ ॐ क्रूरायै नमः ॥ ॐ नियन्त्र्यै नमः ॥ सम्पूज्य ॥ स्तम्भमालभेत् ॥ ॐ ऊर्ध्व० ॥७॥

(८) आग्नेयकोणे कृष्णवर्णस्तम्भे नागराजम् –

एह्येहि नागेन्द्र धराधरेश सर्वामरैर्वन्दितपादपद्म ।
नानाफणामण्डलराजमान गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते ॥
आशीविषसमोपेत नागकन्याविराजित ।
आगच्छ नागराजेन्द्र स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव ॥

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ॥ ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्प्पेभ्यो नमः ॥ ॐ भू० नागराजेहाऽऽगच्छेह तिष्ठ । नागराजाय नमः नागराजम्० ॥ सम्पूज्य नमस्कारः ॥

नमः खेटकहस्तेभ्यो त्रिभोगेभ्यो नमो नमः ।
नमो भीषणदेवेभ्यः खड्गधृग्भ्यो नमो नमः ॥

प्रार्थना - खड्गखेटधराः सर्प्पाः फणामण्डलमण्डिताः ।
एकभोगाः साक्षश्रोत्राः वरदाः सन्तु मे सदा ॥

ॐ मध्यमसन्ध्यायै नमः ॥ ॐ धरायै नमः ॥ ॐ पद्मायै नमः ॥ ॐ महापद्मायै नमः ॥ सम्पूज्य ॥ स्तम्भमालभेत् ॥ ॐ उर्द्ध्व ऽऊ षु ण० ॥८॥

(९) अग्निदक्षिणयोर्मध्ये श्वेतस्तम्भे स्कन्दम् -

आवाहयामि देवेशं षण्मुखं कृत्तिकासुतम् ।
रुद्रतेजःसमुत्पन्नं देवसेनासमन्वितम् ॥
मयूरवाहनं शक्तिपाणिं वै ब्रह्मचारिणम् ।
आगच्छ भगवन् स्कन्द स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव ॥

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान ऽउद्यन्त्समुद्द्रादुत वा पुरीषात् ।
श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू ऽउपस्तुत्यं महिजातं ते ऽअर्व्वन् ॥
ॐ भू० स्कन्देहाऽऽगच्छेह तिष्ठ स्कन्दाय नमः स्कन्दमावाहयामि ॥
सम्पूज्य नमस्कारः ॥

नमः स्कन्दाय शैवाय घण्टाकुक्कुटधारिणे ।
पताकाशक्तिहस्ताय षण्मुखाय च ते नमः ॥

प्रार्थना - मयूरवाहन स्कन्द गौरीसुत षडानन ।
कार्तिकेय महाबोहो दयां कुरु दयानिधे ॥

ॐ पश्चिमसन्ध्यायै नमः ॥ सम्पूज्य ॥ स्तम्भमालभेत् ॥ ॐ ऊद्ध्र्व ऽऊ षु ण० ॥९॥

(१०) दक्षिणनैर्ऋत्ययोर्मध्ये धूम्रस्तम्भे वायुम् –

आवाहयामि देवेशं भूतानां देहधारिणम् ।
सर्वाधारं महावेगं मृगवाहन-मीश्वरम् ॥
ध्वजहस्तं गन्धवहं त्रैलोक्यान्तरचारिणम् ।
आगच्छ भगवान वायो स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव ॥

ॐ व्वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरागहि । नियुत्वान्त्सोमपीतये ॥

ॐ भू० वायो इहाऽऽगच्छेह तिष्ठ । वायवे नमः वायुमावाहयामि ॥
सम्पूज्य नमस्कारः ॥

नमो धरणिपृष्ठस्थ समीरण नमोऽस्तु ते ।
धूम्रवर्ण नमस्तेऽस्तु शीघ्रगामिन् नमोऽस्तु ते ॥

प्रार्थना - धावन्धरणिपृष्ठस्थ ध्वजहस्त समीरण ।
दण्डहस्त मृगारुढ वरं देहि वरप्रद ॥

ॐ वायव्यै नमः ॥ ॐ गायत्र्यै नमः । मध्यमसन्ध्यायै नमः ॥
सम्पूज्य ॥ स्तम्भमालभेत् ॥ ॐ ऊर्द्ध्व ऽऊ षु ण० ॥१०॥

(११) नैर्ऋत्ये पीतस्तम्भे सोमम् –

आवाहयामि देवेशं शशाङ्कं रजनीपतिम् ।
क्षीरोदधिसमुद्भूतं हरमौलिविभूषणम् ॥
सुधाकरं द्विजाधीशं त्रैलोक्यं प्रीतिकारकम् ।
आगच्छ भगवन् सोम स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव ॥

ॐ आप्यायस्व समेतु ते व्विश्वतः सोम वृष्ण्यम् ।
भवा व्वाजस्य सङ्गथे ॥
ॐ भू० सोमेहाऽऽगच्छेह तिष्ठ सोमाय नमः सोममावाहयामि ॥
सम्पूज्य नमस्कारः ।

अत्रिपुत्र नमस्तेऽस्तु नमस्ते शशिलाञ्छन ।
श्वेताम्बर नमस्तेऽस्तु ताराधिप नमोऽस्तु ते ॥

प्रार्थना - अत्रिपुत्र निशानाथ द्विजराज सुधाकर ।
अश्वारूढ गदाहस्त वरं देहि वरप्रद ॥

ॐ सावित्र्यै नमः ॥ ॐ अमृतकलायै नमः ॥ ॐ पश्चिमसन्ध्यायै
नमः ॥ सम्पूज्य ॥ स्तम्भमालभेत् ॥ ॐ ऊर्द्ध्व ऽऊ षु ण० ॥११॥

(१२) नैर्ऋत्य-पश्चिमयोर्मध्ये श्वेतस्तम्भे वरुणम् –

आवाहयामि देवेशं सलिलस्याऽधिपं प्रभुम् ।
शङ्खपाशधरं सौम्यं वरुणमम्भसां पतिम् ॥
कुम्भीरथसमारूढं मणिरत्नसमन्वितम् ।
आगच्छ देव वरुण स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव ॥

ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय । त्वामवस्युराचके ॥

ॐ भू० वरुणेहाऽऽगच्छेह तिष्ठ वरुणाय नमः वरुणमा० ॥
सम्पूज्य ॥ नमस्कारः ॥

वरुणाय नमस्तेऽस्तु नमः स्फटिकदीप्तये ।
नमस्ते श्वेतहाराय जलेशाय नमो नमः ॥

प्रार्थना - शङ्खस्फटिकवर्णाभ श्वेतहाराम्बरावृत ।
पाशहस्त महाबाहो दयां कुरु दयानिधे ॥

ॐ वारुण्यै नमः ॥ ॐ पाशधारिण्यै नमः ॥ ॐ बृहत्यै नमः ॥
सम्पूज्य ॥ स्तम्भमालभेत् ॥ ॐ ऊर्द्ध्व ऽऊ षु ण० ॥१२॥

(१३) पश्चिमवायव्यान्तराले श्वेतस्तम्भे अष्टवसून् -

आवाहयामि देवेशान् वसूनष्टौ महाबलान् ।
सौम्यमूर्तिधरान् देवान् दिव्यायुधकरान्वितान् ॥
शुद्धस्फटिकसङ्काशान् नानावस्त्र-विराजितान् ।
आवाहयामि स्तम्भेऽस्मिन् वसूनष्टौ सुखावहान् ॥

ॐ व्वसुब्भ्यास्त्वा रुद्रेभ्य-स्त्वाऽऽदित्येभ्यस्त्वा सञ्जानाथां द्यावापृथिवी मित्रावरुणौ त्वा वृष्ट्यावताम् । व्यन्तु व्वयोऽक्तꣳ रिहाणा मरुतां पृषतीर्गच्छ वशा पृश्निर्भूत्वा दिवं गच्छ ततो नो वृष्टिमावह । चक्षुष्पा ऽअग्नेऽसि चक्षुर्म्मे पाहि ॥

ॐ भू० वसव इहाऽऽगच्छतेह तिष्ठत वसुभ्यो नमः वसूनावाहयामि ॥ सम्पूज्य ॥ नमस्कारः ॥

नमस्करोमि देवेशान् नानावस्त्रविराजितान् ।
शुद्धस्फटिकसङ्काशान् दिव्यायुधधरान् वसून् ॥

प्रार्थना - दिव्यवस्त्रा दिव्यदेहा पुष्पमालाविभूषिताः ।
वसवोऽष्टौ महाभागा वरदाः सन्तु मे सदा ॥

ॐ विनतायै नमः ॥ ॐ अणिमायै नमः ॥ ॐ भूत्यै नमः ॥ ॐ गरिमायै नमः ॥ सम्पूज्य ॥ स्तम्भमालभेत् ॥ ॐ ऊर्द्ध्व ऽऊ षु ण० ॥१३॥

(१४) वायव्ये पीतस्तम्भे धनदम् –

आवाहयामि देवेशं धनदं यक्ष पूजितम् ।
महाबलं दिव्यदेहं नरयानगतं विभुम् ॥

दिव्यमालाम्बरधरं गदाहस्तं महाभुजम् ।
आगच्छ यक्षराजेन्द्र स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव ॥
ॐ सोमो धेनुꣳ सोमो ऽअर्व्वन्तमाशुꣳ सोमो व्वीरं कर्म्मण्यं ददाति ।
सादन्यं व्विदत्थ्यꣳ सभेयं पितृश्रवणं य्यो ददाशदस्मै ॥
ॐ भू० धनदेहाऽऽगच्छेह तिष्ठ धनदाय नमः, धनदमावाहयामि ॥
सम्पूज्य ॥ नमस्कारः ।

यक्षराज नमस्तेऽस्तु नमस्ते नरयानग ।
पीताम्बर नमस्तेऽस्तु गदापाणे नमोऽस्तुते ॥

प्रार्थना - दिव्यदेह धनाध्यक्ष पीताम्बर गदाधर ।
उत्तरेश महाबाहो वाञ्छितार्थफलप्रद ॥

ॐ आदित्यायै नमः ॥ ॐ लघिमायै नमः ॥ ॐ सिनीवाल्यै नमः ॥ सम्पूज्य ॥ स्तम्भमालभेत् ॥ ॐ ऊर्द्ध्व ऽऊ षु ण० ॥१४॥

(१५) उत्तरवाय-व्ययोरन्तराले पीतस्तम्भे गुरुम् –

आवाहयामि देवेशं गुरुं त्रिदशपूजितम् ।
हेमगोरीचनावर्णं पीनस्कन्धं सुवक्षसम् ॥
शङ्खं च कलशंचैव पाणिभ्यां हेमविभ्रमम् ।
आगच्छ देवगुरुं स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव ॥

ॐ बृहस्पते ऽअति यदर्य्यो ऽअर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु ॥
यद्दीदयच्छवस ऽऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ॥
ॐ भू० बृहस्पते इहाऽऽगच्छेह तिष्ठ ॥ बृहस्पतये नमः, बृहस्पतिमावाहयामि ॥ सम्पूज्य नमस्कारः ॥

ब्रह्मपुत्र नमस्तेऽस्तु पीतध्वज नमोऽस्तु ते ।
पूजितोऽसियथाशक्त्या दण्डहस्त बृहस्पते ॥
क्रुरूग्रहाभिभूतस्य शान्तिं देवगुरो कुरु ॥

ॐ पौर्णमास्यै नमः ॐ सावित्र्यै नमः । सम्पूज्य ॥ स्तम्भमालभेत् ॥
ॐ ऊर्द्ध्व ऽऊ षु ण० ॥१५॥

(१६) उत्तरेशानयोर्मध्ये रक्तस्तम्भे विश्वकर्माणम् –

आवाहयामि देवेशं विश्वकर्माणमीश्वरम् ।
मूर्ताऽमूर्त्तकरं देवं सर्वकर्तारमीश्वरम् ॥

त्रैलोक्यसूत्रकर्तारं द्विभुजं विश्वदर्शितम् ।
आगच्छ विश्वकर्मस्त्वं स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव ॥

ॐ व्विश्वकर्म्मन्हविषा व्वर्द्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवद्ध्यम् ।
तस्मै व्विशः समनमन्त पूर्व्वीरयमुग्रो व्विहव्यो यथासत् ॥
ॐ विश्वकर्मन्निहाऽगच्छेह तिष्ठ ॐ भू० विश्वकर्मणे नमः विश्वकर्माणमावाहयामि ॥ सम्पूज्य ॥ नमस्कारः ॥

नमामि विश्वकर्माणं द्विभुजं विश्वदर्शितम् ।
त्रैलोक्यसूत्रकर्तारं महाबल पराक्रमम् ॥

प्रार्थना - प्रसीद विश्वकर्मस्त्वं शिल्पशास्त्रविशारद ।
सदण्डपाणे द्विभुज तेजोमूर्तिधर प्रभो ॥

ॐ सिनीवाल्यै नमः ॥ ॐ सावित्र्यै नमः ॥ ॐ वास्तुदेवतायै नमः ॥ सम्पूज्य ॥ स्तम्भमालभेत् ॥ ॐ ऊर्द्ध्व ऽऊ षु ण० ॥१६॥

इति षोडशस्तम्भपूजा - स्तम्भशिरसि बलिकासु ॥ नागमात्रे नमः॥

सर्वेषां नागराजानां पातालतलवासिनाम् ॥
नागमातर आयान्तु भवन्तु स-गणाः स्थिराः ॥
ॐ आयं गौः० ॥ इति सम्पूज्य नमस्कारः ॥
नमोऽस्तु बलिकाबन्ध सुदृढत्वं शुभाप्तिदम् ॥
एनं महामण्डपं तु रक्ष रक्ष निरन्तरम् ॥ ॐ यतो यतः० ॥

प्रार्थना - शेषादिनागराजानः समस्ता मम मण्डपे ॥
पूजां गृहणन्तु सततं प्रसीदन्तु ममोपरि ॥ ततो भूमिस्पर्शः ॥

ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि व्विश्वधाया व्विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री । पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृꣳह पृथिवीं मा हिꣳ सीः ॥
भूमिभूमिमवगान्माता यथा मातरमप्यगात् ॥
भूयास्म पुत्रैः पशुभिर्यो नो द्वेष्टि स भिद्यताम् ॥ पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा ॥
नमस्ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन ॥
नमस्तेऽस्तु हृषीकेश महापुरुष पूर्वज ॥
ॐ नृसिंह उग्ररुप ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल स्वाहा ॥
ॐ नमः शिवाय इति पुष्पाञ्जलिं मण्डपभूमौ विकिरेत् ॥

तोरणपूजनम्

ततो मण्डपाद्बहिः पूर्वे तोरणद्वारसमीपमागत्य ॥ आचम्य प्राणानायम्य ॥ अस्मिन् अमुकयागकर्मणि पूर्वादितोरणपूजां करिष्ये ॥ मौलीबन्धनम् ॥

सुदृढं तोरणं पूर्वे अश्वत्थं काञ्चनप्रभम् ।
रक्षार्थं चैव बध्नामि कर्मण्यस्मिन् सुशोभितम् ॥
ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् ॥

ॐ भू० ऋग्वेदाधिष्ठिताय सुदृढतोरणाय नमः ॥ इति गन्धादिना सम्पूज्य ॥ तत्र त्रिशूलश्रृङ्गेषु प्रादक्षिण्येन ॥ इन्द्र-राहुभ्यां नमः ॥ ॐ धात्रे नमः ॥ ॐ भग-बृहस्पतिभ्यां नमः ॥ सम्पूज्य ॥ प्रार्थयेत् - यथा मेरुगिरे श्रृङ्गं देवानामालयः सदा ।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् देवाधिष्ठानको भव ॥

तत्रैकं कलशं प्रतिष्ठाप्य ॥ कलशोपरि ॐ ध्रुवाय नमः ॥ ॐ अध्वराय नमः ॥ मध्ये ॐ मेधापतये नमः सम्पूज्य ॥१॥

ततो दक्षिणे गत्वा ॥ आचम्य ॥ मौलीबन्धनम् ॥

औदुम्बरं च विकटं याम्ये तोरणमुत्तमम् ॥
रक्षार्थं चैव बध्नामि कर्मण्यस्मिन् सुखाय नः ॥

ॐ इषे त्वोर्ज्जे त्वा व्वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्प्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण ऽआप्यायद्ध्वमघ्न्या ऽइन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा ऽअयक्ष्मा मावस्तेन ईशत माघशᳫ सो द्ध्रुवा ऽअस्मिन्गोपतौ स्यात बह्वीर्य्यजमानस्य पशून्पाहि ॥

ॐ भू० सुभद्रतोरणाय नमः ॥ सुभद्रतोरणमा० ॥ विकट-तोरणाय नमः ॥ विकटतोरणमा० ॥ सम्पूज्य ॥ तत्र त्रिशूलश्रृङ्गेषु प्रादक्षिण्येन ॥ ॐ सूर्य-पूषाभ्यां नमः सूर्य-पूषाणौ आवाहयामि ॥ मध्ये मित्राय नमः मित्रं० ॥ ॐ वरुणाऽङ्गारकाभ्यां नमः ॥ वरुणाऽङ्गारकौ० ॥ सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥

यथा मेरुगिरेः श्रृङ्गं देवानामालयः सदा ।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् देवाधिष्ठानको भव ॥

तत्रैकं कलशं संस्थाप्य ॥ कलशोपरि ॥ ॐ पर्जन्याय नमः ॥ ॐ अशोकाय नमः ॥ मध्ये धरायै नमः ॥ इति सम्पूज्य ॥२॥

पश्चिमे गत्वा आचम्य ॥ मौलीबन्धनम् ॥

प्लाक्षं च पश्चिमे भीमं तोरणं स्वर्णसन्निभम् ।
रक्षार्थंचैव बध्नामि कर्मण्यस्मिन् सुखाय नः ॥
ॐ अग्न ऽआयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये ।
निहोता सत्सि वर्हिषि ॥

ॐ सुभीमतोरणाय नमः ॥ सुकर्मतोरणाय नमः ॥ सम्पूज्य ॥ तत्र त्रिशूलश्रृङ्गेषु प्रादक्षिण्येन ॥ ॐ अर्यम-शुक्राभ्यां नमः अर्यम-शुक्रौ० ॥ मध्ये ॐ अंशवे नमः अंशुमा० ॥ ॐ विवस्वद्बुधाभ्यां नमः विवस्वद्बुधौ० ॥ सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥

यथा मेरुगिरेः श्रृङ्गे देवानामालयः सदा ।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् देवाधिष्ठानको भव ॥

तत्रैकं कलशं संस्थाप्य ॥ कलशोपरि ॐ अनिलाय नमः ॥ ॐ अनिलम् आवा० ॥ मध्ये ॐ वाक्पतये नमः ॥ इति सम्पूज्य ॥३॥

ततोउत्तरे गत्वा ॥ आचम्य ॥ मौलीबन्धनम् ॥

न्यग्रोधतोरणमिव उत्तरे च शशिप्रभम् ।
रक्षार्थं चैव बध्नामि कर्मण्यस्मिन् सुखाय नः ॥
ॐ शं नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये ॥
शं य्योरभि स्रवन्तु नः ॥

ॐ सुहोत्रतोरणाय नमः ॥ ॐ सुप्रभतोरणाय नमः ॥ सम्पूज्य ॥ तत्र त्रिशूलश्रृङ्गेषु प्रादक्षिण्येन ॥ ॐ त्वष्ट्-सोमाभ्यां नमः ॥ ॐ सवितृ-केतुभ्यां नमः ॥ ॐ विष्णु-शनिभ्यां नमः ॥ सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥

यथा मेरुगिरेः श्रृङ्ग देवानामालयः सदा ।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् देवाधिष्ठानको भव ॥

तत्रैकं कलशं संस्थाप्य ॥ कलशोपरि ॥ ॐ प्रत्यूषाय नमः ॥ ॐ प्रभासाय नमः ॥ मध्ये ॐ विघ्नेशाय नमः ॥ सम्पूज्य ॥ प्रार्थयेत् ॥ तोरणाधिष्ठिता देवाः पूजिता भक्तिमार्गतः ॥ ते सर्वेमम यज्ञेऽस्मिन् रक्षां कुर्वन्तु वः सदा ॥४॥ इति तोरणपूजा ॥

ततो मण्डपस्य द्वारपूजा

पूर्वे गत्वा आचम्य प्राणानायम्य ॥ देशकालौ सङ्कीर्त्य० अस्मिनअमुकयागकर्मणि मण्डपस्य पूर्वादिद्वारपूजां करिष्ये ॥

आयाहि वज्रसंघात पूर्वद्वारकृपाधिप ॥
ऋग्वेदाधिपते नाम्ना सुशोभन नमोऽस्तु ते ॥

द्वौ कलशौ स्थापयेत् ॥ प्रथमदक्षिणकलशोपरि ॥ ॐ प्रशान्ताय नमः ॥ द्वितीयोत्तर-कलशोपरि ॥ ॐ शिशिराय नमः ॥ व्रतो मध्ये तृतीयप्रथमस्थापितकलशोपरि ॥ ॐ ऐरावताय नमः ॥ गन्धादिना सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥

स-वस्त्रं स-जलं गन्धं पुष्प-पल्लवसंयुतम् ।
स-रत्नं स्थापयाम्येव द्वारेऽस्मिन् कलशद्वयम् ॥

ॐ द्वारश्रियै नमः, इति ऊर्ध्वम् ॥ अधः देहल्यै नमः ॥ दक्षिणशाखायाम् ॥ ॐ गणेशाय नमः ॥ वामशाखायां ॐ स्कन्दाय नमः ॥ द्वारकलशयोः ॥ ॐ गंगायै नमः ॥ ॐ यमुनायै नमः ॥ सम्पूज्य ॥ ऋग्वेदिनौ पूजयेत् ॥

ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् ॥ होतारं रत्नधातमम् ॥

कर्मनिष्ठा तपोयुक्ता ब्राह्मणा वेदपारगाः ।
जपार्थं चैव सूक्तानां यज्ञे भवत ऋत्विजौ ॥ मध्यकलशोपरि ॥

एह्येहि सर्वामरसिद्धसाद्ध्यैरभिष्टुतो वज्रधराऽमरेश ।
संवीज्यमानोऽसरसा गणेन रक्षाऽध्वरं नो भगवन् नमस्ते ॥

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ हवे हवे सुहवꣳ शूरमिन्द्रम् ।
ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥

इमां पताकां पीतां च ध्वजं पीतं सुशोभनम् ।
आलभामि सुरेशाय शचीप्रीत्यै नमो नमः ॥

ध्वजपताकयोर्मध्ये ॥ ॐ हेतुकाराय नमः ॥ ॐ क्षेत्रपालाय नमः इति सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥

इन्द्रः सुरपतिः श्रेष्ठो वज्रहस्तो महाबलः ।
शतयज्ञाधिपो देवस्तस्मै नित्यं नमो नमः ॥

ततो बलिदानम् ॥ माषभक्तबलिं देव गृहाणेन्द्र शचीपते ॥ यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ॥ ॐ नमो भगवते इन्द्राय सकलसुराणामधिपतये स-वाहनाय स-परिवाराय स-शक्तिकाय तत्पार्षदेभ्यः सर्वेभ्यो देवेभ्यः सर्वेभ्यो भूतेभ्य इमं सदीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि ॥ भो इन्द्र स्वां दिशं रक्ष वलिं भक्ष मम स-कुटुम्बस्य स परिवारस्य गृहे आयुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव ॥ अनेन बलिदानेन इन्द्रः प्रीयताम् ॥१॥

ततोऽग्निकोणमागत्य ॥ आचम्य ॥ कलशं संस्थाप्य कलशोपरि ॥ ॐ पुण्डरीकाय नमः ॥ ॐ अमृताय नमः ॥ सम्पूज्य ॥ नमस्कारः ॥

एह्येहि सर्वामरहव्यवाह मुनिप्रवर्य्यैरभितोऽभिजुष्ट ।
तेजोवता लोकगणेन सार्द्धं ममाऽध्वरं पाहि कवे नमस्ते ॥

प्रार्थना — सप्तार्चिषं च विभ्राण मक्षमालां कमण्डलुम् ।
ज्वालामालाकुलं रक्तं शक्तिहस्तमजासनम् ॥
ॐ त्वन्नो ऽअग्ने तव देवपायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य ॥
त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेषꣳ रक्षमाणस्तव व्रते ॥

ॐ भू० अग्नये नमः अग्निमा० ।सम्पूज्य॥ ध्वजपताकामालभ्य ॥

पताकामाग्नये रक्तां गन्धमाल्यादिभूषिताम् ।
स्वाहायुक्ताय देवाय ह्यालभामि हविर्भुजे ॥

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे ॥ द्रेवाँ२ ऽआसादयादिह ॥

ध्वज पताकयोः ॥ ॐ कुमुदाक्षाय नमः॥ ॐ क्षेत्रपालाय नमः ॥ सम्पूज्य ॥ नमस्कारः ॥

आग्नेयपुरुषो रक्तः सर्वदेवमयोऽव्ययः ।
धूम्रकेतुरजोऽध्यक्षस्तस्मै नित्यं नमो नमः ॥

बलिदानम् ॥ इमं माषबलिं देव गृहाणाऽग्ने हुताशन ॥ यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ॥ अग्नये साङ्गाय स-परिवाराय स-शक्तिकाय इमं स-दीपदधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि ॥ भो अग्ने

स्वां दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम स-कुटुम्बस्य स-परिवारस्य गृहे आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव ।। अनेन बलिदानेन अग्निःप्रीयताम् ।। २।।

दक्षिणे गत्वा आचम्य ।। द्वारकलशौ प्रतिष्ठाप्य कलशोपरि ॐ पर्जन्याय नमः ।। ॐ अशोकाय नमः ।। मध्यकलशे ॐ वामनदिग्गजाय नमः ।। सम्पूज्य प्रार्थयेत् ।।

स-वस्त्रं स-जलं गन्धं पुष्प-पल्लवसंयुतम् ।
स-रत्नं स्थापयान्येव द्वारेऽस्मिन् कलशद्वयम् ।।

ततो द्वारोर्ध्वे ॐ द्वारश्रियै नमः ।। अधः ॐ देहल्यै नमः ।। द्वारशाखयोः ।। ॐ पुष्पदन्ताय नमः ।। द्वारकलशयोः ।। ॐ गोदावर्य्यै नमः ।। ॐ कृष्णायै नमः ।। सम्पूज्य प्रार्थयेत् ।।

वैवस्वत महादेव नमस्ते धर्मसाक्षिक ।
शिवाज्ञया पिहितो देव दिशं रक्ष भवानिह ।।

ततो यजुर्वेदिनौ पूजयेत् – ॐ इषे त्वोर्ज्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽ आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा वस्तेन ईशत माघशꣳसो ध्रुवा अस्मिन्गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि ।।

ततो मध्यकलशोपरि ।।

एह्येहि वैवस्वत धर्मराज सर्वामरैरर्चित धर्ममूर्ते ।
शुभाऽशुभानन्दशुचामधीश शिवाय नः पाहि मखं नमस्ते ।।

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा । स्वाहा धर्म्माय स्वाहा धर्म्मः पित्रे ।। ॐ भू० यमं साङ्गं स-परिवारमावा० ।। सम्पूज्य ।। ध्वजपताकामालभ्य ।

कृष्णवर्णां पताकां च कृष्णवर्णध्वजं तथा ।
अन्तकायाऽऽलभामीह क्रतुकर्मणि साक्षिणे ।। ॐ यमाय त्वा० ।।
इमां पताकां रम्या च ध्वजं माल्यादिभूषितम् ।
यमदेव गृहाण त्वं प्रसीद करुणाकर ।।
ध्वज-पताके सम्पूज्य प्रार्थयेत् ।।

यमस्तु महिषारूढो दण्डहस्तो महाबलः ।
धर्मसाक्षी विशुद्धात्मा तस्मै नित्यं नमो नमः ।। ततो बलिदानम् ।।
इमं माषबलिं देव गृहाणाऽन्तक वै यम ।
यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ।।

यमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय स-शक्तिकाय इमं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि ।। भो यम बलिं गृहाण मम स-कुटुम्बस्य स-परिवारस्याऽऽयुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव ।। अनेन बलिदानेन यमः प्रीयताम् ।। ३।।

नैर्ऋते गत्वा आचम्य ।। कलशं प्रतिष्ठाप्य ।

नैर्ऋतिं खड्गहस्तं च सर्वलोकैकपावनम् ।।
आवाहयामि यज्ञेऽस्मिन् पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ।।

कलशोपरि ॐ कुमुदाय नमः ।। ॐ दुर्ज्जयाय नमः ।। सम्पूज्य कलशे—

एह्येहि रक्षोगणनायकस्त्वं विशालवेतालपिशाचसंघैः ।
ममाऽध्वरं पाहि पिशाचनाथ लोकेश्वर त्वं भगवन् नमस्ते ।।
ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य ।।
अन्यमस्मदिच्छ सा त ऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ।।

ॐ भू० निर्ऋतिं साङ्गं स-परिवारं आवाहयामि ।। सम्पूज्य ।। ध्वजपताकामालभ्य ।।

पताकां निर्ऋतिं चैव नीलवर्णं ध्वजं तथा ।
पिशाचगणनाथाय आलभामि ममाऽध्वरे ।।

ॐ असुन्वन्तम० ।। सम्पूज्य ।। ध्वज-पताकयोः ॐ कमुदाक्षाय नमः ।। ॐ क्षेत्रपालाय नमः सम्पूज्य प्रार्थयेत् ।।

सर्वप्रेताधिपो देवो निर्ऋतिनीलविग्रहः ।।
करे खड्गधरो नित्यं निर्ऋतये नमो नमः ।। ततो बलिदानम् ।।
इमं माषबलिं यक्षो गृहाण निर्ऋतिप्रभो ।
यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ।।

निर्ऋतये साङ्गाय स-परिवाराय सायुधाय स-शक्तिकाय इमं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि ॥ भो निर्ऋते बलिं गृहाण मम स-कुटुम्बस्य स-परिवारस्याऽऽयुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव ॥ अनेन बलिदानेन निर्ऋतिः प्रीयताम् ॥४॥

पश्चिमे गत्वा आचम्य ॥ ततः कलशौ प्रतिष्ठाप्य सम्पूज्य ॥ नमस्कारः ॥

नमोऽस्तु कामरूपाय प्रत्यग्द्वाराश्रिताय च ।
सामवेदाधिपस्त्वं हि नाम्ना कल्याणकारक ॥

कलशोपरि ॐ भूतसञ्जीवनाय नमः ॥ ॐ अमृताय नमः ॥ मध्यकलशे ॥ ॐ अनन्ताख्यदिग्गजाय नमः ॥ द्वारोर्ध्वे द्वारश्रियै नमः ॥ अधः देहल्यै नमः ॥ द्वारशाखयोः ॥ ॐ नन्दिन्यै नमः ॥ ॐ चण्डायै नमः ॥ द्वार-कलशयोः ॥ ॐ रेवायै नमः ॥ ॐ ताप्यै नमः ॥ सम्पूज्य ॥ ततः सामवेदिनौ पूजयेत् ॥

ॐ अग्न ऽआयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये ॥ निहोता सत्सि वर्हिषि ॥ इति सम्पूज्य ॥ मध्यकलशे ॥

एह्येहि यादोगण वारिधीनां गणेन पर्जन्य सहाऽप्सरोभिः ॥
विद्याधरेन्द्रामरगीयमान पाहि त्वमस्मान् भगवन्नमस्ते ॥

ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्तेयजमानो । हविर्भिः ॥ अहेडमानो वरुणेह बोद्ध्युरुशꣳ समान ऽआयुः प्रमोषीः ॥

ॐ भू० वरुणं साङ्गंसपरिवारं आवाहयामि ॥ वरुणाय साङ्गाय स-परिवाराय नमः इति सम्पूज्य ॥ ध्वजपताकामालभ्य ॥

श्वेतवर्णां पताकां च ध्वजं श्वेतमयं शुभम् ।
वरुणाय जलेशाय ह्यालभामि सुखाप्तये ॥

ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मद्वाधमं विमध्यमꣳ श्रथाय ॥ अथा व्वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम ॥ इति सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥

पाशहस्तस्तु वरुणः साम्भसां पतिरीश्वरः ।
शमं नयाऽऽशु विघ्नानि नमस्ते पाशपाणये ॥ ततो बलिदानम् ॥
इमं माषबलिं देव गृहाण जलधीश्वर ।
यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ॥

वरुणाय साङ्गाय स-परिवाराय सायुधाय स-शक्तिकाय इमं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि ॥ भो वरुण बलिं गृहाण मम स-कुटुम्बस्य स-परिवारस्याऽऽयुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव ॥ अनेन बलिदानेन नमो भगवते सकलजलानामधिपतये न मम ॥५॥

वायव्ये गत्वा ॥ कलशं प्रतिष्ठाप्य कलशे ॐ पुष्पदन्ताय नमः ॥ ॐ सिद्धार्थाय नमः ॥ गन्धादिभिः सम्पूज्य ॥ कलशोपरि ॥

एह्येहि यज्ञे मम रक्षणाय मृगाधिरूढःसह सिद्धसङ्घैः ।
प्राणाधिपः कालकवेः सहाय गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते ॥

ॐ आनो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरꣳ सहस्रिणीभिरुप याहि यज्ञम् ॥ व्वायो ऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥

ॐ भू० वायवे नमः वायुमा० ॥ ध्वजपताकामालभ्य ॥

पताकां वायवे धूम्रां धूम्रवर्णध्वजं तथा ।
आलभाम्यानुरूपाय प्राणदाय हिताय च ॥

ॐ वायो ये ते सहस्रिणो रथासस्तेभिरागहि ॥ नियुत्वान्सोमपीतये ॥ सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥

अनाकारो महौजाश्च सर्वगन्ध वहः प्रभुः ।
तस्मै पूज्याय जगतो वायवेऽहं नमामि च ॥ ततो बलिदानम् ॥
माषभक्तबलिं वायो मया दत्तं गृहाण भो ।
यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ॥

वायवे साङ्गाय स-परिवाराय सायुधाय स-शक्तिकाय इमं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि ॥ भो वायो ॥ साङ्गः स-परिवारः सायुधः स-शक्तिको मम सकुटुम्बस्य स-परिवारस्याऽऽयुःकर्ता शान्ति-कर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव ॥ अनेन बलिदानेन नमो भगवते वायवे सकलप्राणानामधिपतये प्रीयताम् ॥६॥

उत्तरे गत्वा ॥ आचम्य ॥ द्वारकलशौ संस्थाप्य सम्पूज्य नमस्कारः ॥

नमस्ते दिव्यरूप त्वमथर्वाधिपते प्रभो ।
कलावधिपतिर्नाम्ना मङ्गलं चोत्तरानन ॥

कलशोपरि ॐ धनदाय नमः ॐ श्रीप्रदाय नमः ॥ मध्यकलशे ॐ सार्वभौमदिग्गजाय नमः ॥ सम्पूज्य ॥ द्वारोर्ध्वे ॐ द्वारश्रियै नमः ॥ अधः ॐ देहल्यै नमः ॥ द्वारशाखयोः क्रमेण ॐ महाकालाय नमः ॥ ॐ भृङ्गिणे नमः ॥ द्वारकलशयोः ॐ नर्मदायै नमः ॥ ॐ ताप्यै नमः ॥ सम्पूज्य ॥ अथर्वाणौ पूजयेत् ॥

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये । शं य्योरभि स्रवन्तु नः ॥

मध्यकलशे ॥

एह्येहि यज्ञेश्वर यज्ञरक्षां विधत्स्व नक्षत्रगणेन सार्द्धम् ।
सर्वौषधीभिः पितृभिः सहैव गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते ॥

ॐ वयꣳ सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः । प्रजावन्तः सचेमहि ॥

ॐ भू० सोमाय नमः सोममावा०॥ सम्पूज्य ॥

ध्वजपताकामालभ्य ॥

हरितवर्णा पताकां च हरिद्वर्णमयं ध्वजम् ।
कुबेराय लभाम्येव पूजयेच्च सदार्थिना ॥

ॐ आप्यायस्व समेतु ते व्विश्वतः सोम वृष्ण्यम् । भवा व्वाजस्य सङ्गथे ॥ सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥

गौरोपमपुमान् स्थूलः सर्वौषधिरसादयः ॥
नक्षत्राधिपतिः सोमस्तस्मै नित्यं नमो नमः ॥ ततो बलिदानम् ॥

इमं माषभक्तबलिं देव गृहाण त्वं धनप्रद ।
यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ॥

सोमाय साङ्गाय स-परिवाराय सायुधाय स-शक्तिकाय इमं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि ॥ भो सोम बलिं गृहाण मम स-कुटुम्बस्य स-परिवारस्य आयुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव ॥ अनेन बलिदानेन सोमः प्रीयतां० ॥७॥

ईशाने गत्वा ॥ आचम्य ॥ कलशं संस्थाप्य कलशे ॐ सुप्रतीकाय नमः ॥ ॐ मङ्गलाय नमः ॥ सम्पूज्य ॥ पुनः कलशोपरि ॥

एह्येहि विश्वेश्वर नस्त्रिशूलकपालखट्वाङ्गधरेण सार्धम् ।
लोकेश भूतेश्वर यज्ञसिद्ध्यै गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे व्वयम् ॥ पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥

ॐ भू० ईशानाय नमः ईशानं० ॥ सम्पूज्य ॥ ध्वजपताकामालभ्य ॥

ईशानाय ध्वजं श्वेतं पताकां गन्धभूषिताम् ।
आलभामि महेशाय वृषारूढाय शूलिने ॥

ॐ तमीशानं० ॥ सम्पूज्य ॥ प्रार्थयेत् ॥

सर्वाधिपो महादेव ईशानः शुक्ल ईश्वरः ।
शूलपाणिर्विरूपाक्षः तस्मै नित्यं नमो नमः ॥ ततो बलिदानम् ॥

इमं माषबलिं देव गृहाणेशान शङ्कर ॥
यज्ञ-संरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ॥

ईशानाय साङ्गाय स-परिवाराय सायुधाय स-शक्तिकाय इमं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि ॥ भो ईशान बलिं गृहाण मम स-कुटुम्बस्य स-परिवारस्य आयुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव ॥ अनेन बलिदानेन ईशानः प्रीयतां न मम ॥८॥

ईशानेन्द्रयोर्मध्ये गत्वा आचम्य ॥ कलशं प्रतिष्ठाप्य कलशे ॥

एह्येहि विष्ण्वाधिपते सुरेन्द्र लोकेन सार्द्धं पितृदेवताभिः ।
सर्वस्य धातास्यमितप्रभावो विशाऽध्वरं नः सततं शिवाय ॥

ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो व्वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः ॥ यः शꣳसते स्तुबते धायि पज्र ऽइन्द्रज्येष्ठा ऽअस्माँ ऽअवन्तु देवाः ॥

ॐ भू० ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं० ॥ सम्पूज्य ॥ ध्वजपताकामालभ्य ॥

पद्मवर्णां पताकां च पद्मवर्णध्वजं तथा ।
आलभामि सुरेशाय ब्रह्मणेऽनन्तशक्तये ॥

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो व्वेन ऽआवः ॥

स बुध्न्याऽउपमा ऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥ सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥

पद्मयोनिश्चतुर्मूर्ति-र्वेदव्यासपितामहः ।
यज्ञाध्यक्षश्चतुर्वक्त्रस्तस्मै नित्यं नमो नमः ॥ ततो बलिदानम् ॥
इमं माषबलिं ब्रह्मन् गृहाण कमलासन ।
यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ॥

ब्रह्मने साङ्गाय स-परिवाराय सायुधाय स-शक्तिकाय इमं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि ॥ भो ब्रह्मन् बलिं गृहाण मम स-कुटुम्बस्य स-परिवारस्याऽऽयुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव । अनेन बलिदानेन ब्रह्मा प्रीयतां न मम ॥ ९॥

नैर्ऋत्य-पश्चिमयोर्मध्ये गत्वा ॥ आचम्य ॥ कलशं प्रतिष्ठाप्य वरुणाय नमः इति सम्पूज्य ॥ पुनः कलशोपरि ॥

एह्येहि पातालधरामरेन्द्र नागाङ्गनाकिन्नरगीयमान ॥
यक्षोरगेन्द्रा-मरलोकसंघैरनन्त ! रक्षाऽध्वरमस्मदीयम् ॥

ॐ स्योना पृथिवि नो भवान्नृक्षरा निवेशनी ॥ यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः ॥

ॐ भू० अनन्ताय नमः अनन्तमा०॥ सम्पूज्य ॥ ध्वजपताकामालभ्य ॥

मेघवर्णां पताकां च मेघवर्णं ध्वजं तथा।
आलभामि ह्यनन्ताय धरणीधारिणे नमः ॥
ॐ नमोस्तु सर्प्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ।
ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।।सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥
घनवर्णां पताकेमां ध्वजं गन्धविभूषितम् ।
स्थापयामि प्रसन्नाय अनन्ताय नमो नमः ॥ ततो बलिदानम् ॥
इमं माषबलिं शेष गृहाणाऽनन्त पन्नग ।
यज्ञसंरक्षणार्थाय प्रसन्नो वरदो भव ॥

अनन्ताय साङ्गाय स-परिवाराय सायुधाय स-शक्तिकाय इमं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि । भो अनन्त बलिं गृहाण मम स-कुटुम्बस्य स-परिवारस्याऽऽयुःकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता क्षेमकर्ता आरोग्यकर्ता वरदो भव ॥ अनेन बलिदानेन अनन्तः प्रीयतां न मम ॥१०॥

पुनः ईशाने गत्वा ॥ आचम्य महाध्वजं पूजयेत् ॥

ॐ आ ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्च्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर ऽइषव्योतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धे नुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य व्वीरो ज्जायतां निकामे निकामे नः पर्ज्जन्यो व्वर्षतु फलवत्यो न ऽओषधयः पच्च्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥

ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ॥ वंशे ॐ किन्नरेभ्यो नमः ॥ ॐ पन्नगेभ्यो नमः ॥ सम्पूज्य आलभेत् ॥

इमं विचित्रवर्णं तु महाध्वजविनिर्मितम् ।
महाध्वजं चाऽऽलभामि महेन्द्राय सुप्रीतये ॥ ॐ ब्रह्म जज्ञानं० ॥
अमुं महाध्वजं चित्रं सर्वविघ्नविनाशकम् ।
महामण्डपमध्ये तु स्थापयामि सुरार्चने ॥

ॐ इन्द्रस्य व्वृष्णो वरुणस्य राज्ञ ऽआदित्यानां मरुताᳩ शर्द्ध ऽउग्रम् । महाम्मनसां भुवनच्यवानां घोषो देवानां जयतामुदस्थात् ॥

अनया पूजया इन्द्रः प्रीयतां न मम ।

ततो मण्डपषोडशवलिकासु ॥ ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ॥

वंशेषु किन्नरेभ्यो नमः ॥ मण्डपपृष्ठदेशे पन्नगेभ्यो नमः ॥ इति सम्पूज्य ॥ ततो मण्डपाद्बहिः पूर्वेशानसमीपे किञ्चिद्भूमिं गोमयेनोपलिप्य तत्राऽष्टदलं कमलं विरच्य अष्टदलेषु ॥ ॐ नमो गणेभ्यो० सम्पूज्य ॥ प्रार्थयेत् ॥

त्रैलोक्ये यानि भूतानि स्थावराणि चराणि च ।
ब्रह्म-विष्णु-शिवैः सार्द्धं रक्षां कुर्वन्तु मे सदा ॥
देव-दानव-गन्धर्वा यक्ष-राक्षस-पन्नगाः ।

ऋषयो मनवो गावो देवमातर एर च ॥
सर्वे ममाऽध्वरे रक्षां प्रकुर्वन्तु मुदान्विताः ।
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च क्षेत्रपालगणैः सह ॥
रक्षन्तु मण्डपं सर्वे ध्वन्तु रक्षांसि सर्वतः ॥

ततः अक्षतपुञ्जेषु पूर्वादिक्रमेण ॥ त्रैलोक्यस्थेभ्यः स्थावरेभ्यो नमः स्थावरानावाहयामि ॥१॥ ॐ त्रैलोक्यस्थेभ्यरेभ्यो नमः चरानावाहयामि ॥२॥ ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं० ॥३॥ ॐ विष्णवे नमः विष्णुमावाहयामि ॥४॥ ॐ शिवाय नमः शिवमावाहयामि ॥५॥ ॐ देवेभ्यो नमः देवानावा० ॥६॥ ॐ दानवेभ्यो० दानवा० ॥७॥ ॐ गन्धर्वेभ्यो० गन्धर्वाना० ॥८॥ ॐ यक्षेभ्यो० यक्षाना० ॥९॥ ॐ राक्षसेभ्यो० राक्षसानावा० ॥१०॥ ॐ पन्नगेभ्यो० पन्नगाना० ॥११॥ ॐ ऋषिभ्यो० ऋषीना०॥१२॥ ॐ मनुष्येभ्यो० मनुष्याना० ॥१३॥ ॐ देवमातृभ्यो० देवमातृः आवा०॥१४॥ सम्पूज्य ॥ इन्द्रादिलोकपालेभ्यो घृतौदनबलिदानम् ॥ ॐ नमो भगवते इन्द्राय पूर्वदिग्वासिभ्यः इन्द्रपार्षदेभ्यो दिगीशमातृगणक्षेत्रपालादिभ्यो बलिरयमुपतिष्ठतु स्वाहा ॥ पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा ॥

नन्दे नन्दय वासिष्ठे वसुभिः प्रजया सह ।
जय भार्गवदायादे प्रजानां विजयावहे ॥१॥
पूर्णे गिरीशदायादे पूर्ण कर्म कुरुष्व माम् ।
भद्रे काश्यपि दायदे कुरु भद्रां मम ॥२॥
सर्वबीजौषधीयुक्ते सर्वरत्नौषधीवृते ।
रुचिरे नन्दने नन्दे वाशिष्ठे नन्दतामिह ॥३॥
प्रजापतिसुते देवि चतुरस्रे महीयसि ।
सुव्रते सुभगे देवि गृहे काश्यपि रम्यताम् ॥४॥
पूजिते परमा चार्यैर्गन्धमाल्यैरलंकृते ॥
भवभूतिकरे देवि गृहे भार्गवि रम्यताम् ॥५॥
अव्यये चाऽक्षते पूर्णे मुनेरङ्गिरसः सुते !
मनुष्यधेनु हस्तश्च पशुवृद्धिकरी भव ॥६॥

इति पुष्पाञ्जलिः ॥ एवं आग्नेयादिलोकपालानां बलिदानम् ॥ ततः ईशान्यां वंशपात्रादौ सार्वभौतिकं माषभक्तबलिं दद्यात् ॥ अस्मिन् अमुकयागकर्मणि मण्डपपूजाङ्गबिहितं मातृगणक्षेत्रपालप्रीतये भूतप्रेत-पिशाचादिनिवृत्त्यर्थं सार्वभौतिकबलिदानं करिष्ये ॥ नूतनवंशशूर्पे माषभक्तबलिं दद्यात् ।

ॐ नमोस्तु रुद्रद्रेभ्यो ये दिवि येषां व्वर्षमिषवः ॥ तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्द्ध्वाः ॥ तेभ्यो नमो ऽअस्तु ते नोऽव्वन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः ॥

इति मन्त्रेण सर्वभूतेभ्यो गन्धादिभिः सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥ ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो० ॥

अधश्चैव तु ये लोका असुराश्चैव पन्नगाः ।
सपत्नी-परिवाराश्च प्रतिगृह्णन्त्विमं बलिम् ॥१॥
नक्षत्राधिपतिश्चोर्ध्वं नक्षत्रैः परिवारितः ।
स्थानश्चैव पितृणां तु सर्वे गृह्णन्त्विमं बलिम् ॥२॥
ये केचिदिह यज्ञेऽस्मिन्नागता बलिकांक्षिणः ।
तेभ्यो बलिं प्रयच्छामि नमस्कृत्य पुनः पुनः ॥३॥
बलिं गृह्णन्त्विमं देवा आदित्या वसवस्तथा ।
मरुतोऽप्यश्विनौ रुद्राः सुपर्णाः पन्नगा ग्रहा ॥४॥
असुरा यातुधानश्च पिशाचा मातरो नगाः ।
शाकिन्यो यक्ष-वेताला योगिन्यः पूतना शिवाः ॥५॥
जृम्भकाः सिद्ध-गन्धर्वा आद्या विद्याधरा नराः ।
दिक्पाला लोकपालाश्च ये च विघ्नविनायकाः ॥६॥
सौम्या भवन्तु ते तृप्त्या देवासुरगणास्तथा ।
ते गृह्णन्तु मया दत्तं बलिं वै सार्वभौतिकम् ॥७॥

अनेन सार्वभौतिकबलिदानेन सार्वभौतिकाधिपती रुद्रः प्रीयताम् ॥
हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य मण्डपं प्रविशेत् ॥

इति मण्डपपूजा समाप्ता ।

कुण्डपूजनम् - अग्निस्थापनम्

संकल्पः – अद्येत्यादि० शुभपुण्यतिथौ मया प्रारम्भस्य सग्रहमखामुकयागकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थम् अस्मिन् यज्ञे कुण्डपूजनम् करिष्ये ॥

ततो मध्यमेखलायां रक्तवर्णा-लङ्कृतायां ब्रह्माणं पूजयेत् —

ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः । स बुध्न्याऽ उपमाऽ अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥ ॐ भू० ब्रह्मणे० ब्रह्माणं० ॥१॥

ततः कुण्डे उपरि मेखलायां श्वेतवर्णालङ्कृतायां विष्णुं पूजयेत् ॥ तद्यथा ॥ ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम् । समूढमस्य पाᳪसुरे स्वाहा ॥ ॐ भू० विष्णवे० विष्णुमा० ॥२॥

तत अधोमेखलायां कृष्णवर्णालङ्कृतायां रुद्रं पूजयेत् —

ॐ नमस्ते रुद्रमन्यवऽउतोतइषवे नमः । बाहुब्भ्यामुतते नमः । भू० रुद्राय० रुद्रमा० ॥३॥

ततो योन्यां रक्तवर्णालङ्कृतायां गौरीं पूजयेत् —

ॐ अम्बेऽ अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन । ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥ भू० गौर्य्यै० गौरीमा० ॥४॥

ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठादिवᳪरुद्द्रा ऽउपश्रिताः । तेषाᳪ सहस्रयोजने वधन्वानितन्मसि ॥ इति कण्ठं पूजयेत् ॥

ॐ नाभिर्मेचित्तं विज्ञानन् पायुर्मेपचितिर्ब्भसत् । आनन्दनन्दा वाण्डौमेभगः सौभाग्ग्यम्पसः । जङ्घाभ्याम् पद्भ्यांधर्म्मोस्मि विशिराजाप्रतिष्ठितः ॥ ॐ भू० नाभ्यै नमः नाभिमा० ॥५॥

ॐ विश्वकर्म्मन्हविषा व्वर्द्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवद्ध्यम् । तस्मै विशः समनमन्त पूर्व्वीरयमुग्रो विहव्यो यथासत् ॥ ॐ भू० विश्वकर्मणे० विश्वकर्माणं० ॥६॥

यथोपचारैःसम्पूज्य प्रणमेत् ।

ततः आचार्यः अग्न्यायतनस्य पश्चात् प्राङमुखोपविश्याऽऽचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रः अमुकशर्मा सपत्नीकोऽहम्

अस्मिन् स नवग्रहमखे अमुकयागकर्मणि पञ्चभूसंस्कारपूर्वकं शतमङ्गलनामाग्निस्थापनं करिष्ये ॥

तत्र पञ्चभूसंस्कारः – कुशैः परिसमूह्य तान् कुशानैशान्यां परित्यज्य ॥ गोमयोदकाभ्यामुपलिप्य ॥ स्फयेन स्रुवमूलेन वा उल्लिख्य ॥ उल्लेखनक्र-मेणाऽनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्य उदकेनाऽभ्युक्ष्य ततः कुण्डे सुवर्णखण्डं निक्षिप्य वस्त्रेणाऽऽच्छाद्य ॥ ततो अरणीप्रदानं कुर्यात् । तद्यथा ॥ स्मार्ताग्निसाधनभूते योनिरूपे इमे अरणी युवाभ्यां प्रतिगृह्यताम् ॥ इयमधरा । इयमुत्तरा ॥ ततो यजमानः तौ स्मार्त्ताग्निसाधनभूते इमे अरणी आवाभ्यां परिगृहाण ॥ ततो ब्रह्मा ॥ इदं चात्र ॥ इदमोवलीं इदं नेत्रम् ॥ इमानि स्रुवादीनि पात्राणि प्रतिगृहाणं ॥ ततो यजमानः ॥ इमानि स्रुवादीनि पात्राणि प्रतिगृह्णामि ॥ पत्नी तु यजमानहस्तादधरारणिमंके निदधाति ॥ यजमानोऽप्यङ्के उत्तरारणिं निदधाति ॥ उभावप्यरण्योः पूजां कुरुतः ॥ तद्यथा प्राग्ग्रीवमुत्तरलोम कृष्णाजिनं कम्बलोपरि आस्तीर्य तस्योपरि उदगग्रामधरारणिं निधाय ॥ तत्पूर्वं उत्तरारणिं च निधाय ॐ युवाभ्याम-रणीभ्यां नमः इति सम्पूज्य ॥ ततो अधरारण्यामुक्तप्रदेशे प्रमन्थमूलं निधाय चात्राग्रे चोवलिमुदगग्रां च नेत्रेण चात्रं त्रिर्वेष्टयित्वा गाढं धृत्वा पश्चिमाभिमुखोपविष्टया पत्न्या मन्थयेत् ॥ यावदग्नेरुत्पत्तिः ॥ पत्न्यामन्थनासामर्थ्ये अन्ये ब्राह्मणाः शुचयो मथ्नन्ति ॥ एवं यजमानासामर्थ्ये अन्यो यन्त्रं धारयति ॥ ततो यातमग्निं मृण्मयपात्रे शुष्कगोमयचूर्णं नारिकेलजटां च स्थापयित्वा तस्मिन् पात्रे अग्निमाहृत्य वेणुनलिकया प्रज्वालयेत् ॥ ततोऽग्निं कांस्यपात्रे धृत्वा कांस्यपात्रेणाऽऽच्छाद्य कुण्डमध्ये नीत्वा ॥

ॐ अग्निं दूतमिति मन्त्रान्ते शतमङ्गलनामानमग्निमुपसमादधे इत्यग्निं स्वाभिमुखं निधाय ॥ चत्वारि श्रृङ्गेति अग्निमावाह्य ॐ मनोजूतिरिति प्रतिष्ठाप्य ॥ ध्यायेत् ॥

रुद्रतेजःसमुद्भूतं द्विमूर्द्धानं द्विनासिकम् ।
षण्नेत्रं च चतुःश्रोत्रं त्रिपादं सप्तहस्तकम् ॥
याम्यभागे चतुर्हस्तं सव्यभागे त्रिहस्तकम् ।

स्रुवं स्रुचिं च शक्तिं च अक्षमालां च दक्षिणे ॥
तोमरं व्यजनं चैव घृतपात्रं तु वामके ।
विभृतं सप्तभिर्हस्तैर्द्विमुखं सप्तजिह्वकम् ॥
दक्षिणं च चतुर्जिह्वं त्रिजिह्वं चोत्तरं मुखम् ।
द्वादश कोटिमूर्त्याख्यं द्विपञ्चाशत्कलायुतम् ॥
स्वाहा - स्वधा - वषट्कारैरङ्कितं मेषवाहनम् ।
रक्तमाल्याम्बरधरं रक्तपद्मासनस्थितम् ॥
रौद्रं च शिवनामानं वह्निमावाहयाम्यहम् ।
त्वं मुखं सर्वदेवानां सप्तार्चिरमितद्युते ॥
आगच्छ भगवन् देव यज्ञेऽस्मिन् सन्निधो भव ॥

इत्यग्निस्थापनम् ॥ ततः कुण्डात् प्रागुत्तरे (ईशान्यां) वस्तुतः वायव्ये कलशस्थापनविधिना शान्तिकलशं संस्थाप्य ॥ नवग्रह पूजनं कुर्यात् ॥

नवग्रह-मण्डल-पूजनम्

संकल्पः – देशकालौ सङ्कीर्त्य 'अस्मिन् यज्ञकर्मणि सूर्यादिनवग्रहाणामधि देवताप्रत्यधिदेवता-पञ्चलोकपाल-दशदिक्पालानां चावाहनं स्थापनं पूजनं च करिष्ये' इति सङ्कल्प्य।

१. सूर्य (मध्यमें गोलाकार, लाल)

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च ।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥
जपाकुसुमसङ्काशं काश्यपेयं महाद्युतिम् ।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं सूर्यमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कलिङ्गदेशोद्भव काश्यपगोत्र रक्तवर्ण भो सूर्य! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ सूर्याय नमः, सूर्यमावाहयामि, स्थापयामि ।

२. चन्द्र (अग्निकोणमें, अर्धचन्द्र, श्वेत)

ॐ इमं देवाऽ असपत्नᳬ सुवद्ध्वं महते क्षत्राय
महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय ।
इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽ एष वोऽमी
राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाᳩ राजा ॥

दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम् ।
ज्योत्स्नापतिं निशानाथं सोममावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः यमुनातीरोद्भव आत्रेयगोत्र शुक्लवर्ण भो सोम ! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ सोमाय नमः, सोममावाहयामि, स्थापयामि ।

३. मंगल (दक्षिणमें, त्रिकोण, लाल)

ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽ अयम् ।
अपाᳩ रेताᳩ सि जिन्वति ॥
धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्तेजस्समप्रभम् ।
कुमारं शक्तिहस्तं च भौममावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अवन्तिकादेशोद्भव भारद्वाजगोत्र रक्तवर्ण भो भौम ! इहागच्छ,इह तिष्ठ ॐ भौमाय नमः, भौममावाहयामि, स्थापयामि ।

४. बुध (ईशानकोणमें, हरा, धनुष)

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते सᳬ सृजेथामयं च । अस्मिन्त्सधस्थेऽ अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत ॥
प्रियङ्गुकलिकाभासं रूपेणाप्रतिमं बुधम् ।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं बुधमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः मगधदेशोद्भव आत्रेयगोत्र पीतवर्ण भो बुध ! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ बुधाय नमः, बुधमावाहयामि, स्थापयामि ।

५. बृहस्पति (उत्तरमें पीला, अष्टदल)

ॐ बृहस्पतेऽ अति यदर्योऽ अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु ।
यद्दीदयच्छवसऽ ऋतप्रजा तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ।
देवानां च मुनीनां च गुरुं काञ्चनसंनिभम् ।
वन्द्यभूतं त्रिलोकानां गुरुमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सिन्धुदेशोद्भव आङ्गिरसगोत्र पीतवर्ण भो वृहस्पते । इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ बृहस्पतये नमः, बृहस्पतिमावाहयामि, स्थापयामि ।

६. शुक्र (पूर्वमें श्वेत, पञ्चकोण)

ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः ।
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानᳬ शुक्रमन्धसऽ इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु ॥

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् ।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं शुक्रमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भोजकटदेशोद्भव भार्गवगोत्र शुक्लवर्ण भो शुक्र ! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ शुक्राय नमः, शुक्रमावाहयामि, स्थापयामि ।

७. शनि (पश्चिममें, काला मनुष्य)

ॐ शं नो देवीरभिष्टयऽ आपो भवन्तु पीतये । शं योरभि स्रवन्तु नः ॥

नीलाम्बुजसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।
छायामार्तण्डसम्भूतं शनिमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भव काश्यपगोत्र कृष्णवर्ण भो शनैश्चर ! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ शनैश्चराय नमः, शनैश्चरमावाहयामि, स्थापयामि ।

८. राहु (नैर्ऋत्यकोणमें, काला मकर)

ॐ कया नश्चित्रऽ आ भुवदूती सदावृधः सखा । कया शचिष्ठयाऽ वृता ।

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम् ।
सिंहिकागर्भसम्भूतं राहुमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वैराठिनपुरोद्भव पैठीनसगोत्र कृष्णवर्ण भो राहो ! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ राहवे नमः, राहुमावाहयामि, स्थापयामि ।

९. केतु (वायव्यकोणमें, धूम्र खड्ग)

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्याऽ अपेशसे ।
समुषद्भिरजायथाः ॥

पलाशधूम्रसङ्काशं तारकाग्रहमस्तकम् ।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं केतुमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अन्तर्वेदिसमुद्भव जैमिनिगोत्र धूम्रवर्ण भो केतो ! इहागच्छ, इह तिष्ठ ॐ केतवे नमः, केतुमावाहयामि स्थापयामि ।

अधिदेवतानाम् - स्थापनम्

१. ईश्वरः (सूर्य के दायें भाग में) –

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥

एह्येहि विश्वेश्वर नस्त्रिशूलकपालखट्वाङ्गधरेण सार्धम् ।
लोकेश यक्षेश्वर यज्ञसिद्ध्यै गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ईश्वराय नमः, ईश्वरमावाहयामि, स्थापयामि ।

२. उमा (चन्द्रमा के दायें भाग में) –

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण ।

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम् ।
लम्बोदरस्य जननीमुमामावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः उमायै नमः, उमामावाहयामि, स्थापयामि ।

३. स्कन्दः (मङ्गलके दायें भाग में) –

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमानऽ उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात् ।
श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं तेऽ अर्वन् ।

रुद्रतेजः समुत्पन्नं देवसेनाग्रगं विभुम् ।
षण्मुखं कृत्तिकासूनुं स्कन्दमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः, स्कन्दमावाहयामि, स्थापयामि ।

४. विष्णुः (बुध के दायें भाग में) –

ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि । वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ॥

देवदेवं जगन्नाथं भक्तानुग्रहकारकम् ।
चतुर्भुजं रमानाथं विष्णुमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि, स्थापयामि ।

५. ब्रह्मा (बृहस्पतिके दायें भागमें) –

ॐ आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवाऽस्य यजमानस्य

वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ऽऔषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥

कृष्णाजिनाम्बरधरं पद्मसंस्थं चतुर्मुखम् ॥
वेदाधारं निरालम्बं विधिमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि, स्थापयामि।

६. इन्द्रः (शुक्रके दायें भागमें) –

ॐ सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान्। जहि शत्रूँ२रप मृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः ॥

देवराजं गजारूढं शुनासीरं शतक्रतुम् ।
वज्रहस्तं महाबाहुमिन्द्रमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि, स्थापयामि।

७. यमः (शनिके दायें भागमें) —

ॐ यमाय त्वाऽङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा । स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे ॥

धर्मराजं महावीर्यं दक्षिणादिक्पतिं प्रभुम् ।
रक्तेक्षणं महाबाहुं यममावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः, यममावाहयामि,स्थापयामि।

८. कालः (राहुके दायें भागमें) —

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाऽ क्षित्याऽ उन्नयामि । समापोऽ अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः ॥

अनाकारमनन्ताख्यं वर्तमानं दिने दिने ।
कलाकाष्ठादिरूपेण कालमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कालाय नमः, कालमावाहयामि, स्थापयामि।

९. चित्रगुप्त (केतुके दायें भागमें)–

ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय ।

धर्मराजसभासंस्थं कृताकृतविवेकिनम् ।
आवाहयेत् चित्रगुप्तं लेखनीपत्रहस्तकम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः चित्रगुप्ताय नमः, चित्रगुप्तमावाहयामि, स्थापयामि।

प्रत्यधि देवतानाम् - स्थापनम्

१. अग्निः (सूर्यके बायें भागमें) –

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे । देवाँ२ आ सादयादिह ॥

रक्तमाल्याम्बरधरं रक्तपद्मासनस्थितम् ।
वरदाभयदं देवमग्निमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि, स्थापयामि।

२. अपः (जल) (चन्द्रमाके बायें भागमें) –

ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता नऽ ऊर्जे दधातन । महे रणाय चक्षसे ॥

आदिदेवसमुद्भूतजगच्छुद्धिकराः शुभाः ।
ओषध्याप्यायनकरा अपः आवाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः, अपः आवाहयामि, स्थापयामि॥

३. पृथ्वीः (मंगलके बायें भागमें) —

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छा नः शर्म सप्रथाः ॥

शुक्लवर्णां विशालाक्षीं कूर्मपृष्ठोपरिस्थिताम्।
सर्वशस्याश्रयां देवीं धरामावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः पृथिव्यै नमः, पृथिवीमावाहयामि, स्थापयामि।

४. विष्णुः (बुधके बायें भागमें) —

ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम् । समूढमस्य पाᳬसुरे स्वाहा ॥

शङ्खचक्रगदापद्महस्तं गरुड़वाहनम् ।
किरीटकुण्डलधरं विष्णुमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि, स्थापयामि।

५. इन्द्रः (बृहस्पतिके बायें भागमें) —

ॐ इन्द्रऽ आसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुरऽ एतु सोमः। देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम् ॥

ऐरावतगजारूढं सहस्राक्षं शचीपतिम् ।
वज्रहस्तं सुराधीशमिन्द्रमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि ॥

६. इन्द्राणी (शुक्रके बायें भागमें)—

ॐ अदित्यै रास्नाऽसीन्द्राण्याऽ उष्णीषः ।
पूषाऽसि घर्माय दीष्व ॥

प्रसन्नवदनां देवीं देवराजस्य वल्लभाम् ।
नानालङ्कारसंयुक्तां शचीमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राण्यै नमः, इन्द्राणीमावाहयामि, स्थापयामि।

७. प्रजापतिः (शनिके बायें भागमें)—

ॐप्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽ अस्तु वयꣳ स्याम पतयो रयीणाम्॥

आवाहयाम्यहं देवदेवेशं च प्रजापतिम् ।
अनेकव्रतकर्तारं सर्वेषां च पितामहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः प्रजापतये नमः, प्रजापतिमावाहयामि, स्थापयामि ।

८. सर्प (राहुके बायें भागमें)—

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ।
येऽ अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥

अनन्ताद्यान् महाकायान् नानामणिविराजितान् ।
आवाहयाम्यहं सर्पान् फणासप्तकमण्डितान् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्पेभ्यो नमः, सर्पानावाहयामि, स्थापयामि ।

९. ब्रह्मा (केतु के बायें भागमें)—

ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः ।
स बुध्न्याऽ उपमाऽ अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च व्विवः ॥

हंसपृष्ठसमारूढं देवतागणपूजितम् ।
आवाहयाम्यहं देवं ब्रह्माणं कमलासनम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि, स्थापयामि ।

पञ्चलोकपाल - पूजनम्

१. गणेशः –

ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणांत्वा प्रियपतिꣳ हवामहे । निधीनां त्वा निधिपतिꣳ हवामहे व्वसो मम । आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ॥

लम्बोदरं महाकायं गजवक्त्रं चतुर्भुजम् ।
आवाहयाम्यहं देवं गणेशं सिद्धिदायकम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपते ! इहागच्छ, इह तिष्ठ गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि, स्थापयामि । (राहोरुत्तरे)

२. दुर्गा –

ॐ अम्बेऽ अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन ।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥

पत्तने नगरे ग्रामे विपिने पर्वते गृहे ।
नानाजातिकुलेशानीं दुर्गामावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गे ! इहागच्छ, इह तिष्ठ दुर्गायै नमः, दुर्गामावाहयामि, स्थापयामि । (शनेरुत्तरे)

३. वायुः –

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरꣳ सहस्रिणीभिरुप याहि यज्ञम् । वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥

आवाहयाम्यहं वायुं भूतानां देहधारिणम् ।
सर्वाधारं महावेगं मृगवाहनमीश्वरम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वायो ! इहागच्छ, इह तिष्ठ वायवे नमः, वायुमावाहयामि, स्थापयामि । (रवेरुत्तरे)

४. आकाशम् –

ॐ घृतं घृतपावानः पिबत व्वसां व्वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य

हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिशऽ आदिशो व्विदिशऽ उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा ॥

अनाकारं शब्दगुणं द्यावाभूम्यन्तरस्थितम् ।
आवाहयाम्यहं देवमाकाशं सर्वगं शुभम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः आकाश ! इहागच्छ, इह तिष्ठ आकाशाय नमः, आकाशमावाहयामि, स्थापयामि । (राहोर्दक्षिणे)

५. अश्विनीकुमारौ –

ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती । तया यज्ञं मिमिक्षतम् ।
उपयामगृहीतोऽस्यश्विभ्यां त्वैष ते योनिर्माध्वीभ्यां त्वा ॥

देवतानां च भैषज्ये सुकुमारौ भिषग्वरौ ।
आवाहयाम्यहं देवावश्विनौ पुष्टिवर्द्धनौ ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विनौ ! इहागच्छतम्, इह तिष्ठतम्, अश्विनीभ्यां नमः, अश्विनौआवाहयामि, स्थापयामि । (केतुर्दक्षिणे)

१. वास्तोष्पतिः–

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वावेशोऽ अनमीवो भवा नः ।
यत्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥

वास्तोष्पतिं विदिक्कायं भूशय्याभिरतं प्रभुम् ।
आवाहयाम्यहं देवं सर्वकर्मफलप्रदम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तोष्पते । इहागच्छ, इह तिष्ठ ।
ॐ वास्तोष्पतये नमः । वास्तोष्पतिमावाहयामि, स्थापयामि ।

२. क्षेत्रपालः –

ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुरऽ एतारमग्नेः ।
एमेनमवृधन्नमृताऽ अमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः ॥

भूतप्रेतपिशाचाद्यैरावृतं शूलपाणिनम् ।
आवाहये क्षेत्रपालं कर्मण्यस्मिन् सुखाय नः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्राधिपते ! इहागच्छ, इह तिष्ठ क्षेत्राधिपतये नमः, क्षेत्राधिपतिमावाहयामि, स्थापयामि ।

दश दिक्पाल-पूजनम्

१. (पूर्वमें) इन्द्रः –

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ हवे हवे सुहवꣳ शूरमिन्द्रम्।
ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥

इन्द्रं सुरपतिश्रेष्ठं वज्रहस्तं महाबलम् ।
आवाहये यज्ञसिद्ध्यै शतयज्ञाधिपं प्रभुम् ।

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्र ! इहागच्छ, इह तिष्ठ इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि, स्थापयामि ।

२. (अग्निकोणमें) अग्निः –

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे । देवाँ२ आ सादयादिह ॥

त्रिपादं सप्तहस्तं च द्विमूर्धानं द्विनासिकम् ।
षण्नेत्रं च चतुः श्रोत्रमग्निमावाहयाम्यहम् ।

ॐ भूर्भुवःस्वः अग्ने ! इहागच्छ, इह तिष्ठ अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि, स्थापयामि ।

३. (दक्षिणमें) यमः –

ॐ यमाय त्वाऽङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा । स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे ॥

महामहिषमारूढं दण्डहस्तं महाबलम् ।
यज्ञसंरक्षणार्थाय यममावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः यम ! इहागच्छ, इह तिष्ठ यमाय नमः, यममावाहयामि, स्थापयामि ।

४. (नैर्ऋत्यकोणमें) निर्ऋतिः –

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य ।
अन्यमस्मदिच्छ सा तऽ इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥

सर्वप्रेताधिपं देवं निर्ऋतिं नीलविग्रहम् ।
आवाहये यज्ञसिद्ध्यै नरारूढं वरप्रदम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋते ! इहागच्छ, इह तिष्ठ निर्ऋतये नमः, निर्ऋतिमावाहयामि, स्थापयामि ।

५. (पश्चिम में) वरुणः —

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः ।
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशꣳ स मा नऽ आयुः प्रमोषीः ॥
शुद्धस्फटिकसंकाशं जलेशं यादसां पतिम् ।
आवाहये प्रतीचीशं वरुणं सर्वकामदम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण ! इहागच्छ, इह तिष्ठ वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि, स्थापयामि ।

६. (वायव्यकोणमें) वायुः —

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरꣳ सहस्रिणीभिरुप याहि यज्ञम् । वायोऽ अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥

मनोजवं महातेजं सर्वतश्चारिणं शुभम् ।
यज्ञसंरक्षणार्थाय वायुमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भवः स्व वायो ! इहागच्छ, इह तिष्ठ वायवे नमः, वायुमावाहयामि, स्थापयामि ।

७. (उत्तरमें) कुबेर —

ॐ कुविदङ्ग यवमन्तो यवं चिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूय ।
इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नमऽ उक्तिं यजन्ति ॥
आवाहयामि देवेशं धनदं यक्षपूजितम् ।
महाबलं दिव्यदेहं नरयानगतिं विभुम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कुबेर ! इहागच्छ, इह तिष्ठ कुबेराय नमः, कुबेरमावाहयामि, स्थापयामि ॥

८. (ईशानकोणमें) ईशानः —

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम् ।
पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥
सर्वाधिपं महादेवं भूतानां पतिमव्ययम् ।
आवाहये तमीशानं लोकानामभयप्रदम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ईशान ! इहागच्छ, इह तिष्ठ ईशानाय नमः, ईशानमावाहयामि स्थापयामि ।

९. (ईशान-पूर्वके मध्यमें) ब्रह्मा —

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः ।
स बुध्न्याऽ उपमा अस्य विष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्च विवः ॥
पद्मयोनिं चतुर्मूर्तिं वेदगर्भं पितामहम् ।
आवाहयामि ब्रह्माणं यज्ञसंसिद्धिहेतवे ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन् ! इहागच्छ, इह तिष्ठ ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि, स्थापयामि ।

१०. (नैर्ऋत्य-पश्चिमके मध्यमें) अनन्तम् —

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छा नः शर्मसप्रथाः ।
अनन्तं सर्वनागानामधिपं विश्वरूपिणम् ।
जगतां शान्तिकर्तारं मण्डले स्थापयाम्यहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्त ! इहागच्छ, इह तिष्ठ अनन्ताय नमः, अनन्तमावाहयामि, स्थापयामि ।

मनोजूतिरिति मन्त्रेण षोडशोपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत् ।

ॐ ग्रहाऽ ऊर्जाहुतयो व्यन्तो विप्राय मतिम् । तेषां विशिप्रियाणां वोऽहमिषमूर्जꣳसमग्रभमुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ॥

प्रार्थना - ॐ ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी
भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च ।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः
सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु ॥

सूर्यः शौर्यमथेन्दुरुच्चपदवीं सन्मंङ्गलं मंङ्गलः ।
सद्बुद्धिं च बुधो गुरुश्च गुरुतां शुक्रः सुखं शं शनिः ॥
राहुर्बाहुबलं करोतु सततं केतुः कुलस्योन्नतिम् ।
नित्यं प्रीतिकरा भवन्तु मम ते सर्वेऽनुकूला ग्रहाः ॥

अनया पूजया अधिदेवता प्रत्यधिदेवता पञ्चलोकपाल वास्तु क्षेत्रपाल दशदिक्पालसहित सूर्यादिनवग्रहाः प्रीयन्तां न मम ।

अथ असंख्यातरुद्रस्थापनम्

ग्रहस्येशानदिग्भागे कलशस्थापनाविधिना रुद्रकलशं संस्थाप्य कलशे वरुणं असंख्यातरुद्राश्चाऽऽवाह्य पूजयेत् ।

ॐ असङ्ख्याता सहस्राणि ये रुद्रा ऽअधि भूम्याम् । तेषाॐसहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः असंख्यातरुद्रानावाहयामि । 'ॐ मनो जूति०' इति मन्त्रेण असंख्यातरुद्रान् प्रतिष्ठाप्य 'असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः' इति यथोपचारैरसंख्यातरुद्रान् सम्पूजयेदित्यसंख्यातरुद्रस्थापनम् ।

अथ अजरादिक्षेत्रपाल पूजनम्

ॐ इमौ ते पक्षावजरौ पतत्रिणौ याभ्याॐ रक्षाॐ स्यपहॐ स्यग्ने । ताभ्यां पतेम सुकृतामुलोकं यत्र ऋषयोजग्मुः प्रथमजाः पुराणाः ॥ ॐ भू० अजराय नमः अजरमावाहयामि ॥१॥

ॐ प्रथमावाॐ सरथिना सुवर्णा देवौपश्यन्तौ भुवनानि व्विश्वा । अपिप्रयञ्चोदना वाम्मिमानाहोतारा ज्ज्योतिः प्प्रदिशा दिशन्ता ॥ ॐ भू० व्यापकाय० व्यापकमा० ॥२॥

ॐ इन्द्रस्य व्वज्रोऽसि मित्रा व्वरुणयोस्त्वा प्प्रशास्त्रोः प्प्रशिषायुनाज्मि अव्यथायै त्वा स्वधायै त्वारिष्टो अर्जुनो मरुतां प्रसवेन जयापाम मनसा समिन्द्रयेण ॐ भू० इन्द्रचौराय० इन्द्रचौरमा० ॥३॥

ॐ एवेदिन्द्रं व्वृषणं बज्र बाहुं वसिष्ठासोऽअब्भ्यर्च्चन्त्यर्कैः सनःस्तुतो व्वीरबद्धातु गोमद्धूयम्पात स्वस्तिभिः सदानः ॥ ॐ भू० इन्द्रमूर्तये० इन्द्रमूर्त्ति मा० ॥४॥

ॐ उक्षासमुद्रोऽअरुणः सुपर्ण्णः पूर्वस्य योनिं पितुराविवेश । मध्ये दिवो निहितः पृश्निरश्मा विचक्रमे रजसस्पात्यन्तौ ॥ ॐ भू० उक्षाभिधाय० उक्षाभिधमा० ॥५॥

ॐ यद्देवादेव हेडनं देबासश्चकृमा वयम् । अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वॐ हसः ॥ ॐ भू० कुष्माण्डाय० कुष्माण्ड मा० ॥६॥

ॐ सनऽइन्द्राय यज्यवे वरुणाय मरुद्भ्यः । व्वरिवोवित्परिस्रव । ॐ भू० वरुणाय० वरुणमा० ॥७॥

ॐ ब्बाहूमेबल मिन्द्रियॐ हस्तौ मे कर्म्म वीर्यम् । आत्माक्षत्र-मुरोमम । ॐ भू० बाहुकाख्याय० बाहुकाख्यं० ॥८॥

ॐ मुञ्चन्तुमा शपथ्यादथो व्वरुण्यादुत । आथोयमस्य पड्वीशात्सर्वस्माद्देव किल्विषात् ॥ ॐ भू० विमुक्ताय० विमुक्त मा० ॥९॥

ॐ कुर्वन्नेवेह कर्म्माणि जिजीविषेच्छतॐ समाः । एवन्त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म्म लिप्यते नरे ॥ ॐ भू० लिप्तकाय० लिप्तकमा० ॥१०॥

ॐ सन्नः सिन्धुरवभृथायोद्यतः समुद्रोऽभ्यव ह्रियमाणः सलिलः प्रप्लुतो ययोरोजसास्क्कभिता रजाॐ सि वीर्य्येभिर्वीरतमाशविष्ठा । यापत्येतेऽअप्रतीता सहोभिर्विष्णूऽअगन्वरुणा पूर्वहूतौ ॥ ॐ भू० लीलालोकाय० लीलालोकमा० ॥११॥

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्चवो नमो नमोव्रातेभ्या व्रातपतिभ्यश्चवो नमो नमो गृत्सेभ्योगृत्सपतिभ्यश्चवो नमोनमोव्विरूपेभ्यो व्विश्वरूपेभ्यश्चवो नमः ॥ ॐ भू० एक दंष्ट्रय० एक द्रंष्ट्रमा०॥१२॥

ॐ आर्म्मेब्भ्योहस्ति पञ्चवायाश्वपम्पुष्ट्यै गोपालं वीर्य्यायाविपालं तेजसेऽजपालमिरायै कीनाशङ्कीलालाय सुराकारं भद्राय गृहपॐश्रेयसे वित्त दमाध्यक्ष्यायानुक्षत्तारम् ॥ ॐ भू० ऐरावताख्याय० ऐरावताख्यं ॥१३॥

ॐ याऽओषधीः पूर्वाज्जातादेवेभ्यऽस्त्रियुगम्पुरा । मनैनुबब्भ्रूणामहॐ शतंधामनि सप्तच ॥ ॐ भू० औषधीघ्नाय० औषधीघ्नं ॥१४॥

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे० ॥ ॐ भू बन्धनाख्याय० बन्धनाख्यं० ॥१५॥

ॐ देवसवितः प्रसुवयज्ञम्प्रसुव यज्ञपतिम्भगाय । दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतन्नः पुनातु व्वाचस्पतिर्वाजन्नः स्वदतु ॥ ॐ भू० दिव्यकायाय० दिव्यकायमा० ॥१६॥

ॐ सीसेनतन्त्रं मनसा मनीषिणऽऊर्णा सूत्रेण कवयोवयन्ति । अश्विनायज्ञ सविता सरस्वतीन्द्रस्य रूपं वरुणो भिषज्यन् ॥ ॐ भू० कम्बलाख्याय० कम्बलाख्यं ॥१७॥

ॐ आशुः शिशानो वृषभोनभीमोघनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् । सङ्क्रन्दनोनिमिषऽ एकवीरः शतꣳ सेनाऽअजयत्साकमिन्द्रः ॥ ॐ भू० क्षोभणाख्याय० क्षोभणाख्यमा० ॥१८॥

ॐ इमꣳ साहस्रꣳ शतधारमुत्सं व्यच्च्यमानꣳ सरिरस्य मध्ये । घृतं दुहाना मदितिञ्जनायाग्नेमाहिꣳ सीः परमे व्योमन् ॥ गवयमारण्यमनुते दिशामि तेन चिन्वानस्तन्वो निषीद । गवयन्ते शुगृच्छतु यन्द्विष्मस्तन्तेशु गृच्छतु ॥ ॐ भू० गवये० गवमा० ॥१९॥

ॐ कुम्भोवनिष्ठुर्ज्जनिता शचीभिर्यस्मिन्नग्ग्रे योन्याङ्गर्भोऽअन्तः । प्लाशिर्व्यक्तः शतधारऽउत्सोदुहेन कुम्भी श्वधां पितृभ्यः ॥ ॐ भू० घंटाभिधाय० घंटाभिधमा० ॥२०॥

ॐ आक्रन्दय बलमोजोनऽ आधा निष्टनिहि दुरिताबाधमानः । अपप्रोथ दुन्दुभेदुच्छुना इतइन्द्रस्य मुष्टिरसिवीडयस्व ॥ ॐ भू० व्यालाय० व्यालमा० ॥२१॥

ॐ इद्रायाहि तूतुजानऽउपब्रह्माणि-हरिवः । सुते दधिष्व नश्चनः॥ ॐ भू० अणुस्वरूपाय० अणुस्वरूपमा०॥२२॥

ॐ चन्द्रमाऽअपस्वन्तरा सुपर्णो धावतेदिवि । रयिम्पिशङ्गम्वहुलम्पुरूस्पृहꣳ हरिरेति कनिक्रदत् ॥

ॐ भू० चन्द्रवारुणाय० चन्द्रवारुणमा ॥२३॥

ॐ प्रतिश्रुत्कायाऽ अर्तनङ्घोषाय भषमन्ताय बहुवादिनमनन्ताय मूकꣳ शब्दायाडम्बराघातं महसे वीणावादं क्रोशाय तूणवध्ममवरस्पराय शङ्खध्मं वनाय वनपमन्यतोऽरण्याय दावपम् ॥ ॐ भू० फटाटोपाय० फटाटोप मा० ॥२४॥

ॐ उग्रँलोहितेन मित्रꣳसौब्रत्येन रुद्रंदौर्व्रत्येनेन्द्रंप्रकीडेन मरुतोबलेन साद्ध्यान्प्रमुदा । भवस्य कण्ठ्यꣳ रुद्रस्यान्तः पार्श्व्यम्महादेवस्य

यकृच्छर्वस्य व्वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत् ॥ ॐ भू जटिलाय जटिलमा० ॥२५॥

ॐ पवित्रेणपुनीहिमा शुक्रेण देवदीद्यत् । अग्ने क्रत्वाक्रतूँ २॥ रनु ॥ ॐ भू क्रतवे० क्रतुमा० ॥२६॥

ॐ आजिघ्र कलशं०॥ ॐ भू० घण्टेश्वराय० घण्टेश्वरमा०॥२७॥

ॐ व्वायो शुक्रोऽअयामिते मध्वोऽअग्रन्दिविष्टिषु । आयाहिसोमपीतये स्पाहेदिवनियुत्वता ॥ ॐ भू० विटंकाय० विटंकमा० ॥२८॥

ॐ दैव्याहोताराऽऊर्ध्वमध्वरं नोऽग्नेर्जिह्वामभि गृणीतम् । कृणुतन्नः स्विष्टिम् ॥ ॐ भू मणिमतये० मणिमतिमा० ॥२९॥

ॐ त्रीणितऽआहुर्दिवि बन्धानि त्रीण्यप्सु त्रीण्यन्तः समुद्रे । उतेवमेव्वरुणश्छन्त्स्यर्व्वन्यत्रातऽ आहुः परमञ्जनित्रम् ॥ ॐ भू गणबन्धाय० गणबन्धमा० ॥३०॥

ॐ प्रतिश्रुत्कायाऽअर्तनङ्घोषाय भषमन्ताय बहुवादिनमनन्ताय मूकꣳ शब्दायाडम्बराघातम्महसेव्वीणा वादङ्क्रोशाय तूणवध्ममवरस्पराय शंखध्मं व्वनाय व्वनपमन्यतो रण्याय दावपम् ॥ ॐ भू० डामराय० डामरमा० ॥३१॥

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽ रुणस्तेरुद्रायपशुतयेकर्णायामा अवलिप्तारोद्रानभोरूपाः पार्ज्जन्याः ॥ ॐ भू ढुण्ढिकर्णाय ढुण्ढिकर्णमा० ॥३२॥

ॐ व्वनस्पते व्वीड्वङ्गोहि भूयाऽ अस्मत्सखाप्रतरणः सुवीरः । गोभिः सन्नद्धोऽअसि व्वीड यस्वास्थाताते जयतुजेत्वानि ॥ ॐ भू स्थविराय० स्थविरमा० ॥३३॥

सुपर्णं व्वस्ते मृगोऽअस्यादन्तो गोभिः सन्नद्धापतति प्रसूता यत्रानरः सञ्चविचद्रवन्ति तत्रास्मभ्यमिषवः शर्म्मयꣳ सन् ॥ ॐ भू० दन्तुराय० दन्तुरमा० ॥३४॥

ॐ आग्नेऽअच्छावदेहनः प्रतिनः सुमनाभव । प्रनोयच्छ

सहस्रजित्व॒ हिधनदाऽअसि स्वाहा ॥ ३ॐ भू० धनदाय० धनदमा० ॥३५॥

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणु० ॥ ॐ भू० नागकर्णाय० नागकर्णमा० ॥३६॥

ॐ बाहूमेबल मिन्द्रिय॒ हस्तौ मे कर्म्म व्वीर्य्यम् । आत्माक्षत्र मुरो मम ॥ ॐ भू० मारीगणाय० मारीगणमा० ॥३७॥

ॐ अपाम्फेनेन नमुचेः शिरऽइन्द्रोदवर्त्तयः । व्विश्वायदजयः स्पृधः ॥ ॐ भू० फेत्काराय० फेत्कारमा० ॥३८॥

ॐ इद॒ हविः प्रजननम्मेऽअस्तु दशव्वीर॒ सर्व्वगण॑ स्वस्तये ॥ आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्य भयसनि अग्निः प्रजाम्बहुलाम्मेकरोत्वन्नम्पयोरेतोऽअस्मासुधत्त ॥ ॐ भू० चीकराय० चीकरमा० ॥३९॥

ॐ याव्याघ्रं व्विषूचिकोभौ व्वृकञ्च रक्षति । श्येनम्पतत्त्रिण॒ सि॒ ह॒ सेमम्पात्व॑ हसः ॥ ॐ भू० सिंहाकृतये० सिंहाकृतिमा० ॥४०॥

ॐ मृगोनभीमः कुचरोगिरिष्ठाः परावतऽआजगन्था परस्याः । सृक॒ स॒ शाय पविमिन्द्रतिग्मं विशत्रून्ताढ्ढि व्विमृधोनुदस्व ॥ ॐ भू० मृगाय० मृगमा० ॥४१॥

ॐ इन्दुर्दक्षः श्येनऽ ऋतावाहिरण्यपक्षः शकुनोभुरण्युः । महान्सधस्थे ध्रुवऽआनिषत्तोऽनमस्तेऽअस्तुमा माहि॒सीः ॥ ॐ भू० यक्ष्मप्रियाय० यक्ष्मप्रियमा० ॥४२॥

ॐ जीमूतस्येवभवति प्रतीकं य्यद्वर्म्मीयाति समदामुपस्थे । अनाविद्धयातन्वा जयत्व॒ सत्वाव्वर्म्मणो महिमापिपर्तु ॥ ॐ भू० मेघवाहनाय० मेघवाहनमा० ॥४३॥

ॐ तीव्रान्घोषान्कृण्वते व्वृषपाणयोऽश्वारथेभिः सहवाजयन्तः । अवक्रामन्तः प्रपदै रमित्रान्क्षिणन्ति शत्रूँ १ रनपव्ययन्तः ॥ ॐ भू० तीक्ष्णोष्ट्राय० तीक्ष्णोष्ट्रमा० ॥४४॥

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे । देवाँ२ आ सादयादिह ॥ ॐ भू० अनलाय० अनलं० ॥४५॥

ॐ अदित्यास्त्वा पृष्ठ्ठे सादयाम्यनतरिक्षस्य धर्त्री व्विष्ट्वम्भनीन्दिशामधि पत्नीम्भुवनानाम् । ऊर्म्मिर्द्रप्सोअपामसि व्विश्वकर्म्मातऽऋषि रश्विनाद्ध्वर्य्यूसादयतामिहत्वा ॥ ॐ भू० शुक्लतुण्डाय० शुक्लतुण्डं० ॥४६॥

ॐ द्यौस्ते पृथिव्यन्तरिक्षं व्वायुश्छिद्रं पृणातुते ॥ सूर्य्यस्ते नक्षत्रैः सहलोकं कृणोतु साधुया ॥ ॐ भू० अन्तरिक्षाय० अन्तरिक्षं० ॥४७॥

ॐ सम्वर्हिरङ्क्ता॒ हविषा घृतेन समादित्यै र्व्वसुभिः सम्मरुद्भिः । समिन्द्रो व्विश्वदेवेभिरङ्क्तान्दिव्यन्नभोगच्छतु यत्स्वाहा ॥ ॐ भू० वर्वरकाय० वर्वरकं० ॥४८॥

ॐ पवमानः सोऽअद्यनः पवित्रेण व्विचर्षणिः । यः पोतासपुनातुमा ॥ ॐ भू० पावनाय नमः पावनमावाहयामि ॥४९॥

ॐ मनोज्जूति० इति अजरादि पावनान्ताः क्षेत्रपालाः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु ॥ ॐ अजरादि पावनान्त क्षेत्रपालेभ्यो नमः इति पूजयेत ॥

प्रार्थना – यं यं यं यक्षरूपं दशदिशि वदनं भूमिकम्पायमानं ।
सं सं संहारमूर्तिं शिरमुकुटजटाशेखरं चन्द्रबिम्बम् ॥
दं दं दं दीप्तकायं विकृत नखमुखं चोर्ध्वरेखाकपालम् ।
पं पं पं पापनाशं प्रणतपशुपतिं क्षेत्रपालं नमामि ॥ प्रार्थयेत् ॥
यदङ्गत्वेन भो देवाः पूजिता विधिमार्गतः ।
कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन क्रतूद्भवम् ॥

हस्ते जलं गृहीत्वा –

अनेन यथाशक्ति ध्यानावाहनादिषोडशोपचारैरन्योपचारैश्च कृतेन पूजनेन ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्रपालसहित अजरादिक्षेत्रपाल मण्डलाधिष्ठातृ देवताः प्रीयन्ताम् न मम ।

।। अथ चतु:षष्टि योगिनी: पूजनम् ।।

संकल्प: – ॐ अद्येत्यादि० शुभपुण्यतिथौ मया प्रारब्धस्य अमुक यज्ञत्वेन अस्मिन्योगिनीपीठे महाकालीमहालक्ष्मी महासरस्वतीपूजन पूर्वकं दिव्यादि चतुः षष्टियोगिनीनांह स्थापनपूजनमहं करिष्ये ।

ततः चतुः षष्टि योगिनीः प्रागन्तारा आवाहयेत् । प्रथम कलशे तत्रावाहन मन्त्राः —

ॐ समक्ख्ये देव्व्या धिया सं दक्षिणयोरुचक्षसा । मा मऽआयुः प्प्रमोषीर्म्मो ऽअहं तव । व्वीरं व्विदेय तव देवि सन्दृशि ॥

प्रथमकलशपूर्णपात्रे – ॐ भूर्भुवः स्वः महाकाल्यै नमः महाकालीम् आ० स्था० ॥ भो महाकालि ! इहागच्छ इह तिष्ठ ॥१॥

प्रथमकलशदक्षिणे द्वितीयकलशपूर्णपात्रे - ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुम्मऽ इषाणसर्व्वलोकम्मऽइषाण ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः महालक्ष्म्यै नमः महालक्ष्मीम् आवाहयामि स्थापयामि ॥ भो महालक्ष्मी इहागच्छ इह तिष्ठ ॥२॥

द्वितीयकलशदक्षिणे तृतीयकलशपूर्णपात्रे - ॐ पावकानः सरस्वतीव्वाजेभिर्व्वाजिनीवती । यज्ञं व्वष्टुधियावसुः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः महासरस्वत्यै नमः महासरस्वतीम् आ० स्था० ॥३॥

ॐ तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियञ्जिन्व मवसेहूमहे व्वयम् । पूषानोयथा व्वेदसामसद्वृधे रक्षितापायुरदब्धः स्वस्तये ॥ ॐ भू० दिव्ययोगिन्यै० दिव्ययोगिनीम् आ० स्था० ॥१॥

ॐ आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायता माराष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषव्व्योऽति व्याधी महारथो जायतान् दोग्ध्री धेनुर्व्वोढा नड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्य्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य व्वीरो जायतां निकामेनिकामेनः पर्ज्जन्यो व्वर्षतु फलवत्योनऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमोनः कल्पताम् ॥ ॐ भू० महायोगिन्यै० महायोगिनीम् आ० स्था० ॥२॥

ॐ महाँ२ऽइन्द्रो व्वज्र हस्तः षोडशी शर्म्म यच्छतु । हन्तु पाप्मानं योस्मान्द्वेष्टि । उपयामगृहीतोसि महेन्द्राय त्वैषते योनिर्म्महेन्द्रायत्वा ॥ ॐ भू० सिद्धियोगिन्यै० सिद्धियोगिनीम् आ० स्था० ॥३॥

ॐ आयङ्गौःपृश्निरक्रमीद सदन्मातरम्पुरः । पितरञ्चप्रयन्त्स्वः ॥ ॐ भू० माहेश्वर्यै० माहेश्वरीम् आ० स्था० ॥४॥

ॐ आदित्यङ्गर्भम्पयसा समङ्ग्धि सहस्रस्य प्रतिमां व्विश्वरूपम् । परिवृङ्ग्धि हरसामाभिमᳩ स्थाः शतायुषं कृणुहिचीयमानः ॥ ॐ भू० प्रेताक्ष्यै० प्रेतक्षीम् आ० स्था०॥५॥

ॐ स्वर्ण धर्म्मः स्वाहा स्वर्णार्कः स्वाहा स्वर्ण शुक्रः स्वाहा स्वर्णज्योतिः स्वाहा स्वर्ण सूर्य्यः स्वाहा ॥ ॐ भू० डाकिन्यै नमः डाकिनीम् आ० स्था० ॥६॥

ॐ सत्यञ्चमे श्रद्धाचमे जगच्चमे धनञ्चमे विश्वञ्चमे महश्चमे क्रीडाचमे मोदश्चमे जातञ्चमे जनिष्यमाणञ्चमे सूक्तंचमे सुकृतञ्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ ॐ भू० काल्यै नमः कालीम् आ० स्था० ॥७॥

ॐ भायै दार्व्वाहारं प्रभायाऽ अग्न्येधं ब्रध्नस्य व्विष्टपायाभिषेक्तारं वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारं देवलोकाय पेशितारम्मनुष्यलोकाय प्रकरितारᳩ सर्वेभ्यो लोकेभ्य-ऽउपसेक्तारमवऋत्यै व्वधायोपमन्थितारं मेधाय व्वासः पल्पूलीं प्रकामाय रजयित्रिम् ॥ ॐ भू० कालरात्र्यै नमः कालरात्रीम् आ० स्था० ॥८॥ इति प्रथमाष्टकः पंक्तिः ॥

ॐ जिह्वामेभद्रं व्वाङ्महो मनोमन्न्युः स्वराड्भामः । मोदाः प्प्रमोदाऽअङ्गुलीरङ्गानि मित्रम्मेसहः॥ ॐ भू० निशाचर्यै० निशाचरीम् आ० स्था० ॥९॥

ॐ हिङ्कारायस्वाहा हिङ्कृतायस्वाहा क्रन्दतेस्वाहा

वक्रन्दायस्वाहा प्रोथतेस्वाहा प्रप्रोथायस्वाहा गन्धायस्वाहा घ्रातायस्वाहा निविष्टायस्वाहोपविष्टायस्वाहा सन्दितायस्वाहा व्वल्गतेस्वाहा सीनाय स्वाहा शयानायस्वाहा स्वपतेस्वाहा जाग्रतेस्वाहा कूजतेस्वाहा प्रबुद्धायस्वाहा व्विजृम्भमाणायस्वाहा व्विचृतायस्वाहा सꣳ हानाय स्वाहोपस्थितायस्वाहा यनायस्वाहा प्रायणाय स्वाहा ॥ ॐ भू० हुङ्कार्यै० हुंकारीम् आ० स्था० ॥२॥

ॐ अग्निश्चमे घर्मश्चमेऽर्क्कश्चमे सूर्यश्चमे प्राणश्चमेऽश्वमेधश्चमे पृथिवीचमेऽ दितिश्चमेऽदितिश्चमेऽ द्यौश्चमेऽङ्गुलयः शक्वरयो दिशश्चमे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ ॐ भू० सिद्धि वैतालिकायै० सिद्धिवैतालिकाम् आ० स्था० ॥३॥

ॐ पूषन्तवव्रते व्वयंनरिष्यमेकदाचन । स्तोतारस्तऽइहस्मसि ॥ ॐ भू० ह्रीं कार्य्यै नमः ह्री कारीम् आ० स्था० ॥४॥

ॐ व्वेद्याव्वेदिः समाप्यते वर्हिषावर्हिरिन्द्रयम् । यूपेनयूपऽआप्यतेप्रणीतोऽअग्निरग्निना ॥ ॐ भू० भूतडामरायै० भूतडामराम् आ० स्था० ॥५॥

ॐ अयमग्निः सहस्त्रिणो व्वाजस्य शतिनस्पतिः । मूर्द्धाकवीरयीणाम् । ॐ भू० ऊर्ध्वकेश्यै नमः उर्ध्वकेशीमा० ॥६॥

ॐ इम्ममेव्वरुणश्रुधीहवमद्याचमृडय । त्वामवस्युराचके ॥ ॐ भू० विरूपाक्ष्यै० विरूपाक्षीमा० ॥७॥

ॐ यमाय यमसूमथर्व्वभ्योऽवतोकाꣳ संव्वत्सराय पर्य्यायिणीं परिवत्सराया विजातामिदावत्सरायातीत्वरी मिद्वत्सरायातिष्कद्वरीं वत्सराय व्विजर्जराꣳ संव्वत्सराय पलिक्क्नी मृभुभ्योऽ जिनसन्धꣳ साद्ध्येभ्श्चर्मम्नम् ॥

ॐ भू० शुष्काङ्ग्यै० शुष्काङ्गीम् आ० स्था० ॥८॥

इति द्वितियाष्टक पङ्क्तिः ।

ॐ असि यमोऽ अस्यादित्योऽअर्व्वन्नसि त्रितो गुह्येन व्रतेन । असि सोमेन समया व्विपृक्तऽआहुस्ते त्रीणि दिवि बन्धनानि ॥ ॐ भू० नरभोजन्यैः नरभोजनीम् आ० स्था० ॥१॥

ॐ मित्रस्य चर्षणीधृतोऽवो देवस्य सानसि । द्युम्नं चित्रश्रवस्तमम् ॥ ॐ भू० फेत्कार्यै० फेत्कारीम् आ० स्था० ॥२॥

ॐ अग्रे वृहन्नुषसामूर्ध्वोऽ अस्त्थान्निर्जगन्वान्तमसोज्ज्योतिषागात् । अग्निर्भानुना रुशता स्वङ्गऽआजातो व्विश्वा सद्मान्यप्राः ॥ ॐ भू० वीरभद्रायै० वीरभद्राम् आ० स्था० ॥३॥

ॐ भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः । भगप्रनोजनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्न्नृवनतः स्याम ॥ ॐ भू० धूम्राक्ष्यै० धूम्राक्षीम् आ० स्था० ॥४॥

ॐ सुपर्णोसि गरुत्मांस्त्रिवृते शिरो गायत्रं चक्षुर्वृहद्द्रथन्तरे पक्षौ । स्तोमऽआत्माछन्दाꣳ स्यङ्गानि यजूꣳ षिनाम् । सामते तनूर्व्वामदेब्यं य्यज्ञायज्ञियं पुच्छान्धिष्ण्याः शफाः । सुपर्णोसि गरुत्मान्दिवङ्गच्छ स्वः पत ॥ ॐ भू० कलहप्रियायै० कलहप्रियाम् आ० स्था० ॥५॥

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः । अक्षन्पितरोमीमदन्त पितरोती तृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम् ॥ ॐ भू०राक्षस्यै० राक्षसीम् आ० स्था० ॥६॥

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्य स्कम्भसर्ज्जनीस्थो व्वरुणस्यऽऋत सदन्यसि व्वरुणस्यऽऋतसदनमसि व्वरुणस्यऽऋतसदनमासीद ॥ ॐ भू० घोररक्ताक्ष्यै० घोररक्तक्षीम् आ० स्था० ॥७॥

ॐ व्वरुणः प्राविता भुवन्मित्रो व्विश्वाभिरूतिभिः । करतान्नः सुराधसः ॥ ॐ भू० विशालाक्ष्यै० विशालाक्षीम् आ० स्था० ॥८॥

इति तृतीयाष्टक पंक्तिः

ॐ हꣳसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता व्वेदिषदतिथिर्दुरोणसत् । नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजाऽऋतजाऽअद्रिजाऽऋतम्वृहत् ॥ ॐ भू० कौमार्यै० कौमारीम् आ० स्था० ॥१॥

ॐ सुसन्दृशन्त्वा व्वयं मघवन्वन्दिषीमहि । प्रनूनंपूर्ण बन्धुरः

स्तुतोयासि वशाँ२ऽअनुयोजान्विन्द्रतेहरी ॥ ॐ भू० चण्डायै० चण्डीम् आ० स्था० ॥२॥

ॐ प्रतिपदसि प्रतिपदे त्वानुपदस्यनुपदे त्वा सम्पदसि सम्पदेत्वा तेजोऽसि तेजसेत्वा ॥ ॐ भू० वाराह्यै० वाराहीम् आ० स्था० ॥३॥

ॐ देवीरापोऽअपान्नपाद्योवऽऊर्म्मिर्हविष्य्ऽइन्द्रियावान्मदिन्तमः । तन्देवेभ्यो देवत्रा दत्त शुक्रपेभ्यो येषाम्भागस्थ स्वाहा ॥ ॐ भू० मुण्डधारिण्यै० मुण्डधारिणीम् आ० स्था० ॥४॥

ॐ देवीर्द्वारोऽअश्विना भिषजेद्रे सरस्वती । प्राणन्नवीर्यन्न सिद्‌द्वारो दधुरिन्द्रयं वसुवने व्वसुधेयस्य व्यन्तु यज ॥ ॐ भू० भैरव्यै० भैरवीम् आ० स्था० ॥५॥

ॐ देवी जोष्ट्री सरस्वत्यश्विनेन्द्रमवर्द्धयन् । श्रोत्रन्नकर्णयोर्यशो जोष्ट्रीभ्यां दधुरिन्द्रयं व्वसुवने व्वसुधेयस्य वयन्तु यज ॥ ॐ भू० वीरायै० वीराम् आ० स्था० ॥६॥

ॐ देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेश्विनो र्व्वाहुभ्याम्पूष्णो हस्ताभ्याम् ॥ अश्विनोर्ब्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्च्चसायाभिषिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्ज्येन व्वीर्य्यायान्नाद्याया भिषिञ्चचामीन्द्रस्येन्द्रियेण वलायश्रियैयशसेभिषिञ्चामि ॥ ॐ भू० भयङ्कर्यै० भयङ्करीम् आ० स्था० ॥७॥

ॐ कदाचनस्तरीरसि नेन्द्रसश्चसि दाशुषे । उपोपेन्नु मघवन्भूयऽ इन्नुते दानन्देवस्यपृच्यते ॥ ॐ भू० बज्रधारिण्यै० बज्रधारिणीम् आ० स्था० ॥८॥ इति चतुर्थाष्टक पंक्तिः ॥

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयामदेवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः । स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳ सस्तनूभि र्व्यशेमहि देवहितं य्यदायुः ॥ ॐ भू० क्रोधायै० क्रोधाम् आ० स्था० ॥१॥

ॐ इषेत्वोर्जेत्वा व्वायवस्थदेवोवः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्म्मणऽआप्या यद्ध्वमघ्न्याऽइन्द्राय भागम्प्रजावती रनमीवाऽ अयक्ष्मा मावस्तेनऽईशत माघशꣳ सोद्ध्रु वाऽअस्मिन्गोपतौस्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि ॥ ॐ भू० दुर्मुख्यै० दुर्मुखीम् आ० स्था० ॥२॥

ॐ देवीद्यावा पृथिवी मखस्य वामद्य शिरो राद्‌ध्यासन्देवयजने पृथिव्याः ॥ मखायत्वा मखस्यत्वा शीर्ष्णे ॥ ॐ भू० प्रेतवाहिन्यै० प्रेतवाहिनीम् आ० स्था० ॥३॥

ॐ विश्वानिदेव सवितर्दुरितानि परासुव । यद्भद्रन्तन्नऽआसुव ॥ ॐ भू० कर्कायै नमः कर्काम् आ० स्था० ॥४॥

ॐ असुन्वन्तम यजमान मिच्छस्तेनस्येत्यामन्विहितस्करस्य । अन्यमस्मदिच्छसातऽइत्यानमोदेवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ॥ ॐ दीर्घलम्बोष्ठ्यै० दीर्घलम्वोष्ठीम् आ० स्था० ॥५॥

ॐ अग्निश्चमे धर्म्मश्चमे०॥ ॐ भू० मालिन्यै० मालिनीमा०॥६॥

ॐ बह्वीनाम्पिताब्बहुरस्य पुत्रश्चिश्चाकृणोति समनावगत्य । इषुधिः सङ्काः पृतनाश्चसर्वाः पृष्ठेनिनद्धो जयतिप्रसूतः ॥ ॐ भू० मन्त्रयोगिन्यै० मन्त्रयोगिनीम् आ० स्था० ॥७॥

ॐ नमस्ते रुद्रमन्यवऽउतोतऽइषवे नमः । बाहुब्भ्यामुतते नमः ॥ ॐ भू० कालाग्निमोहिन्यै० कालाग्निमोहिनीम् आ० स्था० ॥८॥ इति पञ्चमाष्टक पंक्तिः ॥

ॐ ऋतञ्चमे मृतञ्चमे यक्ष्मञ्चमे नामयञ्चमे जीवातुश्चमे दीर्घायुत्वञ्चमे न मित्रञ्चमे भयञ्चमे सुखञ्चमे शयनञ्चमे सूषाश्चमे सुदिनञ्चमे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ ॐ भू० मोहिन्यै० मोहिनीम् आ० स्था० ॥१॥

ॐ तेऽआचरन्ती समनेव योषामातेव पुत्रम्विभृतामुपस्थे । अपशत्रून्विद्ध्यताꣳ सम्विदानेऽआर्त्नीऽइमे व्विष्फुरन्तीऽअमित्रान् ॥ ॐ भू० चक्रायै० चक्राम् आ० स्था० ॥२॥

ॐ वेद्यावेदिः समाप्यते वर्हिषावर्हिरिन्द्रयम् । यूपेनयूपऽ आप्यायतेप्रणीतोऽअग्निरग्निना ॥ ॐ भू० कुण्डलिन्यै० कुण्डलीम् आ० स्था० ॥३॥

ॐ पावकानः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवति । यज्ञम्वष्टुधियाव्वसुः ॥ ॐ भू० बालुकायै० बालुकाम् आ० स्था० ॥४॥

ॐ अस्क्कन्नमद्य देवेभ्यऽआज्यꣳ सम्भ्रिया समङ्घ्रिणा व्विष्णोमात्वावक्क्रमिषं व्वसुमतीमग्ने तेच्छायामुपस्थेषं व्विष्णोस्थानमसीतऽइन्द्रो वीर्यमकृणोदूर्ध्वोध्वरऽआस्थात् । ॐ भू० कौवेर्यै० कौवेरीम् आं० स्था० ॥५॥

ॐ तेऽआचरन्ती समनेव योषमातेव पुत्रम्विभृता मुपस्थे । अपशत्रून्विन्ध्यताꣳ संविदानेऽआर्त्नीऽइमे व्विष्फुरन्तीऽअमित्रान् ॥ ॐ भू० यमदूत्यै० यमदूतीम् आ० स्था० ॥६॥

ॐ महीद्यौः पृथिवीचनऽ इमंयज्ञम्मिमिक्षताम् । पिपृतान्नोभरीमभिः ॥ ॐ भू० करालिन्यै० करालिनीम् आ० स्था० ॥७॥

ॐ उपयाम गृहीतोऽसिसावित्रोऽसि चनोधाश्चनोधाऽअसि चनोमयिधेहि । जिन्व-यज्ञञ्जिन्वयज्ञपतिम्भगाय देवायत्वासवित्रे ॥ ॐ भू० कौशिक्यै० कौशिकीम् आ० स्था० ॥८॥ इतिषष्टाष्टक ॥

ॐ आप्यायस्व समेतुते व्विश्वतः सोमवृष्ण्यम् । भवाव्वाजस्य सङ्गथे ॥ ॐ भू० यक्षिन्यै० यक्षिणीम् आ० स्था० ॥१॥

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्यत्वा क्षित्याऽऊन्नयामि समापोऽअद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः ॥ ॐ भू० भक्षिण्यै० भक्षिणीम् आ० स्था० ॥२॥

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पति वेदनम् ॥ उर्वारुकमिव बन्धादितो मुक्षीयमामुतः ॥ ॐ कौमार्य्यै० कौमारीम् आ० स्था० ॥३॥

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहो रात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूप मश्विनौ व्यात्तम् । इष्णणनिषाणामुम्मऽइषाण सर्व्वं लोकम्मऽइषाण ॥ ॐ भू० मन्त्रवाहिन्यै० मन्त्रवाहिनीम् आ० स्था० ॥४॥

ॐ विष्णोरराट मसिविष्णोः श्नप्त्रेस्थो व्विष्णोः स्यूरसि व्विष्णो र्ध्रुवोऽसि । व्वैष्णवमसि विष्णवेत्वा । ॐ भू०विशालायै० विशालाम् आ० स्था० ॥५॥

ॐ ब्राह्मण मद्यव्विदेयम्पितृ मन्तम्पैतृमत्यमृषिमार्षेयꣳ सुधातु दक्षिणम् । अस्म्मद्राता देवत्र्रागच्छत प्प्रदातारमाविशत ॥ ॐ भू० कामुंक्यै० कार्मुकीम् आ० स्था० ॥६॥

ॐ भद्रंकर्णेभिः श्रृणुयामदेवा भद्रम्पश्ये माक्षभिर्यजत्राः । स्थिरै रङ्गैस्तुष्टुवाꣳ सस्तनूभि र्व्यशेमहि देवहितंय्यदायुः । ॐ भू० व्याघ्र्यै नमः व्याघ्रीम् आ० स्था० ॥७॥

ॐ एकाचमे तिस्त्रश्चमे तिस्त्रश्चमे पञ्चचमे पञ्चचमे सप्तचमे सप्तचमे नवचमे नवचमऽएकादशचमऽएकादशचमे त्रयोदशचमे त्रयोदशचमे पञ्चदशचमे पञ्चदशचमे सप्तदशचमे सप्तदशचमे नवदशचमे नवदशचमऽएकविꣳ शतिश्चमऽ एकविꣳ शतिश्चमेत्रयोविꣳ शतिश्चमे त्रयोविꣳ शतिश्चमे पञ्चविꣳ शतिश्चमे पञ्च विꣳशतिश्चमे सप्तविꣳ शतिश्चमे सप्तविꣳ शतिश्चमे नवविꣳ शतिश्चमे नवविꣳ शतिश्चमऽएकत्रिꣳ शच्चमऽ एकत्रिꣳ शच्चमे त्रयस्त्रिꣳ शच्चमे यज्ञेन कल्पन्ताम् । ॐ भू० महाराक्षस्यै० महाराक्षसीम् आ० स्था० ॥८॥ इति सप्तमाष्टक पंक्तिः ॥

ॐ प्रेता जयता नरऽइन्द्रो वः शर्म्म यच्छतु । उग्रावः सन्तु बा हवोऽना धृष्या यथासथ ॥ ॐ भू० प्रेतभक्षिण्यै० प्रेतभक्षिणीम् आ० स्था० ॥१॥

ॐ असंङ्ख्याता सहस्त्राणि ये रुद्राऽ अधि भूम्याम् । तेषाꣳ सहस्त्रयोजनेऽवधन्वानितन्मसि ॥ ॐ भू० धूर्जट्यै० धूर्जटीम् आ० स्था० ॥२॥

सुपर्णोऽसिगरुत्मांस्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रञ्चक्षिर्वृहद्रथन्तरे पक्षौ । स्तोमऽआत्म्मा छन्दाꣳस्यङ्गानि यजूꣳषिनाम । साम ते तनूर्व्वामदेव्यं यज्ञायज्ञियम्पुच्छन्धिष्ण्याः शफाः सुपर्णोसि गरुत्म्मान्दिव गच्छ स्वः पत ॥ ॐ भू० विकटायै० विकटाम् आ० स्था० ॥३॥

ॐ याते रुद्र शिवातनूरघोराऽ पापकाशिनी । तयानस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि ॥ ॐ भू० घोररूपायै० घोररूपाम् आ० स्था० ॥४॥

ॐ देवी द्यावा पृथिवी मखस्य वामद्य शिरो राद्ध्यासंदेवयजने

पृथिव्याः । मखायत्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे ॥ ॐ भू० कपालिकायै० कपालिकामा० ॥५॥

ॐ इदम्विष्णु० ॥ ॐ भू० निकलायै निकलाम् आ० स्था० ॥६॥

ॐ व्वृष्णऽ ऊर्म्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रम्मे देहि स्वाहा । वृष्णऽ ऊर्म्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि व्वृषसेनोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रम्मे देहि स्वाहा व्वृषसेनोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि ॥ ॐ भू० अमलायै अमलामा० ॥७॥

ॐ भायै दार्व्वाहारां प्रभायाऽअग्न्येधं ब्रध्नस्य ब्विष्टपायाभिषेक्तारं व्वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारं देवलोकाय पेशितारं मनुष्य लोकाय प्रकरितारꣳ सर्व्वेभ्यो लोकेभ्यऽ उपसेक्तारमवऽऋत्यै व्वधायोपमन्थितारं मेधाय व्वासः पल्प्पूलीम्प्रकामाय रजयित्रीम् ॥ ॐ भू० सिद्धि प्रदायै० सिद्धिप्रदामा० ॥८॥ इति अष्टमाष्टक पंक्तिः ॥

ईशाने- ॐ जयायै० जयां ॥ पूर्वे- ॐ विजयायै० विजयामा० ॥ आग्नेये- ॐ अजितायै० अजिता मा० ॥ दक्षिणे- ॐ अपराजितायै० अपराजितामा० । नैर्ऋत्यै- ॐ क्षेमकर्य्यै० क्षेमकर्त्री मा० ॥ पश्चिमे- ॐ लक्ष्म्यै० लक्ष्मी मा० ॥ वायव्ये- ॐ वैष्णव्यै० वैष्णवीमा० ॥ उत्तरे- ॐ पार्वत्यै० पार्वती मा० ॥ ॐ मनोजूतिजुर्षतामाज्ज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञ मिमन्तनो त्वरिष्ठं यज्ञꣳ समिमन्दधातु ॥ विश्वेदेवासऽइहमादयन्तामोँ३ प्रतिष्ठ ॥ साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः दिव्यादि चतुःषष्टियोगिन्यः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु ॥ ततः षोडशोपचारैः पंचोपचापरैर्वा पूजयेत् ॥

यदङ्गत्वेन भो देव्यः पूजिता विधिमार्गतः ।
कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन क्रतूद्भवम् ॥

अनया पूजया श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वती सहित दिव्यादि चतुःषष्ठि योगिन्यः प्रीयन्तां न मम ॥ इति योगिनी पूजनं समाप्तम् ॥

अथ सर्वतोभद्रमण्डलकारिका

प्रागुदीच्यां गता रेखाः कुर्यादिकोनविंशतिम् ।
खण्डेन्दुस्त्रिपदः श्वेतः पञ्चभिः कृष्णशृंखलाः ॥१॥
नीलैकादशवल्ली तु भद्रं रक्तं पदैर्नव ।
चतुर्विंशत्सिता वापी परिधिः पीतविंशतिः ॥२॥
मध्ये षोडशभिः कोष्ठैः रक्तं पद्मं सकर्णिकम् ।
परिध्यावेष्टितं पद्मं बाह्ये सत्त्वं रजस्तमः ।
तन्मध्ये स्थापयेद्देवान् ब्रह्माद्याँश्च सुरेश्वरान् ॥३॥
इति सर्वतोभद्र मण्डलकारिका ।

अथ सर्वतोभद्र-लिङ्गतोभद्रस्थापनम्

यजमानः सर्वतोभद्रपीठे लिङ्गतोभद्रपीठे च ब्रह्मादिदेवानां स्थापनं कुर्यात् । तद्यथा- देशकालौ सङ्कीर्त्य 'अमुक गोत्रोत्पन्नः अमुकशर्माऽहम् (अमुकवर्माऽहम्, अमुकगुप्तोऽहम्) अस्मिन् अमुकयागकर्मणि ब्रह्मादिदेवतानामावाहनं स्थापनं पूजनं च करिष्ये' इति सङ्कल्प्य हस्ते रक्ताक्षतान् गृहीत्वा ब्रह्मादिदेवता आवाहयेत् ।

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो व्वेन ऽआवः । स बुद्ध्न्या ऽउपमा अस्य व्विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च व्विवः ॥ मध्ये कर्णिकायाम्—ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि ॥१॥

ॐ व्वयꣳ सोम व्रते तव मनस्तनूषु ब्बिभ्रतः । प्रजावन्तः सचेमहि ॥ उत्तरे वाप्याम्—ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः सोममावाहयामि स्थापयामि ॥२॥

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्प्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे व्वयम् । पूषा नो यथा व्वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥ ईशान्यां खण्डेन्दौ—ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः ईशानमावाहयामि स्थापयामि ॥३॥

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ हवेहवे सुहवꣳ शूरमिन्द्रम् । ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥ पूर्वे वाप्याम्—ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि ॥४॥

ॐ त्वं नो ऽअग्ने तव देव पायुभिर्म्मघोनो रक्ष तन्वश्च व्वन्द्य। त्राता तोकस्य तनये गवामस्यनिमेषꣳ रक्षमाणस्तव व्व्रते ॥ आग्नेय्यां खण्डेन्दौ—ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः अग्निमावाहयामि स्थापयामि ॥५॥

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्म्माय स्वाहा घर्म्मः पित्रे ॥ दक्षिणे वाप्याम्—ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः यममावाहयामि स्थापयामि ॥६॥

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त ऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ॥ नैर्ऋत्यां खण्डेन्दौ—ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋतये नमः निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि ॥७॥

ॐ तत्त्वायामि ब्व्रह्मणा व्वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्ब्भिः। अहेडमानो व्वरुणेह वोद्ध्युरुशꣳ स मा न ऽआयुः प्रमोषीः ॥ पश्चिमे वाप्याम्—ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः वरुणमावाहयामि स्थापयामि ॥८॥

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरद्ध्वरꣳ सहस्त्रिणीभिरुप याहि यज्ञम्। व्वायो ऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः। वायव्यां खण्डेन्दौ—ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः वायुमावाहयामि स्थापयामि ॥९॥

ॐ व्वसुब्भ्यस्त्वा रुद्रेब्भ्य स्त्वाऽऽदित्येब्भ्यस्त्वा सञ्ज्ञानाथां द्यावापृथिवी मित्रावरुणौ त्वा व्वृष्ट्यावताम्। व्व्यन्तु व्वयोक्तꣳ रिहाणामरुतां पृषतीर्गच्छ व्वशा पृश्निर्ब्भूत्वा दिवं गच्छ ततो नो व्वृष्टिमावह। चक्षुष्पा ऽअग्नेऽसि चक्षुर्म्मे पाहि ॥ वायुसोमयोर्मध्ये भद्रे—ॐ भूर्भुवः स्वः अष्टवसुभ्यो नमः अष्टवसूनावा० ॥१०॥

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव ऽउतो त ऽइषवे नमः। बाहुब्भ्यामुत ते नमः ॥ सोमेशानयोर्मध्ये भद्रे—ॐ भूर्भुवः स्वः एकादशरुद्रेभ्यो० एकादशरुद्रान् आवा० स्थापयामि ॥११॥

ॐ यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः। आ वोऽर्व्वाची सुमतिर्व्ववृत्यादꣳ होश्चिद्या व्वरिवोवित्तरासत् ॥ ईशानेन्द्रमध्ये भद्रे—ॐ भूर्भुवः स्वः द्वादशादित्येभ्यो नमः द्वादशादित्यान् आ० स्था० ॥१२॥

ॐ अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती व्वीर्य्यम्। व्वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम् ॥ इन्द्राग्निर्मध्ये भद्रे—ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विभ्यां० अश्विनौ० आ० स्था० ॥१३॥

ॐ व्विश्वेदेवास ऽआगत श्रृणुता म ऽइमꣳ हवम्। एदं बर्हिर्न्निषीदत ॥ उपयामगृहीतोऽसि व्विश्वेब्भ्यस्त्वा देवेब्भ्य ऽएष ते योनिर्व्विश्वेब्भ्यस्त्वा देवेब्भ्यः ॥ अग्नियममध्ये भद्रे—ॐ भूर्भुवः स्वः सपैतृकविश्वेभ्यो देवेभ्यो० सपैतृकविश्वान् देवान् आ० स्था० ॥१४॥

ॐ अभित्यं देवꣳ सवितारमोण्योः कविक्क्रतुमर्च्चामि सत्यसवꣳ रत्नधामभि प्रियं मतिं कविम्। ऊर्द्ध्वा यस्यामतिर्ब्भा ऽअदिद्युतत्सवीमनि हिरण्यपाणिरमिमीत सुक्क्रतुः कृपा स्वः प्रजाब्भ्यस्त्वा प्रजास्त्वाऽनु प्राणन्तु प्रजास्त्वमनुप्राणिहि ॥ यमनिर्ऋतिर्मध्ये भद्रे—ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तयक्षेभ्यो० सप्तयक्षान् आ० स्था० ॥१५॥

ॐ नमोऽस्तु सर्प्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेब्भ्यः सर्प्पेब्भ्यो नमः ॥ निर्ऋतिवरुणमध्ये भद्रे—ॐ भूर्भुवः स्वः अष्टकुलनागेभ्यो० अष्टकुलनागान् आ० स्था० ॥१६॥

ॐ ऋताषाडृतधामग्निर्गन्धर्व्वस्तस्यौषधयोऽप्परसो मुदो नाम। स न इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा व्वाट् ताब्भ्यः स्वाहा ॥ वरुणवायुमध्ये भद्रे—ॐ भूर्भुवः स्वः गन्धर्वाप्सरोभ्यो० गन्धर्वाप्सरसः आ० स्था० ॥१७॥

ॐ यदक्क्रन्दः प्रथमं जायमान ऽउद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू ऽउपस्तुत्यं महि जातं ते ऽअर्व्वन् ॥

ब्रह्मसोममध्ये वाप्यां लिङ्गे वा—ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दाय० स्कन्दम् आ० स्था० ॥१८॥

ॐ आशुः शिशानो व्वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्। सङ्क्रन्दनोऽनिमिष ऽएकवीरः शतꣳ सेना ऽअजयत्साकमिन्द्रः ॥ तदुत्तरे—ॐ भूर्भुवः स्वः वृषभाय० वृषभम् आ० स्था० ॥१९॥

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्त्वा क्षित्त्या ऽउन्नयामि । समापो ऽअद्भिरग्गमत समोषधीभिरोषधीः ॥ तदुत्तरे—ॐ भूर्भुवः स्वः शूलाय० शूलम् आ० स्था० ॥२०॥

ॐ कार्षिरसि० ॥ तदुत्तरे—ॐ भूर्भुवः स्वः महाकालाय० महाकालम् आ० स्था० ॥२१॥

ॐ शुक्क्रज्ज्योतिश्च चित्रज्ज्योतिश्च सत्यज्ज्योतिश्च ज्ज्योतिष्मॉंश्च । शुक्क्रश्च ऽऋतपाश्श्चात्यꣳ हाः ॥ ब्रह्मेशानमध्ये शृङ्खलायाम्—ॐ भूर्भुवः स्वः दक्षादिसप्तगणेभ्यो० दक्षादिसप्तगणान् आ० स्था० ॥२२॥

ॐ अम्बे ऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन । ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥ ब्रह्मेन्द्रमध्ये वाप्याम् लिङ्गे वा—ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गायै० दुर्गाम् आ० स्था० ॥२३॥

ॐ इदं व्विष्णुर्व्विचक्क्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्य पाꣳ सुरे स्वाहा ॥ तत्पूर्वे—ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे० विष्णुम् आ० स्था० ॥२४॥

ॐ पितृब्भ्यः स्वधायिब्भ्यः स्वधा नमः पितामहेब्भ्यः स्वधायिब्भ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेब्भ्यः स्वधायिब्भ्यः स्वधा नमः । अक्षन् पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धद्ध्वम् ॥ ब्रह्माग्निमध्ये शृङ्खलायाम्—ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधायै० स्वधाम् आ० स्था० ॥२५॥

ॐ परं मृत्यो ऽअनु परेहि पन्थां यस्ते ऽअन्य ऽइतरो देवयानात् । चक्षुष्मते श्शृण्वते ते व्ब्रवीमि मा नः प्रजाꣳ रीरिषो मोत व्वीरान् ॥ ब्रह्मयममध्ये वाप्यां लिङ्गे वा—ॐ भूर्भुवः स्वः मृत्युरोगेभ्यो० मृत्युरोगान् आ० स्था० ॥२६॥

ॐ गणानां त्त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणां त्त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनां त्त्वा निधिपतिꣳ हवामहे व्वसो मम । आहमजानि गर्ब्भधमा त्त्वमजासि गर्ब्भधम् ॥ ब्रह्मनिर्ऋतिमध्ये शृङ्खलायाम्—ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये० गणपतिम् आ० स्था० ॥२७॥

ॐ अप्स्वग्ने सधिष्ट्व औषधीरनु रुद्ध्यसे । गर्ब्भे सञ्जायसे पुनः ॥ ब्रह्मवरुणमध्ये वाप्यां लिङ्गे वा—ॐ भूर्भुवः स्वः आद्भ्यो० अपः आवा० स्था० ॥२८॥

ॐ मरुतो यस्य हि क्षये पाथा दिवो व्विमहसः । स सुगोपातमो जनः ॥ ब्रह्मवायुमध्ये शृङ्खलायाम्—ॐ भूर्भुवः स्वः मरुद्भ्यो० मरुतः आ० स्था० ॥२९॥

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छा नः शर्म्म सप्प्रथाः ॥ ब्रह्मणः पादमूले—ॐ भूर्भुवः स्वः पृथिव्यै० पृथिवीम् आ० स्था० ॥३०॥

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः । सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित् ॥ तदुत्तरे—ॐ भूर्भुवः स्वः गङ्गादिनदीभ्यो० गङ्गादिनदीः आ० स्था० ॥३१॥

ॐ समुद्रोऽसि नभस्वानार्द्रदानुः शम्भूर्म्मयोभूरभि मा व्वाहि स्वाहा । मारुतोऽसि मरुतां गणः शम्भूर्म्मयोभूरभि मा व्वाहि स्वाहा । अवस्यूरसि दुवस्वाञ्छम्भूर्म्मयोभूरभि मा व्वाहि स्वाहा ॥ तदुत्तरे—ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तसागरेभ्यो० सप्तसागरान् आ० स्था० ॥३२॥

ॐ प्र पर्व्वतस्य व्वृषभस्य पृष्ठान्नावश्चरन्ति स्वसिच ऽइयानाः । ता ऽआववृत्त्रन्नधरागुदक्ता ऽअहिं बुद्ध्न्यमनु रीयमाणाः । व्विष्णोर्व्विक्क्रमणमसि व्विष्णोर्व्विक्क्रान्तमसि व्विष्णोः क्क्रान्तमसि ॥ कर्णिकापरिधौ—ॐ भूर्भुवः स्वः मेरवे० मेरुम् आ० स्था० ॥३३॥

ॐ गणानां त्त्वा० ॥ अथ सोमादिक्रमेण सत्त्वबाह्यपरिधौ—ॐ भूर्भुवः स्वः गदायै० गदाम् आ० स्था० ॥३४॥

ॐ त्रिं शद्धाम व्विराजति व्वाक् पतङ्गाय धीयते । प्रति वस्तोरह द्युभिः ॥ ईशान्याम्—ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिशूलाय० त्रिशूलम् आ० स्था० ॥३५॥

ॐ महाँ२ ऽइन्द्रो व्वज्रहस्तः षोडशी शर्म्म यच्छतु । हन्तु पाप्मानं योऽस्मान् द्वेष्टि ॥ उपयामगृहीतोऽसि महेन्द्राय त्वैष ते योनिर्म्महेन्द्राय त्वा ॥ पूर्वे—ॐ भूर्भुवः स्वः वज्राय० वज्रम् आ० स्था० ॥३६॥

ॐ व्वसु च मे व्वसतिश्च्च मे कर्म्म च मे शक्तिश्च्च मेऽर्थश्च्चमऽ एमश्च्चम ऽइत्या च मे गतिश्च्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ आग्नेय्याम्—ॐ भूर्भुवः स्वः शक्तये० शक्तिम् आ० स्था० ॥३७॥

ॐ इड ऽएह्यदित ऽएहिकाम्म्या ऽएत । मयि वः कामधरणं भूयात् ॥ दक्षिणे—ॐ भूर्भुवः स्वः दण्डाय० . दण्डम् आ० स्था० ॥३८॥

ॐ खड्गो व्वैश्वदेवः श्वा कृष्णः कर्णो गर्दभस्तरक्षुस्ते रक्षसामिन्द्राय सूकरः सिंहो मारुतः कृकलासः पिप्पका शकुनिस्ते शरव्यायै व्विश्वेषां देवानां पृषतः ॥ नैर्ऋत्याम्—ॐ भूर्भुवः स्वः खड्गाय० खड्गम् आ० स्था० ॥३९॥

ॐ उदुत्तमं व्वरुण पाशमस्मदवाधमं व्वि मध्यमꣳ श्रथाय । अथा व्वयमादित्य व्व्रते तवानागसो ऽअदितये स्याम ॥ पश्चिमे—ॐ भूर्भुवः स्वः पाशाय० पाशम् आ० स्था० ॥४०॥

अंशुश्च मे रश्मिश्च्च मेऽदाभ्यश्च्च मेऽधिपतिश्च्च म ऽउपाꣳशुश्च्च मेऽन्तर्य्यामश्च्चम ऽऐन्द्रवायवश्च्च मे मैत्रावरुणश्च म ऽआश्विनश्च्च मे प्रतिप्रस्थानश्च्च मे शुक्रश्च्च मे मन्थी च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ वायव्याम्—ॐ भूर्भुवः स्वः अङ्कुशाय० अङ्कुशम् आ० स्था० ॥४१॥

ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन् मातरं पुरः । पितरं च प्रयन्त्स्वः ॥ तद्बाह्ये उत्तरे रक्तपरिधौ सोमादिक्रमेण—ॐ भूर्भुवः स्वः गौतमाय० गौतमम् आ० स्था० ॥४२॥

ॐ अयं दक्षिणा व्विश्वकर्म्मा तस्य मनो व्वैश्वकर्म्मणं ग्रीष्मो मानसस्त्रिष्टुब् ग्रैष्मी त्रिष्टुभः स्वारꣳ स्वारादन्तर्य्यामोऽन्तर्य्यामात्पञ्चदशः पञ्चदशाद्बृहद् भरद्वाज ऽऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया मनो गृह्णामि प्रजाभ्यः ॥ ईशान्याम्—ॐ भूर्भुवः स्वः भरद्वाजाय० भरद्वाजम् आ० स्था० ॥४३॥

ॐ इदमुत्तरात् स्वस्तस्य श्रोत्रं सौवं शरच्छ्रौत्र्यनुष्टुप् शारद्यनुष्टुभ ऽऐडमैडान्मन्थी मन्थिन ऽएकविंश ऽएकविंशाद्वैराजं व्विश्वामित्र ऽऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया श्रोत्रं गृह्णामि प्रजाभ्यः ॥ पूर्वे—ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वामित्राय० विश्वामित्रम् आ० स्था० ॥४४॥

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् । यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो ऽअस्तु त्र्यायुषम् ॥ आग्नेय्याम्— ॐ भूर्भुवः स्वः कश्यपाय० कश्यपम् आ० स्था० ॥४५॥

ॐ अयं पश्चाद्विश्वव्यचास्तस्य चक्षुर्व्वैश्वव्यचसं व्वर्षाश्चाक्षुष्यो जगती व्वार्षी जगत्या ऽऋक् सममृक् समाच्छुक्रः शुक्रात्सप्तदशः सप्तदशाद्वैरूपं जमदग्निर्ऋषिः प्रजापतिगृहीतयात्त्वया चक्षुर्ग्गृह्णामि प्रजाभ्यः ॥ दक्षिणे—ॐ भूर्भुवः स्वः जमदग्नये० जमदग्निम् आ० स्था० ॥४६॥

ॐ अयं पुरो भुवस्तस्य प्राणो भौवायनो व्वसन्तः प्राणायनो गायत्री व्वासन्ती गायत्र्यै गायत्रं गायत्रादुपाꣳशुरुपाꣳशोस्त्रिवृत् त्रिवृतो रथन्तरं व्वसिष्ठ ऽऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया प्राणं गृह्णामि प्रजाभ्यः ॥ नैर्ऋत्याम्—ॐ भूर्भुवः स्वः वसिष्ठाय० वसिष्ठम् आ० स्था० ॥४७॥

ॐ अत्र पितरो मादयद्ध्वं यथाभागमावृषायद्ध्वम् । अमीमदन्त पितरो यथाभागमावृषायिषत ॥ पश्चिमे—ॐ भूर्भुवः स्वः अत्रये० अत्रिम् आ० स्था० ॥४८॥

ॐ तं पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वा हिरण्यैः । नाकं गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठे ऽअधि रोचने दिवः ॥

वायव्याम्—ॐ भुर्भूवः स्वः अरुन्धत्यै० अरुन्धतीम् आ० स्था० ॥४९॥

तद्बाह्ये कृष्णपरिधौ पूर्वादिक्रमेण—ॐ अदित्त्यै रास्नासीन्द्राण्ण्या ऽउष्णीषः । पूषासि घर्म्माय दीष्व ॥ पूर्वे—ॐ भूर्भुवः स्वः ऐन्द्र्यै० ऐन्द्रीम् आ० स्था० ॥५०॥

ॐ अम्बे ऽअम्बिके० ॥ आग्नेय्याम्—ॐ भूर्भुवः स्वः कौमार्य्यै० कौमारीम् आ० स्था० ॥५१॥

ॐ इन्द्रायाहि धियेषितो व्विप्रजूतः सुतावतः । उप ब्ब्रह्म्माणि व्वाग्घतः ॥ दक्षिणे—ॐ भूर्भुवः स्वः ब्राह्म्यै० ब्राह्मीम् आ० स्था० ॥५२॥

ॐ इन्द्रस्य क्क्रोडोऽदित्यै पाजस्यं दिशां जत्रवोऽदित्त्यै भसज्जीमूतान् हृदयौपशेनान्तरिक्षं पुरीतता नभ ऽउदर्य्येण चक्रवाकौ मतस्नाब्भ्यां दिवं व्वृक्काब्भ्यां गिरीन् प्लाशिभिरुपलान् प्लीह्ना व्वल्म्मीकान् क्लोमभिग्ग्लौभिर्ग्गुल्म्मान्हिराभिः स्रवन्तीर्हृदान् कुक्षिब्भ्याᳬ समुद्रमुदरेण व्वैश्वानरं भस्म्मना ॥ नैर्ऋत्याम्—ॐ भूर्भुवः स्वः वाराह्यै० वाराहीम् आ० स्था० ॥५३॥

ॐ अम्बे ऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन । ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥ पश्चिमे-चामुण्डायै० चामुण्डाम् आ० स्था० ॥५४॥

ॐ आप्यायस्व समेतु ते व्विश्वतः सोम व्वृष्ण्यम् । भवा व्वाजस्य सङ्गथे ॥ वायव्ये—ॐ भूर्भुवः स्वः वैष्णव्यै० वैष्णवीम् आ० स्था० ॥५५॥

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी । तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि ॥ उत्तरे—ॐ भूर्भुवः स्वः माहेश्वर्य्यै० माहेश्वरीम् आ० स्था० ॥५६॥

ॐ समक्ख्ये देव्व्या धिया सं दक्षिणयोरुचक्षसा । मा मऽआयुः प्प्रमोषीर्म्मो ऽअहं तव व्वीरं व्विदेय तव देवि सन्दृशि ॥ ईशान्याम्—ॐ भूर्भुवः स्वः वैनाक्यै० वैनायकीम् आ० स्था० ॥५७॥

॥ इति सर्वतोभद्रदेवतास्थापनम् ॥

कलशंसंस्थाप्य मनोजूतिरृति षोडषोपचारै यथालब्धोपचारैर्वा सम्पूज्य विष्णुपूजनम् कुर्यात् ॥

न्यासः - सहस्रशीर्षेति पुरुषसूक्तस्य षोडशर्चस्य नारायणऋषिः अनुष्टुप्छन्दः अन्त्यायास्त्रिष्टुप्छन्दः जगद्बीजं पुरुषो देवता न्यासे विनियोगः । ॐ सहस्रशीर्षा० वामकरे ॥१॥ ॐ पुरुष एव० दक्षिणकरे ॥२॥ ॐ एतावानस्य० वामपादे ॥३॥ ॐ त्रिपादूर्ध्व० दक्षिपादे ॥४॥ ॐ ततो विराट्० वामजानौ ॥५॥ ॐ तस्माद्यज्ञात्० दक्षिणजानौ ॥६॥ ॐ तस्माद्य० सर्वहुतऋ० वामकट्याम् ॥७॥ ॐ तस्मादश्वा० दक्षिणकट्याम् ॥८॥ ॐ तं यज्ञं० नाभौ ॥९॥ ॐ यत्पुरुषं ० हृदये ॥१०॥ ॐ ब्राह्मणोऽस्य० कण्ठे ॥११॥ ॐ चन्द्रमामनसो० वामबाहौ ॥१२॥ ॐ नाभ्याऽआसी० दक्षिणबाहौ ॥१३॥ ॐ यत्पुरुषेण० मुखे ॥१४॥ ॐ सप्तास्या० नेत्रयोः ॥१५॥ ॐ यज्ञेन यज्ञ० मूर्ध्नि ॥१६॥ ततः षडङ्गन्यासान् कुर्यात् - ॐ ब्राह्मणोऽस्य० हृदयाय नमः ॥१॥ ॐ चन्द्रमा मनसो० शिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐ नाभ्याऽ आसी० शिखायै वषट् ॥३॥ यत्पुरुषेण० कवचाय हुम् ॥४॥ सप्तास्या० नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥ यज्ञेन० अस्त्राय फट् ॥६॥ एवं न्यासं कृत्वा पीठपूजनं कुर्यात् ॥

पीठपूजनम् - ॐ आधारशक्तये नमः ॥ ॐ प्रकृत्यै नमः ॥ ॐ कूर्माय नमः ॥ ॐ अनन्ताय नमः ॥ ॐ वाराहाय नमः ॥ ॐ पृथिव्यै नमः ॥ ॐ क्षीरनिधये नमः ॥ ॐ श्वेतद्वीपाय नमः ॥ ॐ रत्नोज्ज्वलितसुवर्णमण्डपाय नमः ॥ ॐ कल्पवृक्षाय नमः ॥ ॐ स्वर्णवेदिकायै नमः ॥ ॐ सिंहासनाय नमः ॥ इति संपूज्य पीठदक्षिणे - ॐ गुरुभ्यो नमः ॥ वामे - ॐ दुर्गायै नमः ॥ ॐ विघ्नेशाय नमः ॥ ॐ क्षेत्रपालाय नमः ॥ अग्रे गरुडाय नमः ॥ ईशान्याम् ॐ विष्वक्सेनाय नमः ॥ पञ्चाशद्वर्णाढ्यकर्णिकायै नमः ॥ ॐ द्वादशकलात्मने सूर्यमण्डलाय नमः ॥ ॐ षोडशकलात्मने सोममण्डलाय नमः ॥ ॐ मंदशकलात्मने वह्निमण्डलाय नमः ॥ ॐ शक्तिमण्डलाय नमः ॥ ॐ ब्रह्मणे नमः ॥ ॐ विष्णवे नमः ॥ ॐ ईशानाय नमः ॥ ॐ कुबेराय नमः ॥ ॐ ऋग्वेदाय नमः ॥

ॐ यजुर्वेदाय नमः ॥ ॐ सामवेदाय नमः ॥ ॐ अथर्ववेदाय नमः॥ ॐ आं आत्मने नमः ॥ ॐ अं अन्तरात्मने नमः ॥ ॐ पं परमात्मने नमः ॥ ॐ ज्ञं ज्ञानात्मने नमः ॥ ॐ कृताय नमः ॥ ॐ त्रेताय नमः ॥ ॐ द्वापराय नमः ॥ ॐ कलये नमः ॥ ॐ सं सत्वाय नमः ॥ ॐ रं रजसे नमः ॥ ॐ तं तमसे नमः ॥ ॐ अणिम्ने नमः ॥ ॐ गरिम्णे नमः ॥ ॐ लघिम्ने नमः ॥ ॐ महिम्ने नमः ॥ ॐ प्राप्त्यै नमः ॥ ॐ प्राकाम्यै नमः ॥ ॐ ईशित्वायै नमः ॥ ॐ वशित्वायै नमः ॥ ततः पूर्वादिपत्रेषु ॐ नमः ॥ ॐ विमलायै नमः॥ ॐ उत्कर्षिण्यै नमः ॥ ॐ ज्ञानायै नमः ॥ ॐ क्रियायै नमः ॥ ॐ योगायै नमः ॥ ॐ प्रज्ञायै नमः ॥ ॐ सत्यायै नमः ॥ ॐ ईशानायै नमः ॥ पुनर्मध्ये ॐ अनुग्रहायै नमः ततः ॥ 'ॐ मनो जूतिर्जु०' इति मन्त्रेण 'पीठदेवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु' आवाहितपीठदेवताभ्यो नमः इति षोडशोपचारैः सम्पूज्य हस्ते पुष्पाणि गृहीत्वा 'ॐ नमोभगवते विष्णवे सर्वभूतात्मने वासुदेवाय योगपीठात्मने—इति कर्णिकायां पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। 'सत्यज्ञानानन्दस्वरूपं परं धामैव सकलं पीठम्' इति सञ्चिन्तयेत्। इति पीठपूजा। अग्न्युत्तारणम्। प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा सुवर्णप्रतिमामयं विष्णुं स्थापयित्वाऽऽवाह्य सम्पूज्य अङ्गपूजनम् कुर्यात्॥

विष्णु आवरण पूजनम्

संचिन्मयः परोदेव परामृत रस प्रियः ।
अनुज्ञां देहि मे विष्णो परिवारार्चनायते ॥

ॐ हुं हृदयाय नमः हृदयं पूजयामि ॥ ॐ विष्णवे नमः शिरसे स्वाहा शिरः पू० ॥ ॐ ब्रह्मण्याय नमः शिखायै वषट् शिखां पू० ॥ ॐ ध्रुवाय नमः कवचाय हुं कवचं पू० ॥ ॐ चक्रिणे नमः अस्त्राय फट् अस्त्रं पू० ॥ ॐ शम्भवाय नमः गायत्रीं पू० ॥ ॐ विजयाय नमः सावित्रीं पू० ॥ ॐ ज्योतिरूपाय नमः सरस्वतीं पू० ॥ ॐ चक्रिरूपाय नमः पिङ्गलास्त्रं पू० ॥ सर्वो पचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि पूजयामि नमस्करोमि ॥ एताः प्रथमावरण

देवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु ॥ पुष्पाञ्जलिमादाय –

अभिष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल ।
भक्त्या समर्पयेत् तुभ्यं प्रथमावर्णार्चनम् ।
अनया पूजया प्रथमावरण देवताः प्रीयन्ताम् न मम ॥
इति प्रथमावरणम् ॥

ॐ केशवाय नमः केशवं पूजयामि ॥ ॐ नारायणाय नमः नारायणं० पू० ॥ ॐ माधवाय न० माधवं पू० ॥ ॐ गोविन्दाय न० गोविन्दं पू० ॥ ॐ विष्णवे न० विष्णुं पू० ॥ ॐ मधुसूदनाय न० मधुसूदनं पू० ॥ ॐ हृषीकेशाय न० हृषीकेशं पू० ॥ ॐ पद्मनाभाय न० पद्मनाभं पू० ॥ ॐ दामोदराय न० दामोदरं पू० ॥

सर्वो पचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि पूजयामि नमस्करोमि ॥ पुष्पाञ्जलिमादाय

अभिष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल ।
भक्त्या समर्पयेत् तुभ्यं द्वितीयावर्णार्चनम् ॥
अनया पूजया द्वितीयावरण देवताः प्रीयन्ताम् न मम ॥
इति द्वितीयावरणम् ॥

ॐ खड्गाय न० खड्गं पू० ॥ ॐ गदायै न० गदां पू० ॥ ॐ चक्राय न० चक्रं पू० ॥ शंखाय न० शंखं पू० ॥ ॐ पद्माय न० पद्मं पू० ॥ ॐ हलाय न० हलं ॥ ॐ मुसलाय न० मुसलं पू० ॥ ॐ शार्ङ्गाय न० शार्ङ्गं पू० ॥

सर्वो पचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि पूजयामि नमस्करोमि ॥ पुष्पाञ्जलिमादाय

अभिष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पयेत् तुभ्यं तृतीयावर्णार्चनम् ॥
अनया पूजया तृतीयावरण देवताः प्रीयन्ताम् न मम ॥
इति तृतीयावरणम् ॥

ॐ पृथिवीमूर्तये नमः पृथिवीमूर्त्ति पूजयामि । पृथिवीमूर्त्याधिपतिं शर्वाय नमः। पृथिवीमूर्त्याधिपतिं शर्व० पू० ॥ ॐ अग्निमूर्तये नमः अग्निमूर्त्ति पूजयामि । अग्निमूर्त्याधिपतिं पशुपतये नमः अग्निमूर्त्याधिपतिं पशुपतिं०पू० ॥ ॐ यजमानमूर्तये नमः यजमानमूर्त्ति पूजयामि ॥ यजमानमूर्त्याधिपतिमुग्राय नमः यजमानमूर्त्याधिपतिं उग्रं पू० ॥ ॐ अर्कमूर्तये नमः अर्कमूर्त्ति पूजयामि । अर्कमूर्त्याधिपतिं रुद्राय नमः अर्कमूर्त्याधिपतिं रुद्रं पू० ॥ ॐ जलमूर्तये नमः जलमूर्त्ति पूजयामि । जलमूर्त्याधिपतिं भवाय नमः जलमूर्त्याधिपतिंभवं पू० ॥ ॐ वायुमूर्तये नमः वायुमूर्त्ति पूजयामि । वायुमूर्त्याधिपतिं ईशानाय नमः वायुमूर्त्याधिपतिं ईशानं पू० ॥ ॐ इन्द्रमूर्तये नमः इन्द्रमूर्त्ति पूजयामि । इन्द्रमूर्त्याधिपतिं महादेवाय नमः इन्द्रमूर्त्याधिपतिं महादेवं पू०॥ खमूर्तये नमः खमूर्त्तिम् पूजयामि। खमूर्त्याधिपतिं भीमाय नमः खमूर्त्याधिपतिं भीमं पू०॥

सर्वो पचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि पूजयामि नमस्करोमि॥

पुष्पाञ्जलिमादाय

अभिष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पयेत् तुभ्यं चतुर्थावर्णार्चनम् ।
अनया पूजया चतुर्थावरण देवताः प्रीयन्ताम् न मम ॥
इति चतुर्थावरणम् ॥

ॐ इन्द्राय न० इन्द्रं पू० ॥ ॐ अग्नये न० अग्निं पू० ॥
ॐ यमानय न० यमं पू० ॥ ॐ निर्ऋतये न० निर्ऋतिं पू० ॥
ॐ वरुणाय न० वरुणं पू० ॥ ॐ वायवे न० वायुं पू० ॥
ॐ सोमाय न० सोमं पू० ॥ ॐ ईशानाय न० ईशानं पू० ॥
ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं पू० ॥ ॐ अनन्ताय नमः अनन्तं पू० ॥

सर्वो पचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि पूजयामि नमस्करोमि ॥

पुष्पाञ्जलिमादाय

अभिष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पयेत् तुभ्यं पंचमावर्णार्चनम् ।
अनया पूजया पञ्चमावरण देवताः प्रीयन्ताम् न मम ॥
इति पञ्चमावरणाम् ॥

अथ लिङ्गतोभद्रमण्डलकारिका

रेखास्त्वष्टादश प्रोक्ताश्चतुर्लिङ्गसमुद्भवे ।
कोणेन्दुस्त्रिपदः श्वेतस्त्रिपदैः कृष्णशृङ्खलाः ॥१॥
वल्ली सप्तपदा नीला भद्रं रक्तं चतुष्पदम् ।
भद्रपार्श्वे महारुद्रं कृष्णमष्टादशैः पदैः ॥२॥
शिवस्य पार्श्वतो वापीं कुर्यात्पञ्चपदां सिताम् ।
पदमेकं तथा पीतं भद्रवाप्योस्तु मध्यतः ॥३॥
शिरसि शृङ्खलायाश्च कुर्यात्पीतं पदत्रयम् ।
लिङ्गानां स्कन्धतःकोष्ठा विंशती रक्तवर्णकाः ॥४॥
परिधिः पीतवर्णैस्तु पदैः षोडशभिः स्मृतः ।
पदैस्तु नवभिःपश्चाद्रक्तं पद्मं सकर्णिकम् ॥५॥
इति लिङ्गतोभद्रमण्डलकारिका

सर्वतोभद्रदेवतानाम् स्थापनात्परम् लिङ्गतोभद्रदेवतानाम् स्थापनम् कुर्यात् ।

अथ लिङ्गतोभद्रदेवताविशेषः –

ॐ नमः कृत्स्नायतया धावते सत्त्वनां पतये नमो नमः सहमानाय निव्याधिन ऽआव्याधिनीनां पतये नमो नमो निषङ्गिणे ककुभाय स्तेनानां पतये नमो नमो निचेरवे परिचरायारण्यानां पतये नमः ॥ तद्वाह्ये पूर्वे–ॐ भूर्भुवः स्वः असिताङ्गभैरवाय० असिताङ्गभैरवम् आ० स्था० ॥१॥

ॐ श्वित्र ऽआदित्यानामुष्ट्रो घृणीवान्वार्ध्रीनसस्ते मत्या ऽअरण्याय सृमरो रुरू रौद्रः क्ववियः कुटरुर्दात्यौहस्ते व्वाजिनां कामाय पिकः ॥ आग्नेय्याम्–ॐ भूर्भुवः स्वः रुरुभैरवाय० रुरुभैरवम् आ० स्था० ॥२॥

ॐ उग्रं ल्लोहितेन मित्रꣳ सौव्रत्त्येन रुद्रं दौर्व्रत्त्येनेन्द्रं प्रक्रीडेन मरुतो बलेन साद्ध्यान् प्रमुदा । भवस्य कण्ठ्यꣳ रुद्रस्यान्तः पाश्शर्व्यं महादेवस्य यकृच्छर्व्वस्य व्वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत् ॥ दक्षिणे–ॐ भूर्भुवः स्वः चण्डभैरवाय० चण्डभैरवम् आ० स्था० ॥३॥

ॐ इन्द्रस्य क्क्रोडोऽदित्यै पाजस्यं दिशां जत्रवोऽदित्यै भसज्जीमूतान् हृदयौपशेनान्तरिक्षं पुरीतता नभ ऽउदर्य्येण चक्रवाकौमतस्नाभ्यां दिवं व्वृक्काभ्यां गिरीन् प्लाशिभिरुपलान् प्लीन्हा व्वल्म्मीकान् क्लोभिग्ग्लौभिर्गुल्म्मान् हिराभिः स्रवन्तीर्हृदान् कुक्षिभ्याᳬं समुद्रमुदरेण व्वैश्वानरं भस्मना ॥ नैर्ऋत्याम्—ॐ भूर्भुवः स्वः क्रोधभैरवाय० क्रोधभैरवम् आ० स्था० ॥४॥

ॐ उन्नत ऽऋषभो व्वामनस्त ऽऐन्द्रावैष्णवा ऽउन्नतः शितिबाहुः शितिपृष्ठस्त ऽऐन्द्राबार्हस्पत्याः शुकरूपा व्वाजिनाः कुल्म्माषा ऽआग्निमारुताः श्यामाः पौष्णाः ॥ पश्चिमे—ॐ भूर्भुवः स्वः उन्मत्तभैरवाय० उन्मत्तभैरवम् आ० स्था० ॥५॥

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्त्वा क्षित्या ऽउन्नयामि । समापो ऽअद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः । वायव्याम्-ॐ भूर्भुवः स्वः कपालभैरवाय० कपालभैरवम् आ० स्था० ॥६॥

ॐ उग्रश्च भीमश्च द्ध्वान्तश्च धुनिश्च । सासह्वाँश्चाभियुग्वा च व्विक्षिपः स्वाहा ॥ उत्तरे—ॐ भूर्भुवः स्वः भीषणभैरवाय० भीषणभैरवाम् आ० स्था० ॥७॥

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्क्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥ ईशान्याम्—ॐ भूर्भुवः स्वः संहारभैरवाय० संहारभैरवम् आ० स्था० ॥८॥

ॐ नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः शर्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च ॥ तद्वाह्ये पूर्वे—ॐ भूर्भुवः स्वः भवाय० भवम् आ० स्था० ॥९॥

ॐ अग्निᳬं हृदयेनाशनिᳬं हृदयाग्रेण पशुपतिं कृत्स्नहृदयेन भवं यक्ना । शर्वं मतस्नाभ्यामीशानं मन्युना महादेवमन्तः पर्शव्येनोग्रं देवं व्वनिष्ठुना व्वसिष्ठहनुः शिङ्गीनि कोश्याभ्याम् ॥ आग्नेय्याम्—ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वाय० सर्वम् आ० स्था० ॥१०॥

उग्रँ ल्लोहितेन मित्रᳬं सौव्रत्त्येन रुद्रं दौर्व्रत्येनेन्द्रं प्रक्रीडेन मरुतो बलेन साद्ध्यान् प्प्रमुदा । भवस्य कण्ठ्यᳬं रुद्रस्यान्तः

पार्श्व्यंमहादेवस्य यकृच्छर्व्वस्य व्वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत् ॥ दक्षिणे—ॐ भूर्भुवः स्वः पशुपतये० पशुपतिम् आ० स्था० ॥११॥

ॐ तमीशानंजगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसेहूमहेव्वयम् । पूषा नो यथा व्वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥ नैर्ऋत्याम्—ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय० ईशानम् आ० स्था० ॥१२॥

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव ऽउतो त ऽइषवे नमः । वाहुभ्यामुत ते नमः ॥ पश्चिमे—ॐ भूर्भुवः स्वः रुद्राय० रुद्रम् आ० स्था० ॥१३॥

ॐ उग्रश्चभीमश्च्चद्ध्वान्तश्च्च धुनिश्च्च । सासह्वाँश्चा-भियुग्वा च व्विक्षिपः स्वाहा ॥ वायव्याम्—ॐ भूर्भुवः स्वः उग्राय० उग्रम् आ० स्था० ॥१४॥

ॐ व्वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्ण्णं तमसः परस्तात् । तमेव व्विदित्वाऽति मृत्युमेति नान्यः पन्था व्विद्यतेऽयनाय ॥ उत्तरे—ॐ भूर्भुवः स्वः भीमाय० भीमम् आ० स्था० ॥१५॥

ॐ मा नो महान्तमुत मा नो ऽअर्भकं मा न ऽउक्षन्तमुत मा न ऽउक्षितम् । मा नो व्वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः ॥ ईशान्याम्—ॐ भूर्भुवः स्वः महते० महान्तम् आ० स्था० ॥१६॥

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छा नः शर्म्म सप्प्रथाः ॥ तद्वाह्ये पूर्वे—ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्ताय० अनन्तम् आ० स्था० ॥१७॥

ॐ देहि मे ददामि ते नि मे धेहि निते दधे । निहारं च हरासि मे निहारं निहराणि ते स्वाहा ॥ आग्नेय्याम्—ॐ भूर्भुवः स्वः वासुकये० वासुकिम् आ० स्था० ॥१८॥

ॐ नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च्च वो नमो नमः कुलालेभ्यः कर्म्मारेभ्यश्च्च वो नमो नमो निषादेभ्यः पुञ्जिष्ठेभ्यश्च्च वो नमो नमः श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च्च वो नमः ॥ दक्षिणे—ॐ भूर्भुवः स्वः तक्षकाय० तक्षकम् आ० स्था० ॥१९॥

ॐ पुरुषमृगश्च्चन्द्रमसो गोधा कालका दार्व्वाघाटस्ते व्वनस्पतीनां कृकवाकुः सावित्रो हᳬसो व्वातस्य नाक्रो मकरः कुलीपयस्तेऽकूपारस्य

ह्रियै शल्ल्यकः ॥ नैर्ऋत्याम्—ॐ भूर्भुवः स्वः कुलिशाय० कुलिशम् आ० स्था० ॥२०॥

ॐ सोमाय कुलुङ्ग ऽआरण्ण्योऽजो नकुलः शका ते पौष्णाः क्क्रोष्ट्टा मायोरिन्द्रस्य गौरमृगः पिद्द्वोन्न्यङ्कुः कक्कटस्तेऽनुमत्यै प्प्रतिश्श्रुत्कायैचक्क्रवाकः ॥ पश्चिमे—ॐ भूर्भुवः स्वः कर्कोटकाय० कर्कोटकम् आ० स्था० ॥२१॥

ॐ अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः । तमीमहे महागयम् ॥ उपयामगृहीतोऽस्यग्ग्नये त्त्वा व्वर्च्चस ऽएष ते योनिरग्ग्नये त्त्वा व्वर्च्चसे ॥ वायव्याम्—ॐ भूर्भुवः स्वः शङ्खपालाय० शङ्खपालम् आ० स्था० ॥२२॥

ॐ सीसने तन्त्रं मनसा मनीषिण ऽऊर्ण्णसूत्रेण कवयो व्वयन्ति । अश्श्विना यज्ञꣳ सविता सरस्वतीन्द्रस्य रूपं व्वरुणो भिषज्ज्यन् ॥ उत्तरे—ॐ भूर्भुवः स्वः कम्बलाय० कम्बलम् आ० स्था० ॥२३॥

ॐ अश्श्वस्तूपरो गोमृगस्ते प्प्राजापत्त्याः कृष्ण्णग्ग्रीव ऽआग्ग्नेयो रराटे पुरस्तात्सारस्वती मेष्ष्यधस्ताद्धन्व्वोराश्श्विनावधोरामौ बाह्वोः सौमापौष्ण्णः श्यामो नाब्भ्याः सौर्य्ययामौ श्श्वेतश्श्च कृष्ण्णश्श्च पार्श्श्वयोस्त्वाष्ट्रौ लोमशसक्क्थौ सक्क्थ्योर्व्वायव्व्यः श्वेतः पुच्छ ऽइन्द्राय स्वपस्याय व्वेहद्वैष्ण्णवो व्वामनः ॥ ईशान्याम्—ॐ भूर्भुवः स्वः अश्वतराय० अश्वतरम् आ० स्था० ॥२४॥

ॐ नमः श्श्वब्भ्यः श्श्वपतिब्भ्यश्श्च वो नमो नमो भवाय च रुद्द्राय च नमः शर्व्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्ग्रीवाय च शितिकण्ण्ठाय च ॥ ईशानेन्द्रयोर्मध्ये—ॐ भूर्भुवः स्वः शूलाय० शूलम् आ० स्था० ॥२५॥

ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्श्चक्षोः सूर्य्यो ऽअजायत । श्श्रोत्राद्वायुश्श्च प्प्राणश्श्च मुखादग्निरजायत ॥ इन्द्राग्नि मध्ये— ॐ भूर्भुवः स्वः चन्द्रमौलिने० चन्द्रमौलिनम् आ० स्था० ॥२६॥

ॐ चन्द्रमा ऽअप्प्स्वन्तरा सुपर्ण्णो धावते दिवि । रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहꣳ हरिरेति कनिक्क्रदत् ॥ अग्नियमयोर्मध्ये—ॐ भूर्भुवः स्वः चन्द्रमसे० चन्द्रमसम् आ० स्था० ॥२७॥

ॐ आशुः शिशानो व्वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्श्चर्षणी नाम् । सङ्क्रन्दनोऽनिमिष ऽएकवीरः शतꣳ सेना ऽअजयत्त्साकमिन्द्रः ॥ यमनिर्ऋतयोर्मध्ये—ॐ भूर्भुवः स्वः वृषभध्वजाय० वृषभध्वजम् आ० स्था० ॥२८॥

ॐ सुगा वो देवाः सदना अकर्म्म य आजग्मेदꣳ सवनं जुषाणाः । भरमाणा व्वहमाना हवीꣳष्ष्यस्म्मे धत्त व्वसवो व्वसूनि स्वाहा ॥ निर्ऋतिवरुणमध्ये—ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिलोचनाय० त्रिलोचनम् आ० स्था० ॥२९॥

ॐ रुद्राः सꣳ सृज्ज्य पृथिवीं बृहज्ज्योतिः समीधिरे । तेषां भानुरजस्र ऽइच्छुक्क्रो देवेषु रोचते ॥ वरुणवायुमध्ये—ॐ भूर्भुवः स्वः शक्तिधराय० शक्तिधरम् आ० स्था० ॥३०॥

ॐ त्र्यम्बकं य्यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम् । उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीय माऽमृतात् ॥ वायुसोममध्ये—ॐ भूर्भुवः स्वः महेश्वराय० महेश्वरम् आ० स्था० ॥३१॥

ॐ या वां कशा मधुमत्यश्श्विना सूनृतावती । तया यज्ञं मिमिक्षतम् ॥ सोमेशानमध्ये-ॐ भूर्भुवः स्वः शूलपाणये० शूलपाणिम् आ० स्था० ॥३२॥

'ब्रह्माद्यावाहितसर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः' इति ब्रह्माद्यावाहित-देवानावाह्य संस्थापयेत् । पश्चादावाहितदेवानां षोडशोपचारैः पञ्चोपचारैर्वा पूजनं कुर्यात् ।

पीठपूजनम् —

ॐ नमः श्रुत्यायेति मन्त्रेण रत्नखचितसुवर्णमयपीठ-कल्पनम् ॥ अक्षतैः पुष्पैर्वा पीठपूजां कुर्यात् पीठस्याऽधोभागे ॥ ॐ मूलप्रकृत्यै नमः ॥ ॐ आधारशक्तये नमः ॥ ॐ कूर्माय नमः ॥ ॐ अनन्ताय नमः ॥ ॐ वाराहाया नमः ॥ ॐ पृथिव्यै नमः ॥ ॐ विचित्रदिव्यरत्नमण्डपाय नमः ॥ मण्डपस्य परितः ॥ ॐ कल्पवृक्षेभ्यो नमः ॥ ॐ विचित्रदिव्यरत्नमण्डपाय नमः ॥ मण्डपस्य परितः । ॐ कल्पवृक्षेभ्यो नमः ॥ ॐ सुवर्णवेदिकायै नमः ॥ ॐ रत्नसिंहासनाय नमः ॥ अथ सिंहासनचतुर्दिषु ॥ ॐ धर्माय नमः,

इत्याग्नेय्याम् ॥ ॐ ज्ञानाय नमः, इति नैर्ऋत्याम् ॥ ॐ वैराग्याय नमः, इति वायव्याम् ॥ ॐ ऐश्वर्याय नमः ॥ इति ऐशान्याम् ॥ गात्रेषु ॥ ॐ अधर्माय नमः, इति प्राच्याम् ॥ ॐ अज्ञानाय नमः, इति दक्षिणस्याम् ॥ ॐ अवैराग्याय नमः, इति प्रतीच्याम् ॥ ॐ अनैश्वर्याय नमः, इत्युदीच्याम् ॥ सिंहासनोपरि ॥ ॐ तल्पाकारायाऽनन्ताय नमः ॥ ॐ पद्माय नमः । ॐ आनन्दमयकन्दाय नमः ॥ ॐ संविन्नालाय नमः ॥ ॐ प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः ॥ ॐ विकारमयकेशरेभ्यो नमः ॐ पञ्चाशद्वर्णादयः कर्णिकायै नमः ॥ अथ पद्मदलकेसरकर्णिकासु ॥ ॐ सं सत्त्वाय नमः ॥ इति दलेषु ॥ ॐ रं रजसे नमः, इति केसरेषु । ॐ तं तमसे नमः, इति कर्णिकासु । एषः प्रकृतित्रिकं सर्वत्र ॥ ॐ अं द्वादशकलात्मनेऽर्कमण्डलाय नमः ॥ ॐ उं षोडशकलात्मने सोममण्डलाय नमः ॥ ॐ मं दशकलात्मनेऽग्निमण्डलाय नमः ॥ ॐ अं ब्रह्मणे नमः ॥ ॐ उं विष्णवे नमः ॥ ॐ मं महेश्वराय नमः ॥ ॐ अं आत्मने नमः ॥ ॐ उं अन्तरात्मने नमः ॥ ॐ मं महेश्वराय नमः ॥ ॐ ज्ञं ज्ञानात्मने नमः ॥ इति सर्वपद्मार्चनम् ॥ अथ पद्मपूर्वादिपत्रेषु ॥ ॐ कामायै नमः ॥ ॐ ज्येष्ठायै नमः ॥ ॐ रौद्र्यै नमः ॥ ॐ काल्यै नमः ॥ ॐ कलविकरिण्यै नमः ॥ ॐ बलविकरिण्यै नमः ॥ ॐ बलप्रमथिन्यै नमः ॥ ॐ सर्वभूतदमन्यै नमः । इत्यष्टौ शक्तीः सम्पूज्य ॥ ॐ मनोन्मन्यै नमः ॥ इति कर्णिकायां पूजनम् ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय सकलगुणात्मशक्तियुक्तायाऽनन्ताय योगपीठानन्दरूपं परं धामैव सकलं पीठमिति चिन्तयेत् ॥ ततः लिङ्गतोभद्रपीठोपरि मध्ये कलशस्थापनविधिना कलशं संस्थाप्य कलशे वरुणं सम्पूज्य कलशोपरि प्रधानदेवस्य स्वर्णमयीं प्रतिमामग्न्युत्तारणपूर्वकं संस्थापयेत् ॥ इति पीठपूजा ॥

अथाग्न्युत्तारणम्

आचार्यः – देशकालौ सङ्कीर्त्य 'अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहम् अस्यां प्रधानमूर्तौ अवघातादिदोषपरिहारार्थं देवतासान्निध्यार्थं च अग्न्युत्तारणं करिष्ये' इति सङ्कल्प्य प्रधानप्रतिमां रजतादिपात्रे निधाय घृतेनाऽभ्यज्य

तदुपरि सन्ततां दुग्धधारां जलधारां वा दद्यात् । तत्र मन्त्राः—ॐ समुद्रस्य त्त्वावकयाग्ग्ने परिव्व्ययामसि । पावको ऽअस्मब्भ्यꣳ शिवो भव ॥१॥ हिमस्य त्त्वा जरायुणाग्ग्ने परि व्व्ययामसि । पावको अस्मब्भ्यꣳ शिवो भव ॥२॥

उप ज्ज्मनुप वेतसेऽवतर नदीष्ष्वा । अग्ग्ने पित्तमपामसि मण्डूकि ताभिरागहि सेमं नो यज्ञं पावकवर्ण्णꣳ शिवं कृधि ॥३॥

अपामिदं न्ययनꣳ समुद्रस्य निवेशनम् । अन्न्याँस्ते ऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावको ऽअस्मब्भ्यꣳ शिवो भव ॥४॥

अग्ग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्व्वया । आ देवान्नवक्षि यक्षि च ॥५॥

स नः पावक दीदिवोऽग्ग्ने देवाँ२ ॥ ऽइहावह । उप यज्ञꣳ हविश्श्च नः ॥६॥

पावकया यश्चितयन्त्या कृपा क्षामन् रुरुच ऽउषसो न भानुना । तूर्व्वन्न यामन्नेतशस्य नू रण ऽआ यो घृणेन ततृषाणो ऽअजरः ॥७॥

नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते ऽअस्त्वर्च्चिषे । अन्न्याँस्ते ऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मब्भ्यꣳ शिवो भव ॥८॥

नृषदे व्वेडप्सुषदे व्वेड् बर्हिषदे व्वेड् व्वनसदे व्वेट् स्वर्व्विदेव्वेट् ॥९॥

ये देवा देवानां यज्ञिया यज्ञियानाꣳ संव्वत्सरीणमुप भागमासते । अहुतादो हविषो यज्ञे ऽअस्मिन्त्स्वयं पिबन्तु मधुनो घृतस्य ॥१०॥

ये देवा देवेष्वधि देवत्त्वमायन्न्ये व्ब्रह्मणः पुर ऽएतारो ऽअस्य । येब्भ्यो न ऽऋते पवते धाम किञ्चन न ते दिवो न पृथिव्व्या ऽअधि स्नुषु ॥११॥

प्राणदा ऽअपानदा व्यानदा व्वर्च्चोदा व्वरिवोदाः । अन्न्याँस्ते ऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावको ऽअस्मब्भ्यꣳ शिवो भव ॥१२॥

ततः 'ॐ पञ्चनद्यः०' इति मन्त्रेण पञ्चामृतेन प्रतिमां संस्नापयेत् । एवमग्न्युत्तारणं कृत्वा आचार्यः यजमानो वा सुवर्णमयीं प्रतिमां जलपात्राद् बहिर्निष्कास्य नूतनपट्टवस्त्रेण सम्प्रोञ्छ्य प्रतिमां वामहस्ते धृत्वा दक्षिणहस्तेनाच्छाद्य प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् । इत्यग्नयुत्तारणम् ।

अथ प्राणप्रतिष्ठा

आचार्यः—अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्म-विष्णु-महेश्वरा ऋषयः ऋग्यजुस्सामानि छन्दांसि क्रियामयवपुः प्राणाख्या देवता आं बीजं ह्रीं शक्तिः क्रौं कीलकम् अस्य देवस्य प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः ।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं हं सः सोऽहं अस्य देवस्य प्राणाः इह प्राणाः । ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं हं सः सोऽहं अस्य देवस्य जीव इह स्थितः । ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं हं सः सोऽहं अस्य देवस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ्-मनस्त्वक्-चक्षुः-श्रोत्र-जिह्वा-घ्राण-पाणि-पादपायूपस्थानि इहैवागत्य स्वस्तये सुखेन सुस्थिरं सुचिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ।

ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु । विश्वे देवास ऽइह मादयन्तामोँ३॥ प्रतिष्ठ ॥ ॐ अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च । अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ॥ इतिप्राणप्रतिष्ठां कृत्वा देवप्रतिमां रजतादिसिंहासनोपरि स्थापयित्वा देवप्रतिमायाः षोडशोपचारैः पूजनं कुर्यात् । ततः प्रार्थयेत् ।

शिव आवरण पूजनम्

रुद्रपूजनम् ॥ ततस्तद्बहिः वृत्तमध्ये एवं ॥ ॐ सद्योजाताय नमः, प्राच्याम् ॥ ॐ वामदेवाय नमः, दक्षिणस्याम् ॥ ॐ अघोराय नमः, प्रतीच्याम् ॥ ॐ तत्पुरुषाय नमः, इति उदीच्याम् ॥ ॐ ईशानाय नमः, मध्ये ॥ तद्बहिः अष्टदलेषु प्रागादिक्रमेण ॥ ॐ नन्दिने नमः ॥१॥ ॐ महाकालाय नमः ॥२॥ ॐ गणेशाय नमः ॥३॥ ॐ वृषभाय नमः ॥४॥ ॐ भृङ्गिणे नमः ॥५॥ ॐ स्कन्दाय नमः ॥६॥ ॐ उमायै नमः ॥७॥ ॐ चण्डेश्वराय नमः ॥८॥ गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ॥ इति सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥

दयाब्धे ! त्राहि संसारसर्पान्मां शरणागतम् ।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ तद्बहिः षोडशदलेषु प्रागादिक्रमेण ॥ ॐ अनन्ताय नमः ॥१॥

ॐ सूक्ष्माय नमः ॥२॥ ॐ शिवाय नमः ॥३॥ ॐ एकपदे नमः ॥४॥ ॐ एकरुद्राय नमः ॥५॥ ॐ त्रिमूर्तये नमः ॥६॥ ॐ श्रीकण्ठाय नमः ॥७॥ ॐ वामदेवाय नमः ॥८॥ ॐ ज्येष्ठाय नमः ॥९॥ ॐ श्रेष्ठाय नमः ॥१०॥ ॐ रुद्राय नमः ॥११॥ ॐ कालाय नमः ॥१२॥ ॐ कलविकरणाय नमः ॥१३॥ ॐ बलविकरणाय नमः ॥१४॥ ॐ बलाय नमः ॥१५॥ ॐ बलप्रमथनाय नमः ॥१६॥ गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि इति सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥

दयाब्धे ! त्राहि संसारसर्पान्मां शरणागतम् ।

भक्त्यां समर्पये तुभ्यं द्वितीया-वरणार्चनम् ॥ इति द्वितीयावर्णम् ॥

तद्बहिः चतुर्विंशतिदलेषु प्रागादिक्रमेण ॥ ॐ अणिमायै नमः ॥१॥ ॐ महिमायै नमः ॥२॥ ॐ लघिमायै नमः ॥३॥ ॐ गरिमायै नमः ॥४॥ ॐ प्राप्त्यै नमः ॥५॥ ॐ प्रकाम्यै नमः॥६॥ ॐ ईशित्वायै नमः ॥७॥ ॐ वशित्वायै नमः ॥८॥ ॐ ब्राह्यै नमः ॥९॥ ॐ माहेश्वर्य्यै नमः ॥१०॥ ॐ कौमार्यै नमः ॥११॥ ॐ वैष्णव्यै नमः ॥१२॥ ॐ वाराह्यै नमः ॥१३॥ ॐ माहेन्द्रायै नमः ॥१४॥ ॐ चामुण्डायै नमः ॥१५॥ ॐ चण्डिकायै नमः ॥१६॥ ॐ असिताङ्गभैरवाय नमः ॥१७॥ ॐ रुरुभैरवाय नमः॥१८॥ ॐ चण्डभैरवाय नमः ॥१९॥ ॐ क्रोधभैरवाय नमः ॥२०॥ ॐ उन्मत्तभैरवाय नमः ॥२१॥ ॐ कालभैरवाय नमः ॥२२॥ ॐ भीषणभैरवाय नमः ॥२३॥ ॐ संहारभैरवाय नमः ॥२४॥ गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि, इति सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥

दयाब्धे ! त्राहि संसारसर्पान्मां शरणागतम् ।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ॥ इति तृतीयावरणम् ॥

तद्बहिः द्वात्रिंशद्दलेषु प्रागादिक्रमेण ॥ ॐ भवाय नमः ॥१॥ ॐ शर्वाय नमः ॥२॥ ॐ ईशानाय नमः ॥३॥ ॐ पशुपतये नमः ॥४॥ ॐ रुद्राय नमः ॥५॥ ॐ उग्राय नमः ॥६॥ ॐ भीमाय नमः ॥७॥ ॐ महते नमः ॥८॥ ॐ अनन्ताय नमः ॥९॥ ॐ वासुकये नमः ॥१०॥ ॐ तक्षकाय नमः ॥११॥ ॐ कुलीरकाय

नमः ॥१२॥ ॐ कर्कोटकाय नमः ॥१३॥ ॐ शङ्खपालाय नमः ॥१४॥ ॐ कम्बलाय नमः ॥१५॥ ॐ अश्वतराय नमः ॥१६॥ ॐ वैन्याय नमः ॥१७॥ ॐ पृथवे नमः ॥१८॥ ॐ हैहयाय नमः ॥१९॥ ॐ अर्जुनाय नमः ॥२०॥ ॐ शाकुन्तलेयाय नमः ॥२१॥ ॐ भरताय नमः ॥२२॥ ॐ नलाय नमः ॥२३॥ ॐ रामाय नमः ॥२४॥ ॐ हिमवते नमः॥ २५॥ ॐ निषधाय नमः॥२६॥ ॐ विन्ध्याय नमः ॥२७॥ ॐ माल्यवते नमः ॥२८॥ ॐ पारिजाताय नमः॥२९॥ ॐ मलयाय नमः॥३०॥ ॐ हेमकूटाय नमः ॥३१॥ ॐ गन्धमादाय नमः ॥३२॥ गन्धाऽक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि, इति सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥

दयाब्धे ! त्राहि संसारसर्पान्मां शरणागतम् ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम् ॥ इति चतुर्थावरणम् ॥

तद्बहिः चत्वारिंशद्दलेषु प्रागादिक्रमेण ॥ ॐ इन्द्राय नमः ॥१॥ ॐ अग्नये नमः ॥२॥ ॐ यमाय नमः ॥३॥ निर्ऋतये नमः ॥४॥ ॐ वरुणाय नमः ॥५॥ ॐ वायवे नमः ॥६॥ ॐ कुबेराय नमः ॥७॥ ॐ ईशानाय नमः ॥८॥ ॐ शच्यै नमः ॥९॥ ॐ स्वाहायै नमः ॥१०॥ ॐ वाराह्यै नमः ॥११॥ ॐ खड्गिन्यै नमः ॥१२॥ ॐ वारुण्यै नमः ॥१३॥ ॐ वायव्यै नमः ॥१४॥ ॐ कौबेर्य्यै नमः ॥१५॥ ॐ ईशान्यै नमः ॥१६॥ ॐ वज्राय नमः ॥ १७॥ ॐ शक्तये नमः॥१८॥ ॐ दण्डाय नमः ॥१९॥ खड्गाय नमः ॥२०॥ ॐ पाशाय नमः ॥२१॥ ॐ अङ्कुशाय नमः ॥२२॥ ॐ गदायै नमः ॥२३॥ ॐ त्रिशूलाय नमः ॥२४॥ ॐ ऐरावताय नमः ॥२५॥ ॐ मेषाय नमः ॥२६॥ ॐ महिषाय नमः ॥२७॥ ॐ प्रेताय नमः ॥२८॥ ॐ मकराय नमः ॥२९॥ ॐ मृगाय नमः ॥३०॥ ॐ नराय नमः॥३१॥ ॐ वृषभाय नमः ॥३२॥ ॐ ऐरावताय नमः॥३३॥ ॐ पुण्डरीकाय नमः ॥३४॥ ॐ वामनाय नमः ॥३५॥ ॐ कुमुदाय नमः ॥३६॥ ॐ अञ्जनाय नमः ॥३७॥ ॐ पुष्पदन्ताय नमः ॥३८॥ ॐ सार्वभौमाय नमः ॥३९॥

ॐ सुप्रतीकाय नमः॥४०॥ गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि, इति सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥

दयाब्धे ! त्राहि संसारसर्पान्मां शरणागतम् ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम् ॥ इति पञ्चमावरण् ॥

ततः पञ्चमाद्बहिर्भूगृहान्तः प्रागादिक्रमेण ॥ ॐ इन्द्राय नमः ॥ ॐ अग्नये नमः ॥ ॐ यमाय नमः ॥ ॐ निऋतये नमः ॥ ॐ वरुणाय नमः ॥ ॐ वायवे नमः ॥ ॐ कुबेराय नमः ॥ ॐ ईशानाय नमः ॥ ॐ विरुपाक्षाय नमः ॥ इत्याग्नेय्याम् ॥ ॐ विश्वरूपाय नमः ॥ इति नैर्ऋत्याम् ॥ ॐ पशुपतये नमः॥ इति वायव्याम् ॥ ॐ ऊर्ध्वलिङ्गाय नमः, इत्यैशान्याम्

भूगृहाद्बहिः

ॐ विप्रवर्णाय श्वेतरूपाय सहस्रफणामण्डलसंयुताय शेषाय नमः ॥ इति पूर्वस्याम् ॐ वैश्यवर्णाय नीलरूपाय पञ्चाशत्फणा-मण्डलभूषितायोत्तुङ्गकायाय तक्षकाय नमः इत्याग्नेय्याम् ॥ ॐ विप्रवर्णाय कुङ्कुमाभाय सहस्रफणामण्डलसंयुक्तायाऽनन्ताय नमः ॥ इति दक्षिणस्याम् ॥ ॐ क्षत्रियवर्णाय पीतरूपाय सप्तशतफणा-मण्डलसंयुक्ताय उत्तुङ्गकायाय वासुकये नमः । इति नैर्ऋत्याम् ॥ ॐ क्षत्रियवर्णाय पीतरूपाय सप्तशतफणामण्डलसंयुक्ताय शङ्खपालय ते नमः ॥ इति प्रतीच्याम् ॥ ॐ वैश्यवर्णाय नीलरूपाय पञ्चाशत्फणामण्डलसंयुक्तायोत्तुङ्गकायाय महापद्माय नमः ॥ इति वायव्याम् ॐ शूद्रवर्णाय कृष्णरूपाय त्रिंशत्फणामण्डलसंयुक्ताय कम्बलाय नमः ॥ इत्युदीच्याम् ॥ ॐ शूद्रवर्णाय श्वेतरूपाय त्रिंशत्फणामण्डलसंयुक्ताय कर्कोटकाय नमः । इत्यैशान्याम् ॥ ॐ नमो भगवते रुद्रायेति देवमूर्ध्नि पुष्पाञ्जलिं दत्वा ॥ ॐ त्रयम्बकं यजामहे० ॥ ॐ नमस्ते ऽअस्तु भगवन् विश्वेश्वराय महादेवाय त्र्यम्बकाय त्रिपुरान्तकाय त्रिकाग्निकालाय कालाग्निरुद्राय नीलकण्ठाय सर्वेश्वराय श्री महादेवाय नमः इति नत्वा ॥ ॐ एष ते रुद्र भाग इति मन्त्रेण वाणमुद्रा ॥ लिङ्गमुद्रा प्रदर्शयेत ॥पूजितोऽसि मया देव कुर्वन्तु मम मङ्गलम् । महायागस्य संसिद्ध्यै क्षमध्वमनयाऽर्चया ॥

गौरीतिलकमण्डलदेवानां पूजनम्

ममेह जन्मनि जन्मान्तरे वा श्री दुर्गादेवीप्रीति द्वारा सर्वपापक्षय पूर्वकदीर्घायुर्विपुल-धनधान्य पुत्रपौत्राद्यवच्छिन्न-सन्तति वृद्धिस्थिर लक्ष्मी-कीर्तिलाभशत्रुपराजयसदभीष्टसिद्ध्यर्थं गौरीतिलकमण्डलपूजनपूर्वकं श्रीदुर्गापूजनं करिष्ये ।

अङ्गन्यासं करन्यासं च विधाय गौरीतिलकमण्डलस्थितदेवानाम् आवाहनाय हस्ते गन्धाक्षतपुष्पाणि आदाय देवान् स्थापयेत् —

कलशसमीपे पीतकोष्ठेषु चतुरोदेवान् पूजयेत्—

१. ॐ महाविष्णवे नमः, ॐ महाविष्णुमावाहयामि स्थापयामि (ऐशाने)
२. ॐ महालक्ष्म्यै नमः, ॐ महालक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि (आग्नेयाम्)
३. ॐ महेश्वराय नमः, ॐ महेश्वरमावाहयामि स्थापयामि (नैऋत्याम्)
४. ॐ माहामायायै नमः, ॐ महामायामावाहयामि स्थापयामि (वायव्याम्)

हृदयाङ्गमध्ये चतुर्षु कोष्ठेषु चतुर्वेदान्पूजयेत्—

५. ॐ ऋग्वेदाय नमः, ॐ ऋग्वेदमावाहयामि स्थापयामि (पूर्वे)
६. ॐ यजुर्वेदाय नमः, ॐ यजुर्वेदमावाहयामि स्थापयामि (दक्षिणे)
७. ॐ सामवेदाय नमः, ॐ सामवेदमावाहयामि स्थापयामि (पश्चिमे)
८. ॐ अथर्ववेदाय नमः, ॐ अथर्ववेदमावाहयामि स्थापयामि (उत्तरे)

पूर्वादीशानपर्यन्तं श्वेतकोष्ठेषु पञ्चदेवान् पूजयेत्—

९. ॐ अद्भ्यो नमः ॐ अपः आवाहयामि स्थापयामि
१०. ॐ जलोद्भवाय नमः ॐ जलोद्भवम् आवाहयामि स्थापयामि
११. ॐ ब्रह्मणे नमः ॐ ब्रह्माणम् आवाहयामि स्थापयामि
१२. ॐ प्रजापतये नमः ॐ प्रजापतिम् आवाहयामि स्थापयामि
१३. ॐ शिवाय नमः ॐ शिवम् आवाहयामि स्थापयामि

अग्निकोणे श्वेतकोष्ठयोः —

१४. ॐ अनन्ताय नमः ॐ अनन्तम् आवाहयामि स्थापयामि
१५. ॐ परमेष्ठिने नमः ॐ परमेष्ठिनम् आवाहयामि स्थापयामि

अग्निकोणे चतुष्कोष्ठेषु —

१६. ॐ धात्रे नमः ॐ धातारम् आवाहयामि स्थापयामि
१७. ॐ विधात्रे नमः ॐ विधातारम् आवाहयामि स्थापयामि
१८. ॐ अर्य्यमणे नमः ॐ अर्य्यमणम् आवाहयामि स्थापयामि
१९. ॐ मित्राय नमः ॐ मित्रम् आवाहयामि स्थापयामि

दक्षिणश्वेतेषु —

२०. ॐ वरुणाय नमः ॐ वरुणम् आवाहयामि स्थापयामि
२१. ॐ अंशुमते नमः ॐ अंशुमन्तम् आवाहयामि स्थापयामि
२२. ॐ भगाय नमः ॐ भगम् आवाहयामि स्थापयामि
२३. ॐ इन्द्राय नमः ॐ इन्द्रम् आवाहयामि स्थापयामि
२४. ॐ विवश्वते नमः ॐ विवश्वन्तम् आवाहयामि स्थापयामि

नैऋत्यकोणयोः —

२५. ॐ पूष्णे नमः ॐ पूष्णम् आवाहयामि स्थापयामि
२६. ॐ पर्जन्याय नमः ॐ पर्जन्यम् आवाहयामि स्थापयामि

नैऋत्यकोणे श्वेतेषु —

२७. ॐ त्वष्ट्रे नमः ॐ त्वष्टारम् आवाहयामि स्थापयामि
२८. ॐ दक्षयज्ञाय नमः ॐ दक्षयज्ञम् आवाहयामि स्थापयामि
२९. ॐ देववसवे नमः ॐ देववसुम् आवाहयामि स्थापयामि
३०. ॐ महासुताय नमः ॐ महासुतम् आवाहयामि स्थापयामि

पश्चिमे श्वेतेषु —

३१. ॐ सुधर्मणे नमः ॐ सुधर्माणम् आवाहयामि स्थापयामि
३२. ॐ शङ्खपदे नमः ॐ शङ्खपदम् आवाहयामि स्थापयामि
३३. ॐ महाबाहवे नमः ॐ महाबाहुम् आवाहयामि स्थापयामि
३४. ॐ वपुष्मते नमः ॐ वपुष्मन्तम् आवाहयामि स्थापयामि
३५. ॐ अनन्ताय नमः ॐ अनन्तम् आवाहयामि स्थापयामि

वायौ श्वेतयोः —

३६. ॐ महेरणाय नमः ॐ महेरणम् आवाहयामि स्थापयामि
३७. ॐ विश्वावसवे नमः ॐ विश्वावसुम् आवाहयामि स्थापयामि

वायौ श्वेतेषु —

३८. ॐ सुपर्वणे नमः ॐ सुपर्वाणम् आवाहयामि स्थापयामि
३९. ॐ विष्टराय नमः ॐ विष्टरम् आवाहयामि स्थापयामि
४०. ॐ रुद्रदेवतायै नमः ॐ रुद्रदेवताम् आवाहयामि स्थापयामि
४१. ॐ ध्रुवाय नमः ॐ ध्रुवम् आवाहयामि स्थापयामि

उत्तरश्वेतेषु —

४२. ॐ धरायै नमः ॐ धराम् आवाहयामि स्थापयामि
४३. ॐ सोमाय नमः ॐ सोमम् आवाहयामि स्थापयामि
४४. ॐ आपवत्साय नमः ॐ आपवत्सम् आवाहयामि स्थापयामि
४५. ॐ नलाय नमः ॐ नलम् आवाहयामि स्थापयामि
४६. ॐ अनिलाय नमः ॐ अनिलम् आवाहयामि स्थापयामि

ईशान्ये श्वेतयोः —

४७. ॐ प्रत्यूषाय नमः ॐ प्रत्यूषम् आवाहयामि स्थापयामि
४८. ॐ प्रभासाय नमः ॐ प्रभासम् आवाहयामि स्थापयामि

ईशानकोणे श्वेतेषु —

४९. ॐ आवर्त्ताय नमः ॐ आवर्त्तम् आवाहयामि स्थापयामि
५०. ॐ सावर्त्ताय नमः ॐ सावर्त्तम् आवाहयामि स्थापयामि
५१. ॐ द्रोणाय नमः ॐ द्रोणम् आवाहयामि स्थापयामि
५२. ॐ पुष्कराय नमः ॐ पुष्करम् आवाहयामि स्थापयामि

ईशाने हरित्कोष्ठेषु —

५३. ॐ ह्रीं कार्यै नमः ॐ ह्रीं कारीम् आवाहयामि स्थापयामि
५४. ॐ ह्रीं यै नमः ॐ ह्रीं आवाहयामि स्थापयामि
५५. ॐ कात्यायन्यै नमः ॐ कात्यायनीम् आवाहयामि स्थापयामि
५६. ॐ चामुण्डायै नमः ॐ चामुण्डाम् आवाहयामि स्थापयामि
५७. ॐ महादिव्यायै नमः ॐ महादिव्याम् आवाहयामि स्थापयामि
५८. ॐ महाशब्दायै नमः ॐ महाशब्दाम् आवाहयामि स्थापयामि
५९. ॐ सिद्धिदायै नमः ॐ सिद्धिदाम् आवाहयामि स्थापयामि

६०. ॐ ऐं नमः ॐ ऐं आवाहयामि स्थापयामि
६१. ॐ श्रीं श्रियै नमः ॐ श्रीं श्रियम् आवाहयामि स्थापयामि
६२. ॐ ह्रीं ह्रियै नमः ॐ ह्रीं ह्रियम् आवाहयामि स्थापयामि

ईशानकोणे पीतकोष्ठेषु —

६३ ॐ लक्ष्म्यै नमः ॐ लक्ष्मीम् आवाहयामि स्थापयामि
६४ ॐ श्रियै नमः ॐ श्रियम् आवाहयामि स्थापयामि
६५ ॐ सुघनायै नमः ॐ सुघनाम् आवाहयामि स्थापयामि
६६ ॐ मेधायै नमः ॐ मेधाम् आवाहयामि स्थापयामि
६७ ॐ प्रज्ञायै नमः ॐ प्रज्ञाम् आवाहयामि स्थापयामि
६८ ॐ मत्यै नमः ॐ मतीम् आवाहयामि स्थापयामि
६९ ॐ स्वाहायै नमः ॐ स्वाहाम् आवाहयामि स्थापयामि
७० ॐ सरस्वत्यै नमः ॐ सरस्वतीम् आवाहयामि स्थापयामि

अग्निकोणे हरित्कोष्ठेषु —

७१ ॐ गौर्यै नमः ॐ गौरीम् आवाहयामि स्थापयामि
७२ ॐ पद्मायै नमः ॐ पद्माम् आवाहयामि स्थापयामि
७३ ॐ शच्यै नमः ॐ शचीम् आवाहयामि स्थापयामि
७४ ॐ सुमेधायै नमः ॐ सुमेधाम् आवाहयामि स्थापयामि
७५ ॐ सावित्र्यै नमः ॐ सावित्रीम् आवाहयामि स्थापयामि
७६ ॐ विजयायै नमः ॐ विजयाम् आवाहयामि स्थापयामि
७७ ॐ देवसेनायै नमः ॐ देवसेनाम् आवाहयामि स्थापयामि
७८ ॐ स्वाहायै नमः ॐ स्वाहाम् आवाहयामि स्थापयामि
७९ ॐ स्वधायै नमः ॐ स्वधाम् आवाहयामि स्थापयामि
८० ॐ मात्रे नमः ॐ मातरम् आवाहयामि स्थापयामि
८१ ॐ गायत्र्यै नमः ॐ गायत्रीम् आवाहयामि स्थापयामि

अग्निकोणे पीतकोष्ठेषु —

८२. ॐ लोकमात्र्यै नमः ॐ लोकमातरम् आवाहयामि स्थापयामि
८३. ॐ धृत्यै नमः ॐ धृतिम् आवाहयामि स्थापयामि
८४. ॐ पुष्ट्यै नमः ॐ पुष्टिम् आवाहयामि स्थापयामि
८५. ॐ तुष्ट्यै नमः ॐ तुष्टिम् आवाहयामि स्थापयामि

८६. ॐ आत्मकुलदेवतायै नमः ॐ आत्मकुलदेवताम् आवाहयामि स्थापयामि
८७. ॐ गणेश्वर्य्यै नमः ॐ गणेश्वरीम् आवाहयामि स्थापयामि
८८. ॐ कुलमात्रै नमः ॐ कुलमातरम् आवाहयामि स्थापयामि
८९. ॐ शान्त्यै नमः ॐ शान्तिम् आवाहयामि स्थापयामि

ईशानकोणे वाप्यां कृष्णकोष्ठे १ श्वेतेषु ४ —

९०. ॐ जयन्त्यै नमः ॐ जयन्तीम् आवाहयामि स्थापयामि
९१. ॐ मङ्गलायै नमः ॐ मङ्गलाम् आवाहयामि स्थापयामि
९२. ॐ काल्यै नमः ॐ कालीम् आवाहयामि स्थापयामि
९३. ॐ भद्रकाल्यै नमः ॐ भद्रकालीम् आवाहयामि स्थापयामि
९४. ॐ कपालिन्यै नमः ॐ कपालिनीम् आवाहयामि स्थापयामि

अग्निकोणे वाप्यां कृष्णकोष्ठे १ श्वेतेषु ४ —

९५. ॐ दुर्गायै नमः ॐ दुर्गाम् आवाहयामि स्थापयामि
९६. ॐ क्षमायै नमः ॐ क्षमाम् आवाहयामि स्थापयामि
९७. ॐ शिवायै नमः ॐ शिवाम् आवाहयामि स्थापयामि
९८. ॐ धात्र्यै नमः ॐ धात्रीम् आवाहयामि स्थापयामि
९९. ॐ स्वाहास्वधाभ्यां नमः ॐ स्वाहास्वधाम् आवाहयामि स्थापयामि

नैऋत्यकोणे हरित्कोष्ठेषु ११ —

१००. ॐ दीप्यमानायै नमः ॐ दीप्यमानाम् आवाहयामि स्थापयामि
१०१. ॐ दीप्तायै नमः ॐ दीप्ताम् आवाहयामि स्थापयामि
१०२. ॐ सूक्ष्मायै नमः ॐ सूक्ष्माम् आवाहयामि स्थापयामि
१०३. ॐ विभूत्यै नमः ॐ विभूतिम् आवाहयामि स्थापयामि
१०४. ॐ विमलायै नमः ॐ विमलाम् आवाहयामि स्थापयामि
१०५. ॐ परायै नमः ॐ पराम् आवाहयामि स्थापयामि
१०६. ॐ अमोघायै नमः ॐ अमोघाम् आवाहयामि स्थापयामि
१०७. ॐ विधूतायै नमः ॐ विधूताम् आवाहयामि स्थापयामि
१०८. ॐ सर्वतोमुख्यै नमः ॐ सर्वतोमुखीम् आवाहयामि स्थापयामि
१०९. ॐ आनन्दायै नमः ॐ आनन्दाम् आवाहयामि स्थापयामि
११०. ॐ नन्दिन्यै नमः ॐ नन्दिनीम् आवाहयामि स्थापयामि

नैऋत्यकोणे पीतकोष्ठेषु ८ —

१११. ॐ शान्त्यै नमः ॐ शान्तिम् आवाहयामि स्थापयामि
११२. ॐ महासूक्ष्मायै नमः ॐ महासूक्ष्माम् आवाहयामि स्थापयामि
११३. ॐ करालिन्यै नमः ॐ करालिनीम् आवाहयामि स्थापयामि
११४. ॐ भारत्यै नमः ॐ भारतीम् आवाहयामि स्थापयामि
११५. ॐ ज्योतिषे नमः ॐ ज्योतिषम् आवाहयामि स्थापयामि
११६. ॐ ब्राह्म्यै नमः ॐ ब्राह्मीम् आवाहयामि स्थापयामि
११७. ॐ माहेश्वर्यै नमः ॐ माहेश्वरीम् आवाहयामि स्थापयामि
११८. ॐ कौमार्यै नमः ॐ कौमारीम् आवाहयामि स्थापयामि

वायुकोणे हरित्कोष्ठेषु ११ —

११९. ॐ वैष्णव्यै नमः ॐ वैष्णवीम् आवाहयामि स्थापयामि
१२०. ॐ वाराह्यै नमः ॐ वाराहीम् आवाहयामि स्थापयामि
१२१. ॐ इन्द्राण्यै नमः ॐ इन्द्राणीम् आवाहयामि स्थापयामि
१२२. ॐ चण्डिकायै नमः ॐ चण्डिकाम् आवाहयामि स्थापयामि
१२३. ॐ बुद्ध्यै नमः ॐ बुद्धिम् आवाहयामि स्थापयामि
१२४. ॐ लज्जायै नमः ॐ लज्जाम् आवाहयामि स्थापयामि
१२५. ॐ वपुष्मत्यै नमः ॐ वपुष्मतीम् आवाहयामि स्थापयामि
१२६. ॐ शान्त्यै नमः ॐ शान्तिम् आवाहयामि स्थापयामि
१२७. ॐ कान्त्यै नमः ॐ कान्तिम् आवाहयामि स्थापयामि
१२८. ॐ रत्यै नमः ॐ रतिम् आवाहयामि स्थापयामि
१२९. ॐ प्रीत्यै नमः ॐ प्रीतिम् आवाहयामि स्थापयामि

वायुकोणे पीतकोष्ठेषु ८ —

१३०. ॐ कीर्त्यै नमः ॐ कीर्तिम् आवाहयामि स्थापयामि
१३१. ॐ प्रभायै नमः ॐ प्रभाम् आवाहयामि स्थापयामि
१३२. ॐ काम्यायै नमः ॐ काम्याम् आवाहयामि स्थापयामि
१३३. ॐ कान्तायै नमः ॐ कान्ताम् आवाहयामि स्थापयामि
१३४. ॐ ऋद्ध्यै नमः ॐ ऋद्धिम् आवाहयामि स्थापयामि
१३५. ॐ दयायै नमः ॐ दयाम् आवाहयामि स्थापयामि

१३६. ॐ शिवदूत्यै नमः ॐ शिवदूतीम् आवाहयामि स्थापयामि
१३७. ॐ श्रद्धायै नमः ॐ श्रद्धाम् आवाहयामि स्थापयामि

नैऋत्यवाप्यां कृष्णकोष्ठे १ श्वेतुषु ४

१३८. ॐ क्षमायै नमः ॐ क्षमाम् आवाहयामि स्थापयामि
१३९. ॐ क्रियायै नमः ॐ क्रियाम् आवाहयामि स्थापयामि
१४०. ॐ विद्यायै नमः ॐ विद्याम् आवाहयामि स्थापयामि
१४१. ॐ मोहिन्यै नमः ॐ मोहिनीम् आवाहयामि स्थापयामि
१४२. ॐ यशोवत्यै नमः ॐ यशोवतीम् आवाहयामि स्थापयामि

वायोवाप्यां कृष्णकोष्ठेषु १ श्वेतेषु ४ —

१४३ ॐ कृपावत्यै नमः ॐ कृपावतीम् आवाहयामि स्थापयामि
१४४ ॐ सलिलायै नमः ॐ सलिलाम् आवाहयामि स्थापयामि
१४५ ॐ सुशीलायै नमः ॐ सुशीलाम् आवाहयामि स्थापयामि
१४६ ॐ ईश्वर्यै नमः ॐ ईश्वरीम् आवाहयामि स्थापयामि
१४७ ॐ सिद्धेश्वर्यै नमः ॐ सिद्धेश्वरीम् आवाहयामि स्थापयामि

(कवचाङ्गेषु ऋषीन्पूजयेत् पूर्वेऽरुणपीतकोष्ठेषु–४

१४८. ॐ द्वैपायनाम नमः ॐ द्वैपायनम् आवाहयामि स्थापयामि
१४९. ॐ भरद्वाजाय नमः ॐ भरद्वाजम् आवाहयामि स्थापयामि
१५०. ॐ मित्राय नमः ॐ मित्रम् आवाहयामि स्थापयामि
१५१. ॐ सनकाय नमः ॐ सनकम् आवाहयामि स्थापयामि
१५२. ॐ गौतमाय नमः ॐ गौतमम् आवाहयामि स्थापयामि
१५३. ॐ सुमन्तवे नमः ॐ सुमन्तम् आवाहयामि स्थापयामि
१५४. ॐ त्वष्ट्रे नमः ॐ त्वष्टारम् आवाहयामि स्थापयामि
१५५. ॐ सनन्दाय नमः ॐ सनन्दम् आवाहयामि स्थापयामि

पश्चिमेऽरुणपीतकोष्ठेषु ४

१५६. ॐ देवलाय नमः ॐ देवलम् आवाहयामि स्थापयामि
१५७. ॐ व्यासाय नमः ॐ व्यासम् आवाहयामि स्थापयामि
१५८. ॐ ध्रुवाय नमः ॐ ध्रुवम् आवाहयामि स्थापयामि
१५९. ॐ सनातनाय नमः ॐ सनातनम् आवाहयामि स्थापयामि

उत्तरेऽरुणपीतकोष्ठेषु-४

१६०. ॐ वसिष्ठाय नमः ॐ वसिष्ठम् आवाहयामि स्थापयामि
१६१. ॐ च्यवनाय नमः ॐ च्यवनम् आवाहयामि स्थापयामि
१६२. ॐ पुष्कराय नमः ॐ पुष्करम् आवाहयामि स्थापयामि
१६३. ॐ सनत्कुमाराय नमः ॐ सनत्कुमारम् आवाहयामि स्थापयामि

(ईशाने, अग्निकोणे, नैऋत्यकोणे, वायुकोणे कृष्णकोष्ठे च एकैकम्–)

१६४. ॐ कण्वाय नमः ॐ कण्वम् आवाहयामि स्थापयामि
१६५. ॐ मैत्राय नमः ॐ मैत्रम् आवाहयामि स्थापयामि
१६६. ॐ कवये नमः ॐ कविम् आवाहयामि स्थापयामि
१६७. ॐ विश्वामित्राय नमः ॐ विश्वामित्रम् आवाहयामि स्थापयामि

मध्येपीतकोष्ठेषु–८

१६८. ॐ वामदेवाय नमः ॐ वामदेवम् आवाहयामि स्थापयामि
१६९. ॐ सुमन्ताय नमः ॐ सुमन्तम् आवाहयामि स्थापयामि
१७०. ॐ जैमिनये नमः ॐ जैमिनीम् आवाहयामि स्थापयामि
१७१. ॐ क्रतवे नमः ॐ क्रतुम् आवाहयामि स्थापयामि
१७२. ॐ पिप्पलादाय नमः ॐ पिप्पलादम् आवाहयामि स्थापयामि
१७३. ॐ पराशराय नमः ॐ पराशरम् आवाहयामि स्थापयामि
१७४. ॐ गर्गाय नमः ॐ गर्गम् आवाहयामि स्थापयामि
१७५. ॐ वैशंपायनाय नमः ॐ वैशंपायनम् आवाहयामि स्थापयामि

मध्ये कृष्णकोष्ठेषु ईशानतः — १०

१७६. ॐ मार्कण्डेयाय नमः ॐ मार्कण्डेयम् आवाहयामि स्थापयामि
१७७. ॐ मृकंडाय नमः ॐ मृकंडम् आवाहयामि स्थापयामि
१७८. ॐ लोमशाय नमः ॐ लोमशम् आवाहयामि स्थापयामि
१७९. ॐ पुलहाय नमः ॐ पुलहम् आवाहयामि स्थापयामि
१८०. ॐ पुलस्त्याय नमः ॐ पुलस्त्यम् आवाहयामि स्थापयामि
१८१. ॐ वृहस्पतये नमः ॐ वृहस्पतिम् आवाहयामि स्थापयामि
१८२. ॐ जमदग्नये नमः ॐ जमदग्निम् आवाहयामि स्थापयामि
१८३. ॐ जामदग्न्याय नमः ॐ जामदग्न्यम् आवाहयामि स्थापयामि

१८४. ॐ दालभ्याय नमः ॐ दालभ्यम् आवाहयामि स्थापयामि
१८५. ॐ गालवाय नमः ॐ गालवम् आवाहयामि स्थापयामि

मध्ये हरित्कोष्ठेषु ईशानतः – १६

१८६. ॐ याज्ञवल्काय नमः ॐ याज्ञवल्कम् आवाहयामि स्थापयामि
१८७. ॐ दुर्वाससे नमः ॐ दुर्वाससम् आवाहयामि स्थापयामि
१८८. ॐ सौभरये नमः ॐ सौभरिम् आवाहयामि स्थापयामि
१८९. ॐ जावालये नमः ॐ जावालिम् आवाहयामि स्थापयामि
१९०. ॐ वाल्मीकये नमः ॐ वाल्मीकिम् आवाहयामि स्थापयामि
१९१. ॐ बह्बवृचाय नमः ॐ बहबवृचम् आवाहयामि स्थापयामि
१९२. ॐ इन्द्रप्रमितये नमः ॐ इन्द्रप्रमितिम् आवाहयामि स्थापयामि
१९३. ॐ देवमित्राय नमः ॐ देवमित्रम् आवाहयामि स्थापयामि
१९४. ॐ जाजलये नमः ॐ जाजलिम् आवाहयामि स्थापयामि
१९५. ॐ शाकल्याय नमः ॐ शाकल्यम् आवाहयामि स्थापयामि
१९६. ॐ मुद्गलाय नमः ॐ मुद्गलम् आवाहयामि स्थापयामि
१९७. ॐ जातुकर्ण्याय नमः ॐ जातुकर्ण्यम् आवाहयामि स्थापयामि
१९८. ॐ बलाकाय नमः ॐ बलाकम् आवाहयामि स्थापयामि
१९९. ॐ कृपाचार्याय नमः ॐ कृपाचार्यम् आवाहयामि स्थापयामि
२००. ॐ सुकर्मणे नमः ॐ सुकर्माणम् आवाहयामि स्थापयामि
२०१. ॐ कौशल्याय नमः ॐ कौशल्यम् आवाहयामि स्थापयामि

नेत्राङ्गपूजनम्, ईशानकोणोऽरुणकोष्ठेषु–१२

२०२. ॐ ब्रह्माग्नये नमः ॐ ब्रह्माग्निम् आवाहयामि स्थापयामि
२०३. ॐ गार्हप्त्याग्नये नमः ॐ गार्हप्त्याग्निम् आवाहयामि स्थापयामि
२०४. ॐ ईश्वराग्नये नमः ॐ ईश्वराग्निम् आवाहयामि स्थापयामि
२०५. ॐ दक्षिणाग्नये नमः ॐ दक्षिणाग्निम् आवाहयामि स्थापयामि
२०६. ॐ वैष्णवाग्नये नमः ॐ वैष्णवाग्निम् आवाहयामि स्थापयामि
२०७. ॐ आहवनीयाग्नये नमः ॐ आहवनीयाग्निम् आवाहयामि स्थापयामि
२०८. ॐ सप्तजिह्वाग्नये नमः ॐ सत्पजिह्वाग्निम् आवाहयामि स्थापयामि
२०९. ॐ इध्मजिह्वाग्नये नमः ॐ इध्मजिह्वाग्निम् आवाहयामि स्थापयामि

२१०. ॐ प्रवर्ग्याग्नये नमः ॐ प्रवर्ग्याग्निम् आवाहयामि स्थापयामि
२११. ॐ वडवाग्नये नमः ॐ वडवाग्निम् आवाहयामि स्थापयामि
२१२. ॐ जठराग्नये नमः ॐ जठराग्निम् आवाहयामि स्थापयामि
२१३. ॐ लोकाग्नये नमः ॐ लोकाग्निम् आवाहयामि स्थापयामि

अग्निकोणे वरुणकोष्ठेषु–१२

२१४. ॐ सूर्याय नमः ॐ सूर्यम् आवाहयामि स्थापयामि
२१५. ॐ वेदाङ्गाय नमः ॐ वेदाङ्गम् आवाहयामि स्थापयामि
२१६. ॐ भानवे नमः ॐ भानुम् आवाहयामि स्थापयामि
२१७. ॐ इन्द्राय नमः ॐ इन्द्रम् आवाहयामि स्थापयामि
२१८. ॐ खगाय नमः ॐ खगम् आवाहयामि स्थापयामि
२१९. ॐ गभस्तिने नमः ॐ गभस्तिनम् आवाहयामि स्थापयामि
२२०. ॐ यमाय नमः ॐ यमम् आवाहयामि स्थापयामि
२२१. ॐ अंशुमते नमः ॐ अंशुमन्तम् आवाहयामि स्थापयामि
२२२. ॐ हिरण्यरेतसे नमः ॐ हिरण्यरेतसम् आवाहयामि स्थापयामि
२२३. ॐ दिवाकराय नमः ॐ दिवाकरम् आवाहयामि स्थापयामि
२२४. ॐ मित्राय नमः ॐ मित्रम् आवाहयामि स्थापयामि
२२५. ॐ विष्णवे नमः ॐ विष्णुम् आवाहयामि स्थापयामि

नैऋत्यकोणेऽरुणकोष्ठेषु–१२

२२६. ॐ शम्भवे नमः ॐ शम्भुम् आवाहयामि स्थापयामि
२२७. ॐ गिरिसयाय नमः ॐ गिरिशम् आवाहयामि स्थापयामि
२२८. ॐ अजैकपदे नमः ॐ अजैकपदम् आवाहयामि स्थापयामि
२२९. ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः ॐ अहिर्बुध्न्याम् आवाहयामि स्थापयामि
२३०. ॐ पिनाकपाणये नमः ॐ पिनाकपाणिम् आवाहयामि स्थापयामि
२३१. ॐ अपराजिताय नमः ॐ अपराजितम् आवाहयामि स्थापयामि
२३२. ॐ भुवनाधीश्वर नमः ॐ भुवनाधीश्वरम् आवाहयामि स्थापयामि
२३३. ॐ कपालिने नमः ॐ कपालिनम् आवाहयामि स्थापयामि
२३४. ॐ विशांपतये नमः ॐ विशांपतिम् आवाहयामि स्थापयामि
२३५. ॐ रुद्राय नमः ॐ रुद्रम् आवाहयामि स्थापयामि
२३६. ॐ वीरभद्राय नमः ॐ वीरभद्रम आवाहयामि स्थापयामि
२३७. ॐ अश्विनीकुमाराभ्यां नमः ॐ अश्विनीकुमारौ आवाहयामि स्थापयामि

वायुकोणेऽरुणकोष्ठेषु– ११ —

२३८. ॐ आवहाय नमः ॐ आवहम् आवाहयामि स्थापयामि
२३९. ॐ प्रवहाय नमः ॐ प्रवहम् आवाहयामि स्थापयामि
२४०. ॐ उद्वहाय नमः ॐ उद्वहम् आवाहयामि स्थापयामि
२४१. ॐ संवहाय नमः ॐ संवहम् आवाहयामि स्थापयामि
२४२. ॐ विवहाय नमः ॐ विवहम् आवाहयामि स्थापयामि
२४३. ॐ परिवहाय नमः ॐ परिवहम् आवाहयामि स्थापयामि
२४४. ॐ धरायै नमः ॐ धराम् आवाहयामि स्थापयामि
२४५. ॐ अद्भ्यो नमः ॐ अपः आवाहयामि स्थापयामि
२४६. ॐ अग्नये नमः ॐ अग्निम् आवाहयामि स्थापयामि
२४७. ॐ वायवे नमः ॐ वायुम् आवाहयामि स्थापयामि
२४८. ॐ आकाशाय नमः ॐ आकाशम् आवाहयामि स्थापयामि

(ऋषीन् पूजयेत्) ईशानादीशपर्यन्तं वाह्यपंक्तौ कृष्णकोष्ठेषु—

२४९. ॐ हिरण्यनाभाय नमः ॐ हिरण्यनाभम् आवाहयामि स्थापयामि
२५०. ॐ पुष्पञ्जयाय नमः ॐ पुष्पञ्जयम् आवाहयामि स्थापयामि
२५१. ॐ द्रोणाय नमः ॐ द्रोणम् आवाहयामि स्थापयामि
२५२. ॐ शृंगिणे नमः ॐ शृंगिणम् आवाहयामि स्थापयामि
२५३. ॐ वादरायणाय नमः ॐ वादरायणम् आवाहयामि स्थापयामि
२५४. ॐ अगस्त्याय नमः ॐ अगस्त्यम् आवाहयामि स्थापयामि
२५५. ॐ मनवे नमः ॐ मनुम् आवाहयामि स्थापयामि
२५६. ॐ कश्यपाय नमः ॐ कश्यपम् आवाहयामि स्थापयामि
२५७. ॐ धौम्याय नमः ॐ धौम्यम् आवाहयामि स्थापयामि
२५८. ॐ भृगवे नमः ॐ भृगुम् आवाहयामि स्थापयामि
२५९. ॐ वीतिहोत्राय नमः ॐ वीतिहोत्रम् आवाहयामि स्थापयामि
२६०. ॐ मधुच्छंदसे नमः ॐ मधुच्छंदसम् आवाहयामि स्थापयामि
२६१. ॐ वीरसेनाय नमः ॐ वीरसेनम् आवाहयामि स्थापयामि
२६२. ॐ कृतवृष्णवे नमः ॐ कृतवृष्णुम् आवाहयामि स्थापयामि
२६३. ॐ अत्रये नमः ॐ अत्रिम आवाहयामि स्थापयामि
२६४. ॐ मेधातिथिये नमः ॐ मेधातिथिम् आवाहयामि स्थापयामि

२६५. ॐ अरिष्टनेमये नमः ॐ अरिष्टनेमिम् आवाहयामि स्थापयामि
२६६. ॐ अङ्गिरसाय नमः ॐ अङ्गिरसम् आवाहयामि स्थापयामि
२६७. ॐ इन्द्रप्रमदाय नमः ॐ इन्द्रप्रमदम् आवाहयामि स्थापयामि
२६८. ॐ इध्मवाहवे नमः ॐ इध्मवाहुम् आवाहयामि स्थापयामि
२६९. ॐ पिप्लादाय नमः ॐ पिप्पलादम् आवाहयामि स्थापयामि
२७०. ॐ नारदाय नमः ॐ नारदम् आवाहयामि स्थापयामि
२७१. ॐ अरिष्टसेनाय नमः ॐ अरिष्टसेनम् आवाहयामि स्थापयामि
२७२. ॐ अरुणाय नमः ॐ अरुणम् आवाहयामि स्थापयामि
२७३. ॐ कपिलाय नमः ॐ कपिलम् आवाहयामि स्थापयामि
२७४. ॐ कर्दमाय नमः ॐ कर्दमम् आवाहयामि स्थापयामि
२७५. ॐ मरीचये नमः ॐ मरीचिम् आवाहयामि स्थापयामि
२७६. ॐ क्रतवे नमः ॐ क्रतुम आवाहयामि स्थापयामि
२७७. ॐ प्रचेतसे नमः ॐ प्रचेतसम् आवाहयामि स्थापयामि
२७८. ॐ उत्तमाय नमः ॐ उत्तमम् आवाहयामि स्थापयामि
२७९. ॐ दधीचये नमः ॐ दधीचिम् आवाहयामि स्थापयामि
२८०. ॐ श्राद्धदेवेभ्यो नमः ॐ श्राद्धदेवान् आवाहयामि स्थापयामि
२८१. ॐ गणदेवेभ्यो नमः ॐ गणदेवान् आवाहयामि स्थापयामि
२८२. ॐ विद्याधरेभ्यो नमः ॐ विद्याधरान् आवाहयामि स्थापयामि
२८३. ॐ अप्सरेभ्यो नमः ॐ अप्सरान् आवाहयामि स्थापयामि
२८४. ॐ यक्षेभ्यो नमः ॐ यक्षान् आवाहयामि स्थापयामि
२८५. ॐ रक्षेभ्यो नमः ॐ रक्षान् आवाहयामि स्थापयामि
२८६. ॐ गधर्वेभ्यो नमः ॐ गन्धर्वान् आवाहयामि स्थापयामि
२८७. ॐ पिशाचेभ्यो नमः ॐ पिशाचान् आवाहयामि स्थापयामि
२८८. ॐ गुह्यकेभ्यो नमः ॐ गुह्यकान् आवाहयामि स्थापयामि
२८९. ॐ सिद्धदेवेभ्यो नमः ॐ सिद्धदेवान् आवाहयामि स्थापयामि
२९०. ॐ औषधीभ्यो नमः ॐ औषधीः आवाहयामि स्थापयामि
२९१. ॐ भूतग्रामाय नमः ॐ भूतग्रामम् आवाहयामि स्थापयामि
२९२. ॐ चतुर्विधभूतग्रामाय नमः ॐ चतुर्विधभूतग्रामम् आवाहयामि स्थापयामि

दुर्गा यन्त्रनिर्माणम्

ततो मण्डलमध्ये धान्यराशिं कृत्वा, तदुपरि प्रधानकलशं संस्थाप्य, तदुपरि स्वर्णमयींदुर्गाप्रतिमायां मध्ये विन्दुं, त्रिकोणं, षट्कोणं, तदुपरि वृत्तिमष्टौ दलानि, तदुपरि वृत्तं, तदुपरि चतुर्विंशतिपत्राणि, तद्बाह्ये चतुर्द्वारं चतुरस्त्रत्रयम्, इति यन्त्रं विलिखेत् ।

पीठपूजा

हस्तेऽक्षतान् गृहीत्वा, ॐ पूर्वपीठाय नमः । ॐ पं पूर्णपीठाय नमः ॐ कं कामपीठाय नमः । प्राच्यां दिशि- ॐ उं उड्यानपीठाय नमः । आग्नेय्याम् - ॐ मां मातृपीठाय नमः । दक्षिणे- जं जालन्धरपीठाय नमः । नैर्ऋत्ये- कं कोल्हापुरोपपीठाय नमः । पश्चिमे- पूं पूर्णगिरिपीठाय नमः । वायव्याम्-सौं सौहारोपपीठाय नमः । उत्तरे- कं कोल्हागिरिपीठाय नमः । ऐशान्याम्- कं कामरूपीठाय नमः । इति पीठं सम्पूज्येत् ।

दक्षिणे- ॐ गुरवे नमः । ॐ परमगुरवे नमः । ॐ परमेष्ठिगुरवे नमः ।ॐ गुरुपंक्तये नमः । ॐ माता-पितृभ्यां नमः । ॐ उपमन्युनारद-सनक-व्यासादिभ्यो नमः ।

वामे — ॐ गं गणपतये नमः । ॐ दुं दुर्गायै नमः । ॐ सं सरस्वत्यै नमः। ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः । इति नत्वा, पीठदेवताः स्थापयेत् ।

पीठमध्ये - ॐ मं मण्डूकाय नमः । ॐ आं आधारशक्त्यै नमः । ॐ मूं मूलप्रकृत्यै नमः । ॐ कां कालाग्निरुद्राय नमः । तदुपरि - ॐ आं आदिकूर्माय नमः । ॐ अं अनन्ताय नमः । ॐ आं आदिवराहाय नमः । ॐ पं पृथिव्यै नमः । तदुपरि - ॐ अं अमृतार्णवाय नमः । ॐ रं रत्नद्वीपाय नमः । ॐ हं हेमगिरये नमः । ॐ नं नन्दनोद्यानाय नमः । ॐ कं कल्पवृक्षाय नमः । ॐ मं मणिभूतलाय नमः । ॐ दं दिव्यमण्डपाय नमः । ॐ सं स्वर्णवेदिकायै नमः । ॐ रं रत्नसिंहासनाय नमः । ॐ धं धर्माय नमः । ॐ ज्ञां ज्ञानाय नमः । ॐ वैं वैराग्याय नमः । ॐ ऐं ऐश्वर्याय नमः । इति सम्पूज्य ।

पूर्वे - ॐ अं अनैश्वर्याय नमः । पुनर्मध्ये - ॐ सं सत्त्वाय नमः । ॐ पं प्रबोधात्मने नमः । ॐ रं रजसे नमः । ॐ प्रं प्रकृत्यात्मने नमः । ॐ तं तमसे नमः । ॐ मं मोहात्मने नमः । ॐ सों सोममण्डलाय नमः । ॐ सूं सूर्यमण्डलाय नमः । ॐ वं वह्निमण्डलाय नमः । ॐ मं मायातत्त्वाय नमः । ॐ विं विद्यातत्त्वाय नमः । ॐ शं शिवतत्त्वाय नमः । ॐ ब्रं ब्रह्मणे नमः । ॐ मं महेश्वराय नमः । ॐ आं आत्मने नमः । ॐ अं अन्तरात्मने नमः । ॐ पं परमात्मने नमः । ॐ जं जीवात्मने नमः । ॐ ज्ञं ज्ञानात्मने नमः । ॐ कं कन्दाय नमः । ॐ नं नीलाय नमः । ॐ पं पद्माय नमः । ॐ मं महापद्माय नमः । ॐ रं रत्नेभ्यो नमः । ॐ कं केसरेभ्यो नमः । ॐ कं कर्णिकायै नमः ।

ततो नवशक्तीः स्थापयेत् । तद्यथा -

पूर्वाद्यष्टसु दिक्षु-ॐ नन्दायै नमः । ॐ भगवत्यै नमः । ॐ रक्तदन्तिकायै नमः । ॐ शाकम्भर्यै नमः । ॐ दुर्गायै नमः । ॐ भीमायै नमः । ॐ कालिकायै नमः । ॐ भ्रामर्यै नमः ॐ मध्ये - ॐ शिवदूत्यै नमः ।

इति संस्थाप्य, यथाशक्त्या 'ॐ शक्ति-सहित-पीठ देवताभ्यो नमः' इति पूजयेत् ।

यन्त्रस्थदेवतास्थापनं पूजनं च

हस्तेऽक्षतान् गृहीत्वा, बिन्दुमध्ये 'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' श्री महाकाली-महालक्ष्मी-महा-सरस्वतीस्वरूपिणी-श्री त्रिगुणात्मिका-दुर्गादेवतायै नमः, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वतीस्वरूपिणी-श्री-त्रिगुणात्मिका दुर्गा-देवतामावाहयामि स्थापयामि ।

बिन्दोः परितो गुरुचतुष्टयमावाहयेत् -

ॐ गुरवे नमः । ॐ परात्परगुरवे नमः । ॐ परमेष्ठिगुरवे नमः । ॐ गुरुपंक्तये नमः । (षडङ्गम्) ॐ ऐं हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे नमः। ॐ क्लीं शिखायै नमः । ॐ चामुण्डायै

कवचाय नमः । ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय नमः । ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय नमः ।

ततस्त्रिकोणे स्वाग्रादि-प्रादक्षिण्येन क्रमेण — ॐ स्वरया सह विधात्रे नमः । ॐ श्रिया सह विष्णवे नमः । ॐ उमया सह शिवाय नमः। दक्षिणे- ॐ हुं सिंहाय नमः । वामे- ॐ हुं महिषाय नमः । षट्कोणे, अग्नीशासुरवायव्ये मध्ये दिक्षु च —

ॐ ऐं नन्दजायै नमः । ॐ ह्रीं रक्तदन्तिकायै नमः । ॐ क्लीं शाकम्भर्यै नमः । ॐ दुं दुर्गायै नमः । ॐ हुं भीमायै नमः। ॐ ह्रीं भ्रामर्यै नमः ।

ततोऽष्टपत्रे स्वाग्रादि-प्रादक्षिण्यक्रमेण — ॐ ऐं ब्राह्मयै नमः। ॐ ह्रीं माहेश्वर्यै नमः । ॐ क्लीं कौमार्यै नमः । ॐ ह्रीं वैष्णव्यै नमः । ॐ हुं वाराहयै नमः । ॐ क्ष्यौं नारसिंह्यै नमः । ॐ लं ऐन्द्र्यै नमः । ॐ ह्रीं चामुण्डायै नमः।

ततश्चतुर्विंशतिदले — ॐ विं विष्णुमायायै नमः । ॐ चें चेतनायै नमः । ॐ बुं बुद्ध्यै नमः । ॐ निं निद्रायै नमः । ॐ क्षुं क्षुधायै नमः । ॐ छां छायायै नमः। ॐ शं शक्त्यै नमः। ॐ तृं तृष्णायै नमः। ॐ क्षां क्षान्त्यै नमः। ॐ जां जात्यै नमः। ॐ लं लज्जायै नमः । ॐ शां शान्त्यै नमः । ॐ श्रं श्रद्धायै नमः । ॐ कां कान्त्यै नमः । ॐ लं लक्ष्म्यै नमः । ॐ धृं धृत्यै नमः । ॐ वृं वृत्यै नमः । ॐ श्रुं श्रुत्यै नमः । ॐ स्मृं स्मृत्यै नमः । ॐ दं दयायै नमः । ॐ तुं तुष्ट्यै नमः। ॐ पुं पुष्ट्यै नमः । ॐ मां मातृभ्यो नमः । ॐ भ्रां भ्रान्त्यै नमः ।

भूपुरे कोणचतुष्टये आग्नेयादिकोणे — ॐ गं गणपतये नमः। ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः । ॐ बं बटुकाय नमः। ॐ यां योगिन्यै नमः ।

पूर्वादिदिक्षु — ॐ इन्द्राय नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ निर्ऋतये नमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ वायवे नमः। ॐ सोमाय नमः। ॐ ईशानाय नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ अनन्ताय नमः ।

तद्बहिः - ॐ वज्राय नमः। ॐ शक्तये नमः। ॐ दण्डाय नमः । ॐ खड्गाय नमः । ॐ पाशाय नमः । ॐ अङ्कुशाय नमः । ॐ गदायै नमः । ॐ त्रिशूलाय नमः । ॐ पद्माय नमः। ॐ चक्राय नमः ।

तद्बहिः- ॐ वज्रहस्तायै गजारूढायै कादम्बरीदेव्यै नमः । ॐ शक्तिहस्तायै अजवाहनायै उल्कादेव्यै नमः । ॐ दण्डहस्तायै महिषारूढायै करालीदेव्यै नमः । ॐ खड्गहस्तायै शववाहनायै रक्ताक्षीदेव्यै नमः । ॐ पाशहस्तायै मकर वाहनायै श्वेताक्षी देव्यै नमः । ॐ अङ्कुशहस्तायै मृगवाहनायै हरिताक्षीदेव्यै नमः । ॐ गदाहस्तायै सिंहारूढायै यक्षिणीदेव्यै नमः।ॐ शूलहस्तायै वृषभवाहनायै कालीदेव्यै नमः।ॐ पद्महस्तायै हंसवाहनायै सुरज्येष्ठादेव्यै नमः। ॐ चक्रहस्तायै सर्पवाहनायै सर्पराज्ञीदेव्यै नमः ।

- इत्यावाह्य, 'यन्त्रस्थदेवताभ्यो नमः' इति मूलमन्त्रेण यथाशक्त्या यथालब्धोपचारैः पूजनं कुर्यात् ।

दुर्गाप्रतिमा-प्राणप्रतिष्ठा

अग्न्युत्तारणविधिः

तत्राऽचार्यः पात्रान्तरे प्रतिमां निधाय, घृतेनोपलिप्य उपरि जलधारां कुर्यात् । तत्र मन्त्राः —

ॐ समुद्रस्य त्वावकयाग्ने परि व्ययामसि । पावको ऽअस्मभ्यꣳ शिवो भव ॥१॥ ॐ हिमस्य त्वा जरायुणाग्ने परि व्ययामसि । पावकोऽ अस्मभ्यꣳ शिवो भव ॥२॥ ॐ उप ज्ज्मन्नुप वेतसेऽवतर नदीष्वा । अग्ने पित्तमपामसि मण्डूकि ताभिरागहि सेमं नो यज्ञं पावकवर्णꣳ शिवं कृधि ॥३॥ ॐ अपामिदं न्ययनꣳ समुद्रस्य निवेशनम् । अन्याँस्ते ऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावकोऽ अस्मभ्यꣳ शिवो भव ॥४॥ ॐ अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया आ देवान्नवक्षि यक्षि च ॥५॥ ॐ स नः पावक दीदिवोऽग्ने देवाँ२॥ ऽइहावह उपयज्ञꣳ हविश्च नः ॥६॥ ॐ पावकया यश्चित-तयन्त्या कृपा क्षामन् रुरुच ऽउषसो न भानुना।

तूर्व्वन्न यामन्नेतशस्य नू रण ऽआ यो घृणे न ततृषाणो ऽअजरः ॥७॥ ॐ नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते ऽअस्त्वर्च्चिषे । अन्नयाँस्ते ऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावको ऽअस्मभ्यꣳ शिवो भव ॥८॥ ॐ नृषदे व्वेडप्सुषदे व्वेड् बर्हिषदे व्वेड् व्वनसदे व्वेट् स्वर्व्विदे व्वेट् ॥९॥ ॐ ये देवा देवानां यज्ञियाय्यज्ञियानाꣳ संव्वत्सरीणमुपभागमासते। अहुतादो हविषो यज्ञेऽ अस्मिन्न्त्स्वयं पिवन्तु मधुनो घृतस्य ॥१०॥ ॐ ये देवा देवेष्ववधि देवत्त्वमायन्ये ब्ब्रह्मणः पुर ऽएतारो ऽअस्य। येब्भ्यो न ऽऋते पवते धाम किञ्चन न ते दिवो न पृथिव्या ऽअधि स्नुषु ॥११॥ ॐ प्राणदा ऽअपानदा व्यानदा व्वर्च्चोदा व्वरिवोदाः । अन्याँस्ते ऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावको ऽअस्मभ्यꣳ शिवो भव ॥१२॥ इत्यग्न्युत्तारणं कृत्वा, प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात्। तद्यथा — स्वर्णमयीप्रधानप्रतिमां हस्तेन संस्पृश्य, बीजमन्त्रान् जपेत्। ॐ आँ ह्री क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः अस्यां मूतौ प्राणा इह प्राणाः । (पुनः) आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः अस्यां मूर्तौ जीव इह स्थितः । पुनः आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः अस्यां मूर्तौ सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्-चक्षुः - श्रोत्र-जिह्वा-घ्राण-पाणिपाद पायूपस्थानि इहैवागस्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च ।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ॥१॥
आगच्छ वरदे देवि ! दैत्यदर्पनिषूदिनि ! ।
पूजां गृहाण सुमुखि ! नमस्ते शङ्करप्रिये ! ॥२॥
सर्वतीर्थमयं वारि सर्वदेवसमन्विता ।
इमं घटं समागच्छ तिष्ठ देवगणैः सह ॥३॥
दुर्गे देवि ! समागच्छ सान्निध्यमिह कल्पय ।
बलिपूजां गृहाण त्वमष्टाभिः शक्तिभिः सह ॥४॥
कल्याणजननी सत्यां कामदां करुणाकराम् ।
अनन्तशक्तिसम्पन्नां दुर्गामावाहयाम्यहम् ॥५॥

एह्येहि दुर्गे ! दुरितौघनाशिनि !
प्रचण्ड-दैत्यौघ-विनाशकारिणी ! ।
उमे महेशार्द्ध-शरीरधारिणी !
स्थिरा भव त्वं मम यज्ञकर्मणि ॥६॥

ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञ मिमं तनोत्वरिष्टं य्यज्ञꣳ समिमं दधातु । विश्वेदेवा स ऽइह मादयान्तामो३ प्रतिष्ठ ।

इति मन्त्रेण प्रतिष्ठां कृत्वा पूजयेत् ।

षोडशोपचारदुर्गा-पूजनम्

रक्तपुष्पं गृहीत्वा, दुर्गादिव्या ध्यानं कुर्यात् -

ध्यानम्

विद्युद्दाम-समप्रभां मृगपति-स्कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिः करवाल-खेट-विलसद्धस्ताभिरासेविताम् ।
हस्तैश्चक्र-गदा-ऽसि-खेट-विशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं ।
विभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे ॥१॥
कालाभ्राभां कटाक्षैररिकुल-भयदां मौलि-बद्धेन्दुरेखां
शङ्खं चक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम् ।
सिंहस्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीं ।
ध्यायेद् दुर्गां जयाख्यां त्रिदश-परिवृतां सेवितां सिद्धिकामैः ॥२॥
घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुशले चक्रं धनुः सायकं
हस्ताऽब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्यप्रभाम् ।
गौरीदेह-समुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनु भजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम् ॥३॥
श्री दुर्गादेव्यै नमः, ध्यानं समर्पयामि ।

आवाहनम् –

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्त्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म ऽआवह ॥
ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात् ।

स भूमिꣳ सर्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ।
आगच्छेह महादेवि ! सर्वसम्पत्प्रदायिनी ! ।
यावद् व्रतं समाप्येत तावत्त्वं सन्निधो भव
श्रीदुर्गादेव्यै नमः, आवाहनं समर्पयामि ।

आसनम् –

तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥
ॐ पुरुष ऽएवेदꣳ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् ।
उतामृतत्त्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥
अनेक-रत्न-संयुक्तं नानामणि-गणान्वितम् ।
कार्तस्वरमयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम् ॥
भगवती-श्रीदुर्गादेव्यै नमः, आसनं समर्पयामि ।

पाद्यम् –

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद-प्रबोधिनीम् ।
श्रीयं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ।
ॐ एतावानस्य महिमातो ज्ज्यायाँश्च पुरुषः ।
पादोऽस्य विश्श्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥
गङ्गादि-सर्वतीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाहृतम् ।
तोयमेतत् सुखस्पर्शं पाद्यार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
भगवत्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः, पादयोः पाद्यं समर्पयामि ।

अर्घ्यम् –

काँ सोऽस्मितां हिरण्यप्राकारामाद्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ।
ॐ त्रिपादूर्ध्व ऽउदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः
ततो विष्ष्वङ् व्यक्क्रामत्साशनानशने ऽअभि ॥
गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तमर्घ्यं सम्पादितं मया ।
गृहाण त्वं महादेवि प्रसन्ना भव सर्वदा ॥
भगवत्यै श्री दुर्गादेव्यै नमः हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि ।

आचमनम् –

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मनेमिं शरणमहं प्रपद्ये ऽअलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि ॥
ॐ ततो व्विराडजायत व्विराजो ऽअधि पुरुषः ।
स जातो ऽअत्यरिच्च्यत पश्श्चाद्-भूमिमथो पुरः ॥
कर्पूरेण सुगन्धेन सुरभिस्वादु शीतलम् ।
तोयमाचमनीयार्थं देवीदं प्रतिगृह्यताम् ॥
भगवत्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः, आचमनीयं समर्पयामि ॥

मधुपर्कः –

ॐ यन्मधुनो मधव्यं परमर्ठ. रूपमन्नाद्यम् ।
तेनाऽहं मधुनो मधव्येन परमेण रुपेणान्नाद्येन ।
परमो मधव्यो ऽन्नादोऽसानि ॥
दधि-मधु-घृतसमायुक्तं पात्रयुग्मं समन्वितम् ।
मधुपर्कं गृहाण त्वं शुभदा भव शोभने ॥
भगवत्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः, मधुपर्कं समर्पयामि ॥
मधुपर्कान्ते आचमनीयं समर्पयामि ।

पयःस्नानम् –

ॐ पयः पृथिव्यां पय ऽओषधीषु पयो दिव्य
न्तरिक्षे पयोधाः । पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥
कामधेनु-समुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम् ।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम् ॥
भगवत्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः, पयःस्नानं समर्पयामि ॥
पयःस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ।

दधिस्नानम् –

ॐ दधिक्क्राब्णो ऽअकारिषञ्जिष्णोरश्श्वस्य व्वाजिनः ।
सुरभि नो मुखा करत्प्रण ऽआयुꣳषि तारिषत् ॥
पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम् ।
दध्यानीतं मया देवि ! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
भगवत्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः, दधिस्नानं समर्पयामि ।
दधिस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ।

घृतस्नानम् –

ॐ घृतम्मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्श्रितो घृतं वस्य धाम अनुष्ष्वधमावह मादयसस्व स्वाहा कृतं व्वृषभ व्वक्षि हव्व्यम् ॥

नवनीत-समुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम् ।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।

भगवत्यै श्रीदुर्गादिव्यै नमः, घृतस्नानं समर्पयामि तदन्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ।

मधुस्नानम् –

ॐ मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः ।
माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः । मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳ रजः । मधु द्यौरस्तु नः पिता । मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँऽ अस्तु सूर्यः । माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥

तरुपुष्प-समुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु ।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

भगवत्यै श्रीदुर्गादिव्यै नमः, मधुस्नानं समर्पयामि ।
मधुस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ।

शर्करास्नानम् –

ॐ अपाꣳ रसमुद्वयसꣳ सूर्य्ये सन्तꣳ समाहितम् ।
अपाꣳ रसस्य यो रसस्तं व्वो गृहणाम्म्युत्तममुपयाम गृहीतोऽसीन्द्राय त्त्वा जुष्ट्ङ्गृह्णाम्म्येष ते योनिरिन्द्राय त्त्वा जुष्टतमम् ॥

इक्षुसार-समुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका ।
मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

भगवत्यै श्री दुर्गादिव्यै नमः, शर्करास्नानं समर्पयामि ।
तदन्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ।

पञ्चामृतस्नानम् –

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रेस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ।

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः ।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित् ॥
पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करायुतम् ।
पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

भगवत्यै श्री दुर्गादिव्यै नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि तदन्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ।

गन्धोदकस्नानम् –

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥
मलयाचलसम्भूतं चन्दनाऽगरुसम्भवम् ।
चन्दनं देवि ! देवेशि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

भगवत्यै श्री दुर्गादिव्यै नमः, गन्धोदकस्नानं समर्पयामि तदन्ते शुद्धोदकस्नानम् समर्पयामि ।

उद्वर्तन (उबटन) स्नानम् –

ॐ अꣳशुना ते अꣳशुः पृच्च्यतां परुषा परुः ।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो ऽअच्च्युतः ॥
नाना-सुगन्धिद्रव्यं च चन्दनं रजनीयुतम् ।
उद्वर्तनं मया दत्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

भगवत्यै श्री दुर्गादिव्यै नमः, उद्वर्तनस्नानं समर्पयामि ।

शुद्धोदकस्नानम् –

ॐ शुद्धवालः सर्व्वशुद्धवालो मणिवालस्त ऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्द्राय पशुपतये कर्ण्णा यामा ऽअवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः प्राज्र्जन्याः ॥

श्रीदुर्गादिव्यै नमः, शुद्धोदकस्नानम् समर्पयामि ।

वस्त्रोपवस्त्रम् –

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥
ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्ज्यम् ।
पशूँस्ताँश्चक्क्रे व्वायव्व्यानारण्ण्या ग्राम्याश्च ये ॥

पट्टकूलयुगं देवि कञ्चुकेन समन्वितम् ।
परिधेहि कृपां कृत्वा दुर्गे ! दुर्गतिनाशिनि ! ॥
भगवत्यै श्री दुर्गादिव्यै नमः, उपवस्त्रसहितं वस्त्रं समर्पयामि ।
वस्त्रोपवस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि ।

केशपाशसंस्करणम् (कंघी) –

बहुभिरगरुधूपैः सादरं धूपयित्वा भगवति तव केशान् कङ्कतैर्मार्जयित्वा ।
सुरभिभिररविन्दैश्चम्पकैश्चाऽर्चयित्वा झटिति कनकसूत्रैर्जूटयन् वेष्टयामि ॥
श्री दुर्गादिव्यै नमः, केशपाशसंस्करणं समर्पयामि ।

सौवीराञ्जनम् (सुरमा) –

सौवीराञ्जनमिदम्ब ! चक्षुषोस्ते विन्यस्तं कनक-शलाकया मया यत् ।
तन्नूनं मलिनमपि त्वदक्षिसङ्गाद् ब्रह्मेन्द्राद्यभिलषणीयतामियाय ॥
भगवत्यै श्रीदुर्गादिव्यै नमः, सौवीराञ्जनं समर्पयामि ।

अलङ्कारान् (कङ्कणम्) –

माणिक्य-मुक्ता-मणिखण्डयुक्ते सुवर्णकारेण च संस्कृते ये ।
ते किङ्किणीभिः स्वरिते सुवर्णे मयाऽर्पिते देवि ! गृहाण कङ्कणे ॥
भगवत्यै श्रीदुर्गादिव्यै नमः, हस्तयोः कङ्कणं समर्पयामि ।

(कर्णभूषणम्) –

ययोः शुभान्याखचितानि मातर्माणिक्य-खण्डानि सुशोभनानि ।
ताटङ्कयुग्मे कनकस्य कृत्वा मयाऽर्पिते देवि ! गृहाण चैते ॥
भगवत्यै श्रीदुर्गादिव्यै नमः, कर्णयोः कुण्डलं समर्पयामि ।

(हारः) –

मातस्त्वदर्थं मणिमौक्तिकाभिः कृतं मनोज्ञं कलकण्ठभूषणम् ।
मयैव कण्ठे तव देवि । चाऽर्पितं ग्रैवेयकं नाम गृहाण भूषणम् ॥
भगवत्यै श्री दुर्गादिव्यै नमः, कण्ठे ग्रैवेयकं समर्पयामि ।

(अङ्गदम्) –

हेम्ना कृतं ह्यङ्गदयुग्मकं च मनोहरं सुन्दरचित्रयुक्तम् ।
बाह्वोर्गृहाणाऽऽशु मयाऽर्पितं ते मनोज्ञमाभूषण-भूषणोत्तमम् ॥
भगवत्यै श्रीदुर्गादिव्यै नमः, बाह्वोः अङ्गदं समर्पयामि ।

(अङ्गुलीयकम्) –

प्रवाल-गोमेदमयैश्चरत्नैः कृतां तथा हेममयां मनोहराम् ।
तस्यां कुरु त्वं मुखवीक्षणं च गृहाण देव्याङ्गुलिमुद्रिकां च ॥
भगवत्यै श्रीदुर्गादिव्यै नमः, करयोरङ्गुलिमुद्रिकां समर्पयामि ।

(कटिभूषणम्) –

काञ्चीं शुभां हाटकनिर्मितां मया त्रैलोक्यमातः कटिभूषणाय ।
दत्तां यथेमां त्वमजे च धत्से ह्युद्धर्तुमस्मान् वह मातृगर्भात् ॥
भगवत्यै श्री दुर्गादिव्यै नमः, कटिदेशे काञ्चीं समर्पयामि ।

(नूपुरम्) –

सुसुन्दरे हारकनिर्मिते द्वे पादाङ्गदे नूपुरनामधेये ।
गृहाण मातः पदयोः प्रदत्ते सुकिङ्किणीभूश्च विराजिते ते ॥
भगवत्यै श्रीदुर्गादिव्यै नमः, पादयोः नूपुरं समर्पयामि ।

(मुकुटम्) –

मातस्तवेमं मुकुटं हरिन्मणि-प्रवाल-मुक्तामणिभिर्विराजितम् ।
गारुत्मतैश्चाऽपि मनोहरं कृतं गृहाण मातः शिरसो विभूषणम् ॥
भगवत्यै श्रीदुर्गादिव्यै नमः, शिरसि मुकुटं
समर्पयामि । अलंङ्काराभावेऽक्षतान् समर्पयामि ।

गन्धम् –

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥
ॐ त्वां गन्धर्व्वा ऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः ।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्च्यत ॥
श्रीखण्डचन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ।
विलेपनं च देवेशि ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥

सौभाग्यसूत्रम् –

सौभाग्यसूत्रं वरदे ! सुवर्णमणिसंयुतम् ।
कण्ठे बध्नामि देवेशि ! सौभाग्यं देहि मे सदा ॥
श्रीदुर्गादिव्यै नमः, सौभाग्यसूत्रं समर्पयामि ।

हरिद्राम् –

हरिद्रारञ्जिता देवि ! सुख-सौभाग्यदायिनि ।
तस्मात्त्वं पूजयाम्यत्र दुःखशान्तिं प्रयच्छ मे ॥
भगवत्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः, हरिद्रां समर्पयामि ।

कुङ्कुमम् –

कुङ्कुमं कान्तिदं दिव्यं कामिनीकामसम्भवम् ।
कुङ्कुमेनाऽर्चिते देवि ! प्रसीद परमेश्वरि ॥
भगवत्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः, कुङ्कुमं समर्पयामि ।

अक्षतान् –

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया ऽअधूषत । अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजान्विन्द्र ते हरी ।

अक्षतान् निर्मलान् शुद्धान् मुक्ताफलसमन्वितान् ।
गृहाणेमान् महादेवि ! देहि मे निर्मलां धियम् ॥
भगवत्यै श्री दुर्गादेव्यै नमः, अक्षतान् समर्पयामि ।

कज्जलम् –

ॐ वृत्रस्यासि कनिन कश्चक्षुरदा असि । चक्षुर्मे देहि ॥
चक्षुर्भ्यां कज्जलं रम्यं सुभगे ! शान्तिकारके ।
कर्पूरज्योतिरुत्पन्नं गृहाण परमेश्वरि ! ॥
भगवत्यै श्री दुर्गादेव्यै नमः, कज्जलं समर्पयामि ।

अत्तरम् –

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥
भगवत्यै श्री दुर्गादेव्यै नमः, अङ्गेषु विलेपनार्थमत्तरं समर्पयामि ।

सिन्दूरम् –

ॐ सिन्धोरिव प्राद्ध्वने शूघनासो व्वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः।
घृतस्य धाराऽ अरुषो न व्वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः ॥
भगवत्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः, सिन्दूरं समर्पयामि ।

अबीरम् –

ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहुं ज्याया हेतिं परि-बाधमानः ।
हस्तघ्नोविश्वा व्वयुनानि व्विद्वान्पु-मान्पुमाꣳसं परिपातु व्विश्वतः ॥
भगवत्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः, अबीरम् समर्पयामि ।

पुष्पाणि –

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनाꣳ रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥
ॐ यत्पुरुषं व्व्यदधुः कतिधा व्व्यकल्पयन् ।
मुखङ्किमस्यासीत्किं बाहू किमूरू पादा ऽउच्च्येते ॥
मन्दार-परिजातादि-पाटली-केतकानि च ।
जाती-चम्पक-पुष्पाणि गृहाणेमानि शोभने ! ॥
भगवत्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः, पुष्पाणि समर्पयामि ।

पुष्पमालाम् –

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥
ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः ।
अश्वा ऽइव सजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्णवः ॥
पद्म-शङ्खज-पुष्पादि शतपत्रैर्विचित्रताम् ।
पुष्पमालां प्रयच्छामि गृहाण त्वं सुरेश्वरि ! ॥
भगवत्यै श्री दुर्गादेव्यै नमः, पुष्पमालां समर्पयामि ।

अङ्गपूजनम् –

वामहस्ते पुष्पं गृहीत्वा दक्षिणेनार्चयेत् -

ॐ दुर्गायै नमः, पादौ पूजयामि । ॐ महाकाल्यै नमः, गुल्फौ पूजयामि । ॐ मङ्गलायै नमः, जानुद्वयं पूजयामि । ॐ कात्यायन्यै नमः, ऊरुद्वयं पूजयामि । ॐ भद्रकाल्यै नमः, कटिं पूजयामि । ॐ कमलवासिन्यै नमः, नाभिं पूजयामि । ॐ शिवायै नमः, उदरं पूजयामि । ॐ क्षमायै नमः, हृदयं पूजयामि । ॐ कौमार्यै नमः, स्तनौ पूजयामि । ॐ उमायै नमः, हस्तौ पूजयामि ।

ॐ महागौर्यै नमः, दक्षिणबाहुं पूजयामि । ॐ वैष्णव्यै नमः, वामबांहु पूजयामि । ॐ रमायै नमः, स्कन्धौ पूजयामि । ॐ स्कन्दमात्रे नमः, कण्ठं पूजयामि । ॐ महिषासुरमर्दिन्यै नमः, नेत्रे पूजयामि । ॐ सिंहवाहिन्यै नमः, मुखं पूजयामि । ॐ माहेश्वर्यै नमः, शिरः पूजयामि । ॐ कात्यायन्यै नमः, सर्वाङ्गं पूजयामि ।

धूपम् –

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्वतं य्योऽस्मान् धूर्व्वति तं धूर्व्वयं व्वयं धूर्व्वामः । देवानामसि व्वह्नितमꣳ सस्निततमं पप्रितमंजुष्टतमं देवहूतमम् ॥

दशाङ्ग-गुग्गुलं धूपं चन्दना-गरु-संयुतम् ।
समर्पितं मया भक्त्या महादेवि ! प्रतिगृह्यताम् ॥
भगवत्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः, धूपमाघ्रापयामि ।

दीपम् –

सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुक-गन्धमाल्यशोभे ।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवन-भूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥

ॐ अग्निज्ज्योतिज्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्य्यो ज्ज्योति-ज्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा । अग्निर्व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा सूर्य्यो व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा । ज्ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्ज्योतिः स्वाहा ॥

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया ।
दीपं गृहाण देवेशि ! त्रैलोक्येतिमिरापहम् ॥
भगवत्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः, दीपं दर्शयामि ।

नैवेद्यं फलं च –

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म ऽआवह ॥

ॐ नाब्भ्याऽ आसीदन्तरिक्षꣳ । शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत । पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ ऽअकल्प्यन् ॥

अन्नं चतुर्विधं स्वादु-रसैः षड्भिः समन्वितम् ।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि ! भक्तिं मे ह्यचलां कुरु ॥
भगवत्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः, नैवेद्यं फलं च निवेदयामि ।

ॐ प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, मध्ये पानीयम्, उत्तरापोषणं हस्तप्रक्षालनं मुखप्रक्षालम् । इति आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

ॐ अꣳशुना ते अꣳशुः पृच्च्यतां परुषा परुः ।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो ऽअच्युतः ॥
भगवत्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः, करोद्वर्तनार्थे गन्धं समर्पयामि ।

पूगीफल-ताम्बूलम् –

तां म ऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥

ॐ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना ऽअबध्नन्पुरुषं पशुम् ॥

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्ली-दलैर्युतम् ।
एलादि-चूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥
भगवत्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः मुखवासार्थे एलालवङ्गादिभिर्युतं पूगीफल-ताम्बूलं समर्पयामि ।

दक्षिणा –

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽ आसीत् । स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

पूजाफलसमृद्ध्यर्थं तवाग्रे स्वर्णमीश्वरि ! ।
स्थापितं तेन मे प्रीता पूर्णान् कुरु मनोरथान् ॥
भगवत्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः, द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि ।

राजोपचारान् (छत्रम्) –

ॐ ध्रुवाऽसि ध्रुवोऽयं यजमानोऽस्मिन्नायतने प्रजया पशुभिर्भूयात्।
घृतेन द्यावापृथिवी पूर्य्येथामिन्द्रस्य छदिरसि विश्वजनस्य छाया।
छत्रं देवि ! जगद्धात्रि ! धर्म-वात-प्रनाशनम् ।
गृहाण हे महामाये ! सौभाग्यं सर्वदा कुरु ॥
भगवत्यै श्रीदुर्गादिव्यै नमः, छत्रं समर्पयामि ।

(चामरम्) –

ॐ अहाव्यग्ने हविरास्ये ते स्रुचीव घृतं चम्बीव सोमः ।
वाजसनिꣳ रयिमस्मे सुवीरं प्रशस्तं धेहि यशसं बृहन्तम् ॥
चामरं हे महादेवि ! चमरीपुच्छनिर्मितम् ।
गृहीत्वा पारराशीनां खण्डनं सर्वदा कुरु ॥
भगवत्यै श्रीदुर्गादिव्यै नमः, चामरं समर्पयामि ।

(दर्पणम्) –

ॐ रजता हरिणीः सीसा युजो युज्यन्ते कर्मभिः ।
अश्वस्य वाजिनस्त्वचि सिमाः शम्यन्तु शम्यन्तीः ॥
दर्पणं विमलं रम्यं शुद्धबिम्बप्रदायकम् ।
आत्मबिम्ब प्रदर्शार्थमर्पयामि महेश्वरि ! ॥
भगवत्यै श्रीदुर्गादिव्यै नमः, दर्पणं समर्पयामि ।

(तालवृन्तम्) –

ॐ इडामग्ने पुरुदꣳ सꣳ सनिं गोः शश्वत्तमꣳ हवमानाय साध। स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मै ॥
रौप्येण दण्डेन युतेनशब्दैर्युक्तेन वै रौप्यसुकिङ्किणीनाम् ।
सुतालवृत्तेन तवाङ्गकानि मातः ! सुमन्दं परिवीजयामि ॥
श्रीदुर्गादिव्यै नमः, तालवृन्तं समर्पयामि ।

आरार्तिक्यम् –

ॐ इदꣳ हविः प्रजननं मे ऽअस्तु दशवीरꣳ सर्व्वगणꣳ स्वस्तये । आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि । अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयोरेतो ऽअस्मासु धत्त । आ रात्रि पार्थिवꣳ रजः पितुरप्रायि धामभिः । दिवः सदाꣳसि बृहति वि तिष्ठस ऽआ त्वेषं वर्त्तते तमः ॥

चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्निस्तथैव च ।
त्वमेव सर्वज्योतींषि आर्तिक्यं प्रतिगृह्यताम् ॥
भगवत्यै श्रीदुर्गादिव्यै नमः, आर्तिक्यं समर्पयामि ।

मन्त्र-पुष्पाञ्जलिः –

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् । ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साद्ध्याः सन्ति देवाः ॥
ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे ।
स मे कामान् कामकामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु ।
कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः ।
ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यम वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायै स्यात् सार्वभौमः सार्वायुष आन्तादापरार्धात् । पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया ऽएकाराडिति तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्या ऽवसन् गृहे । आवीक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासदऽ इति ।
ॐ विश्श्वतश्चक्षुरुत विश्श्वतोमुखो विश्श्वतो बाहुरुत विश्श्वतस्पात् । सम्बाहुबभ्यान्धमति समपतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव ऽएकः ॥
ॐ कात्यायन्यै च विद्महे कन्याकुमार्यै च धीमहि ।
तन्नो दुर्गिः प्रचोदयात् ॥

सेविन्तका-बकुल-चम्परक-पटला-ऽब्जैः
पुन्नाग-जाति-करवीर-रसाल-पुष्पैः ।
विल्व-प्रवाल-तुलसीदल-मञ्जरीभिः
त्वां पूजयामि जगदीश्वरि ! मे प्रसीद ॥
पापोऽहं पापकर्माऽहं पापात्मा पापसम्भवः ।
त्राहि मां सर्वदा मातः ! सर्वपापहरा भव ॥
नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद् भवानि च ।
पुष्पाञ्जलिर्मयादत्ता गृहाण परमेश्वरि ! ॥
भगवत्यै श्रीदुर्गादिव्यै नमः, मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ।

प्रदक्षिणाम् –

ॐ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना ऽअबध्नन्पुरुषं पशुम् ॥
पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्वमेधादिफलं ददाति ।
तां सर्वपापक्षयहेतुभूतां प्रदक्षिणां ते परितः करोमि ॥
यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च ।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे पदे ॥
भगवत्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि ।

प्रार्थना –

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य ।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य ॥
या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः ।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा
तां त्वां नता स्म परिपालय देवि ! विश्वम् ॥
भगवत्यै श्रीदुर्गादेव्यै नमः, प्रार्थनापूर्वकं-नमस्कारान् समर्पयामि ।
अनया पूजया भगवती-श्रीदुर्गादेवी प्रीयताम् ।

आवरणपूजनम्

प्रथमावरणम् –

वामेन तत्त्वमुद्रया तर्पणम् । दक्षिणेन ज्ञानमुद्रया पूजनम् ।

प्रार्थना

संचिन्मयपरे देवि ! परामृतचरुप्रिये ! ।
अनुज्ञां देहि मे मातः ! परिवारार्चनाय ते ॥

यथा-दक्षिणेना-ऽक्षत-पुष्पादिना पूजयामीति सम्पूज्य, वामकरधृतार्द्रखण्डेन विशेषार्घजलैस्तर्पयाम्येवं सर्वत्र ।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वत्यै नमः, श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकाल्यै नमः, श्रीमहाकाली-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे साङ्गायै सपरिवारायै सावर्णायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहालक्ष्म्यै नमः, श्रीमहालक्ष्मी-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहासरस्वत्यै नमः, श्रीमहासरस्वती-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

बिन्दोः परितो गुरुचतुष्टयं पूजयेत् –

ह्रीं गुरवे नमः, गुरुशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ह्रीं परमगुरवे नमः, परमगुरुशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ह्रीं परात्परगुरवे नमः, परात्परगुरुशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ह्रीं परमेष्ठिगुरवे नमः, परमेष्ठिगुरुशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

षडङ्गं पूजयेत् –

ह्रीं ऐं हृदयाय नमः, हृदयशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ह्रीं शिरसे नमः, शिरः शक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ह्रीं क्लीं शिखायै नमः, शिखाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ह्रीं चामुण्डायै कवचाय नमः, कवचशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ह्रीं विच्चे नेत्रत्रयाय नमः, नेत्रत्रय शक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
मूलेन, अस्त्राय नमः, अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
प्रमावरणदेवताभ्यो नमः, सर्वोपचारार्थे गन्धं पुष्पं समर्पयामि ।
समान्यार्घजलमादाय -एताः प्रथमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु ।

पुष्पाञ्जलिमादाय –

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥१॥

पुष्पाञ्जलिं दत्वा । अनेन प्रथमावरणदेवतापूजनेन त्रिगुणात्मिका श्रीदुर्गादेवता प्रीयताम् । योनिमुद्रया प्रणमेत् ।
इति प्रथमावरणम् ।

द्वितीयावरणम् –

त्रिकोणे स्वाग्रादिपादक्षिण्येन पूजयेत् —

ह्रीं सावित्र्या सह विधात्रे नमः, विधातृशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

ह्रीं श्रिया सह विष्णवे नमः, विष्णुशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

ह्रीं क्षुं सिंहाय नमः, सिंहशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

ह्रीं हुं महिषाय नमः, महिषशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

द्वितीयावरणदेवताभ्यो नमः, गन्धं पुष्पं च समर्पयामि सामान्यर्घजलमादाय, एताः द्वितीयावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु ।

पुष्पाञ्जलिमादाय –

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ! ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यां द्वितीयावरणार्चनम् ॥२॥

पुष्पाञ्जलिं दत्वा । अनेन द्वितायवरणदेवतापूजनेन त्रिगुणात्मिका श्रीदुर्गादेवता प्रीयताम् । योनिमुद्रया प्रणमेत् ।

इति द्वितीयावरणम् ।

तृतीयावरणम् –

षट्कोणेऽग्नीशासुरवायव्ये मध्ये दिक्षु च पूजयेत् —

ह्रीं ऐं नन्दजायै नमः, नन्दजाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

ह्रीं रक्तदन्तिकायै नमः, रक्तदन्तिका-शक्ति-श्रीपादुकां पुजयामि तर्पयामि ।

ह्रीं क्लीं शाकम्भर्यै नमः, शाकम्भरीशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

ह्रीं दुं दुर्गायै नमः, दुर्गाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

ह्रीं हुं भीमायै नमः, भीमाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

ह्री भ्रामर्यै नमः, भ्रामरीशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

तृतीयावरण-देवताभ्यो नमः, गन्धं पुष्पं समर्पयामि ।

सामान्यर्घजलमादाय, एतास्तृतीयावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु ।

पुष्पाञ्जलिमादाय –

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ॥३॥

पुष्पाञ्जलिं दत्वा । अनेन तृतीयावरणदेवतापूजने त्रिगुणात्मिका श्रीदुर्गादेवता प्रीयताम् । योनिमुद्रया प्रणमेत्

इति तृतीयावरणम् ।

चतुर्थावरणम् –

ततोऽष्टपत्रे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन पूजयेत् -

ह्रीं ऐं ब्राह्म्यै नमः, ब्राह्मीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

ह्रीं माहेश्वर्यै नमः, माहेश्वरीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

ह्रीं क्लीं कौमार्यै नमः, कौमारी शक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

ह्रीं वैष्णव्यै नमः, वैष्णवी-शक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

ह्रीं लृं वाराह्यै नमः, वाराहीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

ह्रीं क्ष्रौं नारसिंह्यै नमः, नारसिंहीशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

ह्रीं लं ऐन्द्र्यै नमः, ऐन्द्रीशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

ह्रीं स्र्यैं चामुण्डायै नमः, चामुण्डाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

मध्ये - ह्रीं लक्ष्म्यै नमः, लक्ष्मीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

चतुर्थावरणदेवताभ्यो नमः, गन्धं पुष्पं समर्पयामि ।

सामान्यार्घजलमादाय - एताश्चतुर्थावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु ।

पुष्पाञ्जलिमादाय –

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम् ॥४॥

पुष्पाञ्जलिं दत्वा । अनेन चतुर्थावरणदेवतापूजनेन त्रिगुणात्मिका श्रीदुर्गादेवता प्रीयताम् । योनिमुद्रया प्रणमेत् ।

इति चतुर्थावरणम् ।

पञ्चमावरणम् –

तत्श्चतुर्विंशतिदले स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन —

ह्रीं विं विष्णु-मायायै नमः, विष्णुमायाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

ह्रीं चें चेतनायै नमः, चेतनाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ह्रीं बुं बुद्ध्यै नमः, बुद्धिशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ह्रीं नि निद्रायै नमः, निद्राशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ह्रीं क्षुं क्षुधायै नमः, क्षुधाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ह्रीं छां छायायै नमः, छायाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ह्रीं शं शक्त्यै नमः, शक्तिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ह्रीं तृं तृष्णायै नमः, तृष्णाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ह्रीं क्षां क्षान्त्यै नमः, क्षान्तिशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ह्रीं जां जात्यै नमः जाति शक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ह्रीं लं लज्जायै नमः, लज्जाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ह्रीं शां शान्त्यै नमः, शान्तिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ह्रीं लं लज्जायै नमः, लज्जाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ह्रीं श्रं श्रद्धायै नमः, श्रद्धाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ह्रीं कां कान्त्यै नमः, कान्तिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ह्रीं लं लक्ष्म्यै नमः, लक्ष्मीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ह्रीं धृं धृत्यै नमः, धृतिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ह्रीं वृं वृत्यै नमः, वृत्तिशक्त्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ह्रीं श्रुं श्रुत्यै नमः, श्रुतिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ह्रीं स्मृं स्मृत्यै नमः, स्मृतिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ह्रीं दं दयायै नमः, दयाशक्तिश्रीपादुका पूजयामि तर्पयामि ।
ह्रीं तुं तुष्ट्यै नमः, तुष्टिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ह्रीं पुं पुष्ट्यै नमः, पुष्टिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ह्रीं मां मातृभ्यो नमः, मातृशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ह्रीं भ्रां भ्रान्त्यै नमः, भ्रान्तिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
पञ्चमावरणदेवताभ्यो नमः गन्धं पुष्पं समर्पयामि ।
सामान्यार्घजलमादाय, एताः पञ्चमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः
सायुधाः सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु ।

पुष्पाञ्जलिमादाय –

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम् ॥५॥

पुष्पाञ्जलिं दत्वा । अनेन पञ्चमावरणदेवतापूजनेन त्रिगुणात्मिका श्रीदुर्गादेवता प्रीयताम् । योनिमुद्रया प्रणमेत् ।
इति पञ्चमावरणम् ।

षष्ठावरणम् –

भूपुरे कोणचतुष्टये आग्नेयादिकोणमारभ्य –
ह्रीं गं गणपतये नमः, गणपतिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ह्रीं क्षं क्षेत्रपालाय नमः, क्षेत्रपालशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ह्रीं बं बटुकाय नमः, बटुकशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ह्रीं यां योगिन्यै नमः, योगिनीशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि नर्पयामि ।
षष्ठावरणदेवताभ्यो नमः गन्धं पुष्पं समर्पयामि ।
सामान्यार्घजलमादाय, एताः षष्ठावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः
सायुधाः सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु । पुष्पाञ्जलिमादाय,

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठावरणार्चनम् ॥६॥

पुष्पाञ्जलिं दत्वा । अनेन षष्ठावरणदेवतापूजनेन त्रिगुणात्मिका श्रीदुर्गादिवता प्रीयताम् । योनिमुद्रया प्रणमेत् ।
इति षष्ठावरणम्

सप्तावरणम् –

पूर्वादिदशदिक्षु-ह्रीं लं इन्द्राय नमः इन्द्रशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ह्रीं रं अग्नये नमः अग्निशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ह्रीं यं यमाय नमः यमशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ह्रीं क्षं निर्ऋतये नमः निर्ऋतिशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ह्रीं वं वरुणाय नमः वरुणशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ह्रीं सं सोमाय नमः सोमशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ह्रीं हं ईशानाय नमः ईशानशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ह्रीं ब्रं ब्रह्मणे नमः ब्रह्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ह्रीं अं अनन्ताय नमः अनन्तशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
सप्तमावरणदेवताभ्यों नमः गन्धं पुष्पं समर्पयामि ।
सामान्यार्घजलमादाय, एताः सप्तमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः

सायुधाः सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु । पुष्पाञ्जलिमादाय,

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम् ॥७॥

अनेन सप्तमावरणदेवतापूजनेन त्रिगुणात्मिका श्रीदुर्गादिवता प्रीयताम् ।

योनिमुद्रया प्रणमेत् ।

इति सप्तमावरणम् ।

अष्टमावरणम् –

तद्बहिः पूर्वादिदिक्षु —

ह्रीं वं वज्राय नमः वज्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

ह्रीं शं शक्त्यै नमः शक्तिशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

ह्रीं दं दण्डाय नमः दण्डशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

ह्रीं खं खड्गाय नमः खड्गशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

ह्रीं पां पाशाय नमः पाशशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

ह्रीं अं अङ्कुशाय नमः अङ्कुशशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

ह्रीं गं गदायै नमः गदाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

ह्रीं त्रिं त्रिशूलाय नमः त्रिशूलशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

ह्रीं चं चक्राय नमः चक्रशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

अष्टमावरण-देवताभ्यो नमः गन्धं पुष्पं समर्पयामि ।

सामान्यार्घजलमादाय-एताः अष्टमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताः सन्तुः पुष्पाञ्जलिमादाय,

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।

भक्त्या समर्पये तुभ्यमष्टमावरणार्चनम् ॥८॥

पुष्पाञ्जलिं दत्वा । अनेनाऽष्टमावरणदेवतापूजनेन त्रिगुणात्मिका श्री दुर्गादेवता प्रीयताम् । योनिमुद्रया प्रणमेत् ।

इति अष्टमावरणम् ।

नवमावरणम् –

कलशात् पूर्वादिदिक्षु-ह्रीं वज्रहस्तायै गजारूढायै कादम्बरीदेव्यै नमः कादम्बरीदेवीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि । शक्तिहस्तायै अजवाहनायै उल्कादेव्यै नमः उल्कादेवीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि

तर्पयामि । दण्डहस्तायै महिषारूढायै करालीदेव्यै नमः कराली देवीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि । खड्गहस्तायै शववाहनायै रक्ताक्षी देव्यै नमः रक्ताक्षीदेवीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि । पाशहस्तायै मकरवाहनायै श्वेताक्षीदेव्यै नमः श्वेताक्षीदेवीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि । अङ्कुशहस्तायै मृगवाहनायै हरिताक्षीदेव्यै नमः हरिताक्षीदेवीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि । गदाहस्तायै सिंहाढ़ायै यक्षिणीदेव्यै नमः यक्षिणीदेवीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि । शूलहस्तायै वृषभवाहनायै कालीदेव्यै नमः कालीदेवीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि । पद्महस्तायै हंसवाहनायै सुरज्येष्ठादेव्यै नमः सुरजेष्ठादेवीशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि । चक्रहस्तायै सर्पवाहनायै सर्पराज्ञीदेव्यै नमः सर्पराज्ञीदेवी-शक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

नवमावरणदेवताभ्यो नमः गन्ध पुष्पं समर्पयामि ।

सामान्यार्घजलमादाय, एताः नवमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु ।

पुष्पाञ्जलिमादाय –

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम् ॥९॥

पुष्पाञ्जलिं दत्वा । अनेन नवमावरणदेवतापूजनेन त्रिगुणात्मिका श्री दुर्गादिवता प्रीयताम् । योनिमुद्रया प्रणमेत् ।

अखण्डदीपपूजनम्

सुप्रकाशो महादीप्तः सर्वतस्तिमिरापहः ।

स-बाह्याभ्यन्तर ज्योतिर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्य्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा । अग्निर्व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा सूर्य्यो वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा । ज्ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्ज्योतिःस्वाहा ॥

दीपस्थदेवताभ्यो नमः, सर्वोपचारार्थे गन्धा-ऽक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि

इति सम्पूज्य प्रार्थयेत् ।

दीप-प्रार्थना –

भो दीप ! देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत् ।
यावत् कर्मसमाप्तिः स्यात्तावत् त्वम् स्थिरो भव ॥

धान्यकलशस्थापनम् –

कलशमध्ये यवं प्रक्षिप्य, सर्वतोभद्रमण्डलाग्रेऽखण्डदीपमध्ये च 'मही द्यौ'रित्यादि-मन्त्रेण कलश-पूजनोक्तविधिना स्थापयेत् ।

बलिदानम् –

'नारिकेलबलये नमः' इत्यनेन पञ्चोपचारैः नारिकेलं सम्पूज्य, देव्याः पुरतः नारिकेलबलिं तुभ्यं समर्पयामि इत्युक्त्वा, नवार्णमन्त्रेण वीरासनमुद्रया एकहस्तेन एकवारमेव बलिं स्फोटयित्वा देव्यै निवेदयेत् ।

बटुक-कुमारिका-पूजनम्

हस्ते-अक्षत-पुष्पाणि गृहीत्वा –

कर-कलित कपालः कुण्डली-दण्डपाणि-
स्तरुण-तिमिरनील-व्यालयज्ञोपवीती ।
क्रतुसमय-सपर्याद् विघ्नविच्छेदहेतु-
र्जयति बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम् ॥

ॐ 'बं बटुकाय नमः' इत्यनेन बटुकम्, पूजयेत् ॥

कन्यापूजनम् –

मन्त्राक्षरमयीं देवीं मातृणां रूपधारिणीम् ।
नवदुर्गात्मिकां साक्षात् कन्यामावाहयाम्यहम् ॥

'कुमार्यै नमः' इत्यनेन कुमारीं च सम्पूज्य, तयोर्भाले तिलकं कृत्वा, फल मिष्टान्न-दक्षिणां च दत्वा प्रणमेत् ।

नवदुर्गाध्यानम् –

१. कुमारी – सर्वस्वरूपे ! सर्वेशे ! सर्वशक्ति स्वरूपिणि !
पूजां गृहाण कौमारि ! जगन्मातर्नमोस्तु ते ।

२. त्रिमूर्ति – त्रिपुरां त्रिपुराधारां त्रिवर्ग-ज्ञान-रूपिणीम् ॥
त्रैलोक्य वन्दितां देवीं त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम् ॥

३. कल्याणी – कलात्मिका कलातीतां कारुण्यहृदयां शिवाम् ।
कल्याण-जननीं देवीं कल्याणीं, पूजयाम्यहम् ॥

४. रोहिणी – अणिमादि गुणाधारामकाराद्यक्षरात्मिकाम् ।
अनन्तां शक्तिकां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम् ॥

५. कालिका – कामचारां शुभां कान्तां कालचक्रस्वरूपणीम् ।
कामदां करुणोदारां कालिकां पूजयाम्यहम् ॥

६. चण्डिका – चण्डवीरां चण्डमायां चण्डमुण्डप्रभंजनीम् ।
पूजयामि सदा देवीं चण्डिकां चण्डविक्रमाम् ॥

७. शाम्भवी – सदानन्दकरीं शान्तां सर्वदेव नमस्कृताम् ।
सर्व भूतात्मिकां लक्ष्मीं शाम्भवीं पूजयाम्यहम् ॥

८. दुर्गा – दुर्गमे दुस्तरे कार्ये भवदुःखविनाशिनीम् ।
पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गां दुर्गार्तिनाशिनीम् ॥

९. सुभद्रा – सुन्दरीं स्वर्णवर्णाभां सुखसौभाग्यदायिनीम् ।
सुभद्रजननीं देवीं सुभद्रां पूजयाम्यहम् ॥

ब्राह्मणपूजनम् –

'ब्रह्मणे नमः' इत्युक्त्वा पाठकर्तृकाणां ब्राह्मणानां गन्धा-ऽक्षत-पुष्पादिभिः पूजनं कुर्यात् ।

सरस्वतीपूजनम्

ॐ पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती । यज्ञं वष्टु धियावसुः ॥
नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणता स्म ताम् ॥

इत्यनेन दुर्गासप्तशती-पुस्तक-पूजनं गन्धा-ऽक्षतपुष्पैः कुर्यात् ।

ॐ याकुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावर दण्डमण्डितकरा या श्वेत पद्मासना ।
या ब्रह्माच्युतशंकर प्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ॥

मंत्र पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ॐ वीणापुस्तक धारिण्यै नमः ॥

शिवपूजनम्

संकल्पः – ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवश्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते अमुकक्षेत्रे अमुक संख्याके विक्रमाब्दे बौद्धावतारे अमुक नामसंवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामङ्गल्यप्रदेमासोत्तमेमासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथाराशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकशर्मा (अमुकवर्मा, अमुकगुप्तः) सपत्नीकोऽहं ममाऽऽत्मनः कायिक-वाचिक-मानसिक-सांसर्गिक-चतुर्विधपापक्षयपूर्वकं आध्यात्मिक आधिदैविक आधिभौतिक-त्रिविधतापनिवृत्यर्थम्, आयुरारोग्यैश्वर्यादिवृद्ध्यर्थम् श्रुति—स्मृति-पुराणोक्तफलप्राप्तिपूर्वकं च धर्मार्थकाममोक्ष चतुर्विधपुरुषार्थसिद्धिद्वारा श्री साम्बसदाशिवप्रीतये नार्मदशिवलिङ्गोपरि (अमुकलिङ्गोपरि) यथोपचारैः षडङ्गन्यास पूर्वकं शिवपूजनं (दुग्धधारया जलधारया वा एकादशब्राह्मण द्वारा (अमुकसंख्याकब्राह्मणद्वारा) सकृद्रुद्रावर्तनेन (रुद्रैकादशिन्या वा) महारुद्रेण अभिषेकाख्यं कर्म करिष्ये । तदङ्गत्वेन नन्दीश्वरादिपूजनं (नन्दीश्वरं - वीरभद्रं-स्वामिकार्तिकंकुबेरं-कीर्तिमुखं) च करिष्ये तत्रादौ निर्विघ्नतासिध्यर्थं गणेशाम्बिकयोः पूजंन च करिष्ये ।''

इसके बाद षड्ङ्गन्यास करें ।

षडङ्गन्यासः:-मनो जूतिरिति मन्त्रस्य बृहस्पतिर्ऋषिः बृहतीछन्दः बृहस्पतिर्देवता हृदयन्यासे विनियोगः ।

ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमं तनो त्वरिष्टं य्यज्ञᳬ समिमं दधातु । विश्वे देवास ऽइह मा दयन्तामोंᳳ प्रतिष्ठ ।
ॐ हृदयाय नमः ॥१॥

अबोद्ध्यग्निरिति मन्त्रस्य बुधगविष्ठिरा ऋषिः अग्निर्देवता त्रिष्टुप् छन्दः शिरसिन्यासे विनियोगः ।

ॐ अबोद्ध्यग्निः समिधा जनानां प्रति धेनुमिवा यतीमुषासम्।
यह्वा ऽइव प्रवया मुज्जिहानाः प्रभानवः सिस्रते नाकमच्छ ॥ ॐ शिरसे स्वाहा ॥२॥

मूर्द्धानमिति मन्त्रस्य भरद्वाज ऋषिः अग्निर्देवता त्रिष्टुप् छन्दः शिखान्यासे विनियोग : ।

ॐ मूर्द्धानं दिवो ऽअरतिं पृथिव्या व्वैश्वानरमृत ऽआजातमग्निम्।
कविᳬ सम्म्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः ।
ॐ शिखायै वषट् ॥३॥

मर्म्माणिते इति मन्त्रस्य अप्रतिरथ ऋषिः मर्माणि देवता विराट् छन्दः कवचन्यासे विनियोगः ।

ॐ मर्म्माणि ते व्वर्म्मणा च्छादयामि सोमस्त्वा राजामृतेनानु वस्ताम् । उरोर्व्वरीयो व्वरुणस्ते कृणोतु जयन्तन्त्वा नु देवा मदन्तु ॥
ॐ कवचाय हुम् ॥४॥

विश्वतश्चक्षुरिति मन्त्रस्य विश्वकर्मा भौवन ऋषिः विश्वकर्मा देवता त्रिष्टुप्छन्दः नेत्रन्यासे विनियोगः ।

ॐ व्विश्वतश्च्चक्षुरुत विश्वतोमुखो व्विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात् ।
सं बाहुब्भ्यान्धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमीं जनयन्देव ऽएकः ॥
ॐ नेत्रत्रयाय वौषट् ॥५॥

मानस्तोके इति मन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिः एको रुद्रो देवता जगती छन्दः अस्त्रन्यासे विनियोगः ।

ॐ मानस्तोके तनये मा न ऽआयुषि मा नो गोषु मा नो ऽअश्वेषुरीरिषः
मा नो व्वीरान् रुद्र भामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे ॥
ॐ अस्त्राय फट् ॥६॥

पार्थिवलिङ्ग पूजने-

विनियोगः — ॐ अस्य श्रीशिवपञ्चाक्षरमन्त्रस्य वामदेव ऋषिरनुष्टुपछन्दः श्रीसदाशिवो देवता, ओङ्कारो बीजम्, नमः शक्तिः, शिवाय इति कीलकम्, मम साम्बसदाशिवप्रीत्यर्थं न्यासे पार्थिवलिङ्गपूजने जपे च विनियोगः ।

प्राणप्रतिष्ठा

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः, ऋग्यजुः सामानिच्छन्दांसि, क्रियामयवपुः प्राणाख्यो देवता आँ बीजं ह्रीं शक्तिः क्रों कीलकं सदा शिव प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः ।

प्राणप्रतिष्ठा- हाथ में पुष्प लेकर उसे मूर्तिपर स्पर्श करते हुए नीचे लिखे मन्त्र बोलें -

ॐ ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः शिरसि । ॐ ऋग्यजुः सामच्छन्दोभ्यो नमः, मुखे । ॐ प्राणाख्यदेवतायै नमः, हृदि । ॐ आँ बीजाय नमः, गुह्ये । ॐ ह्रीं शक्त्यै नमः, पादयोः ॐ क्रौं कीलकाय नमः, सर्वाङ्गेषु ।

इस प्रकार न्यास करके पुनः पार्थिव लिङ्गका स्पर्श करें -

ॐ आँ ह्रीं क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ सः सोऽहं शिवस्य प्राणा इह प्राणाः । ॐ आँ ह्रीं क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ सः सोऽहं शिवस्य जीव इह स्थितः इति जीवः । ॐ आँ ह्रीं क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ सः सोऽहं शिवस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षुः श्रोत्रघ्राणजिह्वापाणिपादपायूपस्थानि इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा । (तदनन्तर अक्षत से आवाहन करें ।)

ॐ भूः पुरुषं साम्बसदाशिवमावाहयामि । ॐ भुवः पुरुषं साम्बसदाशिवमावाहयाम । ॐ स्वः पुरुषं साम्बसदाशिवमावाहयामि ।

ॐ स्वामिन् सर्वजगन्नाथ यावत्पूजावसानकम् ।
तावत्त्वम्प्रीतिभावेन लिङ्गेऽस्मिन् संनिधिं कुरु ॥

गणपति-पूजनम्- ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रयपतिꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳ हवामहे व्वसो मम । आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ॥

इति षोडशोपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरुपेभ्यो विश्वरुपेभ्यश्च वो नमः ॥

पार्वती-पूजनम् –

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम् ।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम् ॥

अम्बिका का पूजन कर निम्न मन्त्र से प्रार्थना करें -

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बलिके न मा नयति कश्चन ।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥

नदीश्वर-पूजनम् –

ॐ आशुः शिशानो व्वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् ।
सङ्क्रन्दनोनिमिषऽएकवीरः शतꣳ सेना ऽअजयत्साकमिन्द्रः ॥

इस प्रकार यथा लब्धोपचार से वीरभद्र का पूजन करें अधोलिखित प्रार्थना करें :-

ॐ प्रैतु व्वाजी कनिक्क्रदन्नानदद्रासभः पत्त्वा ।
भरन्नग्निं पुरीष्यं मा पाद्यायुषः पुरा ॥

वीरभद्र पूजनम् –

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥

वीरभद्र का पूजन कर प्रार्थना करें —

ॐ भद्रो नो ऽअग्निराहुतो भद्रा रातिः सुभग भद्रो ऽअध्वरः । भद्रा ऽउत प्रशस्तयः ॥

स्वामिकार्तिक - पूजनम् -

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान ऽउद्यन्त्समुद्राादुत वा पुरीषात् ।
श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू ऽउपस्तुत्यं महि जातं ते ऽअर्व्वन् ॥

(पूजन के पश्चात प्रार्थना करें)

ॐ यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा व्विशिखा ऽइव ।
तन्न ऽइन्द्रो बृहस्पतिरदितिः शर्म्म यच्छतु व्विश्वाहा शर्म्म यच्छतु ॥

कुबेर-पूजनम् –

ॐ कुविदङ्ग यवमन्तो यवं चिद्यथा दान्त्यनुपूर्व्वं वियूय ।
इहेहैषां कुणुहि भोजनानि ये वर्हिषो नम ऽउक्तिं यजन्ति॥

कुबेर का पूजन कर प्रार्थना करें –

ॐ व्वयꣳ सोम व्वते तव मनस्तनूषु व्रिभ्रतः । प्रजावन्तः सचेमहि ॥

कीर्तिमुख-पूजनम् –

ॐ असवे स्वाहा व्वसवे स्वाहा व्विभुवे स्वाहा व्विवस्वते स्वाहा गणश्रिये स्वाहा गणपतये स्वाहा भिभुवे स्वाहाधिपतये स्वाहा शूषाय स्वाहा सꣳ सर्प्पाय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा ज्योतिषे स्वाहा मलिम्लुचाय स्वाहा दिवा पतयते स्वाहा ।

कीर्तिमुख का पूजन कर प्रार्थना करें -

ॐ ओजश्च मे सहश्च म ऽआत्मा च मे तनूश्च मे शर्म्म च मे व्वर्म्म च मेङ्गानि च मेस्थीनि च मे परूꣳषि च मे शरीराणि च म ऽआयुश्च मे जरा च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥

सर्प का पूजन निम्नलिखित मन्त्र से प्रार्थना करें –

ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ।
ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥

ध्यानम् –

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम् ।
पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥

आवाहनम् –

ॐ नमस्ते रूद्द्र मन्यव ऽउतो त ऽइषवे नमः ।
बाहुभ्यामुत ते नमः ॥

आयाहि भगवञ्शंभो शर्व त्वं गिरिजापते ।
प्रसन्नो भव देवेश नमस्तुभ्यं हि शंकर ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि ।

आसनम् –

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरापापकाशिनी ।
तया नस्तन्वा शन्त मया गिरिशन्ताभि चाकशीहि ॥

विश्वेश्वर महादेव राजराजेश्वरप्रिये ।
आसनम् दिव्यमीशाना दास्येऽहं तुभ्यमीश्वर ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः । आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि ।

पाद्यम् –

ॐ गायत्री त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्पंक्त्या सह ।
बृहत्युष्णिहा ककुप् सूचीभिः शम्यन्तुत्वा ॥

महादेव महेशान महादेव परात्पर ।
पाद्यं गृहाण मद्दत्तं पार्वतीसहितेश्वर ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, पाद्यं समर्पयामि ।

अर्घ्यम् –

नमोस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे ।
अथो येऽ अस्य सत्त्वानोहन्तेभ्यो-करन्नमः ॥
त्र्यंबकेश सदाचार जगदादिविधायक ।
अर्घ्यं गृहाण देवेश साम्ब सर्वार्थदायक ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः अर्घ्यं समर्पयामि ।

आचमनम् –

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं मुष्टिवर्द्धनम् ।
उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्म्मृक्षीयमामृतात् ॥

सर्वतीर्थसमायुक्तं सुगन्धिं निर्मलं जलम् ।
आचम्यतां मया दत्तं गृहीत्वा परमेश्वर ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

मधुपर्कः –

यन्मुधुनो मधव्यं परमꣳ रूपमन्नाद्यम् ।
तेनाहं मधुनो मधव्येन परमेण रूपेणान्नाद्येन परमो मधव्योन्नादोसानि ॥

आज्यं दधि मधु श्रेष्ठं पात्रयुग्मसमन्वितम् ।
मधुपर्कं गृहाण त्वं प्रसन्नो भव शङ्कर ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, मधुपर्कं समर्पयामि ।

स्नानम् –

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद ॥

गङ्गा - सरस्वती - रेवा - पयोष्णी - नर्मदाजलैः ।
स्नापितोऽसि मया देव तथा शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, स्नानीयं जलं समर्पयामि ।

पयः स्नानम् –

ॐ पयः पृथिव्यां पय ऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः । पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम् ।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानर्थमर्पितम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः पयः स्नानं समर्पयामि । पयः स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ।

दधिस्नानम् –

ॐ दधिक्राव्णो ऽअकारिषं जिष्णोरश्वस्य व्वाजिनः।
सुरभि नो मुखा करत् प्रण ऽआयूꣳषि तारिषत् ॥
पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम् ।
दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः दधिस्नानं समर्पयामि । दधिस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ।

घृतस्नानम् –

ॐ घृत मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्बस्य धाम ।
अनुष्वधमा वह मादयस्व स्वाहाकृतं व्वृषभ व्वक्षि हव्यम् ॥

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारम् ।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, घृतस्नानं समर्पयामि । घृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ।

मधुस्नानम् –

ॐ मधु व्वाता ऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः । माद्ध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः ॥ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता ।. मधुमान्नो व्वनस्पतिर्म्मधुमाँ२ऽ अस्तु सूर्य्यः । माद्ध्वीर्गावो भवन्तु नः ।

दिव्यैः पुष्पैः समुद्भूतं सर्वगुणसमन्वितम् ।
मधुरं मधुनामाढ्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, मधुस्नानं समर्पयामि । मधुस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ।

शर्करास्नानम् –

ॐ अपाꣳ रसमुद्वयसꣳ सूर्य्ये सन्तꣳ समाहितम् । अपाꣳ रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोसीन्द्राय त्त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्रायत्त्वा जुष्टतमम् ॥

इक्षुसारसमुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका ।
मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, शर्करास्नानं समर्पयामि । शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ।

पञ्चामृतस्नानम् –

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्त्रोतसः ।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेभवत्सरित् ॥
पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु ।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, पञ्चामृत० सम०।

शुद्धोदकस्नानम् –

ॐ शुद्धवालः सर्व्वशुद्धवालो मणिवालस्त ऽआश्विनाः । श्येतः श्येताक्षोरुणस्ते रुद्द्राय पशुपतये कर्ण्णा यामा ऽअवलिप्ता रौद्द्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः ॥

गङ्गा गोदावरी रेवा पयोष्णी यमुना तथा ।
सरस्वती तीर्थजातं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, शुद्धोदक० सम०।

अभिषेकः –

पश्चात् शिव की मूर्ति पर निम्नलिखित सोलह मन्त्रों से दुग्ध अथवा जलधारा द्वारा अभिषेक करें ।

अभिषेकमन्त्राः –

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव ऽउतो त ऽइषवे नमः । बाहुभ्यामुत ते नमः ॥१॥ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरापापकाशिनी । तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि ॥२॥ यामिषुङ्गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे । शिवाङ्गिरित्र तां कुरु मा हिँ॑सीः पुरुषञ्जगत् ॥३॥ शिवेन व्वचसा त्वा गिरिशाच्छा व्वदामसि । यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मँ॑सुमना असत् ॥४॥ अद्ध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक् । अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्योधराचीः परा सुव ॥५॥ असौ यस्ताम्म्रो ऽअरुणऽ उत बभ्रुः सुमङ्गलः । ये चैनँ॑रुद्रा ऽअभितो दिक्षु श्रिताःसहस्रशोवैषाँ॑हेडऽ ईमहे ॥६॥ असौ योवसर्पति नीलग्रीवो व्विलोहितः । उतैनङ्गोपाऽ अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्यः स दृष्टो मृडयाति नः ॥७॥ नमोस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे । अथो येऽ अस्य सत्त्वानोहन्तेभ्यो-करन्नमः ॥८॥ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयो रात्न्योर्ज्याम् । याश्च ते हस्त इषवः पराता भगवो व्वप ॥९॥ विज्यन्धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ २ ऽउत । अनेशन्नस्य या ऽइषव ऽआभुरस्य निषङ्गधिः ॥१०॥ या ते हेतिर्म्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः । तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परि भुज ॥११॥ परिते धन्वनो हेतिरस्मान् वृणक्तु व्विश्वतः । अथो यऽ इषुधिस्तवारे ऽअस्मन्निधेहि तम् ॥१२॥ अवतत्य धनुष्ट्वँ॑सहस्राक्ष शतेषुधे । निशीर्य शल्यानाम्मुखा शिवो नः सुमना भव ॥१३॥ नमस्त ऽआयुधायानातताय धृष्णवे । उभाब्भ्यामुत ते नमो बाहुभ्यान्तव धन्वने ॥१४॥ मा नो महान्तमुत मा नोऽ अर्ब्भकम्मा नऽ उक्षन्तमुत मा नऽ उक्षितम् । मानो व्वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो

रुद्र रीरिषः ॥१५॥ मा नस्तोके तनये मा नऽ आयुषि मा नो गोषु मा नोऽ अश्वेषु रीरिषः । मा नो व्वीरान्रुद्र भामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे ॥१६॥ अभिषेकं समर्पयामि ।

गन्धोदकस्नानम् –

ॐ त्वां गन्धर्व्वा ऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः ।
त्वामोषधे सोमो राजा व्विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत ॥
मलयाचलसम्भूतं चन्दनागरुसम्भवम् ।
चन्दनं देव देवेश स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, गन्धोदक० सम०।

विजयास्नानम् –

ॐ व्विज्जयं धनुः कपर्दिनो व्विशल्यो वाणवाँ२ ऽउत ।
अनेशन्नस्य या ऽइषव ऽआभुरस्य निषङ्गधिः ॥
शिवप्रीतिकरं रम्यं दिव्यभावसमन्वितम् ।
विजयाख्यं मया दत्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः विजयां सम०।
विजयास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ।

वस्त्रम् –

ॐ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयो रात्न्योर्ज्याम् ।
याश्च ते हस्त इषवः पराता भगवो व्वप ॥
शीतवातोष्णसन्त्राणं लज्जाया रक्षणं मरम् ।
देहालङ्कारणं वस्त्रमतः शान्ति प्रयच्छ मे ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, वस्त्रं सम०।

उपवस्त्रम् –

ॐ सुजातो ज्ज्योतिषासह शर्म्म व्वरूथ मा सदत्स्वः ।
व्वासो ऽअग्ने व्विश्वरूपँ॑ संव्ययस्व व्विभावसो ॥
उपवस्त्रं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने ।
भक्त्या समर्पितं देवं प्रसीद परमेश्वर ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, उपवस्त्रं सम०।

यज्ञोपवीतम् –

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो व्वेनऽ आवः ।
स बुद्ध्न्याऽ उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च व्विवः ॥
नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम् ।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण देवतामयम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि । यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

गन्धम् (चन्दनम्) –

ॐ नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः शर्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शीतिकण्ठाय च ।
श्रीखण्ड चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, गन्धं सम०।

भस्म –

ॐ प्रसद्य भस्मना योनिमपश्च पृथिवीमग्ने ।
सꣳ सृज्य मातृभिष्ट्वं ज्ज्योतिष्मान् पुनरासदः ॥
सर्वपापहरं भस्म दिव्यज्योतिः समप्रभम् ।
सर्वक्षेमकरं पुण्यं गृहाण परमेश्वर ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, भस्मं सम०।

अक्षताः –

ॐ नमः शम्भवाय च मयो भवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥
अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः ।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ।
ॐ भुर्भूवः स्वः भगवते श्री साम्ब० नमः, अक्षतान् समर्पयामि ॥

पुष्पम् –

ॐ नमः पार्याय चावार्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च नमस्तीर्थ्याय च कूल्याय च नमः शष्प्याय च फेन्याय च ॥
माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो ।
मयाऽऽनीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री साम्ब० नमः, पुष्पं समर्पयामि ।

पुष्पमालां –

ॐ ओषधीः प्रति मोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः ।
अश्वा ऽइव सजित्त्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्णवः ।
नानापंकजपुष्पैश्च ग्रथितां पल्लवैरपि ।
विल्वपत्रयुतां मालां गृहाण सुमनोहराम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, पुष्पमालां समर्पयामि ।

बिल्वपत्रम् –

ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो व्वर्म्मिणे च व्वरूथिने च नमः श्श्रुताय च श्श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुब्भ्याय चाहनन्याय च ॥
त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुतम् ।
त्रिजन्मपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥१॥
काशीवासनिवासी च कालभैरवपूजनम् ।
प्रयागेमाघ मासे च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥२॥
दर्शनं विल्वपत्रस्य स्पर्शनं पापनाशनम् ।
अघोरपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥३॥
अखण्डैर्बिल्वपत्रैश्च पूजयेच्छिवशङ्करम् ।
कोटिकन्यामहादानं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥४॥
गृहाण बिल्वपत्राणि सपुष्पाणि महेश्वरः ।
सुगन्धीनि भवानीश शिव त्वं कुसुमप्रियः ॥५॥
त्रिशाखैर्बिल्वपत्रैश्च अच्छिद्रैः कोमलैः शुभैः ।
तव पूजां करिष्यामि गृहाण परमेश्वर ॥६॥
अमृतोद्भवश्रीवृक्षं शङ्करस्य सदा प्रियम् ।
तत्ते शम्भो प्रयच्छामि ब्लिवपत्रं सुरेश्वर ॥८॥
ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री साम्ब० नमः, बिल्वपत्राणि समर्पयामि ।

दूर्वां –

ॐ काण्डात् काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ।
एवा नो दूर्व्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥
दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान् ।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वर ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री साम्ब० नमः. दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

शमी –

ॐ अग्नेस्तनूरसि व्वाचो व्विसर्ज्जनं देववीतये त्त्वा गृहणामि बृहद्ग्रावासि व्वानस्पत्यः स ऽइदं देवेब्भ्यो हविः शमीष्व सुशमि शमीष्व । हविष्कृदेहि हविष्कृदेहि ॥

अमङ्गलानां च शमनीं शमनीं दुष्कृतस्य च ।
दुः स्वप्ननाशिनीं धन्यां प्रपद्येऽहं शमीं शुभाम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री साम्ब० नमः. शमीपत्राणि समर्पयामि।

तुलसी-मञ्जरीम् –

ॐ शिवो भव प्रजाब्भ्यो मानुषीब्भ्यस्त्वमङ्गिरः । मा द्यावापृथिवी ऽअभिशोचीर्म्मान्तरिक्षम्मा व्वनस्पतीन् ॥

मिलत्परिमलामोदभृङ्गसङ्गीतसंस्तुताम् ।
तुलसीमञ्जरीं मञ्जु अञ्जसा स्वीकुरु प्रभो ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री साम्ब० नमः, तुलसीमञ्जरीं समर्पयामि।

आभूषणम् –

ॐ युवं तमिन्द्रापर्व्वता पुरोयुधा यो नः ऽएतन्यादप तन्तमिद्धतं व्वज्रेण तन्तमिद्धतम् । दूरे चत्ताय छन्त्सद् गहनं यदिनक्षत् ॥

वज्र-माणिक्य-वैदूर्य मुक्ताविद्रुममण्डितम् ।
पुष्पराग समायुक्तं भूषणं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री साम्ब० नमः, आभूषणं समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्याणि –

ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहुँ ज्याया हेतिं परिबाधमानः। हस्तघ्नो व्विश्वा व्वयुनानि व्विद्वान् पुमान् पुमाङ्सं परिपातु व्विश्वतः॥

अबीरं च गुलालं च हरिद्रादिसमन्वितम् ।
नानापरिमलं द्रव्यं गृहाण परमेश्वर ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री साम्ब० नमः, नानापरि० समर्पयामि।

सिन्दूरम् –

ॐ सिन्धोरिव प्राद्ध्वने शूघनासो व्वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः ॥ घृतस्य धारा ऽअरुषो न व्वाजी काष्ठ्ठा भिन्दन्नूर्म्मिभिः पिन्वमानः ॥

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यंसुखवर्द्धनम् ।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ भूर्भूवः स्वः भगवते श्री साम्ब० नमः, सिन्दूरं समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्यम् –

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् ।
उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्म्मृक्षीयमामृतात् ॥
दिव्यगन्धसमायुक्तं महापरिमलाद्भुतम् ।
गन्धद्रव्यमिदं भक्त्या दत्तं स्वीकुरु शङ्कर ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्रीसाम्ब० नमः, सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि।

अङ्गपूजनम्

ॐ ईशानाय नमः पादौ पूजयामि ॥१॥ ॐ शङ्कराय नमः जंघे पूजयामि ॥२॥ ॐ शूलपाणये नमः गुल्फौ पूजयामि ॥३॥ ॐ शम्भवे नमः कटिं पूजयामि ॥४॥ ॐ स्वयम्भुवे नमः गुह्यं पूजयामि ॥५॥ ॐ महादेवाय नमः नाभिं पूजयामि ॥६॥ ॐ विश्वकर्त्रे नमः उदरं पूजयामि ॥७॥ ॐ सर्वतोमुखाय नमः पार्श्वे पूजयामि ॥८॥ ॐ स्थाणवे नमः स्तनौ पूजयामि ॥९॥ ॐ नीलकण्ठाय नमः कण्ठं पूजयामि ॥१०॥ ॐ शिवात्मने नमः मुखं पूजयामि ॥११॥ ॐ त्रिनेत्राय नमः नेत्रे पूजयामि ॥१२॥ ॐ नागभूषणाय नमः शिरः पूजयामि ॥१३॥ ॐ देवाधिदेवाय नमः सर्वाङ्गं पूजयामि ॥१४॥

एकादशरुद्रपूजनम्

ॐ अघोराय नमः ॥१॥ ॐ पशुपतये नमः ॥२॥
ॐ शिवाय नमः ॥३॥ ॐ विरूपाय नमः ॥४॥
ॐ विश्वरूपाय नमः ॥५॥ ॐ भैरवाय नमः ॥६॥

ॐ त्र्यम्बकाय नमः ॥७॥ ॐ शूलपाणये नमः ॥८॥
ॐ कपर्दिने नमः ॥९॥ ॐ ईशानाय नमः ॥१०॥
ॐ महेशाय नमः ॥११॥

एकादशशक्तिपूजनम्

ॐ भगवत्यै नमः ॥१॥ ॐ उमादेव्यै नमः ॥२॥
ॐ शङ्करप्रियायै नमः ॥३॥ ॐ पार्वत्यै नमः ॥४॥
ॐ गौर्यै नमः ॥५॥ ॐ कालिन्द्यै नमः ॥६॥
ॐ काटिव्यै नमः ॥७॥ ॐ विश्वधारिण्यै नमः ॥८॥
ॐ विश्वेश्वर्यै नमः ॥९॥ ॐ विश्वमात्रे नमः ॥१०॥
ॐ शिवायै नमः ॥११॥

गणपूजनम्

ॐ गणपतये नमः ॥१॥ ॐ कार्तिकाय नमः ॥२॥
ॐ पुष्पदन्ताय नमः ॥३॥ ॐ कपर्दिने नमः ॥४॥
ॐ भैरवाय नमः ॥५॥ ॐ शूलपाणये नमः ॥६॥
ॐ ईश्वराय नमः ॥७॥ ॐ दण्डपाणये नमः ॥८॥
ॐ नन्दिने नमः ॥९॥ ॐ महाकालाय नमः ॥१०॥

अष्टमूर्तिपूजा

ॐ शर्वाय क्षितिमूर्त्तये नमः (प्राच्याम्) ॐ भवाय जलमूर्त्तये नमः (ऐशान्याम्) ॐ रुद्राय अग्निमूर्त्तये नमः (उदीच्याम्) ॐ उग्राय वायुमूर्त्तये नमः (वायव्याम्) ॐ भीमाय आकाशमूर्त्तये नमः (प्रतीच्याम) ॐ पशुपतये यजमानमूर्त्तये नमः (नैर्ऋत्याम्) ॐ महादेवाय समोमूर्त्तये नमः (दक्षिणस्याम्) ॐ ईशानाय सूर्यमूर्त्तये नमः (आग्नेयाम्)

अष्टोत्तरशतनामभिः शिवार्चनम्

ॐ अस्य श्रीशिवाष्टोत्तरशतनाममन्त्रस्य नारायणऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्रीसदाशिवो देवता गौरी उमाशक्तिः श्रीसाम्बसदाशिवप्रीतये अष्टोत्तरशतनामभिः शिवपूजने विनियोगः ।

शान्ताकारं शिखरिशयनं नीलकण्ठं सुरेशं
विश्वाधारं स्फटिकसदृशं शुभ्रवर्णं शुभाङ्गम्।
गौरीकान्तं त्रितयनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे शम्भुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥

ॐ शिवाय नमः ॥१॥ ॐ महेश्वराय नमः ॥२॥
ॐ शम्भवे नमः ॥३॥ ॐ पिनाकिने नमः ॥४॥
ॐ शशिशेखराय नमः ॥५॥ ॐ वामदेवाय नमः ॥६॥
ॐ विरूपाक्षाय नमः ॥७॥ ॐ कपर्दिने नमः ॥८॥
ॐ नीललोहिताय नमः ॥९॥ ॐ शङ्कराय नमः ॥१०॥
ॐ शूलपाणये नमः ॥११॥ ॐ खट्वाङ्गिने नमः ॥१२॥
ॐ विष्णुवल्लभाय नमः ॥१३॥ ॐ शिपिविष्टाय नमः ॥१४॥
ॐ अम्बिकानाथाय नमः ॥१५॥ ॐ श्रीकण्ठाय नमः ॥१६॥
ॐ भक्तवत्सलाय नमः ॥१७॥ ॐ भवाय नमः ॥१८॥
ॐ शर्वाय नमः ॥१९॥ ॐ त्रिलोकीनाथाय नमः ॥२०॥
ॐ शितिकण्ठाय नमः ॥२१॥ ॐ शिवाप्रियाय नमः ॥२२॥
ॐ उग्राय नमः ॥२३॥ ॐ कपालिने नमः ॥२४॥
ॐ कामारये नमः ॥२५॥ ॐ अन्धकासुरसूदनाय नमः॥२६॥
ॐ गङ्गाधराय नमः ॥२७॥ ॐ ललाटाक्षाय नमः ॥२८॥
ॐ कालकालाय नमः ॥२९॥ ॐ कृपानिधये नमः ॥ ३०॥
ॐ भीमाय नमः ॥३१॥ ॐ परशुहस्ताय नमः ॥३२॥
ॐ मृगपाणये नमः ॥३३॥ ॐ जटाधराय नमः ॥३४॥
ॐ कैलासवासिने नमः ॥३५॥ ॐ कवचिने नमः ॥३६॥
ॐ कठोराय नमः ॥३७॥ ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः ॥३८॥
ॐ वृषाङ्काय नमः ॥३९॥ ॐ वृषभारूढाय नमः ॥४०॥
ॐ भस्मोद्धूलितविग्रहाय नमः ॥४१॥ ॐ सामप्रियाय नमः ॥४२॥
ॐ स्वरमयाय नमः ॥४३॥ ॐ त्रिमूर्तये नमः ॥४४॥
ॐ अश्विनीश्वराय नमः ॥४५॥ ॐ सर्वज्ञाय नमः ॥४६॥
ॐ परमात्मने नमः ॥४७॥ ॐ सोमसूर्याग्नि लोचनाय नमः ॥४८॥
ॐ हविषे नमः ॥४९॥ ॐ यज्ञमयाय नमः ॥५०॥
ॐ पञ्चवक्त्राय नमः ॥५१॥ ॐ सदाशिवाय नमः ॥५२॥
ॐ विश्वेश्वराय नमः ॥५३॥ ॐ वीरभद्राय नमः ॥५४॥
ॐ गणनाथाय नमः ॥५५॥ ॐ प्रजापतये नमः ॥५६॥
ॐ हिरण्यरेतसे नमः ॥५७॥ ॐ दुर्द्धर्षाय नमः ॥५८॥

ॐ गिरीशाय नमः ॥५९॥	ॐ गिरिशाय नमः ॥६०॥
ॐ अनघाय नमः ॥६१॥	ॐ भुजङ्गभूषणाय नमः ॥६२॥
ॐ भर्गाय नमः ॥६३॥	ॐ गिरिधन्वने नमः ॥६४॥
ॐ गिरिप्रियाय नमः ॥६५॥	ॐ अष्टमूर्त्तये नमः ॥६६॥
ॐ अनेकात्मने नमः ॥६७॥	ॐ सात्त्विकाय नमः ॥६८॥
ॐ शुभविग्रहाय नमः ॥६९॥	ॐ शाश्वताय नमः ॥७०॥
ॐ खण्डपरशवे नमः ॥७१॥	ॐ अजाय नमः ॥७२॥
ॐ पाशविमोचकाय नमः॥७३॥	ॐ कृतिवाससे नमः ॥७४॥
ॐ पुरारातये नमः ॥७५॥	ॐ भगवते नमः ॥७६॥
ॐ प्रमथाधिपाय नमः ॥७७॥	ॐ मृत्युञ्जयाय नमः ॥७८॥
ॐ सूक्ष्मतनवे नमः ॥७९॥	ॐ जगद्व्यापिने नमः ॥८०॥
ॐ जगद्गुरवे नमः ॥८१॥	ॐ जनकाय नमः ॥८२॥
ॐ चारुविक्रमाय नमः ॥८३॥	ॐ रुद्राय नमः ॥८४॥
ॐ भूतपतये नमः ॥८५॥	ॐ स्थाणवे नमः ॥८६॥
ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः ॥८७॥	ॐ दिगम्बराय नमः ॥८८॥
ॐ मृडाय नमः ॥८९॥	ॐ पशुपतये नमः ॥९०॥
ॐ देवाय नमः ॥९१॥	ॐ महादेवाय नमः ॥९२॥
ॐ अव्ययाय नमः ॥९३॥	ॐ हरये नमः ॥९४॥
ॐ पुष्पदन्तभिदे नमः ॥९५॥	ॐ भगनेत्रभिदे नमः ॥९६॥
ॐ अपवर्गप्रदाय नमः ॥९७॥	ॐ अव्यग्राय नमः ॥९८॥
ॐ अव्यक्ताय नमः ॥९९॥	ॐ अनन्ताय नमः ॥१००॥
ॐ दक्षाध्वरहराय नमः॥१०१॥	ॐ सहस्राक्षाय नमः ॥१०२॥
ॐ तारकाय नमः॥१०३॥	ॐ हराय नमः ॥१०४॥
ॐ सहस्रपदे नमः ॥१०५॥	ॐ श्रीपरमेश्वराय नमः ॥१०६॥
ॐ व्रताधिपाय नमः ॥१०७॥	ॐ जगते नमः ॥१०८॥

मन्दरमालाङ्कुलितालकायै कपालमालाङ्कितशेखराय ।
दिव्याम्बरायै च दिगम्बराय नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥

धूपः –

ॐ नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च नमः सहस्राक्षाय च शतधन्वने च ।

नमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च ॥

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः ।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री साम्ब० नमः, धूपमाघ्रापयामि ।

दीपम्-

ॐ नमः आशवे चाजिराय च नमः शीघ्र्याय च शीभ्याय च नमः ।
उर्म्याय चावसन्याय च नमो नादेयाय च द्वीप्याय च ॥

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया ।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री साम्ब० नमः, दीपं दर्शयामि। हस्तप्रक्षालनम् ।

नैवेद्यम् -

ॐ नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चा परजाय च ।
नमो मद्ध्यमाय चा पगल्भाय च नमो जघन्याय च बुध्न्याय च ॥

शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च ।
आहारो भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, नैवेद्यं निवेदयामि ।
ॐ प्राणाय स्वाहा । ॐ अपानाय स्वाहा । ॐ व्यानाय स्वाहा ।
ॐ उदानाय स्वाहा । समानाय स्वाहा ।

ऋतुफलानि –

ॐ याः फलिनीर्या ऽअफला ऽअपुष्पायाश्च पुष्पिणीः ।
बृहस्पतिप्रसूतास्त नो मुञ्चन्त्वꣳहसः ॥
फलेन फलितं सर्वं त्रैलोक्यं स चराचरम् ।
तस्मात् फलप्रदानेन पूर्णाः सन्तुमनोरथाः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री साम्ब० नमः ऋतुफलानि समर्पयामि ।

धत्तूरफलानि –

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्या ऽउन्नयामि ।
समापो ऽअद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः ॥
धीरधैर्यपरीक्षार्थं धारितं परमेष्ठिना ।
धत्तूरं कण्टकाकीर्णं गृहाण परमेश्वर ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः,धत्तूरफलं समर्पयामि ।

ताम्बूलम् (सुपारी) –

ॐ इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः
यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्नानातुरम् ॥
पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम् ।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री साम्ब० नमः, मुखवासार्थे ताम्बूलं सम०।

दक्षिणा –

ॐ मा नो महान्तमुत मा नो ऽअर्भकं मा न ऽउक्षन्तमुत
मा न ऽउक्षितम् । मा नो व्वधीः पितरम्मोत मातरं मा
नः प्रियास्तन्वो रुद्ररीरिषः ॥
दक्षिणा स्वर्णसहिता यथाशक्ति समर्पिता ।
अनन्तफलदामेनां गृहाण परमेश्वर ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

साक्षतजलेन तर्पणं कार्य्यम् –

ॐ भवं देवं तर्पयामि ॥१॥ ॐ शर्वं देवं तर्पयामि ॥२॥ ॐ ईशानं देवं तर्पयामि ॥३॥ ॐ पशुपतिं देवं तर्पयामि ॥४॥ ॐ उग्रं देवं तर्पयामि ॥५॥ ॐ रुद्रं देवं तर्पयामि ॥६॥ ॐ भीमं देवं तर्पयामि ॥७॥ ॐ महान्तं देवं तर्पयामि ॥८॥ ॐ भवस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि ॥१॥ शर्वस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि ॥२॥ ॐ ईशानस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि ॥३॥ ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्नीं तर्पयामि ॥४॥ ॐ उग्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि ॥५॥ ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि ॥६॥ ॐ भीमस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि ॥७॥ ॐ महतो देवस्य पत्नीं तर्पयामि । एवं तर्पणं कृत्वा आरार्तिकं कुर्यात् ।

नीराजनम् –

ॐ आ रात्रि पार्थिवꣳरजः पितुरप्प्रायि धामभिः ।
दिवः सदाꣳसि बृहती व्वितिष्ठस ऽआ त्वेषं व्वर्त्तते तमः ॥१॥
ॐ इदꣳहविः प्रजननं मे ऽअस्तु दशवीरꣳ सर्व्वगणꣳ
स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि ।
अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो ऽअस्मासु धत्त ॥२॥

ॐ अग्निर्देवता व्वातो देवता सूर्य्यो देवता चन्द्रमा देवता व्वसवो देवता रुद्रा देवतादित्या देवता मरुतो देवता व्विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता व्वरुणो देवता ॥३॥

ॐ कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम् ।
सदावसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि ॥

ॐ जय शिव ओंकारा, जय शिव ओंकारा ।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धङ्गी धारा ॥१॥
ॐ हर हर हर महादेव ॥
एकानन चतुरानन पञ्चानन राजै ।
हंसासन गरुडासन वृषवाहन साजै ॥२॥ ॐ हर..
दोय भुज चार चतुर्भुज दशभुज ते सोहे ।
तीनों रूप निरखता त्रिभुवन-जन मोहे ॥३॥ ॐ हर..
अक्षमाला वनमाला रुण्डमाला धारी ।
चन्दन मृगमद चन्दा भाले शुभकारी ॥४॥ ॐ हर..
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अङ्गे ।
सनकादिक ब्रह्मादिक भूतादिक सङ्गे ॥५॥ ॐ हर..
कर मध्ये सुकमण्डलु चक्रत्रिशूल धर्ता ।
जगकर्त्ता जगहर्त्ता जगपालनकर्त्ता ॥६॥ ॐ हर.,
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका ।
प्रणवाक्षर ॐ मध्ये ये तीनों एका ॥७॥ ॐ हर..
काशीमें विश्वनाथ विराजत नन्दो ब्रह्मचारी ।
नित उठ दर्शन पावत महिमा अति भारी ॥८॥ ॐ हर..
त्रिगुण स्वामीकी आरति जो कोई नर गावै ।
भनत शिवानन्द स्वामी मनवाञ्छित फल पावै ॥९॥ ॐ हर..

मन्त्रपुष्पाञ्जलिः –

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवस्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥
ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य सायिने । नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे । स मे कामान् कामकामाय मह्यम् । कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु । कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः ॥ ॐ स्वस्ति । साम्राज्यं

भोज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात्, सार्वभौमः सार्वायुष आन्तादापरार्धात् पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति ॥ तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे । आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति । ॐ विश्वतश्चक्षुरुत व्विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरूत विश्वतस्पात् । सम्बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमीं जनयन्देवऽएकः ॥

शिवगायत्री –

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री साम्ब० नमः, मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ।

प्रदक्षिणा –

(शिवकी अर्द्ध प्रदक्षिणा होती है ।)

ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः ।
तेषां सहस्रयोजनेवधन्वानि तन्मसि ॥
ॐ सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना ऽअबध्नन् पुरुषं पशुम् ॥
यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च ।
तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणपदे पदे ॥

प्रणामः –

ॐ नमः शम्भवाय च मयो भवाय च नमः शङ्करा च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥

असितगिरि समं स्यात्कज्जलं सिन्धुपात्रे ।
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमूर्वी ।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानीमीश पारं न याति ॥१॥
वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणं
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम् ।
वन्दे सूर्य-शशाङ्क-वह्निनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं
वन्दे भक्तजनाश्रयञ्च वरदं वन्दे-शिवं शङ्करम् ॥ २॥
वन्दे महेशं सुरसिद्धसेवितं
भक्तैः सदा पूजितपादपद्मम् ।

ब्रह्मेन्द्रविष्णुप्रमुखैश्च वन्दितं
ध्यायेत्सदा कामदुधं प्रसन्नम् ॥३॥
शान्तं पद्मासनस्थं शशिधरमुकुटं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रं
शूलं वज्रं च खड्गं परशुमभयदं दक्षिणाङ्गे वहन्तम् ।
नागं पाशं च घण्टां डमरुकसहितं साङ्कुशं वामभागे
नानालङ्कारयुक्तं स्फटिकमणिनिभं पार्वतीशं नमामि ॥४॥
श्मशानेष्वाक्रीड़ा स्मरहर पिशाचाः सहचरा-
श्चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटीपरिकरः ।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं
तथापि स्मर्तृणां वरद परमं मङ्गलमसि ॥५॥
त्रिनेत्राय नमस्तुभ्यं उमादेहार्धधारिणे ।
त्रिशूलधारिणे तुभ्यं भूतानां पतये नमः ॥६॥
गङ्गाधर नमस्तुभ्यं वृषभध्वज नमोऽस्तु ते ।
आशुतोष नमस्तुभ्यं भूयो भूयो नमो नमः ॥७॥

क्षमा-प्रार्थना –

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर ।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥१॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥२॥
पापोऽहं पापकर्माऽहं पापात्मा पापसम्भवः ।
त्राहि मां पार्वतीनाथ सर्वपापहरो भव ॥३॥
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ।
तस्मात् कारुण्य भावेन रक्षमां परमेश्वर ॥४॥
त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या च गुरुस्त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥५॥
अनेन यथाशक्तिकृतेन पूजनेन श्रीसाम्बसदाशिवः प्रीयतां न मम ।

श्री महालक्ष्मी पूजनम्

ध्यानम् –

सिन्दूरारुणविग्रहां त्रिनयनां माणिक्यमौलि-स्फुरत्
तारानायकशेखरां स्मितमुखीमापीनवक्षोरुहाम् ।
पाणिभ्यामलिपूर्णरत्नचषकं रक्तोत्पलं विभ्रतीं
सौम्यां रत्नघटस्थसव्यचरणां ध्यायेत्परामम्बिकाम् ॥१॥
या सा पद्मासनस्था विपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी
गम्भीरावर्तनाभि स्तनभरनमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया ।
या लक्ष्मीर्दिव्यरूपैर्मणिगणखचितैः स्नापिता हेमकुम्भैः ।
सा नित्यं पद्महस्ता वसतु मम गृहे सर्वमाङ्गल्ययुक्ता ॥२॥
ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो मआवह ॥
ध्यानार्थे पुष्पं समर्पयामि ॐ भूर्भुवः स्वः महालक्ष्म्यै नमः ॥

आवाहनम् - ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥
सर्वलोकस्य जननीं सर्वसौख्यप्रदायिनीम् ।
सर्वदेवमयीमीशां देवीमावाहयाम्यहम् ।
ॐ भूर्भुवः स्वः महालक्ष्म्यै नमः, आवाहनं समर्पयामि ।

आसनम्- ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादंप्रबोधिनीम् ।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मादेवीर्जुषताम् ॥
ॐ तप्तकाञ्चनवर्णाभां मुक्तामणिविराजिताम् ।
अमलं कमलं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः महालक्ष्म्यै नमः, आसनं समर्पयामि ।

पाद्यम्- कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥
ॐ गङ्गादितीर्थसम्भूतं गन्धपुष्पादिभिर्युतम् ।
पाद्यं ददाम्यहं देवि गृहाणाशु नमोऽस्तु ते ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः महालक्ष्म्यै नमः, पाद्यं समर्पयामि ।

अर्घ्यम्- चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देव जुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मनेमीं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि ॥
सर्वगन्धसमायुक्तं स्वर्ण पात्रे प्रपूरितम् ।
अर्घ्यं गृहाण मद्दतं महालक्ष्मी नमोऽस्तु ते ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः महालक्ष्म्यै नमः अर्घ्यं स० ।

आचमनम्- आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥
ॐ सर्वलोकस्य या शक्तिर्ब्रह्मविष्णवादिभिः स्तुता ।
ददाम्याचमनं तस्यै महालक्ष्म्यै मनोहरम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः महालक्ष्म्यै नमः, आचमनं स० ।

स्नानम्- उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥
गङ्गा सरस्वतीरेवापयोष्णी नर्मदा जलैः ।
स्नापितासि मया देवि तथा शान्तिं कुरुष्व मे ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः महालक्ष्म्यै नमः जलस्नानं स० ।

पञ्चामृतस्नानम्- ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः ।
सरस्वती तु पञ्चधासोदेशेभवत् सरित् ॥
दधि मधु घृतञ्चैव पयश्च शर्करायुतम् ।
पञ्चामृतं समानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः महालक्ष्म्यै नमः पञ्चामृतस्नानं स० ।

गन्धस्नानम्- ॐ मलयाचलसम्भूतं चन्दनागरुसम्भवम् ।
चन्दनं देवदेवेशि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः महालक्ष्म्यै नमः गन्धस्नानं स० ।

शुद्धोदक स्नानम्- मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम् ।

तदिदं कल्पितं तुभ्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः महालक्ष्म्यै नमः, शुद्धोदकस्नानं स०।

वस्त्रम्- उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥
दिव्याम्बरं नूतनं हि क्षौमं त्वतिमनोहरम् ।
दीयमानं मया देवि गृहाण जगदम्बिके ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः महालक्ष्म्यै नमः वस्त्रं सं० ।

उपवस्त्रम्- कञ्चुकीमुपवस्त्रं च नानारत्नैः समन्वितम् ।
गृहाण त्वं मया दत्तं मङ्गले जगदीश्वरि ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः महालक्ष्म्यै नमः, उपवस्त्रं सं० ।

आभूषणम्- क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मी नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वान्निर्णुद मे गृहात् ॥
रत्नकंकण वैदूर्य मुक्ताहारयुतानि च ।
सुप्रसन्नेन मनसा दत्तानि स्वीकुरुष्व मे ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः महालक्ष्म्यै नमः, आभूषणानि स० ।

चन्दनम्- गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥
श्रीखण्डागरु कर्पूर मृगनाभि समन्वितम् ।
विलेपनं गृहाणाशु नमोऽस्तु भक्तवत्सले ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः महालक्ष्म्यै नमः, गन्धं स० ।

रक्तचन्दनम्- ॐ रक्तचन्दनसंमिश्रं पारिजातसमुद्भवम् ।
मया दत्तं गृहाणाशु चन्दनं गन्धसंयुतम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः महालक्ष्म्यै नमः, रक्तचन्दनं स० ।

सिन्दूरम्- ॐ सिन्दूरं रक्तवर्णञ्च सिन्दूरतिलकप्रिये ।
भक्त्या दत्तं मया देवि सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः महालक्ष्म्यै नमः, सिन्दूरं स० ।

कुंकुमम् - ॐ कुंकुमं कामदं दिव्यं कुंकुमं कामरूपिणम् ।
अखण्डकामसौभाग्यं कुंकुमं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः महालक्ष्म्यै नमः, कुंकुमं स० ।

अबीरगुलालम्- अबीरञ्च गुलालं च चोवा-चन्दनमेव च ।
श्रृङ्गारार्थं मया दत्तं गृहाण परमेश्वरि ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः महालक्ष्म्यै नमः, अबीरगुलालं स० ।

सुगन्धितद्रव्यम् - तैलीनि च सुगन्धीनि द्रव्याणि विविधानि च ।
मया दत्तानि लेपार्थं गृहाण परमेश्वरि ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः महालक्ष्म्यै नमः, सुगन्धित तैलं स०।

अक्षताः - अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः ।
मया निवेदिता भक्त्या पूजार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः महालक्ष्म्यै नमः, अक्षतान् स० ॥

पुष्पम्- ॐ मन्दारपारिजाताद्या पाटली केतकी तथा ।
मरुवामोगरं चैव गृहाणाशु नमो नमः ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः महालक्ष्म्यै नमः, पुष्पं समर्पयामि ।

पुष्पमालाम्- ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥
माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो ।
पूजनं क्रियते देवि पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः महालक्ष्म्यै नमः । पुष्पमालां स० ।

दूर्वा- ॐ विष्णवादिसर्वदेवानां प्रियां सर्वसुशोभनाम् ।
क्षीरसागरसम्भूते दूर्वां स्वीकुरु सर्वदा ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः महालक्ष्म्यै नमः दूर्वां समर्पयामि ।

बिल्वपत्रम् - ॐ त्रिदलानि अखण्डानि बिल्वपत्राणि सुन्दरि ।
पूजयेत् परया भक्त्या महालक्ष्मीं सुखप्रदाम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः महालक्ष्म्यै नमः बिल्वपत्रम् स०

अङ्गपूजनम्- ॐ चपलायै नमः । पादौ पूजयामि ॥१॥
ॐ चञ्चलायै नमः । जानुनीं पूजयामि ॥२॥
ॐ कमलायै नमः । कटिं पूजयामि ॥३॥
ॐ कात्यायन्यै नमः । नाभिं पूजयामि ॥४॥
ॐ जगन्मात्रे नमः । जठरं पूजयामि ॥५॥
ॐ विश्ववल्लभायै नमः । वक्षःस्थलं पूजयामि ॥६॥

ॐ कमलवासिन्यै नमः । हस्तौ पूजयामि ॥७॥
ॐ पद्माननायै नमः । मुखं पूजयामि ॥८॥
ॐ कमलपत्राक्ष्यै नमः । नेत्रत्रयं पूजयामि ॥९॥
ॐ श्रियै नमः । शिरः पूजयामि ॥१०॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः । सर्वाङ्गं पूजयामि ॥११॥

अथ पूर्वादिक्रमेण अष्टदिक्षु अष्टसिद्धीः पूजयेत्

१. ॐ अणिम्ने नमः (पूर्वे) २. ॐ महिम्ने नमः (अग्निकोणे)
३. ॐ गरिम्णे नमः (दक्षिणे) ४. ॐ लघिम्ने नमः (नैऋत्ये)
५. ॐ प्राप्त्यै नमः (पश्चिमे) ६. ॐ प्राकाम्यै नमः (वायव्ये)
७. ॐ ईशितायै नमः (उत्तरे) ८. ॐ वशितायै नमः (ऐशान्याम्)

तथैव पूर्वादि-क्रमेण अष्टलक्ष्मीं-पूजयेत्

ॐ आद्यलक्ष्म्यै नमः ॥१॥ ॐ विद्यालक्ष्म्यै नमः ॥२॥
ॐ सौभाग्यलक्ष्म्यै नमः ॥३॥ ॐ अमृतलक्ष्म्यै नमः ॥४॥
ॐ कामलक्ष्म्यै नमः ॥५॥ ॐ सत्यलक्ष्म्यै नमः ॥६॥
ॐ भोगलक्ष्म्यै नमः ॥७॥ ॐ योगलक्ष्म्यै नमः ॥८॥

धूपः - ॐ कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥
वनस्पतिरसोत्पन्नो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः ।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः महालक्ष्म्यै नमः । धूपमाघ्रापयामि ।

दीपम्- ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥
कर्पूरवर्तिसंयुक्तं घृतयुक्तं मनोहरम् ।
तमोनाशकरं दीपं गृहाण परमेश्वरि ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः महालक्ष्म्यै नमः । दीपं स० ।

नैवेद्यम्- ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥
नैवेद्यं गृह्यतां देवि भक्ष्यभोज्यसमन्वितम् ।
षड्रसैरन्वितं दिव्यं महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः महालक्ष्म्यै नमः ॥ नैवेद्यं स० ।
ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा, ॐ व्यानाय स्वाहा, ॐ उदानायस्वाहा, ॐ समानाय स्वाहा, नैवेद्यं निवेदयामि ॥

आचमनीयम् - शीतलं निर्मलं तोयं कर्पूरेण सुवासितम् ।
आचम्यतां इदं देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः महालक्ष्म्यै नमः । आचमनीयं स० ।

फलम् - ॐ याः फलिनीर्याऽ अफलाऽ अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः ।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वꣳहसः ॥
फलेन फलितं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम् ।
तस्मात् फलप्रदानेन पूर्णाः सन्तु मनोरथाः ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः महालक्ष्म्यै नमः । फलं स०

ताम्बूलपूगीफलम्- ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगला पद्ममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्यमीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥
एलालवंग कर्पूर नागपत्रादि भिर्युतम् ।
पूगीफलेन संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः महालक्ष्म्यै नमः । ताम्बूलं स०

दक्षिणा- ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥
हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः ।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः महालक्ष्म्यै नमः दक्षिणां स० ।

अखण्डऋतुफलम्- इदं फलं मयानीतं सरसं च निवेदितम् ।
गृहाण परमेशानि प्रसीद प्रणमाम्यहम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः महालक्ष्म्यै नमः अ० ऋ० फ० स० ।

महाकाली (दावात) पूजनम्

कालिके त्वं जगन्मातर्मषीरूपेण वर्तसे ।
उत्पन्न त्वं च लोकानां व्यवहारप्रसिद्धये ॥
कृष्णानने द्विजिह्वे च चित्रगुप्तकरस्थिते ।
सदक्षराणां पत्रेषु लेख्यं कुरु सदा मम ॥

ॐ लेखन्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि । नमस्करोमि ।

प्रार्थना- या कालिका रोगहरा सुवंद्या भक्तैः समस्तैर्व्यवहारदक्षैः।
जनैर्जनानां भयहारिणी च सा लोकमाता मम सौख्यदाऽस्तु ॥

सरस्वती (बही-खाता) पूजनम्

ध्यानम्- शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम् ।
हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थितां
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ॥
ॐ सरस्वत्यै नमः, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि सम०, नम०।

प्रार्थना- या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना ।
या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ॥
''कृतेन अनेन पूजनेन महासरस्वतीदेवी प्रीयताम् न मम''

कुबेर पूजनम् (तिजोरी या बक्सा में)

आवाहनम्- आवाहयामि देव त्वामिहायाहि कृपां कुरु ।
कोशं वर्धय नित्यं त्वं परिरक्ष सुरेश्वर ॥

प्रार्थना- धनाध्यक्षाय देवाय नरयानोपवेशिने ।
नमस्ते राजराजाय कुबेराय महात्मने ॥

तुला-मान पूजनम्

नमस्ते सर्वदेवानां शक्तित्वे सत्यमाश्रिता ।
साक्षीभूता जगद्धात्री निर्मिता विश्वयोनिना ॥
ॐ तुलाधिष्ठातृदेवतायै नमः पूजयामि नमस्करोमि ।

दीपक पूजनम्

ध्यानम्- भो दीप ब्रह्मरूप त्वं ह्यन्धकारविनाशक ।
इमां मया कृतां पूजां गृह्णन्तेजः प्रवर्धय ॥

प्रार्थना- शुभं करोतु कल्याणमारोग्यं सुख-सम्पदम् ।
मम बुद्धि-प्रकाशं च दीपज्योतिर्नमोऽस्तुते ॥१॥

शुभं भवतु कल्याणमारोग्यं पुष्टिवर्धनम् ।
आत्मतत्वप्रबोधाय दीपज्योतिर्नमोऽस्तुते ॥२॥
दीपावलिर्मया दत्त गृहाण त्वं सुरेश्वरि ।
अनेन दीपदानेन ज्ञानदृष्टिप्रदा भव ॥

आरार्तिक्यम्- कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि ॥

आरती

जय लक्ष्मी माता मैया जय लक्ष्मी माता ।
तुमको निश दिन ध्यावत हर विष्णु धाता ॥जय० ॥
ब्रह्माणी रुद्राणी कमला तूही है जगमाता ।
सूर्य चन्द्रमा ध्यावत नारद ऋषि गाता ॥जय० ॥
दुर्गारूप निरञ्जनि सुख सम्पति दाता ।
जो कोई तुमको ध्यावत ऋद्धिसिद्धि धनपाता ॥जय० ॥
तूही है पातालवसन्ती तूही है शुभ दाता ।
कर्म प्रभाव प्रकाशक भवनिधि से त्राता ॥जय० ॥
जिस घर थारो वासो वाही में गुण आता ।
कर न सकै सो कर ले मन नहीं धड़काता ॥जय० ॥
तुम बिन यज्ञ न होवे वस्त्र न होय राता ।
खान पानको वैभव तुम बिन कुण दाता ॥जय० ॥
शुभ गुण सुन्दरयुक्ता क्षीरनिधिजाता ।
रत्नचतुर्दश तोकूँ कोई भी नहीं पाता ॥जय० ॥
या आरती लक्ष्मीजीकी जो कोई नर गाता ।
उर आनन्द अति उमगे पाप उतर जाता ॥जय० ॥
स्थिर चर जगत बचावे कर्म प्रेर ल्याता ।
राम प्रताप मैया की शुभ दृष्टि पाता ॥जय० ॥

पुष्पाञ्जलिः – ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ।

प्रदक्षिणा- ॐ यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्यासमानि च ।
तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिणपदे पदे ॥

प्रार्थना- सुरासुरेन्द्रादिकिरीटमौक्तिकैर्युक्तं सदा यत्तवपादपंकजम्।
परावरं पातु वरं सुमंगलं नमामि भक्त्याखिलकामसिद्धये।
भवानि त्वं महालक्ष्मीः सर्वकामप्रदायिनी ।
सुपूजिता प्रसन्ना स्यान्महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥ २॥
या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः,
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः ।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा,
तां त्वां नताः स्मः परिपालय देवि विश्वम् ॥
मंत्र पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥
कृतेन अनेन पूजनेन महालक्ष्मीदेवी प्रीयताम् न मम ।

महामृत्युञ्जय प्रयोग विधिः

संकल्पः –

ॐ मम आत्मनः श्रुति स्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं अमुक यजमानस्य वा शरीरेऽमुकपीडा निरासद्वारा सद्यःआरोग्यप्राप्त्यर्थं श्रीमहामृत्युञ्जय देवता प्रीत्ये अमुकसंख्या परिमित श्री महामृत्युञ्जयमन्त्रजपमहं करिष्ये ।

विनियोगः –

ॐ अस्य श्रीमहामृत्युञ्जयमन्त्रस्य वामदेवकहोलवशिष्ठा ऋषयः पंक्तिगायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रो देवता ह्रीं शक्तिः श्रीं बीजं महामृत्युञ्जयप्रीतये ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः –

निम्न मंत्रों से सिर, हृदय, लिंग और चरणों का स्पर्श करना चाहिए।
पुनः वामदेवकहोलवशिष्ठऋषिभ्यो नमः । मूर्ध्नि ।
पंक्तिगायत्र्युनुष्टुपछन्दोभ्यो नमः वक्त्रे । सदाशिवमहामृत्युञ्जय रुद्रदेवतायै नमः, हृदि । ह्रीं शक्तये नमः लिंगे। श्रीबीजाय नमः पादयोः ।

करन्यासः –

ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा, अंगुष्ठाभ्यां नमः ।
ॐ हौं जूं सः भूर्भूवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्तयेमां जीवाय बद्ध, तर्ज्जनीभ्यां नमः ।
ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम् ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा, मध्यमाभ्यां नमः ।
ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्व्वारुकमिव बंधनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाल ह्रीं ह्रीं, अनामिकाभ्यां नमः ।
ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुस्साममन्त्राय, कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रायाय ज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष अघोर करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

हृदयादिन्यासः –

ॐ हौं जूं सः भूर्भुवःस्वः त्र्यम्बकम् ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा हृदयाय नमः ।
ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्तये मां जीवाय शिरसे स्वाहा ।
ॐ हौं जूं सः भुर्भूव सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम् ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा शिखायै वषट् ।
ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्व्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रीं ह्रीं कवचाय हुम् ।
ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋक्यजुस्साममन्त्राय नेत्रत्रयायवौषट् । ॐ हौं जूं सः भुर्भूवः स्व मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय ज्वल-ज्वल मां रक्ष-रक्ष अघोर अस्त्राय फट् ।

अक्षरन्यासः –

ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यं नमः पूर्वमुखे ।
ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः म्बं नमः पश्चिममुखे ॥
ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः कं नमः दक्षिणमुखे ।

ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः यं नमः उत्तरमुखे ॥
ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः जा नमः उरसि ।
ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः मं नमः कण्ठे ॥
ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः हें नमः मुखे ।
ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः सुं नमः नाभौ ॥
ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः गं नमः हृदि ।
ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः न्धिं नमः पृष्ठे ॥
ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः पुं नमः कुक्षौ ।
ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः ष्टिं नमः लिङ्गे ॥
ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः वं नमः गुदे ।
ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः र्धं दक्षिणोरुमूले ॥
ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः नं नमः वामोरुमूले ।
ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः उं नमः दक्षिणोरुमध्ये ।
ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः वां नमः बामोरुमध्ये ।
ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः रुं नमः दक्षिणजानुनि ॥
ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः कं नमः वामजानुनि ।
ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः मिं नमः दक्षिणजानुवृत्ते ॥
ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः वं नमः वामजानुवृत्ते ।
ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः बं नमः दक्षिणस्तने ।
ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः न्धं नमः वामस्तने ॥
ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः नात् नमः दक्षिणपार्श्वे ॥
ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः मृं नमः वामपार्श्वे ॥
ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः त्यों नमः दक्षिणपादे ।
ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः मुं नमः वामपादे ॥
ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः क्षीं नमः दक्षिणकरे ।
ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः यं नमः वाम करे ।
ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः मां नमः दक्षिणनासायाम् ॥
ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः मृं नमः वामनासायाम् ।
ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः तान्नमः मूर्द्धनि ॥

पदन्यासः –

त्र्यम्बकं शिरसि । यजामहे भ्रुवोः । सुगन्धिं नेत्रयोः । पुष्टिवर्धनं मुखे । उर्व्वारुक गण्डयोः । इव हृदये । बन्धनात् जठरे । मृत्यो मुक्षीय ऊर्वौ । मां जान्वोः । अमृतात् पादयोः ।

ध्यानम् :

हस्ताम्भोजयुगस्यकुम्भयुगलादुद्धृत्य तोयं सिरः,
सिञ्चन्तं करयोर्युगेन दधतं स्वाङ्के सकुम्भौ करौ ।
अक्षस्रङ्मृगहस्तमम्बुजगतं मूर्द्धस्थ चन्द्रस्रवत् -
पीयूषार्द्रतनुं भजे सगिरिजं त्र्यक्षं च मृत्युञ्जयम् ॥
चन्द्रोद्भासितमूर्द्धजंसुरपतिंपीयूषपात्रंवह-
द्धस्ताब्जेनदधत्सुदिव्यममलंहास्यास्यपङ्केरुहम्।
सूर्येन्द्वग्निविलोचनं करतलैः पाशाक्षसूत्रां कुशाम्
भोजं विभ्रतमक्षयं पशुपतिं मुत्युञ्जयं संस्मरेत्॥ इति ध्यात्वा॥

जपः

ॐ हौं जूं सः, ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् स्वः भुवः भूः ॐ । सः जूं हौं ॐ ।

महामृत्युञ्जय कवच

भैरव उवाच –

शृणुष्व परमेशानि कवचं मन्मुखोदितम् ।
महामृत्युञ्जयाख्यस्य न देयं परमाद्भुतम् ॥१॥
यं धृत्वा यं पठित्वा च श्रुत्वा च कवचोत्तमम् ।
त्रैलोक्याधिपतिर्भूत्वा सुखितोऽस्मि महेश्वरि ॥२॥
तदेववर्णयिष्यामि तव प्रीत्यावरानने ।
तथापि परमं तत्वं न दातव्यं दुरात्मने ॥३॥

अस्य श्रीमहामृत्युञ्जयकवचस्य भैरव ऋषिः । गायत्री छन्दः मृत्युञ्जयरुद्रो महादेवो देवता ॐ बीजं जूं शक्तिः सः कीलकम् । हौंइतितत्वं चतुर्वर्गसाधने विनियोगः ।

चन्द्रमण्डलमध्यस्ते रुद्रभाले विचिन्त्यते ।
तत्रस्थं चिन्तयेत् साध्यं मृत्युमाप्नोपि जीवति ॥१॥
ॐ जूं सः हौ शिरः पातु देवो मृत्युञ्जयो मम ।
ॐ श्री शिरो ललाटं च ॐ हौं भ्रुवो सदाशिवः ॥२॥
नीलकण्ठोऽवतान्नेत्रे कपर्दी मेऽवताच्छ्रुती ।
त्रिलोचनोऽवताद् गण्डौ नासा में त्रिपुरान्तकः ॥३॥
मुखं पीयूषघटमृदोष्ठौ में कृत्तिकाम्बरः ।
हनुं मे हाटकेशानो मुखं बटुक-भैरवः ॥४॥
कन्धरां कालमथनो गलं गण-प्रियोऽवतु ।
स्कन्दौ स्कन्दपिता पातु हस्तो में गिरिशोऽवतु ॥५॥
नखान् में गिरिजानाथः पादादङ्गुलि संयुतान् ।
स्तनौ तारापतिः पातुः वक्षः पशुपतिर्मम ॥६॥
कुक्षिं कुबेर-वरदः पार्श्वो में मारशासनः ।
सर्वः पातु तथा नाभिं शूली पृष्ठं ममावतु ॥७॥
शिश्नं में शङ्करः पातु गुह्यकं गुह्य-बल्लभः ।
कटिं कालान्तकः पायादुरूर्मेऽधकघातनः ॥८॥
जागरूकोऽवताज्जानू जङ्घौ में कालभैरवः ।
गुल्फौ पायाज्जटाधारी पादौ मृत्युञ्जयोऽवतु ॥९॥
पादादिमूर्धपर्यन्तमघोरः पातु मां सदा ।
शिरसः पादपर्यन्तं सद्योजातो ममावतु ॥१०॥
रक्षाहीनं नामहीनं वपुः पातु मृतेश्वरः ।
पूर्वे बलविकरणो दक्षिणे कालशासनः ॥११॥
पश्चिमे पार्वतीनाथो ह्युत्तरे मां मनोन्मनः ।
ऐशान्यामीश्वरः पायादाग्नेय्यामग्निलोचनः ॥१२॥
नैऋत्यां शम्भुरव्यान्मां वायव्यां वायुवाहनः ।
उर्ध्वे बलप्रमथनः पाताले परमेश्वरः ॥१३॥
दक्षदिक्षु सदा पातु महामृत्युञ्जयश्च माम् ।
रणे राजकुले द्यूते विषमे प्राणसंशये ॥१४॥
पायादोंजूं महारुद्रो देव-देवो दशाक्षरः ।
प्रभाते पातु मां ब्रह्मा मध्याह्ने भैरवोऽवतु ॥१५॥

सायं सर्वेश्वरः पातु निशायां दित्यचेतनः ।
अर्धरात्रे महादेवो निशान्ते मां महोमया ॥१६॥
सर्वदा सर्वतः पातु ओंजूंस ह्रीं मृत्यञ्जयः ।
इतीदं कवचं पुण्यं त्रिषु लोकेषु विश्रुतम् ॥१७॥
सर्वमन्त्रमयं गुह्यं सर्वतन्त्रेषु गोपितम् ।
पुण्यं पुण्यप्रदं दिव्यं देवदेवाधिदैवतम् ॥१८॥
य इदं च पठेन्मन्त्रं कवचं वाचयेत्ततः ।
तस्य हस्ते महादेवि त्र्यम्बकस्याष्टसिद्धयः ॥१९॥
रणे धृत्वा चरेद्युद्धं हत्वा शत्रून् जयं लभेत् ।
जपं कृत्वा गृहं देवि सम्प्राप्स्यति सुखं पुनः ॥२०॥
महाभये महारोगे महामारीभये तथा ।
दुर्भिक्षे शत्रु संहारे पठेद् कवचमादरात् ॥२१॥
सर्वं तत् प्रशमं याति मृत्युञ्जय-प्रसादतः ।
धनं पुत्रान् सुखं लक्ष्मीमारोग्यं सर्वसम्पदः ॥२२॥
प्राप्नोति साधकः सद्यो देवि सत्यं न संशय ।
इतीद कवचं पुण्यं महामुत्युञ्जयं तु यत् ॥२३॥
गोप्यं सिद्धिप्रदं गुह्यं गोपनीयं स्वयोनिवत् ।

शिवाथर्वशीर्षम्

ॐ देवाह वै सर्वगलोकमायंस्ते रुद्रमपृच्छन् को भवानिति । सोऽब्रवीदह मेकः प्रथममासोद्वर्तामि च भविष्यामि च नान्यः । कश्चिन् मत्तो व्यतिरिक्त इति । सोन्तरादन्तरं प्राविशद्दिशश्चान्तरं प्राविशत् सोऽहं नित्यानित्यो व्यक्ताव्यक्तो ब्रह्मा ब्रह्माहं प्राञ्चः प्रत्यञ्चोऽहं दक्षिणांच उदञ्चोऽहमधश्चो र्ध्वश्चाहं दिशश्च प्रतिदिशश्चाहं पुमानपुमान् स्त्रियश्चाहं सावित्र्यंहं गायत्र्यहं त्रिष्टुब् जगत्यनुष्टुप्चाहं छन्दोऽहं सत्योऽहं गार्हपत्यो दक्षिणाग्निरा हवनीयोऽहं गौरहं गोर्यहमृगहं यजुरहं सामाहमथर्वांगङ्गिरसोऽहं ज्योष्ठोऽहं श्रेष्ठोहं वरिष्ठोहं आपोऽहं तेजोऽहं गुह्योऽहमण्योऽहमक्षरमहं क्षरमहं पुष्करमहं पवित्रमहमुग्रंचवलिं च पुरस्ता ज्ज्योतिरित्यहमेव सर्वेभ्योमामेव सः सर्वः समायो मां वेद स देवान् वेद सर्वांश्च वेदान् साङ्गनपि ब्रह्माब्राह्मणैश्च गां

गोभिर्ब्राह्मणान् ब्राह्मणेन हविर्हविषा आयुरायुषा सत्यं सत्येन धर्मेण धर्मं तर्पयामि स्वने तेजसा । ततो हवै ते देवा रुद्रमपृच्छन् ते देवा रुद्रमपश्यन् ते देवा रुद्रमध्यायन् ते देवा ऊर्ध्ववाहवो रुद्रं स्तुवन्ति ॥१॥

यो वैः रुद्रः सः भगवान् यश्च ब्रह्मा तस्मै वे नमो नमः ॥१॥
यो वैः रुद्रः सः भगवान् यश्च विष्णुस्तस्मै वै नमो नमः ॥२॥
यो वै रुद्रः सः भगवान् यश्चस्कन्दस्तस्मै वै नमो नमः ॥३॥
यो वै रुद्रः सः भगवान् यश्चेन्द्रस्तस्मै वै नमो नमः ॥४॥
यो वै रुद्रः सः भगवान् यश्चाग्निस्तस्मै वै नमो नमः ॥५॥
यो वै रुद्रः सः भगवान् यश्चवायुस्तस्मै वै नमो नमः ॥६॥
यो वै रुद्रः सः भगवान् यश्चसूर्यस्तस्मै वै नमो नमः ॥७॥
यो वै रुद्रः सः भगवान् यश्चसोमस्तस्मै वै नमो नमः ॥८॥
यो वै रुद्रः सः भगवान् येऽष्टौ ग्रहास्तस्मै वै नमो नमः ॥९॥
यो वै रुद्रः सः भगवान् येचाष्टौप्रतिग्रहास्तस्मै वै नमो नमः ॥१०॥
यो वै रुद्रः सः भगवान् यश्चभूस्तस्मै वै नमो नमः ॥११॥
यो वै रुद्रः सः भगवान् यश्चभुवस्तस्मै वै नमो नमः ॥१२॥
यो वै रुद्रः सः भगवान् यश्चस्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥१३॥
यो वै रुद्रः सः भगवान् यश्चस्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥१४॥
यो वै रुद्रः सः भगवान् याचपृथिवीतस्मै वै नमो नमः ॥१५॥
यो वै रुद्रः सः भगवान् यश्चान्तरिक्षस्तस्मै वै नमो नमः ॥१६॥
यो वै रुद्रः सः भगवान् याचद्यौस्तस्मै वै नमो नमः ॥१७॥
यो वै रुद्रः सः भगवान् याश्चापस्तस्मै वै नमो नमः ॥१८॥
यो वै रुद्रः सः भगवान् यशश्चतेजस्तस्मै वै नमो नमः ॥१९॥
यो वै रुद्रः सः भगवान् यश्च कालस्तस्मै वै नमो नमः ॥२०॥
यो वै रुद्रः सः भगवान् यश्च यमस्तस्मै वै नमो नमः ॥२१॥
यो वै रुद्रः सः भगवान् यश्चमृत्युस्तस्मै वै नमो नमः ॥२२॥
यो वै रुद्रः सः भगवान् यश्चामृतं तस्मै वै नमो नमः ॥२३॥
यो वै रुद्रः सः भगवान् यश्चाकाशं तस्मै वै नमो नमः ॥२४॥
यो वै रुद्रः सः भगवान् यश्च विश्वं तस्मै वै नमो नमः ॥२५॥

यो वै रुद्रः सः भगवान् यश्च स्थूलं तस्मै वै नमो नमः ॥२६॥
यो वै रुद्रः सः भगवान् यश्च सूक्ष्मं तस्मै वै नमो नमः ॥२७॥
यो वै रुद्रः सः भगवान् यश्च शुक्लं तस्मै वै नमो नमः ॥२८॥
यो वै रुद्रः सः भगवान् यश्च कृष्णं तस्मै वै नमो नमः ॥२९॥
यो वै रुद्रः सः भगवान् यश्च कृत्स्नं तस्मै वै नमो नमः ॥३०॥
यो वै रुद्रः सः भगवान् यश्च सत्यं तस्मै वै नमो नमः ॥३१॥
यो वै रुद्रः सः भगवान् यश्च सर्वं तस्मै वै नमो नमः ॥३२॥

भूस्ते आदिर्मध्यं भुवस्ते स्वस्ते शीर्षं विश्वरूपोऽसि ब्रह्मै कस्त्वं द्विधा त्रिधा बृद्धिस्त्वं शान्तिस्त्वं पुष्टिस्त्वं हुतमहुतं दत्तमदत्तं सर्वमसर्वं विश्वमविश्वं कृतमकृतं परमपरं परायणञ्च त्वम् । अपामसोम ममृता अभूमागन्म ज्योतिरविदाम देवा देवान् । किं नूनमस्मान् कृणवदरातिः किमु धूर्तिरमृतं मर्त्यस्य सोमसूर्यपुरस्तात् सूक्ष्मः पुरुषः । सर्वं जगद्धितं वा एतदक्षरं प्राजापत्यं सौम्यं सूक्ष्मं पुरुषं ग्राह्यमग्राह्येण भावं भावेन सौम्यं सोम्येन सूक्ष्मं सूक्ष्मेण वायव्यं वायव्येन ग्रसति तस्मै महाग्रासाय वै नमो नमः । हृदिस्था देवताः सर्वा हृदि प्राणाः प्रतिष्ठिताः । हृदि त्वमसि यो नित्यं तिस्रो मात्राः परस्तु सः । तस्योत्तरतः शिरो दक्षिणतः पादौ य उत्तरतः स ओङ्कार यः ओङ्कार स प्रणवः यः प्रणवः स सर्वव्यापी यः सर्वव्यापी सोऽनन्तः योऽनन्तस्तत् तारं यत्तारं तच्छुक्लं यच्छुक्लं तत्सूक्ष्मं तद् वैद्युतम् यद्वैद्युतं तत्परं ब्रह्म यत् परं ब्रह्म स एकः य एकः स रुद्रः यो रुद्रः स ईशानः यः ईशानः स भगवान् महेश्वरः ॥३॥

अथ कस्मादुच्यते ओङ्कार । यस्मादुच्चार्यमाण एव प्राणानूर्ध्वमुत्क्रामयति तस्मादुच्यते ओङ्कारः । अथ कस्मादुच्यते प्रणवः यस्मादुच्चार्यमाण एव ऋग्यजुः सामथर्वाङ्गिरसं ब्रह्म ब्राह्मणेभ्यः प्रणामयति नामयति च तस्मादुच्यते प्रणवः । अथ कस्मादुच्यते सर्वव्यापी यस्मादुच्चर्यमाण एव यथा स्नेहेन पललपिण्डमिव शान्तरूपमोतप्रोतमनुप्राप्तोव्यतिषक्तश्च तस्मादुच्यते सर्वव्यापी ।

अथ कस्मादुच्यतेऽनन्तः यस्मादुच्चार्यमाण एव तिर्यगूर्ध्व मधस्ताच्चास्यान्तो नोपलभ्यते तस्मादुच्यतेऽनन्तः । अथ कस्मादुच्यते तारं यस्मादुच्चार्यमाण एव गर्भजन्मव्याधिजरामरण-संसारमहाभयात्तारयति त्रायते च तस्मादुच्यते तारम । अथ कस्मादुच्यते शुक्लम् यस्मादुच्चार्यमाण एव क्लन्दते क्लामयति च तस्मादुच्यते शुक्लम् । अथ कस्मादुच्यते सूक्ष्मं यस्मादुच्चार्यमाण एव सूक्ष्मो भूत्वा शरीराण्यधितिष्ठति सर्वाणि चाङ्गान्यभिमृश्यति तस्मादुच्यते सूक्ष्मम् । अथ कस्मादुच्यते वैद्युतम् । यस्मादुच्चार्यमाण एव व्यक्ते महति तपसि द्योतयति तस्मादुच्यते वैद्युतम् । अथ कस्मादुच्यते परं ब्रह्म यस्मात् परमपरं परायणञ्च बृहद् बृंहत्या बृहयति तस्मादुच्यते परं ब्रह्म । अथ कस्मादुच्यते एकः यः सर्वान् प्राणान् सम्भक्ष्य सम्भक्षणेनाजः संसृजति विसृजति तीर्थमेकं व्रजन्ति तीर्थमेके दक्षिणाः प्रत्यञ्च उदञ्चः प्राञ्चोऽभिव्रजत्येके तेषां सर्वेषामिह सङ्गतिः साकं स एको भूदन्तश्चरति प्रजानां तस्मादुच्यते एकः । अथ कस्मादुच्यते रुद्रः । यस्मादृषिभिर्नान्यैभक्तैर्द्रुतमस्य रूपमुलभ्यते तस्मादुच्यते रुद्रः । अथ कस्मादुच्यते ईशानः यः सर्वान् देवानीशते ईशानीभिर्जननीभिश्च शक्तिभिः। अभित्वा शूरनोनुमोवा दुग्धा इव धेनवः ईशानमस्य जगतः स्वर्गदृशमीशानमिन्द्रतस्थुष इति तस्मादुच्यते ईशानः ।

अथ कस्मादुच्यते भगवान् महेश्वरः यस्माद् भक्तान् ज्ञानेन भजत्यनुगृह्णाति च वाचं संसृजति विसृजतिच स सर्वान् भावान् परित्यज्यात्मज्ञानेन योगैश्वर्येण महति महीयते तस्मादुच्यते भगवान् महेश्वरः । तदेतद् रुद्रचरितम् ॥४॥

एषो ह देवःप्रदिशोऽनुसर्वाः पूर्वो हि जातः स उ गर्भे अन्तः । स एव जातः स जनिष्यमाणः प्रत्यङ्जना स्तिष्ठति सर्वतो मुखः । एको रुद्रो न द्वितीयाय तस्मै यः इमांल्लोकानीशत ईशनीभिः । प्रत्यङ्जना स्तिष्ठति चान्तकाले संसृज्य विश्व भुवनानि गोप्ता । यो योनिं योनिमधितिष्ठत्येको यनेदं सर्वे विचरति सर्वम् ।

तमीशानं वरदं देवमीढ्यं निचाय्येमां शान्तिमयन्तमेति । क्षमां हित्वा हेतुजालस्य मूलं बुद्ध्या सञ्चितं स्थापयित्वा तु रुद्रे । रुद्रमेकत्वमाहुः शास्वतं वै पुराणमिषमूर्जेण पशवो नुनामयन्तं मृत्युपाशात् ।

तदेने नात्मन्नेते नार्धचतुर्थेन मात्रेण शान्तिं संसृजति पशु पाशविमोक्षणं । या सा प्रथमा मात्रा ब्रह्मदेवत्या रक्तवर्णेन यस्तान्ध्यायते नित्यं स गच्छेद् ब्रह्मपदम् । या सा द्वितीया मात्रा विष्णुदेवत्या कृष्णवर्णेन यस्तान्ध्यायते नित्यं स गच्छेद्वैष्णवं पदम् । या सा तृतीया मात्रा ईशानदेवत्या कपिलावर्णेन यस्तान्ध्यायते नित्यं स गच्छेदैशानं पदम् । या सार्ध चतुर्थी मात्रा सर्वदेवत्या व्यक्तीभूता खं विचरति शुद्धा स्फटिकसन्निभा वर्णेन यस्तां ध्यायते नित्यं स गच्छेत् पदमनामयम् ।

तदेतदुपासीत मुनयो वाग् वदन्ति न तस्य ग्रहणमयं पन्था विहित उत्तरेण येन देवा यान्ति येन पितरो येन ऋषयः परमपरं परायणं चेति ।

वालाग्रमात्रं हृदयस्य मध्ये विश्वं देवं जातरूपं वरेण्यम् ।
तमात्मस्थं येन पश्यन्ति धीरास्तेषां शान्तिर्भवति नेतरेषाम् ॥
यस्मिन् क्रोधं याञ्च तृष्णां क्षमाञ्चाक्षमां हित्वा हेतुजालस्यमूलम् ।
बुद्ध्या सञ्चितं स्थापयित्वा तु रुद्रमेकत्वमाहुः ।

रुद्रो हि शाश्वतेन वै पुराणेनेषमूर्जेण तपसा नियन्ताग्निरिति भस्म वायुरिति भस्म जलमिति भस्म व्योमेति भस्म सर्वं हवा ।

इदं भस्म मम एतानि चक्षूंषि यस्मादव्रतमिदं पाशुपतं यद् भस्म नाङ्गानि संस्पृशेत् । तस्माद् ब्रह्म तदेतत् पाशुपतं पशुपाशविमोक्षणाय ॥५॥

योऽग्नौ रुद्रो योऽप्स्वन्तर्य ओषधीर्वीरुध आविवेश । य इमा विश्वा भुवनानि चक्लृपे तस्मै रुद्राय नमोऽस्त्वग्नये । यो रुद्रोऽग्नौ यो रुद्रोऽपस्वन्तर्यो रुद्र ओषधीर्वीरुध, आविवेश । यो रुद्र इमा विश्वा भुवनानि चक्लृपे तस्मै रुद्राय वै नमो नमः। यो रुद्रोऽप्सु यो रुद्र औषधीषु यो रुद्रो वनस्पतिषु । येन रुद्रेण जगदूर्ध्वं धारितं

पृथिवी द्विधा । त्रिया धर्ता धरीता नागा येऽन्तरीक्षे तस्मै रुद्राय वै नमो नमः । मूर्धानमस्मै संसेव्योऽप्यथर्वा हृदयञ्च यत् । मस्सिकादूर्ध्व प्रेरयष्वमानोऽधीशीर्षतः तद्वा अथर्वणः शिरो देवनोशः समुज्झितः । तत् प्राणोऽभिरक्षति शिरोऽन्तमथो मनः । न च दिवो देवयनेन गुप्ता न चान्तरिक्षाणि न च भूम इमाः । यस्मिन्निदं सर्वमतो प्रोतं तस्मादन्यपरं किञ्च नास्ति । न तस्मात्र पूर्वमपरं तदस्ति न भूतं नोत भव्यं यदासीत् । सहस्त्रपादेकमूर्ध्वा व्याप्त स एबेदमावरीवर्ति भूतम् । अक्षरात् सञ्जायते कालः कालद् व्यापक रुच्यते । व्यापको हि भगवान् रुद्रो भागाय मानो यदा शेते रुद्रस्तदा संहार्यते प्रजाः । उच्छ्वसिते तमो भवति तमस आपो स्वङ्गुल्याा मथितं मथिते शिशिरे शिशिरं मध्यमान फेनं भवतिनादण्डं भवत्यण्डाद् ब्रह्मा भवति ब्रह्मणो वायुः वायोरोङ्कारः ओङ्कारात्सावित्री सावित्र्या गायत्री गायत्र्या लोका भवन्ति । अचयन्ति जपः सत्यं मधु क्षरन्ति यद् धुवम् । एतद्धि परमं तमः आपोज्योतिरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों नम इतिः ॥६॥

यो इदमथर्वणशिरो ब्राह्मेऽधीते । अश्रोत्रियः श्रोत्रियो भवति । अनुपनीत उपनीतो भवति ।

सोऽग्निपूतो भवति । स वायुपूतो भवति । स सूर्यपूतो भवति । स सोमपूतो भवति । सत्यपूंतो भवति ।

सर्वेर्देवैर्ज्ञातो भवति । सर्वैर्वेदैरनुध्यातो भवति । सर्वेषु तीर्थेषु स्नातो भवति । तेन सर्वैः क्रतुभिरिष्टं भवति ।

गायत्र्याः षष्टिसंहस्त्राणि जप्तानि भवन्ति । प्रढवानामयुतजप्तं भवति ।

चक्षुषः पंक्ति पुनाति । आसप्तमात् पुरुषपुगान् पुनातीत्याह भगवानवथर्वशिरः सकृज्जप्त्वैव शुचिः स पूतः कर्मण्यो भवति ।

द्वितीयं जप्त्वा गणाधिपमयमाप्नोति तृतीयं जप्त्वैववेवानुप्रविशत्यों सत्यम् । इत्यथर्ववेदाशिवाथर्वशीर्षम् ।

(इति उर उपनिषत्) ॥१२॥

अमोघ मृत्युञ्जय स्तोत्रम्

इसके महात्म्य से एक कथा सम्बन्धित है जो इस प्रकार है—

मृकुण्ड मुनि सन्तानहीन थे इससे वह चिंतित रहते थे । मुनि और उनकी पत्नी दोनों ने भगवान् शिव की साधना की । शिव प्रसन्न हुये और पुत्र प्राप्ति के वरदान देने के साथ एक शर्त भी रख दी कि यदि तेजस्वी, बुद्धिमान ज्ञानी और चरित्रवान् पुत्र चाहते हो तो वह केवल १६ वर्ष की अल्प आयु तक ही जीवित रह सकेगा । अज्ञानी और चरित्रहीन पुत्र होने पर पूर्ण आयु को प्राप्त होगा । मुनि ने गुण सम्पन्न पुत्र को ही प्राथमिकता दी । शिव ने वरदान दिया और मुनि को एक सुन्दर पुत्र हुआ ।

पुत्र सर्वगुण सम्पन्न था । धीरे-धीरे उसकी शिक्षा चलती रही। वह घड़ी भी आ पहुंची जो शङ्कर ने बालक की आयु निश्चित की थी । मुनि चिंतित हो गये । पुत्र ने कारण पूछा । मुनि ने उसे पूर्ण जानकारी दी पुत्र को अपनी साधना पर विश्वास था । उसने कहा कि मैं भगवान् मृत्युञ्जय आशुतोष को प्रसन्न करूँगा और पूर्ण आयु को प्राप्त करूँगा ।

माता पिता की सहमति से मार्कण्डेयजी विधि-पूर्वक साधना करने लगे । शिवलिंग की पूजा के बाद वह श्रद्धा से मृत्युञ्जय स्तोत्र का पाठ करते । शिव प्रसन्न हुए ।

सोलहवें वर्ष का अन्तिम दिन आने पर स्वभाविक रूप से काल उसके प्राणों को लेने के लिए आ गए । मार्कण्डेय ने स्तोत्र को पूर्ण करने का आग्रह किया । काल के गर्व ने ऐसी आज्ञा नहीं दी और वह उसके प्राणों को हरण करने के लिए उद्यत हुए । इतने पर भक्त को बचाने के लिए शङ्कर लिंग से प्रकट हो गये और काल पर प्रहार किया मार्कण्डेय अपने स्तोत्र का पाठ करते रहे । काल शङ्कर से भयभीत होकर चले गये और भगवान् शंकर ने स्तोत्र की समाप्ति पर मार्कण्डेय को अमरता का वरदान दिया । वे वास्तव में अमर हो गये । पद्मपुराण की इस माहात्म्य कथा का वर्णन करते हुए वशिष्ठ जी ने कहा कि मार्कण्डेय रचित मृत्युंजय

स्तोत्र का जो साधक श्रद्धा और विश्वास से पाठ करता है, वह मृत्यु से निर्भय हो जाता है ।

अनेकों साधकों के अनुभव से यह अत्यन्त प्रभावशाली सिद्ध हुआ है । इससे अद्भुत लाभ होते देखे गये हैं । रोग निवृत्ति के लिए इसको प्रयोग किया जाता है । स्तोत्र इस प्रकार है -

रत्नसानुशरासनं रजतादिशृंङ्गनिकेतनं
शिंजिनीकृतपन्नगेश्वर मच्युतानलसायकम् ।
क्षिप्रदग्धपुरत्रयं त्रिदशालयैरभिवन्दितं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥१॥
पञ्चपादपपुष्पगन्धिपदाम्बुजद्वयशोभितं
भाललोचनजातपावकदग्धमन्मथ विग्रहम् ।
भस्मदिग्धकलेवरं भवनाशिनं भवमव्ययं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥२॥
मत्तवारणमुख्यचर्मकृतोत्तरीयमनोहरं
पङ्कजासनपद्मलोचनपूजिताङ्घ्रिसरोरुहम् ।
देवसिद्धतरङ्गिणीकरसिक्तशीतजटाधरं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥३॥
कुण्डलीकृत कुण्डलीश्वरकुण्डलं वृषवाहनं
नारदादिमुनीश्वरस्तुतवैभवं भुवनेश्वरम् ।
अन्धकान्तकमाश्रितामरपादपं शमनान्तकं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥४॥
यक्षराजसखं भगाक्षिहरं भुजङ्गविभूषणं
शैलराजसुतापरिष्कृतचारुवामकलेवरम् ।
क्ष्वेडनीलगलं परश्वधधारिणं मृगधारिणं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥५॥
भेषजं भवरोगिणामखिलापदापहारिणं
दक्षयज्ञविनाशिनं त्रिगुणात्मकं त्रिविलोचनम् ।
भुक्तिमुक्तिफलप्रदं निखिलाघसंघनिवर्हणं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥६॥
भक्तवत्सलमर्चतां निधिमक्षयं हरिदम्बरं

सर्वभूतपतिं परात्परमप्रमेयमनुपमम् ।
भूमिवारिनभोहुताशनसोमपालितस्वाकृतिं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥७॥
विश्वसृष्टिविधायिनं पुनरेव पालनतत्परं
संहरन्तमथ प्रपञ्चमशेषलोकनिवासिनम् ।
क्रीडयन्तमहर्निशं गणनाथयूथसमावृत्तं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥८॥
रुद्रं पशुपतिं स्थाणुं नीलकण्ठमुमापतिम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥९॥
कालकण्ठं कलामूर्तिं कालाग्निं काल नाशनम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥१०॥
नीलकण्ठं वीरूपाक्षं निर्मलं निरुपद्रवम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥११॥
वामदेवं महादेवं लोकनाथं जगद्गुरुम् ।
नमामि शिरसा देवं कि नो मृत्युः करिष्यति ॥१२॥
अनन्तमव्ययं शान्तमक्षमालाधरं हरम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युःकरिष्यति ॥१३॥
आनन्दं परमं नित्यं कैवल्यपदकारणम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥१४॥
स्वर्गापवर्गदातारं सृष्टिस्थित्यन्तकारिणम् ।
नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥१५॥

।। अथ वटुक भैरव मंत्र प्रयोग विधिः ।।

मम अमुकमंत्रसिद्ध्यर्थं लक्षसंख्यात्मकजप (अथवा एकविंश तिलक्षात्मकजप) रूपपुरश्चरणमहं करिष्ये।। इति संकल्प्य ।।

तद्यथा - अस्य श्रीवटुकभैरवमंत्रस्य बृहदारण्य ऋषिः । अनुष्टुप्छन्दः । श्रीवटुकभैरवो देवता। ह्रीं बीजम् । ह्रीं शक्तिः । ॐ कीलकम् । श्रीवटुकभैरवप्रीतये जपे विनियोगः ।

ॐ बृहदारण्यऋषये नमः शिरसि ।।१।। अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे ।।२।। श्रीवटुकभैरवदेवतायै नमः हृदि ।।३।। ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये ।। ४ ।। ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ।।५।। ॐ कीलकाय नमः नाभौ ।।६।। विनियोगाय नमः सर्वांगे ।।७।। इति ऋष्यादिन्यासः ।।

ॐ ह्रीं वौं ईशानाय नमः अंगुष्ठयोः ।।१।। ॐ हैं वैं तत्पुरुषाय नमः तर्जन्योः ।।२।। ॐ हूं वूं अघोराय नमः मध्यमयोः ।।३।। ॐ ह्रीं वीं वामदेवाय नमः अनामिकयोः।।४।। ॐ ह्रां वां सद्योजाताय नमः कनिष्ठिकयोः ।।५।। इति करन्यासः ।।

ॐ ह्रौं वौं ईशानाय ऊर्ध्ववक्त्राय नमः शिरसि ।।१।। ॐ हैं वैं तत्पुरुषाय पूर्ववक्त्राय नमः मुखे ।।२।। ॐ हूं वूं अघोराय नमः हृदये ।।३।। ॐ ह्रौं वीं वामदेवाय नमः गुह्ये ।।४।। ॐ ह्रां वां सद्योजाताय नमः पादयोः ।।५।। इति पंचब्रह्ममंत्रन्यासः ।।

ॐ ह्रां वां हृदयाय नमः।।१।। ॐ ह्रीं वीं शिरसे स्वाहा ।।२।। ॐ हूं वूं शिखायै वषट् ।।३।। ॐ हैं वैं कवचाय हुम् ।।४।। ॐ ह्रौं वौं नेत्रत्रयाय वौषट् ।।५।। ॐ हौं वः अस्त्राय फट् ।।६।।

इति हृदयादिषडंगन्यासः ।।

ततः ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट् इत्यस्त्रमंत्रेण तालैस्छोटिकाभिर्वा दशदिग्बंधनं कृत्वा ध्यायेत् ।।

।। अथ ध्यानम् ।।

ॐ शुद्धस्फटिकसंकाशं सहस्रादित्यवर्चसम्।
नीलजीमूतसंकाशं नीलांजनसमप्रभम् ।।१।।

अष्टबाहुं त्रिनयनं चतुर्बाहुं द्विबाहुकम् ।
दंष्ट्राकरालवदनं नूपुरारावसंकुलम् ।।२।।
भुजंगमेखलं देवमग्निवर्णशिरोरुहम् ।
दिगम्बरं कुमारेशं वटुकाख्यं महाबलम् ।।३।।
खड्गमसिपाशं च शूलं दक्षिणभागतः।
डमरूं च कपालं च वरदं भुजगं तथा ।
अग्निवर्णसमोपेतं सारमेयसमन्वितम् ।।४।।

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूजयेत्।।

ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले लिंगतोभद्रमण्डले वा मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः पद्धतिमार्गेण संस्थाप्य- ॐ मं मंडूकादिपरतत्वांतपीठदेवताभ्यो नमः इति संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् ।

तद्यथा - पूर्वादिक्रमेण ॐ वां वामायै नमः ।।१।। ॐ ज्यें ज्येष्ठायै नमः ।।२।। ॐ रौं रौद्र्यै नमः।।३।। ॐ कां काल्यै नमः ।।४।। ॐ कं कलविकरण्यै नमः ।। ॐ बं वलविकरण्यै नमः।।६।। ॐ बं वलप्रमथिन्यै नमः ।।७।। ॐ सं सर्वभूतदमन्यै नमः ।।८।। मध्ये ॐ मं मनोन्मन्यै नमः ।।९।। इति पूजयेत् ।।

ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोध्य ततः शक्तिगंधोष्टकेन यंत्रं विलिख्य ''ॐ नमो भगवते वटुकाय सकलगुणात्मशक्तियुक्ताय अनंताय योगपीठात्मने नमः।।'' इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य आवाहनादिषोडशोपचारैः संपूज्य देवाज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् ।। तथा च - पुष्पांजलिमादाय ।।

''ॐ संचिन्मय परो देवः परामृतरसप्रियः।
अनुज्ञां देहि वटुक परिवारार्चनाय मे ।। १।।

इत्युक्ता पुष्पांजलिं भैरवोपरि दत्त्वा । आज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजामारभेत ।। अत्र सर्वत्र पूज्यपूजकयोरन्तराले प्राचीं तदनुसारेण अन्या दिशःप्रकल्प्य आवरणदेवतां पूजयेत् ।। ततो दक्षिणहस्ते

तर्जन्यंगुष्ठाभ्यां गन्धाक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा देवस्यांगे आग्नेय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च —

ॐ ह्रां वां हृदयाय नमः हृदय श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ इति सर्वत्रोच्चरेत् ॥१॥ ॐ ह्रीं वीं शिरसे स्वाहा शिरः श्रीपा०॥२॥ ॐ ह्रूं वूं शिखायै वषट् शिखाश्रीपा० ॥३॥ ॐ ह्रैं वैं कवचाय हुम् कवचश्रीपा०॥४॥ ॐ ह्रौं वौं नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रत्रयश्रीपा०॥५॥ ॐ ह्रः वः अस्त्राय फट् अस्त्रश्रीपा०॥६॥ इति षडंगानि पूजयेत् ॥ ततः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य्य

"ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥१॥

अनेन प्रथमा वरणदेवतापूजनेन भगवान वटुक भैरवः प्रीयताम् न मम इति प्रथमावरणम् ॥ १॥

ततः कर्णिकाद्वहिःअष्टदले प्राच्यादिक्रमेण — ॐ ह्रीं आं असितांगभैरवाय नमः असितांगभैरवश्रीपा०॥१॥ ॐ ह्रीं ईं रुरुभैरवाय नमः रुरुभैरवश्रीपा०॥२॥ ॐ ह्रीं ऊं चण्डभैरवाय नमः चण्डभैरवश्रीपा०॥३॥ ॐ ह्रीं ॠं क्रोधभैरवाय नमः क्रोधभैरवश्रीपा०॥४॥ ॐ ह्रीं ऌं उन्मत्तभैरवाय नमः उन्मत्तभैरवश्रीपा०॥५॥ ॐ ह्रीं ऐं कपालभैरवाय नमः कपालभैरव-श्रीपा०॥६॥ ॐ ह्रीं ओं भीषणभैरवाय नमः भीषणभैरवश्रीपा०॥७॥ ॐ ह्रीं अं संहारभैरवाय नमः संहारभैरवश्रीपा० ॥८॥ इत्यष्टौ भैरवान्संपूज्य त्रिकोणे पूर्वादिकोणेषु । ॐ सत्त्वाय नमः॥१॥ ॐ रजसे नमः ॥२॥ ॐ तमसे नमः ॥३॥ इति त्रिगुणान् संपूज्य पुष्पाञ्जलिं च दद्यात् ॥

"ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥२॥

अनेन द्वितीया वरणदेवतापूजनेन भगवान वटुक भैरवः प्रीयताम् न मम इति द्वितीयावरणम् ॥२॥

त्रिकोणाद्वहिः षट्कोणे पूर्वादिक्रमेण । ॐ ह्रीं भूतनाथाय नमः भूतनाथश्रीपा०॥१॥ ॐ ह्रीं आदिनाथाय नमः आदिनाथश्रीपा०॥२॥ ॐ ह्रीं आनंदनाथाय नमः आनंदनाथश्रीपा०॥३॥ ॐ ह्रीं

सिद्धशाबरनाथाय नमः सिद्धशाबरनाथश्रीपा० ॥४॥ ॐ ह्रीं सहजानन्दनाथाय नमः सहजानन्दनाथश्रीपा०॥५॥ ॐ ह्रीं निःसीमानन्दनाथायनमः निःसीमानन्दनाथश्रीपा०॥६॥ इति संपूज्य पुष्पाञ्जलिं च दद्यात् ॥

"ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ॥३॥

अनेन तृतीय वरणदेवतापूजनेन भगवान वटुक भैरवः प्रीयताम् न मम । इति तृतीयावरणम् ॥३॥

ततो वर्तुले पूर्वादिक्रमेण ॐ ह्रीं डाकिनीपुत्रेभ्यो नमः डाकिनीपुत्रश्रीपा०॥१॥ ॐ ह्रीं राकिनीपुत्रेभ्यो नमः राकिनीपुत्रश्रीपा०॥२॥ ॐ ह्रीं लाकिनीपुत्रेभ्यो नमः लाकिनीपुत्रश्रीपा०॥३॥ ॐ ह्रीं काकिनीपुत्रेभ्यो नमः काकिनी पुत्रश्रीपा० ॥४॥ ॐ ह्रीं शाकिनीपुत्रेभ्यो नमः शाकिनीपुत्रश्रीपा०॥५॥ ॐ ह्रीं हाकिनीपुत्रेभ्यो नमः हाकिनीपुत्रश्रीपा०॥६॥ ॐ ह्रीं याकिनीपुत्रेभ्यो नमः याकिनीपुत्रश्रीपा०॥७॥ ॐ ह्रीं देवीपुत्रेभ्यो नमः देवीपुत्रश्रीपा०॥८॥ देवदक्षिणतः॥ ॐ ह्रीं उमापुत्रेभ्यो नमः उमापुत्रश्रीपा० ॥९॥ ॐ ह्रीं रुद्रपुत्रेभ्यो नमः रुद्रपुत्रश्रीपा० ॥१०॥ ॐ ह्रीं मातृपुत्रेभ्यो नमः मातृपुत्रश्रीपा०॥११॥ पश्चिमनैर्ऋत्ययोर्मध्ये ॐ ह्रीं ऊर्ध्वमुखीपुत्रेभ्यो नमः ऊर्ध्वमुखीपुत्रश्रीपा०॥१२॥ पूर्वेशानयोर्मध्ये — ॐ ह्रीं अधोमुखीपुत्रेभ्यो नमः अधोमुखीपुत्रश्रीपा० ॥१३॥ इति त्रयोदशपुत्रवर्गान् पूजयेत् ॥ ततः पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा

"ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम् ॥४॥

अनेन चतुर्था वरणदेवतापूजनेन भगवान वटुक भैरवः प्रीयताम् न मम । इति चतुर्थावरणम् ॥४॥

वर्तुलाद्वहिः पूर्वाद्यग्नेयांतं क्रमेण वामावर्तेन च पूर्वे ॐ ह्रीं ब्रह्माणीपुत्रवटुकाय नमः ब्रह्माणीपुत्रवटुकश्रीपा०॥१॥ ऐशान्ये । ॐ ह्रीं माहेश्वरीपुत्रवटुकाय नमः माहेश्वरीपुत्रवटुकश्रीपा०॥२॥ उत्तरे । ॐ ह्रीं वैष्णवीपुत्रवटुकाय नमः वैष्णवीपुत्रवटुकश्रीपा०॥३॥ वायव्ये ।

ॐ ह्रीं कौमारीपुत्रवटुकायः नमः कौमारीपुत्रवटुकश्रीपा० ॥४॥ पश्चिमे- इन्द्राणीपुत्रवटुकाय नमः इन्द्राणीपुत्रवटुकश्रीपा० ॥५॥ नैर्ऋत्ये- ॐ ह्रीं महालक्ष्मीपुत्रवटुकाय नमः महालक्ष्मीपुत्रवटुकश्रीपा० ॥६॥ दक्षिणे- ॐ ह्रीं वाराहीपुत्रवटुकाय नमः वाराहीपुत्रवटुकश्रीपा० ॥७॥ आग्नेये- ॐ ह्रीं चामुण्डापुत्रवटुकाय नमः चामुण्डापुत्रवटुकश्रीपा० ॥८॥ इत्यष्टौ मातृपुत्रवटुकान् पूजयेत् ॥ ततः पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा मूलमुच्चार्य

अभीष्टसिद्धिं में देहि शरणागतवत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पंचमावरणार्चनम् ॥४॥

अनने पंचमा वरणदेवतापूजनेन भगवान वटुक भैरवः प्रीयताम् न मम । इति पंचमावरणम् ॥५॥

अष्टदलाद्बहिः चतुरस्त्राभ्यंतरे इंद्रादिक्रमेण प्राचीं प्रकल्प्य पूर्वादिदशदिक्षु च पूर्वे- ॐ ह्रीं हेतुकाय नमः हेतुकश्रीपा० पूज० ॥१॥ आग्नेये - ॐ ह्रीं त्रिपुरान्तकाय नमः त्रिपुरान्तकश्रीपा० ॥२॥ दक्षिणे- ॐ ह्रीं वैतालाय नमः वैतालश्रीपा० ॥३॥ नैर्ऋते- ॐ ह्रीं अग्निजिह्वाय नमः अग्निजिह्वाश्रीपा० ॥४॥ पश्चिमे - ॐ ह्रीं कालान्तकाय नमः कालांतकश्रीपा० ॥५॥ वायव्ये - ॐ ह्रीं करालाय नमः करालश्रीपा० ॥६॥ उत्तरे - ॐ ह्रीं एकपादाय नमः एकपादश्रीपा० ॥७॥ ऐशान्ये - ॐ ह्रीं भीमरूपाय नमः भीमरूपश्रीपा० ॥८॥ इन्द्रेशानयोर्मध्ये - ॐ ह्रीं अचलाय नमः अचलश्रीपा० ॥९॥ नैर्ऋत्यदक्षिणयोर्मध्ये - ॐ ह्रीं हाटकेशाय नमः हाटकेशश्रीपा० ॥१०॥ इति हेतुकादीन् दशवटुकान् पूजयेत् ॥ ततः पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा मुलमुच्चार्य

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठावरणार्चनम् ॥६॥

अनेन षष्ठा वरणदेवतापूजनेन भगवान वटुक भैरवः प्रीयताम् न मम । इति षष्ठावरणम् ॥६॥

तत्र त्रिरेखात्मकभूपुरस्य प्रथमरेखायां दिग्विदिगंतरालेषु षोडशस्थानेषु श्रीकंठादिमहासेनांतान्यजेत् ॥ तत्र क्रमः ॥ पूर्वे — ॐ ह्रीं अं श्रीकंठेशपूर्णोदरीभ्यां नमः श्रीकंठेशपूर्णोदरीश्रीपा० ॥१॥ दक्षिणे—

ॐ ह्रीं आं अनंतेशविरजाभ्यां नमः अनंतेशविरजाश्रीपा० ॥२॥ पश्चिमे— ॐ ह्रीं इं सूक्ष्मेशशाल्मलीभ्यां नमः सूक्ष्मेशशाल्मलीश्रीपा० ॥३॥ उत्तरे— ॐ ह्रीं ईं त्रिमूर्तीशलोलाक्षीभ्यां नमः त्रिमर्तीशलोलाक्षीश्रीपा० ॥४॥ आग्नेय्याम् — ॐ ह्रीं उं अमरेशवर्तुलाक्षीभ्यां नमः अमरेशवर्तुलाक्षीश्रीपा० ॥५॥ नैर्ऋत्ये — ॐ ह्रीं ऊं अर्धीशदीर्घघोणाभ्यां नमः अर्धीशदीर्घघोणाश्रीपा० ॥६॥ वायव्ये— ॐ ह्रीं ऋं भारभूतीशदीर्घमुखीभ्यां नमः भारभूतीशदीर्घमुखीश्रीपादुकां पू० ॥७॥ ऐशान्ये— ॐ ह्रीं ॠं अतिथीशगोमुखीभ्यां नमः अतिथीशगोमुखीश्रीपा० ॥८॥ पूर्वाग्निमध्ये— ॐ ह्रीं लृं स्थाण्वीशदीर्घजिह्वाभ्यां नमः स्थाण्वीशदीर्घजिह्वाश्रीपा० ॥९॥ दक्षिणनैर्ऋत्यमध्ये— ॐ ह्रीं लॄं हरेशकुण्डोदरीभ्यां नमः हरेशकुण्डोदरीश्रीपा० ॥१०॥ पश्चिमवायुमध्ये— ॐ ह्रीं ऐं झिंटीशोर्ध्वकेशीभ्यां नमः झिंटीशोर्ध्वकेशीश्रीपा० ॥११॥ उत्तरेशानमध्ये — ॐ ह्रीं ऐं भौतिकेशविकृतमुखीभ्यां नमः भौतिकेशविकृतमुखीश्रीपा० ॥१२॥ अग्निदक्षिणमध्ये — ॐ ह्रीं ओं सद्योजातेशज्वालामुखीभ्यां नमः सद्योजातेशज्वालामुखीश्रीपा० ॥१३॥ निर्ऋतिवरुणमध्ये— ॐ ह्रीं औं अनुग्रहेशोल्कामुखीभ्यां नमः अनुग्रहेशोल्कामुखीश्रीपा० ॥१४॥ वायुसोममध्ये—ॐ ह्रीं अं अक्रूरेशश्रीमुखीभ्यां नमः अक्रूरेशश्रीमुखीश्रीपा० ॥१५॥ ईशानपूर्वमध्ये— ॐ ह्रीं अः महासेनेशंविद्यामुखीभ्यां नमः महासेनेशविद्यामुखीश्रीपा० ॥१६॥ इति पूजयेत्॥ ततः पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा मूलमुच्चार्य

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम् ॥७॥

अनेन सप्तमा वरणदेवतापूजनेन भगवान वटुक भैरवः प्रीयताम् न मम । इति सप्तमावरणम् ॥७॥

ततो भूपुरस्य द्वितीयरेखायां दिग्विदिगंतरालेषु षोडशस्थानेषु क्रोधी श्वराद्यषोडशांतान् पूजयेत् ॥ तत्र क्रमः । पूर्वे । ॐ ह्रीं कं क्रोधीशमहाकालीभ्यां नमः क्रोधीशमहाकालीश्रीपा० ॥१॥ दक्षिणे— ॐ ह्रीं खं चंडीशसरस्वतीभ्यां नमः चंडीशसरस्वतीश्रीपा० ॥२॥

पश्चिमे— ॐ ह्रीं गं पंचान्तकेशसर्वसिद्धिगौरीभ्यां नमः पंचान्तकेश-सर्वसिद्धिगौरीश्रीपा०॥ उत्तरे — ॐ ह्रीं घं शिवोत्तमेशत्रैलोक्यविजयाभ्यां नमः शिवोत्तमेशत्रैलोक्यविजयाश्रीपा०॥४॥ आग्नेय्याम — ॐ ह्रीं ङं एकरुद्रेशमंत्रशक्तिभ्यां नमः एकरुद्रेशमंत्रशक्तिश्रीपा० ॥५॥ नैऋत्ये — ॐ ह्रीं चं कूर्मेशात्मशक्तिभ्यांनमः कूर्मेशात्म-शक्तिश्रीपा०॥६॥ वायवे— ॐ ह्रीं छं एकनेत्रेशभूतमातृकाभ्यां नमः एकनेत्रेशभूतमातृकाश्रीपा०॥७॥ ऐशान्ये— ॐ ह्रीं जं चतुराननेशलम्बोदरीभ्यां नमः चतुराननेशलम्बोदरीश्रीपा० ॥८॥ पूर्वाग्निमध्ये—ॐ ह्रीं झं अजेशद्राविणीभ्यां नमः अजेशद्राविणीश्रीपा० ॥९॥ दक्षिणनैर्ऋत्यमध्ये—ॐ ह्रीं ञं सर्वेशनागरीभ्यां नमः सर्वेशनागरीश्रीपा० ॥१०॥ पश्चिमवायुमध्ये— ॐ टं सोमेशखेचरीभ्यां नमः सोमेशखेचरीश्रीपा० ॥११॥ उत्तरेशानमध्ये— ॐ ह्रीं ठं लांगलीशमंजरीभ्यां नमः लांगलीशमंजरीश्रीपा० ॥१२॥ अग्नेययाम्यमध्ये—ॐ ह्रीं डं दारुकेशरूपिणीभ्यां नमः दारुकेश-रूपिणीश्रीपा०॥१३॥ नैर्ऋत्यपश्चिममध्ये—ॐ ह्रीं ढं अर्धनारीशवीरणीभ्यां नमः अर्धनारीशवीरणीश्रीपादुकांपूं० ॥१४॥ वायुसोममध्ये— ॐ ह्रीं णं उमाकान्तेशकाकोदरीभ्यां नमः उमाकान्तेशकाकोदरीश्रीपा०॥१५॥ ईशानपूर्वमध्ये—ॐ ह्रीं तं आषाढेशपूतनाभ्यां नमः आषाढेशपूतनाश्रीपा० ॥१६॥ इति पूजयेत् ॥ ततः पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा मूलमुच्चार्य ॥

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यमष्टमावरणार्चनम् ॥ ८॥

अनेन अष्टमा वरणदेवतापूजनेन भगवान् वटुक भैरवः प्रीयताम् न मम । इत्यष्टमावरणम् ॥८॥

ततो भूपुरस्य तृतीयरेखायां दिग्विदिगंतरालेषु षोडशस्थानेषु दण्डीश्वरादिभृग्वीशांतान् पूजयेत् ॥ तत्र क्रमः ॥ पूर्वे—ॐ ह्री यं दण्डीशभद्रकालीभ्यां नमः दण्डीशभद्रकालीश्रीपादुकां पू०॥१॥ दक्षिणे—ॐ ह्रीं दं अत्रीशयोगिनीभ्यां नमः अत्रीशयोगिनीश्रीपा० ॥ २॥ पश्चिमे— ॐ ह्रीं धं मीनेशशंखिनीभ्यां नमः मीनेशशंखिनीश्रीपा०॥३॥ उत्तरे । ॐ ह्रीं नं मेषेशगर्जनीभ्यां नमः मेषेशगर्जनीश्रीपा० ॥४॥

आग्नेय्याम्—ॐ ह्रीं पं लोहितेशकालरात्रिभ्यां नमः लोहितेशकाल-रात्रिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥५॥ नैर्ऋत्ये— ॐ ह्रीं फं शिखीशकुब्जिकाभ्यां नमः शिखीशकुब्जिकाश्रीपा० ॥६॥ वायव्ये—ॐ ह्री वं छागलेसकपर्दिनीभ्यां नमः छागलेशकपर्दिनीश्रीपा० ॥७॥ ऐशान्ये—ॐ ह्रीं भं द्विरंडेशवज्रिणीभ्यां नमः द्विरंडशवज्रिणीश्रीपा०॥८॥ पूर्वाग्निमध्ये—ॐ ह्रीं मं महाकालेश जयाभ्यां नमः महाकालेश-जयाश्रीपा०॥९॥ दक्षिणनैर्ऋत्यमध्ये— ॐ ह्रीं यं त्वगात्मभ्यां वालेशसुमुखे श्वरीभ्यां नमः वालेशसुमुखेश्वरीश्रीपा०॥१०॥ पश्चिमवायव्यमध्ये— ॐ ह्रीं रं असृगात्मभ्यां भुजंगेशरेवतीभ्यां नमः भुजंगेशरेवतीश्रीपा०॥११॥ उत्तरेशानयोर्मध्ये—ॐ ह्रीं लं मांसात्मभ्यां पिनाकीशमाधवीभ्यां नमः पिनाकीशमाधवीश्रीपा० ॥१२॥ आग्नेयदक्षिणमध्ये— ॐ ह्रीं वं वेदात्मभ्यां खड्गीशवारूणीभ्यां नमः खड्गीशवारूणीश्रीपा०॥१३॥ नैर्ऋत्यपश्चिममध्ये—ॐ ह्रीं शं अस्थ्यात्मभ्यां बकेशवायवीभ्यां नमः बकेशवायवीश्रीपा०॥१४॥ वायुसोममध्ये— ॐ ह्रीं षं भज्जात्मभ्यां श्वेतेशरक्षोवधारिणीभ्यां नमः श्वेतेशरक्षोवधारिणीश्रीपा०॥१५॥ ईशानपूर्वमध्ये—ॐ ह्रीं सं शुकात्मभ्यां भृग्वीशसहजाभ्यां नमः भृग्वीशसहजाश्रीपा०॥ इति पूजयेत् ॥ ततो भूपुराद्बहिः देवदक्षिणतः लकुलीशादित्रयं पूजयेत्॥ तत्र क्रमः । ॐ ह्रीं हं प्राणात्मभ्यां लकुलीशलक्ष्मीभ्यां नमः लकुलीशलक्ष्मीश्रीपा० ॥१॥ ॐ ह्रीं लं शिवशक्त्यात्मभ्यां नमः शिवेशेव्यापिनीश्रीपा० ॥२॥ ॐ ह्रीं क्षं क्रोधात्मभ्यां संवर्तकेश-महामायाभ्यां नमः संवर्तकेशमहामायाश्रीपा० ॥३॥ इति पूजयेत् ॥ ततः ऐशान्ये— ॐ ह्रीं योगिनीसहितेभ्यो दिव्ययोगीश्वरेभ्यो नमः योगिनीसहित-दिव्ययोगीश्वरश्रीपा० ॥ १॥ आग्नेये— ॐ ह्रीं योगिनीसहितेभ्योऽन्तरिक्षस्थयोगी श्वरेभ्यो नमः योगिनीसहितान्तरिक्षस्थ-योगीश्वरश्रीपा० ॥२॥ नैर्ऋत्ये— ॐ ह्रीं योगिनीसहितभूमिस्थयोगीश्वरेभ्यो नमः योगिनीसहितभूमिस्थयोगीश्वरश्रीपा० ॥३॥ पूर्वे — गं गणपतये नमः गणपतिश्रीपा०॥४॥ दक्षिणे — भैं भैरवाय नमः भैरवश्रीपा०॥५॥ पश्चिमे— क्षं क्षेत्रपालाय नमः क्षेत्रपालश्रीपा०॥ ६॥

उत्तरे—दुं दुर्गायै नमः । दुर्गाश्रीपा० ॥ ७॥ इति पूजयेत् ॥ ततः पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा मूलमुच्चार्य ।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ।
भक्त्यासमर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम् ॥९॥

अनेन नवमावरणदेवतापूजनेन भगवान वटुक भैरवः प्रीयताम् न मम ॥ इतिनवमावरणम् ॥९॥

ततो भूपुराद्बहिः पूर्वादिक्रमेण दशदिक्षु इन्द्रादीन् दशदिक्पालान् पूजयेत् ॥ तत्र क्रमः ॐ ह्रीं लं इन्द्राय नमः इन्द्रश्रीपा० ॥१॥ ॐ ह्रीं रं अग्नये नमः अग्निश्रीपा० ॥२॥ ॐ ह्रीं यं यमाय नमः यमश्रीपा० ॥३॥ ॐ ह्रीं क्षं निर्ऋतये नमः निर्ऋतश्रीपा० ॥४॥ ॐ ह्रीं वं वरुणाय नमः वरुणश्रीपा० ॥५॥ ॐ ह्रीं यं वायवे नमः वायुश्रीपा० ॥ ॐ ह्रीं सों सोमाय नमः सोमश्रीपा० ॥७॥ ॐ ह्रीं हं ईशानाय नमः ईशानश्रीपा० ॥८॥ इन्द्रेशानयोर्मध्ये— ॐ ह्रीं आं ब्रह्मणे नमः ब्रह्मश्रीपा० ॥९॥ वरुणनिर्ऋतयोर्मध्ये— ॐ ह्रीं अं अनन्ताय नमः अनन्तश्रीपा० ॥१०॥ इतिदशदिक्पालान् पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं च दद्यात् ॥

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ।
भक्त्यासमर्पये तुभ्यं दशमावरणार्चनम् ॥१०॥

अनेन दशमावरणदेवतापूजनेन भगवान वटुक भैरवः प्रीयताम् न मम ॥ इति दशमावरणम् ॥१०॥

ततः इन्द्रादि समीपे । ॐ वं वज्राय नमः वज्रश्रीपा० ॥१॥ ॐ शं शक्तये नमः शक्तिश्रीपा० ॥२॥ ॐ दं दण्डाय नमः दण्डश्रीपा० ॥३॥ ॐ खं खड्गाय नमः खड्गश्रीपा० ॥४॥ ॐ पां पाशाय नमः पाशश्रीपा० ॥५॥ ॐ अं अंकुशाय नमः अंकुशश्रीपा० ॥६॥ ॐ गं गदायै नमः गदाश्रीपा० ॥७॥ ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः त्रिशूलश्रीपा० ॥८॥ ॐ पं पद्माय नमः पद्मश्रीपा० ॥९॥ ॐ चं चक्राय नमः चक्रश्रीपा० ॥ १० ॥ इत्यस्त्राणि पूजयित्वा रुद्राख्यपदं संयोज्य पुष्पाञ्जलिं च दद्यात् ।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ।
भक्त्यासमर्पये तुभ्यं एकादशावरणार्चनम् ॥११॥

अनेन एकादशावरणदेवतापूजनेन भगवान वटुक भैरवः प्रीयताम् न मम ॥ इति एकादशावरणम् ॥११॥

॥ अथ श्रीवटुकभैरवब्रह्मकवचम् ॥

ॐ अस्य श्रीवटुकभैरवब्रह्मकवचस्य भैरव ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्री वटुकभैरवो देवता । मम वटुकभैरवप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

॥ श्रीदेव्युवाच ॥

भगवन्सर्ववेत्ता त्वं देवानां प्रीतिदायकम् ।
भैरवं कवचं ब्रूहि यदि चास्ति कृपा मयि ॥ १ ॥
प्राणत्यागं करिष्यामि यदि नो कथयिष्यसि ।
सत्यं सत्यं पुनः सत्यं सत्यमेव न संशयः ॥ २ ॥
इत्थं देव्या वचः श्रुत्वा प्रहस्यातिशयं प्रभुः ।
उवाच वचनं तत्र देवदेवो महेश्वरः ॥ ३ ॥

॥ ईश्वर उवाच ॥

वटुकं कवचं दिव्यं शृणु मत्प्राणवल्लभे ।
चंडिकातंत्रसर्वस्वं वटुकस्य विशेषतः ॥ ४ ॥
तत्र मंत्राद्यक्षरं तु वासुदेवस्वरूपकम् ।
शंखवर्णद्वयो ब्रह्मा वटुकश्चन्द्रशेखरः ॥ ५ ॥
आपदुद्धारणो देवी भैरवः परिकीर्तितः।
प्रवक्ष्यामि समासेन चतुर्वर्गप्रसिद्धये ॥ ६॥
प्रणवः कामदं विद्या ल्लजाबीजं च सिद्धिदम्।
वटुकायेति विज्ञेयं महापातकनाशनम् ॥ ७ ॥
आपदुद्धारणायेति त्वापदुद्धारणं नृणाम् ।
कुरूद्वयं महेशानि मोहने परिकीर्तितम् ॥ ८ ॥
वटुकाय महेशानि स्तंभने परिकीर्तितम् ।
लज्जावीजं तथा विद्यान्मुक्तिदं परिकीर्तितम् ॥ ९ ॥
द्वाविंशत्यक्षरो मंत्रः क्रमेण जगदीश्वरः ।
ॐ पातु नित्यं शिरसि पातु ह्रीं कंठदेशके ॥ १० ॥
वटुकाय पातु नाभौ चापदुद्धारणाय च ।
कुरूद्वयं लिंगमूले त्वाधारे वटुकाय च ॥ ११ ॥

सर्वदा पातु ह्रीं बीजं बाह्वोर्युगलमेव च ।
षडंगसहितो देवो नित्यं रक्षतु भैरवः ॥ १२ ॥
ॐ ह्रीं वटुकाय सततं सर्वांगं मम सर्वदा ।
ॐ ह्रीं पादौ महाकालः पातु वीरासनो हृदि ॥ १३ ॥
ॐ ह्रीं कालः शिरः पातु कंठदेशे तु भैरवः ।
गणराट् पातु जिह्वायामष्टभिः शक्तिभिः सह ॥ १४ ॥
ॐ ह्रीं दंडपाणिर्गुह्यमूले भैरवीसहितस्तथा ।
ॐ ह्रीं विश्वनाथः सदा पातु सर्वांगं मम सर्वदा ॥१५॥
ॐ ह्रीं अन्नपूर्णा सदा पातु चांसौ रक्षतु चंडिका ।
असितांगः शिरः पातु ललाटं रुरुभैरवः ॥१६॥
ॐ ह्रीं चंडभैरवः पातु वक्त्रं कंठं श्रीक्रोधभैरवः ।
उन्मत्तभैरवः पातु हृदयं मम सर्वदा ॥ १७॥
ॐ ह्रीं नाभिदेशे कपाली च लिंगे भीषणभैरवः ।
संहारभैरवः पातु मूलाधारं च सर्वदा ॥ १८॥
ॐ ह्रीं वाहुयुग्मं सदा पातु भैरवो मम केवलम् ।
हंसवीजं पातु हृदि सोऽहं रक्षतु पादयोः ॥ १९॥
ॐ ह्रीं प्राणापानौ समानं च उदानं व्यानमेव च ।
रक्षतु द्वारमूले च दश दिक्षु समंततः ॥ २०॥
ॐ ह्रीं प्रणवं पातु सर्वांगं लज्जाबीजं महाभये ।
इति श्रीबह्मकवचं भैरवस्य प्रकीर्तितम् ॥ २१॥
चतुवर्गप्रदं नित्यं स्वयं देव- प्रकाशितम् ।
यः पठेच्छृणुयान्नित्यं धारयेत्कवचोत्तमम् ॥ २२॥
सदानंदमयो भूत्वा लभते परमं पदम् ।
य इदं कवचं देवि चिन्त येन्मन्मुखोदितम् ॥ २३॥
कोटिजन्मार्जितं पापं तस्य नश्यति तत्क्षणात् ।
जलमध्येऽग्निमध्ये वा दुर्ग्रहे शत्रुसंकटे ॥ २४॥
कवच-स्मरणाद्देवि सर्वत्र विजयी भवेत ।
भक्तियुक्तेन मनसा कवचं पूजयेद्यदि ॥ २५॥

कामतुल्यस्तु नारीणां रिपूणां च यमोपमः ।
तस्य पादांबुजद्वंदं राज्ञां मुकुटभूषणम् ॥२६॥
तस्य भूतिं विलोक्यैव कुबेरोऽपि तिरस्कृतः ।
यस्य विज्ञानमात्रेण मंत्रसिद्धिर्न संशयः ॥२७॥
इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेद्वटुकं नरः ।
न चाप्नोति फलं तस्य परं नरकमाप्नुयात् ॥२८॥
मन्वंतरत्रयं स्थित्वा तिर्यग्योनिषु जायते ।
इह लोके महारोगी दारिद्रयेणातिपीड़ितः ॥२९॥
शत्रूणां वरागो भूत्वा करपात्री भवेज्जडः ।
देयं पुत्राय शिष्याय शांताय प्रियवादिने ॥३०॥
कार्पण्यरहितायालं वटुभक्तिरताय च ।
योऽपरागे प्रदाता वै तस्य स्यादतिसत्वरम् ॥३१॥
आयुर्विद्या यशो धर्म वलं चैब न संशयः ।
इति ते कथितं देवि गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥३२॥

इति श्रीरुद्रयामलोक्तं श्रीवटुकभैरवब्रह्मकवचं संपूर्णम् ॥

अथवटुकभैरव अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् (कालसंकर्षणतंत्रे)

ॐ अस्य श्रीवटुकभैरवस्तोत्रमंत्रस्य कालाग्निरुद्र ऋषिः । अनुष्टुप् छन्दः आपदुद्धारकवटुकभैरवो देवता । ह्रीं वीजम् । भैरवीवल्लभः शक्तिः । नीलवर्णो दण्डपाणिरिति कीलकम् । समस्तशत्रुदमने समस्ततापनिवारणे सर्वाभीष्टप्रदाने च विनियोग : ॥

ॐ कालाग्निरुद्रऋषये नमः । शिरसि ॥१॥ अनुष्टुप्छंदसे नमः । मुखे ॥२॥ आपदुद्धारकवटुकभैरवदेवतायै नमः । हृदये ॥३॥ ह्रीं बीजाय नमः । गुह्ये ॥४॥ भैरवीवल्लभशक्तये नमः। पादयोः ॥ ५॥ नीलवर्णो दण्डपाणि रिति कीलकाय नमः। नाभौ ॥ ६॥ ह्रीं विनियोगाय नमः । सर्वांगे ॥७॥ इति ऋष्यादिन्यासः॥ अथ मूलमंत्रः ॥

ॐ ह्रीं वं वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीं ॐ स्वाहा ॥ इति मूलमंत्रः ॥

।। अथ ध्यानम् ।।

नीलजीमूतसंकाशो जटिलो रक्तलोचनः ।
दंष्ट्राकरालवदनः सर्पयज्ञोपवीतवान् ।।१।।
दंष्ट्रायुधालंकृतश्च कपालस्त्रग्विभूषितः ।
हस्तन्यस्तकरोटीको भस्मभूषितविग्रहः ।। २।।
नागराजकटीसूत्रो बालमूर्तिर्दिगम्बरः ।
मञ्जुसिंजानमञ्जीरपादकम्पितभूतलः ।।३।।
भूतप्रेतपिशाचैश्च सर्वतः परिवारितः ।
योगिनीचक्रमध्यस्थो मातृमण्डलवेष्टितः ।।४।।
अट्टहासस्फुरद्वक्त्रो भृकुटीभीषणाननः ।
भक्तसंरक्षणार्थाय दिक्षु भ्रमणतत्परः ।।
एवंभूतस्तु वटुको ध्यातव्यो भैरवीश्वरः ।। ५।।
एवं ध्यात्वा स्तोत्रं पठेत् ।
ॐ ह्रीं वटुको वरदः शूरो भैरवः कालभैरवः ।
भैरवी वल्लभो भव्यो दण्डपाणिर्दयानिधिः ।।६।।
वेतालवाहनो रौद्रो रुद्रभ्रुकुटिसम्भवः ।
कपाललोचनः कान्तः कामिनीवशकृद्वशी ।।७।।
आपदुद्धारणो धीरो हरिणांकशिरोमणिः ।
दंष्ट्राकरालो दष्ट्रौष्ठौ धृष्टो दुष्टनिवर्हणः ।।८।।
सर्पहारः सर्पशिराः सर्पकुण्डलमण्डितः ।
कपाली करुणापूर्णः कपालैकशिरोमणिः ।।९।।
श्मशानवासी मांसाशी मधुमत्तोऽट्टहासवान् ।
वाग्मी वामव्रता वामो वामदेवप्रियंकरः ।।१०।।
वनेचरो रात्रिचरो वसुदो वायुवेगवान् ।
योगी योगव्रतधरो योगिनीवल्लभो युवा ।।११।।
वीरभद्रो विश्वनाथो विजेता वीरवंदितः ।
भूताध्यक्षो भूतिधरो भूतभीतिनिवारणः ।।१२।।
कलंकहीनः कंकाली क्रूरः कुक्कुरवाह नः ।

गाढो गहनगंभीरो गणनाथसहोदरः ।।१३।।
देवीपुत्रो दिव्यमूर्तिर्दीप्तिमान् दीप्तिलोचनः ।
महासेनप्रियकरो मान्यो माधवमातुलः ।।१४।।
भद्रकालीपतिर्भद्रो भद्रदो भद्रवाहनः ।
पशूपहाररसिकः पाशी पशुपतिः पतिः ।।१५।।
चण्डः प्रचण्डचण्डेशश्चण्डिहृदयनन्दनः ।
दक्षो दक्षाध्वरहरो दिग्वासा दीर्घलोचनः ।।१६।।
निरातंको निर्विकल्पः कल्पः कल्पांतभैरवः।
मदताण्डवकृन्मत्तो महादेवप्रियो महान् ।।१७।।
खट्वांगपाणिः खातीतः खरशूलः खरांतकृत् ।
ब्रह्माण्डभेदनो ब्रह्मज्ञानी ब्राह्मणपालकः ।।१८।।
दिकचरो भूचरो भूष्णुः खचरः खेलनप्रियः ।
सर्व-दुष्टप्रहर्ता च सर्वरोगनिषूदनः ।।१९।।
सर्वकामप्रदः शर्वः सर्वपापनिकृंतनः ।
इत्थमष्टोत्तरशतं नाम्नां सर्वसमृद्धिदम् ।।२०।।
आपदुद्धारजनकं वटुकस्य प्रकीर्तितम् ।
एतच्च शृणुयान्नित्यं लिखेद्वा स्थापयेगृहे ।।२१।।
धारयेद्वा गले वाहौ तस्य सर्वाः समृद्धयः ।
न तस्य दुरितं किंचिन्न चोरनृपंज भयम् ।।२२।।
न चापस्मृतिरोगेभ्यो डाकिनीभ्यो भयं नहि ।
न कुष्माण्डग्रहादिभ्यो नापमृत्योर्न च ज्वरात् ।।२३।।
मासमेकं त्रिसंध्यं च शुचिर्भूत्वा पठेन्नरः।
सर्वदारिद्र्यनिर्मुक्तो निधिं पश्यति भूतले ।।२४।।
मासद्वयमधीयानः पादुकासिद्धिमान् भवेत् ।
अंजनं गुटिका खड्गं धातुवादरसायनम् ।।२५।।
सारस्वतं च वेतालवाहनं बिलसाधनम् ।
कार्यसिद्धिं महासिद्धिं मंत्रं चैव समीहितम् ।।२६।।

वर्षमात्रमधीयानः प्राप्नुयात्साधकोत्तमः ।
एतत्ते कथितं देवि गुह्यागुह्यतरं परम् ॥२७॥
कालसंकर्षणीतंत्रे कलिकल्मषनाशनम् ।
नरनारीनृपाणां च वशीकरणमंबिके ॥२८॥

इति कालसंकर्षणतंत्रोक्त-वटुकाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ अथ सदाशिकवच ॥

अथ प्रसादमंत्रकवचस्य वामदेव ऋषिः । पंक्तिश्छंदः ।
सदाशिवो देवता । सकलाभीष्टसिद्धये जपे विनियोगः ॥

॥ श्रीदेव्युवाच ॥

भगवन्देवदेवेश सर्वाम्नायप्रपूजितम् ।
सर्वं मे कथितं देव कवचं न प्रकाशितम् ॥१॥
प्रासादाख्यस्य मंत्रस्य कवचं मे प्रकाशय ।
सर्वरक्षाकरं देव यदि स्नेहोऽस्ति मां प्रति ॥२॥

॥ श्रीभगवानुवाच ॥

शिरो मे सर्वदा पातु प्रासादाख्यः सदाशिवः।
षडक्षरस्वरूपो मे वदनं तु महेश्वरः॥३॥
पंचाक्षरात्मा भगवान्भुजौ मे परिरक्षतु ।
मृत्युंजयस्त्रिवीजात्मा आस्यं रक्षतु मे सदा ॥४॥
वटमूलं समासीनो दक्षिणामूर्तिरव्ययः।
सदा मां सर्वदः पातु षट्त्रिंशार्णस्वरूपधृक् ॥५॥
द्वाविंशार्णात्मको रुद्रो दक्षिणः परिरक्षतु ।
त्रिवर्णात्मा नीलकंठः कंठं रक्षतु सर्वदा ॥६॥
चिंतामणिर्बीजरूपो ह्यर्द्धनारीश्वरो हरः।
सदा रक्षतु मे गुह्यं सर्वसम्पत्प्रदायकः ॥७॥
एकाक्षरस्वरूपात्मा कूटव्यापी महेश्वरः ।
मार्तंडभैरवो नित्यं पादौ मे परिरक्षतु ॥८॥
तुम्बुराख्यो महाबीजस्वरूपस्त्रिपुरांतकः ।

सदा मां रणभूमौ च रक्षतु त्रिदशाधिपः ॥९॥
ऊर्ध्वमूर्द्धानमीशानो मम रक्षतु सर्वदा ।
दक्षिणास्यं तत्पुरुषः पायान्मे गिरिनायकः ॥१०॥
अघोराख्यो महादेवः पूर्वस्यां परिरक्षतु ।
वामदेवः पश्चिमास्यं सदा मे परिरक्षतु ॥११॥
उत्तरास्यं सदा पातु सद्योजातस्वरूपधृक् ।
इत्थं रक्षाकरं देवि कवचं देवदुर्लभम् ॥१२॥
प्रातःकाले पठेद्यस्तु सोऽभीष्टं फलमाप्नुयात् ।
पूजाकाले पठेद्यस्तु कवचं साधकोत्तमः ॥१३॥
कीर्तिश्रीकांतिमेधायुः सहितो भवति ध्रुवम् ।
कंठे यो धारयेदेतत्कवचं मत्स्वरूपकम् ॥१४॥
युद्धे च, जयमाप्नोति द्यूते वादे स साधकः ।
कवचं धारयेद्यस्तु साधको दक्षिणे भुजे ॥१५॥
देवा मनुष्या गंधर्वा वश्यास्तस्य न संशयः ।
कवचं शिरसा यस्तु धारयेद्यतमानसः॥१६॥
करस्थास्तस्य देवेशि अणिमाद्यष्टसिद्धयः ।
भूर्जपत्रे त्विमां विद्यां शुक्लपट्टेन वेष्टिताम् ॥ १७॥
रजतोदरसंविष्टां कृत्वा वा धारयेत्सुधीः।
संप्राप्य महतीं लक्ष्मीमंते मद्देहरूपभाक्॥१८॥
यस्मै कस्मै न दातव्यं न प्रकाश्यं कदाचन ।
शिष्याय भक्तियुक्ताय साधकाय प्रकाशयेत् ॥१९॥
अन्यथा सिद्धिहानिः स्यात्सत्यमेतन्मनोरमे ।
तव स्नेहान्महादेवि कथितं कवचं शुभम् ॥२०॥
(न देयं कस्यचिद्भद्रे यदीच्छेदात्मनो हितम् ।)
योऽर्चयेद्गन्धपुष्पाद्यैः कवचं मन्मुखोदितम् ।
तेनार्चिता महादेवि सर्वे देवा न संशयः ॥२१॥

इति भैरवतन्त्रे सदाशिवकवचं समाप्तम ।

अथ कुशकण्डिकाविधिः

अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मणः स्थापनार्थं ब्रह्मासनम् । अग्नेरुत्तरतः प्रणीतासनद्वयम । ब्रह्मासने ब्रह्मोपवेशनम् । 'यावत्कर्म समाप्यते तावत्त्वं ब्रह्मा भव' इति यजमानः । 'भवामि' इति ब्रह्मा वदेत् । ब्रह्मणाऽनुज्ञातः प्रणीताप्रणयनम् । प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा वारिणा परिपूर्य कुशैराच्छाद्य प्रथमासने निधाय ब्रह्मणो मुखमवलोक्य द्वितीयासने निदध्यात् । तत : परिस्तरणम् । आग्नेयादीशानान्तम् । ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तं नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तम् । अग्नितः प्रणीतापर्यन्तम् । इतरथावृत्तिः । अथ पात्रासादनम् । अग्नेरुत्तरतः पश्चिमदिशि त्रीणि पवित्रे द्वे । प्रोक्षणीपात्रम् । आज्यस्थाली । चरुस्थाली । सम्मार्जनकुशाः पञ्च । उपयमनकुशाः सप्त । समिधस्तिस्त्रः । स्त्रुवः । गव्यमाज्यम् । तण्डुलाः । पूर्णपात्रम् । वृषनिष्क्रयदक्षिणा । उपकल्पनीयानि द्रव्याणि निधाय । अथ पवित्रकरणम्-द्वयोरुपरि त्रीणि निधाय । द्वौ मूलेन प्रदक्षिणीकृत्य । त्रिभिश्छिद्य । द्वौ ग्राह्यौ । त्रिस्त्याज्यः । सपवित्रकरेण प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणीपात्रे निधाय । अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां गृहीतपवित्राभ्यां त्रिरुत्पवनम् । प्रोक्षण्याः सव्यहस्तकरणम् । दक्षिणहस्तेन गृहीतपवित्रेण त्रिरुद्दिङ्गनम् । प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीप्रोक्षणम् । प्रोक्षण्युदकेन आज्यस्थाल्याः प्रोक्षणम् । चरुस्थाल्याः प्रोक्षणम् । सम्मार्जनकुशानां प्रोक्षणम् । उपयमनकुशानां प्रोक्षणम् । समिधां प्रोक्षणम् । स्त्रुवस्य प्रोक्षणम् । आज्यस्य प्रोक्षणम् । तण्डुलानां प्रोक्षणम् । पूर्णपात्रस्य प्रोक्षणम् । उपकल्पनीयानां पदार्थानां प्रोक्षणम् । असञ्चरदेशे प्रोक्षणीं निधाय । आज्यस्थाल्यामाज्यनिर्वापः । चरुस्थाल्यां प्रणीतोदकासेकपूर्वकं तण्डुलप्रक्षेपः । ब्रह्मणो दक्षिणत आज्याधिश्रयणम् । चरोरधिश्रयणं स्वयमाज्यस्योत्तरतः । ज्वलदुल्मुकेनोभयोः पर्यग्निकरणम् इतरथावृत्तिः । उदकोपस्पर्शः । अर्द्धश्रिते चरौ अधौमुखस्य स्त्रुवस्य प्रतपनम् । सम्मार्जनकुशैः स्त्रुवस्योर्ध्वमुखस्य सम्मार्जनम् । अग्रैरन्तरतो मूलैर्बाह्यतः स्त्रुवं सम्मृज्य प्रणीतोदकेनाभ्युक्षणम् । सम्मार्जनकुशानामग्नौ प्रक्षेपः ।

पुनः प्रतपनम् । अग्नेर्दक्षिणतो निधानम् । आज्योद्वासनम् । घृतं चरुं स्त्रुवेणाभिघार्य चरुं पूर्वेणानीयाऽग्नेरुत्तरतः स्थापयेत् । चरोरुद्वासनम् । अग्नेरुत्तरत एवाज्यस्य प्रदक्षिणीकृत्य आज्यस्योत्तरतश्चरुं स्थापयेत् । आज्योत्पवनम् । आज्यावेक्षणम् । अपद्रव्यनिरसनम् । पुनः प्रोक्षण्युत्पवनम् । वामहस्ते उपयमनकुशानादाय, तिष्ठन् समिधोऽभ्याधाय प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा तूष्णीं घृताक्ताः समिधस्तिस्त्रः अग्नौ क्षिपेत् । उपविश्य सपवित्रकरेण प्रोक्षण्युदकेन ईशानादारभ्य ईशानपर्यन्तं पर्युक्ष्य पवित्रे प्रणीतापात्रे निधाय दक्षिणं जान्वाच्य ब्रह्मणा कुशैरन्वारब्धः समिद्धतमेऽग्नौ वायव्यकोणादारभ्याग्निकोणपर्यन्तं प्राञ्चं वा सन्तप्तघृतधारया मनसा प्रजापतिं ध्यायन् स्त्रुवेण तूष्णीं जुहुयात् । नात्र स्वाहाकार : ।

अग्नेरुत्तरभागे-ॐप्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम । इति मनसा त्यजेत् ।

अग्नेर्दक्षिणभागे-ॐ इन्द्राय स्वाहा, इदमिन्द्राय न मम । इत्याधारौ ।

ॐ अग्नये स्वाहा, इदमग्नये न मम । ॐ सोमाय स्वाहा, इदं सोमाय न मम । इत्याज्यभागौ ।

ततो यजमानः हस्ते जलाक्षतं गृहीत्वा 'अस्मिन् अमुक यज्ञ कर्मणि इमानि उपकल्पितानि हवनीयद्रव्याणि विहितसंख्या-हुतिपर्याप्तानि या या यक्ष्यमाणदेवतास्ताभ्यस्ताभ्यो मया परित्यक्तानि न मम । यथा दैवतानि सन्तु' । इति कुशकण्डिकाविधिः ।

अथ ग्रहहोममन्त्राः

ॐ गणानां त्वा० स्वाहा ॥१॥ ॐ अम्बे ऽअम्बिके० स्वाहा॥२॥
आकृष्णेन० स्वाहा ॥१॥ ॐ इमं देवा० स्वाहा ॥२॥
ॐ अग्निर्मूर्द्धा० स्वाहा ॥३॥ ॐ उद्बुद्ध्यस्वाग्ने० स्वाहा॥४॥
ॐ बृहस्पते ऽअति० स्वाहा ॥५॥ ॐ अन्नात्परिस्त्रुत० स्वाहा ॥६॥
ॐ शं नो देवी० स्वाहा ॥७॥ ॐ कया नश्चित्र० स्वाहा॥८॥
ॐ केतुं कृण्वन्० स्वाहा ॥९॥

अधिदेवता - प्रत्यधिदेवता-पञ्चलोकपालहोममन्त्राः ।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे० स्वाहा ॥ १॥ ॐ श्रीश्चते० स्वाहा ॥२॥
ॐ यदक्रन्द० स्वाहा ॥३॥ ॐ विष्णो रराटमसि० स्वाहा ॥४॥
ॐ आ ब्रह्मन्० स्वाहा ॥५॥ ॐ सजोषा ऽइन्द्र० स्वाहा ॥६॥
ॐ यमाय त्वा० स्वाहा ॥७॥ ॐ कार्षिरसि० स्वाहा ॥८॥
ॐ चित्रावसो० स्वाहा ॥९॥ ॐ अग्निं दूतम्० स्वाहा ॥१॥
ॐ आपोहिष्ठा० स्वाहा ॥२॥ ॐ स्योना पृथिवि० स्वाहा ॥३॥
ॐ इदं विष्णुः० स्वाहा ॥४॥ ॐ इन्द्र ऽआसाम्० स्वाहा ॥५॥
ॐ अदित्यै रास्नासि० स्वाहा ॥६॥ ॐ प्रजापते न त्व० स्वाहा ॥७॥
ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यः० स्वाहा ॥८॥ ॐ ब्रह्म जज्ञानम्० स्वाहा ॥९॥
ॐ गणानां त्वा० स्वाहा ॥ १॥ ॐ अम्बे ऽअम्बिके० स्वाहा ॥२॥
ॐ वायो ये ते० स्वाहा ॥३॥ ॐ घृतं घृतपावानः० स्वाहा ॥४॥
ॐ यावां कशा० स्वाहा ॥५॥

अथ वास्तु-क्षेत्रपाल-दशदिक्पालहोममन्त्राः

ॐ वास्तोष्पते० स्वाहा ॥१॥ ॐ नहि स्पश० स्वाहा ॥१॥
ॐ त्रातारमिन्द्रम्० स्वाहा ॥१॥ ॐ त्वन्नोऽअग्ने तव देव० स्वाहा ॥२॥
ॐ यमाय त्वा० स्वाहा ॥३॥ ॐ असुन्वन्तम्० स्वाहा ॥४॥
ॐ तत्त्वा यामि० स्वाहा ॥५॥ ॐ आनो नियुद्भिः० स्वाहा ॥६॥
ॐ व्वयꣳ सोम० स्वाहा ॥७॥ ॐ तमीशानम्० स्वाहा ॥८॥
ॐ अस्मे रुद्राः० स्वाहा ॥९॥ ॐ स्योना पृथिवि० स्वाहा ॥१०॥

अथ प्रधानहोमः

ततो आचार्यः स्थापितदेवानां सकृत्सकृदाज्येन हुत्वा प्रधानदेवस्य हवनं कुर्यात् । विष्णुश्चेत्प्रधानस्तदा 'ॐ इदं विष्णुः०' इति मन्त्रेण होमः कार्यः । शिवश्चेत्प्रधानस्तदा 'ॐ नमस्ते रुद्र०' इति मन्त्रेण होमः । अम्बिका चेत्प्रधाना तदा 'ॐ अम्बे ऽअम्बिकेऽम्बालिके०' इति मन्त्रेण होमः । एवं गणपत्यादिर्यः प्रधानदेवस्तस्य तन्मन्त्रेण होमः कार्यः ।

॥ अथ वास्तुमण्डलदेवतानां होमः ॥

१. ॐ शिखिने नमः स्वाहा ।
२. ॐ पर्जन्याय नमः स्वाहा ।
३. ॐ जयन्ताय नमः स्वाहा ।
४. ॐ कुलिशायुधाय नमः स्वाहा ।
५. ॐ सूर्याय नमः स्वाहा ।
६. ॐ सत्याय नमः स्वाहा ।
७. ॐ भृशाय नमः स्वाहा ।
८. ॐ आकाशाय नमः स्वाहा ।
९. ॐ वायवे नमः स्वाहा ।
१०. ॐ पूष्णे नमः स्वाहा ।
११. ॐ वितथाय नमः स्वाहा ।
१२. ॐ गृहक्षताय नमः स्वाहा ।
१३. ॐ यमाय नमः स्वाहा ।
१४. ॐ गन्धर्वाय नमः स्वाहा ।
१५. ॐ भृङ्गराजाय नमः स्वाहा ।
१६. ॐ मृगाय नमः स्वाहा ।
१७. ॐ पितृगणेभ्यः नमः स्वाहा ।
१८. ॐ दौवारिकाय नमः स्वाहा ।
१९. ॐ सुग्रीवाय नमः स्वाहा ।
२०. ॐ पुष्पदन्ताय नमः स्वाहा ।
२१. ॐ वरुणाय नमः स्वाहा ।
२२. ॐ असुराय नमः स्वाहा ।
२३. ॐ शोषाय नमः स्वाहा ।
२४. ॐ पापाय नमः स्वाहा ।
२५. ॐ रोगाय नमः स्वाहा ।
२६. ॐ अहये नमः स्वाहा ।
२७. ॐ मुख्याय नमः स्वाहा ।
२८. ॐ भल्लाटाय नमः स्वाहा ।
२९. ॐ सोमाय नमः स्वाहा ।
३०. ॐ सर्पेभ्यो नमः स्वाहा ।
३१. ॐ अदित्यै नमः स्वाहा ।
३२. ॐ दित्यै नमः स्वाहा ।
३३. ॐ अद्भ्यो नमः स्वाहा ।
३४. ॐ सावित्राय नमः स्वाहा ।
३५. ॐ जयाय नमः स्वाहा ।
३६. ॐ रुद्राय नमः स्वाहा ।
३७. ॐ अर्यम्णे नमः स्वाहा ।
३८. ॐ सवित्रे नमः स्वाहा ।
३९. ॐ विवस्वते नमः स्वाहा ।
४०. ॐ विबुधाधिपाय नमः स्वाहा ।
४१. ॐ मित्राय नमः स्वाहा ।
४२. ॐ राजयक्ष्मणे नमः स्वाहा ।
४३. ॐ पृथ्वीधराय नमः स्वाहा ।
४४. ॐ आपवत्साय नमः स्वाहा ।
४५. ॐ ब्रह्मणे नमः स्वाहा ।
४६. ॐ वास्तोष्पतये नमः स्वाहा ।
४७. ॐ चरक्यै नमः स्वाहा ।
४८. ॐ विदार्यै नमः स्वाहा ।
४९. ॐ पूतनायै नमः स्वाहा ।
५०. ॐ पापराक्षस्यै नमः स्वाहा ।
५१. ॐ स्कन्दाय नमः स्वाहा ।
५२. ॐ अर्यम्णे नमः स्वाहा ।
५३. ॐ जृम्भकाय नमः स्वाहा ।
५४. ॐ पिलिपिच्छाय नमः स्वाहा ।
५५. ॐ इन्द्राय नमः स्वाहा ।
५६. ॐ अग्नये नमः स्वाहा ।
५७. ॐ यमाय नमः स्वाहा ।
५८. ॐ निर्ऋतये नमः स्वाहा ।
५९. ॐ वरुणाय नमः स्वाहा ।
६०. ॐ वायवे नमः स्वाहा ।
६१. ॐ कुबेराय नमः स्वाहा ।
६२. ॐ ईशानाय नमः स्वाहा ।
६३. ॐ ब्रह्मणे नमः स्वाहा ।
६४. ॐ अनन्ताय नमः स्वाहा ।

इति वास्तुमण्डलदेवतानां होमः ॥

।। अथैकोनपञ्चाशत्क्षेत्रपालदेवतानां होमः ।।

१. ॐ अजराय नमः स्वाहा ।
२. ॐ व्यापकाय नमः स्वाहा ।
३. ॐ इन्द्रचौराय नमः स्वाहा ।
४. ॐ इन्द्रमूर्तये नमः स्वाहा ।
५. ॐ उक्षाभिधाय नमः स्वाहा ।
६. ॐ कूष्माण्डाय नमः स्वाहा ।
७. ॐ वरुणाय नमः स्वाहा ।
८. ॐ बाहुकाख्याय नमः स्वाहा ।
९. ॐ विमुक्ताय नमः स्वाहा ।
१०. ॐ लिप्तकाय नमः स्वाहा ।
११. ॐ लीलालोकाय नमः स्वाहा ।
१२. ॐ एकदंष्ट्राय नमः स्वाहा ।
१३. ॐ ऐरावताख्याय नमः स्वाहा ।
१४. ॐ औषधिघ्नाय नमः स्वाहा ।
१५. ॐ बन्धनाख्याय नमः स्वाहा ।
१६. ॐ दिव्यकायाय नमः स्वाहा ।
१७. ॐ कम्बलाख्याय नमः स्वाहा ।
१८. ॐ क्षोभणाख्या नमः स्वाहा ।
१९. ॐ गवये नमः स्वाहा ।
२०. ॐ घण्टाभिधाय नमः स्वाहा ।
२१. ॐ व्यालाय नमः स्वाहा ।
२२. ॐ अणुस्वरूपाय नमः स्वाहा ।
२३. ॐ चन्द्रवारुणाय नमः स्वाहा ।
२४. ॐ फटाटोपाय नमः स्वाहा ।
२५. ॐ जटिलाय नमः स्वाहा ।
२६. ॐ क्रतवे नमः स्वाहा ।
२७. ॐ घण्टेश्वराय नमः स्वाहा ।
२८. ॐ विटङ्काय नमः स्वाहा ।
२९. ॐ मणिमतये नमः स्वाहा ।
३०. ॐ गणबन्धाय नमः स्वाहा ।
३१. ॐ डामराय नमः स्वाहा ।
३२. ॐ ढुण्ढिकर्णाय नमः स्वाहा ।
३३. ॐ स्थिविराय नमः स्वाहा ।
३४. ॐ दन्तुराय नमः स्वाहा ।
३५. ॐ धनदाय नमः स्वाहा ।
३६. ॐ नागकर्णाय नमः स्वाहा ।
३७. ॐ मारीगणाय नमः स्वाहा ।
३८. ॐ फेत्काराय नमः स्वाहा ।
३९. ॐ चीकराय नमः स्वाहा ।
४०. ॐ सिंहाकृतये नमः स्वाहा ।
४१. ॐ मृगाय नमः स्वाहा ।
४२. ॐ यक्ष्मप्रियाय नमः स्वाहा ।
४३. ॐ मेघवाहनाय नमः स्वाहा ।
४४. ॐ तीक्ष्णोष्ट्राय नमः स्वाहा ।
४५. ॐ अनलाय नमः स्वाहा ।
४६. ॐ शुक्लतुण्डाय नमः स्वाहा ।
४७. ॐ अन्तरिक्षाय नमः स्वाहा ।
४८. ॐ वर्वरकाय नमः स्वाहा ।
४९. ॐ पावनाय नमः स्वाहा ।

इति क्षेत्रपालदेवतानां होमः ।।

।। अथ चतुःषष्टि योगिनी होमः ।।

१. ॐ महाकाल्यै नमः स्वाहा ।
२. ॐ महालक्ष्म्यै नमः स्वाहा ।
३. ॐ महासरस्वत्यै नमः स्वाहा ।
१. ॐ दिव्ययोगिन्यै नमः स्वाहा ।
२. ॐ महायोगिन्यै नमः स्वाहा ।
३. ॐ सिद्धियोगिन्यै नमः स्वाहा ।
४. ॐ माहेश्वर्यै नमः स्वाहा ।
५. ॐ प्रेताक्ष्यै नमः स्वाहा ।
६. ॐ डाकिन्यै नमः स्वाहा ।
७. ॐ काल्यै नमः स्वाहा ।
८. ॐ कालरात्र्यै नमः स्वाहा ।
९. ॐ निशाचर्यै नमः स्वाहा ।
१०. ॐ हुङ्कार्यै नमः स्वाहा ।
११. ॐ सिद्धिवैतालिकायै नमः स्वाहा ।
१२. ॐ ह्रीं कार्य्यै नमः स्वाहा ।
१३. ॐ भूत डामरायै नमः स्वाहा ।
१४. ॐ ऊर्ध्वकेश्यै नमः स्वाहा ।
१५. ॐ विरूपाक्ष्यै नमः स्वाहा ।
१६. ॐ शुष्काङ्ग्यै नमः स्वाहा ।
१७. ॐ नर भोजन्यै नमः स्वाहा ।
१८. ॐ वीरभद्रायै नमः स्वाहा ।
१९. ॐ धूम्राक्ष्यै नमः स्वाहा ।
२०. ॐ कलहप्रियायै नमः स्वाहा ।
२१. ॐ राक्षस्यै नमः स्वाहा ।
२२. ॐ घोर रक्ताक्ष्यै नमः स्वाहा ।
२३. ॐ विशालाक्ष्यै नमः स्वाहा ।
२४. ॐ फेत्कार्यै नमः स्वाहा ।
२५. ॐ कौमार्यै नमः स्वाहा ।
२६. ॐ चामुण्डायै नमः स्वाहा ।
२७. ॐ वाराह्यै नमः स्वाहा ।
२८. ॐ मुण्डधारिण्यै नमः स्वाहा ।
२९. ॐ भैरव्यै नमः स्वाहा ।
३०. ॐ वीरायै नमः स्वाहा।
३१. ॐ भयङ्कर्यै नमः स्वाहा।
३२. ॐ बज्र धारिण्यै नमः स्वाहा ।
३३. ॐ क्रोधायै नमः स्वाहा ।
३४. ॐ दुर्मुख्यै नमः स्वाहा ।
३५. ॐ प्रेतवाहिन्यै नमः स्वाहा ।
३६. ॐ कर्कायै नमः स्वाहा ।
३७. ॐ दीर्घ लम्बोष्ठ्यै नमः स्वाहा ।
३८. ॐ मालिन्यै नमः स्वाहा ।
३९. ॐ मन्त्र योगिन्यै नमः स्वाहा ।
४०. ॐ कालाग्नि मोहिन्यै नमः स्वाहा ।
४१. ॐ मोहिन्यै नमः स्वाहा ।
४२. ॐ चक्रायै नमः स्वाहा ।
४३. ॐ कुण्डलिन्यै नमः स्वाहा ।
४४. ॐ वालुकायै नमः स्वाहा ।
४५. ॐ कौवेर्यै नमः स्वाहा ।
४६. ॐ यमदूत्यै नमः स्वाहा ।
४७. ॐ करालिन्यै नमः स्वाहा ।
४८. ॐ कौशिक्यै नमः स्वाहा ।
४९. ॐ यक्षिन्यै नमः स्वाहा ।
५०. ॐ भक्षिण्यै नमः स्वाहा ।
५१. ॐ कौमार्यै नमः स्वाहा ।
५२. ॐ मन्त्रवाहिन्यै नमः स्वाहा ।
५३. ॐ विशालायै नमः स्वाहा ।
५४. ॐ कार्मुक्यै नमः स्वाहा ।
५५. ॐ व्याघ्र्यै नमः स्वाहा ।
५६. ॐ महाराक्षस्यै नमः स्वाहा ।
५७. ॐ प्रेतभक्षिण्यै नमः स्वाहा ।
५८. ॐ धूर्जट्यै नमः स्वाहा ।
५९. ॐ विकटायै नमः स्वाहा ।
६०. ॐ घोररूपायै नमः स्वाहा ।
६१. ॐ कपालिकायै नमः स्वाहा ।
६२. ॐ निकलायै नमः स्वाहा ।
६३. ॐ अमलायै नमः स्वाहा ।
६४. ॐ सिद्धिप्रदायै नमः स्वाहा ।

।। अथ सर्वतोभद्रमण्डलदेवतानां होमः ।।

१. ॐ ब्रह्मणे नमः स्वाहा ।
२. ॐ सोमाय नमः स्वाहा ।
३. ॐ ईशानाय नमः स्वाहा ।
४. ॐ इन्द्राय नमः स्वाहा ।
५. ॐ अग्नेय नमः स्वाहा ।
६. ॐ यमाय नमः स्वाहा ।
७. ॐ निर्ऋतये नमः स्वाहा ।
८. ॐ वरुणाय नमः स्वाहा ।
९. ॐ वायवे नमः स्वाहा ।
१०. ॐ अष्टवसुभ्यो नमः स्वाहा ।
११. ॐ एकादशरुद्रेभ्यो नमः स्वाहा ।
१२. ॐ द्वादशादित्यैभ्यो नमः स्वाहा ।
१३. ॐ अश्विभ्यां नमः स्वाहा ।
१४. ॐ सपैतृकविश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः स्वाहा ।
१५. ॐ सप्तयक्षेभ्यो नमः स्वाहा ।
१६. ॐ अष्टकुलनागेभ्यो नमः स्वाहा ।
१७. ॐ गन्धर्वाप्सरोभ्यो नमः स्वाहा ।
१८. ॐ स्कन्दाय नमः स्वाहा ।
१९. ॐ वृषभाय नमः स्वाहा ।
२०. ॐ शूलाय नमः स्वाहा ।
२१. महाकालाय नमः स्वाहा ।
२२. ॐ दक्षादिसप्तगणेभ्यो नमः स्वाहा ।
२३. ॐ दुर्गायै नमः स्वाहा ।
२४. ॐ विष्णवे नमः स्वाहा ।
२५. ॐ स्वधायै नमः स्वाहा ।
२६. ॐ मृत्युरोगेभ्यो नमः स्वाहा ।
२७. ॐ गणपतये नमः स्वाहा ।
२८ ॐ अद्भ्यो नमः स्वाहा ।
२९. ॐ मरुद्भ्यो नमः स्वाहा ।
३०. ॐ पृथिव्यै नमः स्वाहा ।
३१. ॐ गङ्गादिनदीभ्यो नमः स्वाहा ।
३२. ॐ सप्तसागरेभ्यो नमः स्वाहा ।
३३. ॐ मेरवे नमः स्वाहा ।
३४. ॐ गदायै नमः स्वाहा ।
३५. ॐ त्रिशूलाय नमः स्वाहा ।
३६. ॐ वज्राय नमः स्वाहा ।
३७. ॐ शक्तये नमः स्वाहा ।
३८. ॐ दण्डाय नमः स्वाहा ।
३९. ॐ खड्गाय नमः स्वाहा ।
४०. ॐ पाशाय नमः स्वाहा ।
४१. ॐ अंकुशाय नमः स्वाहा ।
४३. ॐ गौतमाय नमः स्वाहा ।
४३. ॐ भरद्वाजाय नमः स्वाहा ।
४४. ॐ विश्वामित्राय नमः स्वाहा ।
४५. ॐ कश्यपाय नमः स्वाहा ।
४६. ॐ जमदग्नये नमः स्वाहा ।
४७. ॐ वशिष्ठाय नमः स्वाहा ।
४८. ॐ अत्रये नमः स्वाहा ।
४९. ॐ अरुन्धत्यै नमः स्वाहा ।
५०. ॐ ऐन्द्र्यै नमः स्वाहा ।
५१. ॐ कौमार्यै नमः स्वाहा ।
५२. ॐ ब्राह्म्यै नमः स्वाहा ।
५३. ॐ वाराह्यै नमः स्वाहा ।
५४. ॐ चामुण्डायै नमः स्वाहा ।
५५. ॐ वैष्णव्यै नमः स्वाहा ।
५६. ॐ माहेश्वर्यै नमः स्वाहा ।
५७. ॐ वैनायक्यै नमः स्वाहा ।

इति सर्वतोभद्रमण्डलदेवतानां होमः ।।

।। अथ लिङ्गतोभद्रदेवताविशेष होमः ।।

१. ॐ असिताङ्गभैरवाय नमः स्वाहा ।
२. ॐ रुरुभैरवाय नमः स्वाहा ।
३. ॐ चण्डभैरवाय नमः स्वाहा ।
४. ॐ क्रोधभैरवाय नमः स्वाहा ।
५. ॐ उन्मत्तभैरवाय नमः स्वाहा ।
६. ॐ कपालभैरवाय नमः स्वाहा ।
७. ॐ भीषणभैरवाय नमः स्वाहा ।
८. ॐ संहारभैरवाय नमः स्वाहा ।
९. ॐ भवाय नमः स्वाहा ।
१०. ॐ सर्वाय नमः स्वाहा ।
११. ॐ पशुपतये नमः स्वाहा ।
१२. ॐ ईशानाय नमः स्वाहा ।
१३. ॐ रुद्राय नमः स्वाहा ।
१४. ॐ उग्राय नमः स्वाहा ।
१५. ॐ भीमाय नमः स्वाहा ।
१६. ॐ महते नमः स्वाहा ।
१७. ॐ अनन्ताय नमः स्वाहा ।
१८. ॐ वासुकये नमः स्वाहा ।
१९. ॐ तक्षकाय नमः स्वाहा ।
२०. ॐ कुलिसाय नमः स्वाहा ।
२१. ॐ कर्कोटकाय नमः स्वाहा ।
२२. ॐ शङ्खपालाय नमः स्वाहा ।
२३. ॐ कम्बलाय नमः स्वाहा ।
२४. ॐ अश्वतराय नमः स्वाहा ।
२५. ॐ शूलाय नमः स्वाहा ।
२६. ॐ चन्द्रमौलिने नमः स्वाहा ।
२७. ॐ चन्द्रमसे नमः स्वाहा ।
२८. ॐ वृषभध्वजाय नमः स्वाहा ।
२९. ॐ त्रिलोचनाय नमः स्वाहा ।
३०. ॐ शक्तिधराय नमः स्वाहा ।
३१. ॐ महेश्वराय नमः स्वाहा ।
३२. ॐ शूलपाणये नमः स्वाहा ।

।। अथ गौरीतिलकमण्डलदेवानां होमः ।।

१. ॐ महाविष्णवे नमः स्वाहा ।
२. ॐ महालक्ष्म्यै नमः स्वाहा ।
३. ॐ महेश्वराय नमः स्वाहा ।
४. ॐ महामायायै नमः स्वाहा ।
५. ॐ ऋग्वेदाय नमः स्वाहा ।
६. ॐ यजुर्वेदाय नमः स्वाहा ।
७. ॐ सामवेदाय नमः स्वाहा ।
८. ॐ अथर्ववेदाय नमः स्वाहा ।
९. ॐ अद्भ्यो नमः स्वाहा ।
१०. ॐ जलोद्भवाय नमः स्वाहा।
११. ॐ ब्रह्मणे नमः स्वाहा ।
१२. ॐ प्रजापतये नमः स्वाहा ।
१३. ॐ शिवाय नमः स्वाहा ।
१४. ॐ अनन्ताय नमः स्वाहा ।
१५. ॐ परमेष्ठिने नमः स्वाहा ।
१६. ॐ धात्रे नमः स्वाहा ।
१७. ॐ विधात्रे नमः स्वाहा ।
१८. ॐ अर्य्यमणे नमः स्वाहा ।
१९. ॐ मित्राय नमः स्वाहा ।
२०. ॐ वरुणाय नमः स्वाहा ।
२१. ॐ अंशुमते नमः स्वाहा ।
२२. ॐ भगाय नमः स्वाहा ।
२३. ॐ इन्द्राय नमः स्वाहा ।
२४. ॐ विवश्वते नमः स्वाहा ।
२५. ॐ पूष्णे नमः स्वाहा ।
२६. ॐ पर्जन्याय नमः स्वाहा ।
२७. ॐ त्वष्ट्रे नमः स्वाहा ।
२८. ॐ दक्षयज्ञाय नमः स्वाहा ।
२९. ॐ देववसवे नमः स्वाहा ।
३०. ॐ महासुताय नमः स्वाहा।
३१. ॐ सुधर्मणे नमः स्वाहा।
३२. ॐ शङ्खपदे नमः स्वाहा ।
३३. ॐ महाबाहवे नमः स्वाहा ।
३४. ॐ वपुष्मते नमः स्वाहा ।
३५. ॐ अनन्ताय नमः स्वाहा ।
३६. ॐ महेरणाय नमःस्वाहा ।
३७. ॐ विश्वावसवे नमः स्वाहा ।
३८. ॐ सुपर्वणे नमःस्वाहा ।
३९. ॐ विष्टराय नमः स्वाहा ।
४०. ॐ रुद्रदेवतायै नमः स्वाहा ।
४१. ॐ ध्रुवाय नमः स्वाहा ।
४२. ॐ धरायै नमःस्वाहा।
४३. ॐ सोमाय नमः स्वाहा ।
४४. ॐ आपवत्साय नमःस्वाहा ।
४५. ॐ नलाय नमः स्वाहा ।
४६. ॐ अनिलाय नमःस्वाहा ।
४७. ॐ प्रत्यूषाय नमः स्वाहा ।
४८. ॐ प्रभासाय नमः स्वाहा ।
४९. ॐ आवर्त्ताय नमः स्वाहा ।
५०. ॐ सावर्त्ताय नमःस्वाहा ।
५१. ॐ द्रोणाय नमः स्वाहा ।
५२. ॐ पुष्कराय नमः स्वाहा ।
५३. ॐ ह्रींकार्यै नमः स्वाहा ।
५४. ॐ ह्रीयै नमःस्वाहा ।
५५. ॐ कात्यायन्यै नमः स्वाहा ।
५६. ॐ चामुण्डायै नमः स्वाहा ।
५७. ॐ महादिव्यायै नमः स्वाहा ।
५८. ॐ महाशब्दायै नमःस्वाहा।
५९. ॐ सिद्धिदायै नमः स्वाहा ।
६०. ॐ ऐं नमःस्वाहा ।
६१. ॐ श्रीं श्रीयै नमः स्वाहा ।
६२. ॐ ह्रीं ह्रियै नमः स्वाहा ।
६३. ॐ लक्ष्म्यै नमः स्वाहा ।
६४. ॐ श्रियै नमः स्वाहा ।
६५. ॐ सुघनाय नमः स्वाहा ।
६६. ॐ मेधायै नमः स्वाहा ।
६७. ॐ प्रज्ञायै नमः स्वाहा ।
६८. ॐ मत्यै नमः स्वाहा ।
६९. ॐ स्वाहायै नमः स्वाहा ।
७०. ॐ सरस्वत्यै नमः स्वाहा ।

७१. ॐ गौर्यै नमः स्वाहा ।
७२. ॐ पद्मायै नमः स्वाहा ।
७३. ॐ शच्यै नमः स्वाहा ।
७४. ॐ सुमेधायै नमः स्वाहा ।
७५. ॐ सावित्र्यै नमः स्वाहा ।
७६. ॐ विजयायै नमः स्वाहा ।
७७. ॐ देवसेनायै नमः स्वाहा ।
७८. ॐ स्वाहायै नमः स्वाहा ।
७९. ॐ स्वधायै नमः स्वाहा ।
८०. ॐ मात्रे नमः स्वाहा ।
८१. ॐ गायत्र्यै नमः स्वाहा ।
८२. ॐ लोकमात्र्यै नमः स्वाहा ।
८३. ॐ धृत्यै नमः स्वाहा ।
८४. ॐ पुष्ट्यै नमः स्वाहा ।
८५. ॐ तुष्ट्यै नमः स्वाहा ।
८६. ॐ आत्मकुलदेवतायै नमः स्वाहा।
८७. ॐ गणेश्वर्य्यै नमः स्वाहा ।
८८. ॐ कुलमात्र्यै नमः स्वाहा ।
८९. ॐ शान्त्यै नमः स्वाहा ।
९०. ॐ जयन्त्यै नमः स्वाहा ।
९१. ॐ मङ्गलायै नमः स्वाहा ।
९२. ॐ काल्यै नमः स्वाहा ।
९३. ॐ भद्रकाल्यै नमः स्वाहा ।
९४. ॐ कपालिन्यै नमः स्वाहा ।
९५. ॐ दुर्गायै नमः स्वाहा ।
९६. ॐ क्षमायै नमः स्वाहा ।
९७. ॐ शिवायै नमः स्वाहा ।
९८. ॐ धात्र्यै नमः स्वाहा ।
९९. ॐ स्वाहास्वधाभ्यां नमःस्वाहा ।
१००. ॐ दीप्यमानायै नमः स्वाहा ।
१०१. ॐ दीप्तायै नमः स्वाहा ।
१०२. ॐ सूक्ष्मायै नमः स्वाहा ।
१०३. ॐ विभूत्यै नमः स्वाहा ।
१०४. ॐ विमलायै नमः स्वाहा ।
१०५. ॐ परायै नमःस्वाहा ।
१०६. ॐ अमोघायै नमः स्वाहा ।
१०७. ॐ विधूतायै नमःस्वाहा ।
१०८. ॐ सर्वतोमुख्यै नमः स्वाहा ।
१०९. ॐ आनन्दायै नमःस्वाहा ।
११०. ॐ नन्दिन्यै नमः स्वाहा ।
१११. ॐ शक्त्यै नमः स्वाहा ।
११२. ॐ महासूक्ष्मायै नमः स्वाहा ।
११३. ॐ करालिन्यै नमःस्वाहा ।
११४. ॐ भारत्यै नमः स्वाहा ।
११५. ॐ ज्योतिषे नमः स्वाहा ।
११६. ॐ ब्राह्म्यै नमः स्वाहा ।
११७. ॐ माहेश्वर्यै नमःस्वाहा ।
११८. ॐ कौमार्यै नमः स्वाहा ।
११९. ॐ वैष्णव्यै नमः स्वाहा ।
१२०. ॐ वाराह्यै नमः स्वाहा।
१२१. ॐ इन्द्राण्यै नमःस्वाहा।
१२२. ॐ चण्डिकायै नमः स्वाहा ।
१२३. ॐ बुद्ध्यै नमःस्वाहा ।
१२४. ॐ लज्जायै नमः स्वाहा ।
१२५. ॐ वपुष्मत्यै नमःस्वाहा ।
१२६. ॐ शान्त्यै नमः स्वाहा ।
१२७. ॐ कान्त्यै नमः स्वाहा ।
१२८. ॐ रत्यै नमः स्वाहा ।
१२९. ॐ प्रीत्यै नमः स्वाहा ।
१३०. ॐ कीर्त्यै नमः स्वाहा ।
१३१. ॐ प्रभायै नमः स्वाहा ।
१३२. ॐ काम्यायै नमः स्वाहा ।
१३३. ॐ कान्तायै नमः स्वाहा ।
१३४. ॐ ऋद्ध्यै नमः स्वाहा ।
१३५. ॐ दयायै नमःस्वाहा।
१३६. ॐ शिवदूत्यै नमः स्वाहा ।
१३७. ॐ श्रद्धायै नमःस्वाहा ।
१३८. ॐ क्षमायै नमः स्वाहा ।
१३९. ॐ क्रियायै नमःस्वाहा ।
१४०. ॐ विद्यायै नमः स्वाहा ।
१४१. ॐ मोहिन्यै नमः स्वाहा ।
१४२. ॐ यशोवत्यै नमः स्वाहा ।
१४३. ॐ कृपावत्यै नमःस्वाहा ।
१४४. ॐ सलिलायै नमः स्वाहा ।

१४५. ॐ सुशीलायै नमः स्वाहा।
१४६. ॐ ईश्वर्यै नमः स्वाहा।
१४७. ॐ सिद्धेश्वर्यै नमःस्वाहा।
१४८. ॐ द्वैपायनाय नमः स्वाहा।
१४९. ॐ भरद्वाजाय नमः स्वाहा।
१५०. ॐ मित्राय नमः स्वाहा।
१५१. ॐ सनकाय नमःस्वाहा।
१५२. ॐ गौतमाय नमः स्वाहा।
१५३. ॐ सुमन्तवे नमःस्वाहा।
१५४. ॐ त्वष्ट्रे नमः स्वाहा।
१५५. ॐ सनन्दाय नमःस्वाहा।
१५६. ॐ देवलाय नमः स्वाहा।
१५७. ॐ व्यासाय नमः स्वाहा।
१५८. ॐ ध्रुवाय नमः स्वाहा।
१५९. ॐ सनातनाय नमः स्वाहा।
१६०. ॐ वसिष्ठाय नमः स्वाहा।
१६१. ॐ च्यवनाय नमः स्वाहा।
१६२. ॐ पुष्कराय नमः स्वाहा।
१६३. ॐ सनत्कुमाराय नमः स्वाहा।
१६४. ॐ कण्वाय नमः स्वाहा।
१६५. ॐ मैत्राय नमःस्वाहा।
१६६. ॐ कवये नमः स्वाहा।
१६७. ॐ विश्वामित्राय नमःस्वाहा।
१६८. ॐ वामदेवाय नमः स्वाहा।
१६९. ॐ सुमन्ताय नमःस्वाहा।
१७०. ॐ जैमिनये नमः स्वाहा।
१७१. ॐ क्रतवे नमः स्वाहा।
१७२. ॐ पिप्पलादाय नमः स्वाहा।
१७३. ॐ पराशराय नमःस्वाहा।
१७४. ॐ गर्गाय नमः स्वाहा।
१७५. ॐ वैशंपायनाय नमः स्वाहा।
१७६. ॐ मार्कण्डेयाय नमः स्वाहा।
१७७. ॐ मृकंडाय नमःस्वाहा।
१७८. ॐ लोमशाय नमः स्वाहा।
१७९. ॐ पुलहाय नमः स्वाहा।
१८०. ॐ पुलस्त्याय नमः स्वाहा।
१८१. ॐ बृहस्पतये नमःस्वाहा।
१८२. ॐ जमदग्न्ये नमः स्वाहा।
१८३. ॐ जामदग्नयाय नमःस्वाहा।
१८४. ॐ दालभ्याय नमः स्वाहा।
१८५. ॐ गालवाय नमःस्वाहा।
१८६. ॐ याज्ञवल्क्याय नमः स्वाहा।
१८७. ॐ दुर्वाससे नमः स्वाहा।
१८८. ॐ सौभरये नमः स्वाहा।
१८९. ॐ जाबालये नमः स्वाहा।
१९०. ॐ बाल्मीकये नमः स्वाहा।
१९१. ॐ वहवृचाय नमःस्वाहा।
१९२. ॐ इन्द्रप्रमितये नमः स्वाहा।
१९३. ॐ देवमित्राय नमःस्वाहा।
१९४. ॐ जाजलये नमः स्वाहा।
१९५. ॐ शाकल्याय नमःस्वाहा।
१९६. ॐ मुद्गलाय नमः स्वाहा।
१९७. ॐ जातुकर्ण्याय नमः स्वाहा।
१९८. ॐ बलाकाय नमः स्वाहा।
१९९. ॐ कृपाचार्याय नमः स्वाहा।
२००. ॐ सुकर्मणे नमः स्वाहा।
२०१. ॐ कौशल्याय नमः स्वाहा।
२०२. ॐ ब्रह्माग्नये नमः स्वाहा।
२०३. ॐ गार्हस्पत्याग्नये नमः स्वाहा।
२०४. ॐ ईश्वराग्नये नमः स्वाहा।
२०५. ॐ दक्षिणाग्नये नमःस्वाहा।
२०६. ॐ वैष्णवाग्नये नमः स्वाहा।
२०७. ॐ आहवनीयाग्नये नमःस्वाहा।
२०८. ॐ सप्तजिह्वाग्नये नमः स्वाहा।
२०९. ॐ इध्मजिह्वाग्नये नमःस्वाहा।
२१०. ॐ प्रवर्ग्याग्नये नमः स्वाहा।
२११. ॐ वडवाग्नये नमः स्वाहा।
२१२. ॐ जठराग्नये नमः स्वाहा।
२१३. ॐ लोकाग्नये नमःस्वाहा।
२१४. ॐ सूर्याय नमः स्वाहा।
२१५. ॐ वेदाङ्गाय नमः स्वाहा।
२१६. ॐ मानवे नमः स्वाहा।
२१७. ॐ इन्द्राय नमःस्वाहा।
२१८. ॐ खगाय नमः स्वाहा।

२१९. ॐ गभस्तिने नमः स्वाहा।
२२०. ॐ यमाय नमः स्वाहा।
२२१. ॐ अंशुमते नमःस्वाहा।
२२२. ॐ हिरण्यरेतसे नमः स्वाहा।
२२३. ॐ दिवाकराय नमःस्वाहा।
२२४. ॐ मित्राय नमः स्वाहा।
२२५. ॐ विष्णवे नमःस्वाहा।
२२६. ॐ शम्भवे नमः स्वाहा।
२२७. ॐ गिरिशाय नमः स्वाहा।
२२८. ॐ अजैकपदे नमः स्वाहा।
२२९. ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः स्वाहा।
२३०. ॐ पिनाकपाणये नमः स्वाहा।
२३१. ॐ अपराजिताय नमः स्वाहा।
२३२. ॐ भुवनाधीश्वराय नमःस्वाहा।
२३३. ॐ कपालिने नमः स्वाहा।
२३४. ॐ विशांपतये नमः स्वाहा।
२३५. ॐ रुद्राय नमःस्वाहा।
२३६. ॐ वीरभद्राय नमः स्वाहा।
२३७. ॐ अश्विनीकुमाराभ्यां नमःस्वाहा।
२३८. ॐ आवहाय नमः स्वाहा।
२३९. ॐ प्रवहाय नमःस्वाहा।
२४०. ॐ उद्वहाय नमः स्वाहा।
२४१. ॐ संवहाय नमः स्वाहा।
२४२. ॐ विवहाय नमः स्वाहा।
२४३. ॐ परिवहाय नमःस्वाहा।
२४४. ॐ धरायै नमः स्वाहा।
२४५. ॐ अद्भ्योः नमः स्वाहा।
२४६. ॐ अग्नये नमः स्वाहा।
२४७. ॐ वायवे नमःस्वाहा।
२४८. ॐ आकाशाय नमः स्वाहा।
२४९. ॐ हिरण्यनाभाय नमः स्वाहा।
२५०. ॐ पुष्पञ्जयाय नमः स्वाहा।
२५१. ॐ द्रोणाय नमःस्वाहा।
२५२. ॐ शृंगिणे नमः स्वाहा।
२५३. ॐ वादरायणाय नमःस्वाहा।
२५४. ॐ अगस्त्याय नमः स्वाहा।
२५५. ॐ मनवे नमःस्वाहा।
२५६. ॐ कश्यपाय नमः स्वाहा।
२५७. ॐ धौम्याय नमः स्वाहा।
२५८. ॐ भृगवे नमः स्वाहा।
२५९. ॐ वीतिहोत्राय नमः स्वाहा।
२६०. ॐ मधुच्छंदसे नमः स्वाहा।
२६१. ॐ वीरसेनाय नमः स्वाहा।
२६२. ॐ कृतवृष्णवे नमः स्वाहा।
२६३. ॐ अत्रये नमः स्वाहा।
२६४. ॐ मेधातिथये नमः स्वाहा।
२६५. ॐ अरिष्टनेमये नमःस्वाहा।
२६६. ॐ आङ्गिरसाय नमः स्वाहा।
२६७. ॐ इन्द्रप्रमदाय नमःस्वाहा।
२६८. ॐ इध्मवाहवे नमः स्वाहा।
२६९. ॐ पिप्पलादाय नमःस्वाहा।
२७०. ॐ नारदाय नमः स्वाहा।
२७१. ॐ अरिष्टसेनाय नमः स्वाहा।
२७२. ॐ अरुणाय नमः स्वाहा।
२७३. ॐ कपिलाय नमःस्वाहा।
२७४. ॐ कर्दमाय नमः स्वाहा।
२७५. ॐ मरीचये नमः स्वाहा।
२७६. ॐ क्रतवे नमः स्वाहा।
२७७. ॐ प्रचेतसे नमःस्वाहा।
२७८. ॐ उत्तमाय नमः स्वाहा।
२७९. ॐ दधीचये नमः स्वाहा।
२८०. ॐ श्राद्धदेवेभ्यो नमः स्वाहा।
२८१. ॐ गणदेवेभ्यो नमःस्वाहा।
२८२. ॐ विद्याधरेभ्यो नमः स्वाहा।
२८३. ॐ अप्सरेभ्यो नमःस्वाहा।
२८४. ॐ यक्षेभ्यो नमः स्वाहा।
२८५. ॐ रक्षेभ्यो नमःस्वाहा।
२८६. ॐ गन्धर्वेभ्यो नमः स्वाहा।
२८७. ॐ पिशाचेभ्या नमः स्वाहा।
२८८. ॐ गुह्यकेभ्यो नमः स्वाहा।
२८९. ॐ सिद्धदेवेभ्यो नमः स्वाहा।
२९०. ॐ औषधीभ्यो नमः स्वाहा।
२९१. ॐ भूतग्रामाय नमःस्वाहा।
२९२. ॐ चतुर्विधभूत ग्रामाय नमः स्वाहा।

अथाग्निपूजनं स्विष्टकृद्धवनञ्च ।

यजमानः 'कृतस्य हवनफलसाफल्यतासिद्ध्यर्थं स्वाहा - स्वधायुतमग्निपूजनं करिष्ये' इति सङ्कल्प्य ॥

ॐ अग्ने नय सुपथा राये ऽअस्मान्विश्श्वानि देव व्वयुनानि व्विद्वान् । युयोद्ध्यस्मज्जु हुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम ऽउक्तिं व्विधेम ॥ 'ॐ स्वाहा स्वधायुताग्नये वैश्वानराय नमः' इति मन्त्रेणाग्निं सम्पूज्य ततो हुतशेषद्रव्यं वामहस्ते गृहीत्वा दक्षिणहस्तेनाज्यपूर्णं स्रुवं गृहीत्वा दक्षिणं जान्वाच्य ब्रह्मणाऽन्वारब्धः स्विष्टकृद्धवनं कुर्यात् ।

ॐ अग्नयेस्विष्टकृते स्वाहा, इदमग्नये स्विष्टकृते न मम । इति हुतशेषाऽऽज्यस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः । इति स्विष्टकृद्धवनम् ।

अथ भूरादिनवाहुतयः

ॐ भूः स्वाहा, इदमग्नये न मम ॥ १॥ ॐ भुवः स्वाहा, इदं वायवे न मम ॥ २॥ ॐ स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय न मम ॥ ३॥

ॐ त्वं नो ऽअग्ने व्वरुणस्य व्विद्वान् देवस्य हेडो ऽअवयासिसीष्ठाः । यजिष्ठो व्वह्नितमः शोशुचानो व्विश्वा द्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा ॥ इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ॥४॥

ॐ स त्त्वं नो ऽअग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो ऽअस्या ऽउषसो व्युष्टौ । अवयक्ष्व नो व्वरुणꣳ रराणो व्वीहि मृडीकꣳ सुहवो न ऽएधि स्वाहा ॥ इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ॥५॥

ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्त्वमया ऽअसि । अया नो यज्ञं व्वहास्यया नो धेहि भेषजꣳस्वाहा ॥ इदमग्नये अयसे न मम ॥६॥

ॐ ये ते शतं व्वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा व्वितता महान्तः । तेभिर्न्नो ऽअद्य सवितोत विष्णुर्व्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्क्काः स्वाहा ॥ इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ॥७॥

ॐ उदुत्तमं व्वरुण पाशमस्मदवाधमं व्विमध्यमꣳ श्रथाय । अथा व्वयमादित्य व्व्रते तवानागसो ऽअदितये स्याम स्वाहा ॥ इदं वरुणायादित्यायादितये च न मम ॥८॥

ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम ॥९॥ इति नवाहुतयः ।

अथ एकतन्त्रेण दशदिक्पालबलिः

ॐ प्राच्च्यै दिशे स्वाहार्व्वाच्च्यै दिशे स्वाहा दक्षिणायै दिशे स्वाहार्व्वाच्च्यै दिशे स्वाहा प्रतीच्च्यै दिशे स्वाहार्व्वाच्यै दिशे स्वाहोदीच्च्यै दिशे स्वाहार्व्वाच्च्यै दिशे स्वाहोर्द्ध्वायै दिशे स्वाहार्व्वाच्च्यै दिशे स्वाहार्व्वाच्च्यै दिशे स्वाहार्व्वाच्च्यै दिशे स्वाहा ॥ इन्द्रादिभ्यो दशभ्यो दिक्पालेभ्यो नमः ।

ॐ इन्द्रादिदशदिक्पालेभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः इमान् सदीपदधिमाषभक्तबलीन् समर्पयामि ।

भो भो इन्द्रादिदशदिक्पालाः । स्वां स्वां दिशं रक्षत बलिं भक्षत मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः वरदा भवत । अनेन बलिदानेन इन्द्रादिदशदिक्पालाः प्रीयन्ताम् । इति दश-दिक्पालबलिः ।

अथ वास्तोष्पतिबलिः

ॐ वास्तोष्पते प्रति० । ॐ वास्तोष्पतये नमः ।

ॐ वास्तोष्पतये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपदधि भाषभक्तबलीं समर्पयामि ।

भो वास्तोष्पते । इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः वरदा भवत । अनेन बलिदानेन वास्तोष्पतिः प्रीयताम् ।

अथ एकतन्त्रेण नवग्रहबलिः

ॐ ग्रहा ऽऊर्ज्जाहुतयो व्यन्तो व्विप्राय मतिम् । तेषां व्विशिप्रियाणां व्वोऽहमिषमूर्ज्जꣳ समग्रभमुपयामगृहीतोऽ सीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्रायत्त्वा जुष्टतमम् ॥ ॐ सूर्यादिनवग्रहेभ्यो नमः ।

ॐ सूर्यादिनवग्रहेभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-गणपत्यादिपञ्चलोकपाल-वास्तोष्पतिसहितेभ्यः इमं सदीप--दधि-माष -भक्तबलिं समर्पयामि ।

भो भो सूर्यादिनवग्रहाः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-गणपत्यादिपञ्चलोकपाल-वास्तोष्पतिस-हिताः इमं बलिं गृह्णीत ।

मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारो वरदा भवत । अनेन बलिदानेन साङ्गाः सूर्यादिनवग्रहाः प्रीयन्ताम् ।

अथ क्षेत्रपालबलिदानविधिः

यजमानः – क्षेत्रपालाय एकस्मिन् वंशादिपात्रे शूर्पे च कुशानास्तीर्य तदुपरि मनुष्याहारचतुर्गुणं द्विगुणं वा हरिद्रा-कुङ्कुमसिन्दूर-रक्तपुष्पादियुतं सताम्बूलं सदक्षिणं माष-भक्त-दध्योदनं जलपात्रं च निधाय चतुर्मुखं दीपं प्रज्वल्य बलिं दद्यात् ॥

ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद व्वैश्वानरात्पुर ऽएतारमग्नेः । एमेनमवृधन्नमृता ऽअमर्त्यं व्वैश्श्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः ॥

इति 'क्षेत्रापालाय नमः' इत्युक्त्वा क्षेत्रपालं षोडशोपचारैः पञ्चोपचारैर्वा सम्पूज्य प्रार्थयेत् –

नमो वै क्षेत्रापलस्त्वं भूतप्रेतगणैः सह ।
पूजां बलिं गृहाणेमं सौम्यो भव च सर्वदा ॥१॥
पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामांश्च देहि मे ।
आयुरारोग्यं मे देहि निर्विघ्नं कुरु सर्वदा ॥२॥

ततो बलिदानार्थं हस्ते जलं गृहीत्वा –

ॐ क्षेत्रपालाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय मारीगण-भैरव-राक्षस-कूष्माण्ड-वेताल-भूत-प्रेत-पिशाच-डाकिनी-शाकिनी-पिशाचिनी-ब्रह्मराक्षस- गणसहिताय इमं कुङ्कुम-रक्तपुष्पादियुतं सदीपं सताम्बूलं सदक्षिणं दधि-माष-भक्तबलिं समर्पयामि ।

भोः क्षेत्रापाल । सर्वतो दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव । अनेन बलिदानेन क्षेत्रपालः प्रीयताम् ।

बलिं गृह्णन्त्विमं देवा आदित्या वसवस्तथा ।
मरुतश्चाश्विनौ रुद्राः सुपर्णाः पन्नगाः खगाः (नगाः) ॥१॥
असुरा यातुधानाश्च पिशाचोरगराक्षसाः ।
डाकिन्यो यक्षवेताला योगिन्यः पूतनाः शिवाः ॥२॥
जृम्भकाः सिद्धगन्धर्वाः सौम्या विद्याधरा नगाः ।

दिक्पाला लोकपालाश्च ये च विघ्नविनायकाः ॥३॥
जगतां शान्तिकर्तारो ब्रह्माद्याश्च महर्षयः ।
(मा विघ्नं मा च मे पापं मा सन्तु परिपन्थिनः ॥)
सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च भूत-प्रेताः सुखावहाः ॥४॥
भूतानि यानीह वसन्ति तानि बलिं गृहीत्वा विधिवत्प्रयुक्तम् ।
अन्यत्र वासं परिकल्पयन्तु रक्षन्तु मां तानि सदैव चात्र ॥५॥

ततो दुर्ब्राह्मणेन नापितेन (शूद्रेण) वा क्षेत्रपालबलिं गृहीत्वा यजमानपृष्ठतोऽनवेक्षमाणेन यजमानमस्तकोपरि सकृद् भ्रामयित्वा 'हिर्देशे चतुष्पथे निःक्षिपेत् ।

तत आचार्यः- ॐ हिङ्काराय स्वाहाहिङ्कृताय स्वाहा क्क्रन्दते स्वाहा ऽवक्क्रन्दाय स्वाहा प्प्रोथते स्वाहा प्रप्प्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा वल्गते स्वाहाऽऽसीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्प्रबुद्धाय स्वाहा व्विजृम्भमाणाय स्वाहा व्विचृत्ताय स्वाहा सर्ठ० हानाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहाऽयनाय स्वाहा प्प्रायणाय स्वाहा ॥ इति मन्त्रेण यजमानमस्तकोपरि जलं प्रक्षिपेत् । इति क्षेत्रपालबलिदानविधिः ।

अथ पूर्णाहुतिः

यजमानः पाणिपादं प्रक्षाल्याचम्य प्राणानायम्य कुण्डाग्नि-समीपमागत्योपविशेत् । पश्चात् सङ्कल्पं कुर्यात् –

देशकालौ सङ्कीर्त्य ''गोत्रः शर्माऽहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्) कृतस्य अमुकयागकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च मृडनामाग्नौ पूर्णाहुतिं होष्यामि'' इति सङ्कल्प्य चतुः- षट्-द्वादशस्त्रुवेण च गृहीतमाज्यंस्त्रुच्यां कृत्वा तस्योपरि रक्तवस्त्रवेष्टितं श्रीफलं (नारिकेलफलं) संस्थाप्य –

ॐ पूर्णादर्व्वि परापत सुपूर्ण्णा पुनरापत । व्वस्न्नेव व्विक्क्रीणावहा ऽइषमूर्ज्जर्ठ० शतक्क्रतो ॥ इति मन्त्रेण ॐ पूर्णाहुत्यै नमः । सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ॥

ॐ समुद्रादूर्म्मिर्म्मधुमाँ २॥ ऽउदारदुपाꣳशुना सममृतत्त्वमानद् ।
घृतस्य नाम गुह्यं य्यदस्ति जिह्वा देवानाममृतस्य नाभिः ॥१॥
व्वयं नाम प्रब्ब्रवामा घृतस्यास्मिन् यज्ञे धारयामा नमोभिः ।
उप ब्ब्रह्मा श्शृणवच्छस्यमानं चतुःश्शृङ्गोऽवमीद् गौर ऽएतत् ॥२॥
चत्त्वारि श्शृङ्गा त्रयो ऽअस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो ऽअस्य ।
त्रिधा वद्धो वृषभो रोरवीति महोदेवो मर्त्याँ२॥ आविवेश ॥३॥
त्रिधा हितं पणिभिर्गुह्यमानं गवि देवासो घृतमन्वविन्दन् ।
इन्द्र ऽएकꣳ सूर्य्य ऽएकञ्जजान व्वेनादेकꣳ स्वधया निष्टतक्षुः ॥४॥
एताऽ अर्षन्ति हृद्यात्समुद्राच्छतव्व्रजा रिपुणा नावचक्षे ।
घृतस्य धारा ऽअभिचाकशीमि हिरण्ययो व्वेतसो मध्य ऽआसाम् ॥५॥
सम्म्यक् स्त्रवन्ति सरितो ने धेना ऽअन्तर्हृदा मनसा पूयमानाः ।
एते ऽअर्षन्त्यूर्म्मयो घृतस्य मृगा ऽइव क्षिपणोरीषमाणाः ॥६॥
सिन्धोरिव प्राद्ध्वने शूघनासो व्वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः ।
घृतस्य धारा ऽअरुषो न व्वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्म्मिभिः पिन्वमानः ॥७॥
अभिप्रवन्त समनेव योषाः कल्ल्याण्ण्यः स्म्मयमानासो ऽअग्निम् ।
घृतस्य धाराः समिधो नसन्त ता जुषाणो हर्य्याति जातवेदाः ॥८॥
कन्न्या ऽइव व्वहतुमेतवा ऽउ ऽअञ्ज्यञ्जाना ऽअभिचाकशीमि ।
यत्र सोमःसूयते यत्र यज्ञो घृतस्य धारा ऽअभि तत्पवन्ते ॥९॥
अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजिमस्म्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त ।
इमं यज्ञं नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत्पवन्ते ॥१०॥
धामन्ते व्विश्श्वं भुवनमधि श्श्रितमन्तः समुद्रे हृद्यन्तरायुषि।
अपामनीकेसमिथेय ऽआभृतस्तमश्याम मधुमन्तं त ऽऊर्म्मिम् ॥११॥
पुनस्त्वाऽऽदित्या रुद्रा व्वसवः समिन्धतां पुनर्ब्ब्रह्माणो व्वसुनीथ यज्ञैः ।
घृतेन त्वं तन्न्वं व्वर्द्धयस्व सत्त्याः सन्तु यजमानस्य कामाः ॥१२॥
मूर्द्धानं दिवो ऽअरतिं पृथिव्व्या व्वैश्श्वानरमृत ऽआ जातमग्निम् ।
कविꣳ सम्म्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः ॥१३॥
पूर्णा दर्व्वि परापत सुपूर्ण्णा पुनरापत ।
व्वस्नेव व्विक्क्रीणावहा ऽइषमूर्ज्जꣳ शतक्क्रतो स्वाहा ॥१४॥

'इदमग्नये वैश्वानराय वसुरुद्रादित्येभ्यः शतक्रतवे सप्तवते अग्नयेऽद्भ्यश्च न मम ' इति यजमानस्त्यजेत् । इति पूर्णाहुतिः ।

अथ वसोर्द्धाराहोमः

यजमानः सङ्कल्पंकुर्यात् । देशकालौ सङ्कीर्त्य —

''कृतस्यअमुकयागकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च वसोर्द्धारां होष्यामि'' इति सङ्कल्प्य कुण्डोपरि वसोर्द्धारां प्रागग्रां निधाय तदुपरि घृतपूरितेन ताम्रादिपात्रघृतेनाधोयवमात्रछिद्रेणाज्यं विमुञ्चतोऽग्नेरुपरि वसोर्द्धारां पातयेत् । वसोर्द्धारायाः मुखं सुवर्णनिर्मितजिह्वां बध्नीयात् । तस्यां च घृतधारायां पतन्त्यां स्रुक्प्रणालिकयाऽग्नौ पतन्त्यां इमान् मन्त्रान् पठेत् ।

ॐ सप्त ते ऽअग्ने समिधः सप्तजिह्वाः सप्त ऽऋषयः सप्त धाम प्रियाणि। सप्त होत्राः सप्तधा त्त्वा यजन्ति सप्त योनीरापृणस्व घृतेन स्वाहा ॥१॥

शुक्रज्ज्योतिश्च चित्रज्योतिश्च सत्यज्ज्योतिश्च ज्ज्योतिष्माँश्च । शुक्रश्च ऋतपाश्चात्यꣳहाः ॥२॥

ईदृङ् चान्यादृङ् च सदृङ् च प्रतिसदृङ् च । मितश्च सम्मितश्च्च सभराः ॥ ३॥

ऋतश्च्च सत्यश्च्च ध्रुवश्च धरुणश्च्च । धर्त्ता च व्विधर्त्ता च व्विधारयः ॥४॥

ऋतजिच्च सत्यजिच्च सेनजिच्च सूषेणश्च्च । अन्तिमित्रश्च्च दूरे ऽअ-मित्रश्च गणः ॥५॥

ईदृक्षास ऽएतादृक्षास ऽऊषुणः सदृक्षासः प्रतिसदृक्षास ऽएतन । मितासश्च्च सम्मितासो नो ऽअद्य सभरसो मरुतो यज्ञे ऽअस्मिन् ॥६॥

स्वतवाँश्च्च प्रघासी च सान्तपनश्च्च गृहमेधी च । क्क्रीडी च शाकी चोज्जेषी ॥७॥

इन्द्रं दैवीर्व्विशो मरुतोऽनुवर्त्मानोऽ भवन्यथेन्द्रं दैवीर्व्विशो मरुतोऽनुवर्त्मानोऽभवन् । एवमिमं यजमानं दैवीश्च्च व्विशो मानुषीश्च्चानुवर्त्मानो भवन्तु ॥८॥

इमंꣳ स्तनमूर्ज्जस्वन्तं धयापां प्रपीनमग्ने सरिरस्य मद्ध्ये । उत्सं जुषस्व मधुमन्तमर्व्वन्त्समुद्रियꣳ सदनमाविशस्व ॥९॥

घृतंमिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम । अनुष्वधमावहमादयस्व स्वाहाकृतं व्वृषभ व्वक्षि हव्यम् ॥१०॥

व्वसोः पवित्रमसि शतधारं व्वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम् । देवस्त्वा सविता पुनातु व्वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः स्वाहा ॥११॥

इदमग्नये वैश्वानराय न मम । इति वसोर्द्धाराहोमः ।

अथाग्नेः प्रदक्षिणम् –

यजमानः ॐ अग्ने नय सुपथा राये ऽअस्मान् व्विश्वानि देव व्वयुनानि व्विद्वान् । युयोद्ध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम ऽउक्तिं व्विधेम ॥ इत्यनेन मन्त्रेणाग्निं परिक्रम्य अग्नेः पश्चिमदिशि प्राङ्मुख उपविशेत् ।

अथ हवनीयकुण्डभस्मधारणम् –

तत आचार्यः हवनकुण्डस्य स्थण्डिलस्य वा ईशानकोणात् स्रुवेण भस्मानीय प्रथमं स्वशरीरे ततो यजमानशरीरे च भस्मानुलेपनं कुर्यात् ।

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः' इति ललाटे । 'कश्यपस्य त्र्यायुषम् इति ग्रीवायाम् । यद्देवेषु त्र्यायुषम्' इति दक्षिणबाहुमूले । 'तन्नो ऽअस्तु त्र्यायुषम्' इति हृदि ।

ततः प्रोक्षणीपात्रस्थितस्याज्यस्य यजमानेन प्राशनमवघ्राणं वा कार्यमिति संस्रवप्राशनम् । तत आचमनम् । पवित्राभ्यां मार्जनम् । अग्नौ पवित्रप्रतिपत्तिः ।

अथ ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम् –

यजमानः ब्रह्मणे पूर्णपात्रप्रदानार्थं सङ्कल्पं कुर्यात् ।

देशकालौ सङ्कीर्त्य ''गोत्रः शर्माऽहम् (वर्माऽहम, गुप्तोऽहम्) कृतस्य अमुकयागकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्ण-फलप्राप्त्यर्थं

च इदं पूर्णपात्रं सदक्षिणं ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे'' इत्युकत्वा ब्रह्मणे पूर्णपात्रं दद्यात् ।

पूर्णपात्रग्रहणानन्तरं 'ॐ द्यौस्त्वा ददातु पृथिवीत्वा प्रतिगृहणातु' इति ब्रह्मा वदेत् ।

ततः प्रणीतापात्रं पश्चादानीय निनयेत् । अग्नेः पश्चात् प्रणीताविमोकः ।

'ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्ते कृण्वन्तु भेषजम्' इत्यनेन यजमानमुपयमनकुशैर्मार्जयेत् । तत उपयमनकुशानामग्नौ प्रक्षेपः । ब्रह्मग्रन्थिविमोकः ।

अथ श्रेयोदानम् –

अथाचार्यः यजमानाय श्रेयोदानं दद्यात् । आचार्यः ''कृतस्य अमुकयागकर्मणः साङ्गतासिदध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च यजमानाय श्रेयोदानं करिष्ये'' इति सङ्कल्प्य । ॐ 'शिवा आपः सन्तु' इति यजमानदक्षिणहस्ते जलं दद्यात् । 'सौमनस्यमस्तु' इति पुष्पं दद्यात् । 'अक्षतं चारिष्टं चास्तु' इति अक्षतान् दद्यात् ।

तत आचार्यः हस्ते जलाक्षतपूगीफलमादाय '' भवन्नियोगन मया अस्मिन् अमुकयागकर्मणि यत्कृतम् आचार्यत्वं तथा च एभिर्ब्रह्म-गाणपत्य-सदस्योपद्रष्टृ-जापकादिभिर्ब्राह्मणैः सह यत्कृतं जप-हवनादिकं न तेनोत्पन्नं यच्छ्रेयस्तत् साक्षतेन सजलेन पूगीफलेन तुभ्यमहं सम्प्रददे, तेन श्रेयसा त्वं श्रेयस्वान् भव'' इत्युक्त्वा यजमानाय फलादिकं दद्यात् । 'भवामि' इति यजमानो ब्रूयात् ।

अथाचार्यादिभ्यो दक्षिणादानम् । ततो यजमानः आचार्यादिभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दक्षिणाप्रदानार्थं सङ्कल्पं कुर्यात् । यजमानः देशकालौ सङ्कीर्त्य ''गोत्रः शर्माऽहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्) कृतस्य अमुकयागकर्मणः साङ्गतासिदध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्तर्थं च आचार्यादिभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य मनसोद्दिष्टां दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये'' इति सङ्कल्प्य, आचार्याय गां दद्यात् । ब्रह्मणे वृषभम् । गाणपत्याय

रथम्। सदस्याय अश्वम् । उपद्रष्ट्रे गन्त्रीम् (पालकीम्) । जप-हवनादिकर्तृभ्यो ब्राह्मणेभ्यः सुवर्णं दद्यात् ।

अथ गोदानादिसङ्कल्पः –

देशकालौ सङ्कीर्त्य ''अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहम् (अमुकवर्माऽहम्, अमुकगुप्तोऽहम्) कृतस्य अमुकयागकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थमिदं गोनिष्क्रय भूतं द्रव्यममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे''। एवमेव ब्रह्म-गाणपत्य-सदस्योपद्रष्टृ-ऋत्विजेभ्यः वृष-रथाश्व-गन्त्री-सुवर्णादिनिष्क्रयभूतं द्रव्यम् पृथक्-पृथक् दद्यात् ।

अथ भूयसीदक्षिणासङ्कल्पः –

यजमानः देशकालौ सङ्कीर्त्य ''कृतेऽस्मिन् अमुकयागकर्मणि न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थं नानानाम-गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नट-नर्तक-गायकेभ्यो दीनानाथेभ्यश्च यथाशक्ति भूयसीं दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृज्ये'' इति सङ्कल्प्य ब्राह्मणेभ्यो दक्षिणां दद्यात् ।

अथ ब्राह्मणभोजनसङ्कल्पः – यजमानः देशकालौ सङ्कीर्त्य ''कृतस्य अमुकयागकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च यथासङ्ख्याकान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये'' (भोजयिष्यामि) ।

अथोत्तरपूजनम् – ततोयजमानः ''कृतस्य अमुकयागकर्मणः साङ्गतासिदध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं चावाहितदेवानामुत्तरपूजनं करिष्ये'' इतिसङ्कल्प्य 'गणपत्याद्यावाहितदेवेभ्यो नमः' इति प्रधान पीठादिदेवतानां (ग्रहपीठादिदेवतानां) षोडशोपचारैरुत्तरपूजनं कुर्यात्। पश्चादारार्तिक्यं विधाय मन्त्रपुष्पाञ्जलिं कुर्यात् ।

प्रधानपीठदान संकल्पः –

''कृतस्य अमुकयागकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्ण फलप्राप्त्यर्थमिमानि सोपस्करसहितानि प्रधानपीठादीनि आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे'' इति सङ्कल्प्य प्रधानपीठादिकमाचार्याय दद्यात् ।

अथाभिषेकः – तत आचार्यः स्थापितयोः रुद्रकलश-प्रधानकलश- योर्जलमेकस्मिन् पात्रे एकीकृत्य तज्जलेन दूर्वा-कुशा-पञ्चपल्लवैः प्राङ्मुखं सपरिवारं यजमानमभिषिञ्चेत् ।

तत्राभिषेकमन्त्राः – ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पुष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै व्वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिञ्चामि ।।१।।

ॐ देवस्य त्त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्व्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै व्वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिञ्चामि ।।२।।

ॐ देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।। अश्विनौर्भैषज्ज्येन तेजसे ब्रह्मवर्च्चसायाभिषिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्ज्येन व्वीर्य्यायान्नाद्यायाभिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्श्रियै यशसेऽभिषिञ्चामि ।।३।।

सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्म - विष्णु - महेश्वराः ।
वासुदेवो जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः ।।१।।
प्रद्युम्नश्चाऽनिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते ।
आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निर्ऋतिस्तथा ।।२।।
वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः ।
ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा ।।३।।
कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः ।
बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिः कान्तिस्तुष्टिश्च मातरः ।।४।।
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः ।
आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधजीव-सिताऽर्कजाः ।।५।।
ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः ।
देव - दानव - गन्धर्वा यक्ष - राक्षस - पन्नगाः ।।६।।
ऋषयो मुनयो गावो देवमातर एव च ।
देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाऽप्सरसां गणाः ।।७।।
अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च ।
औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये ।।८।।

सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः ।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु धर्मकामार्थसिद्धये ॥९॥
अमृताभिषेकोऽस्तु । शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्त्वित्यभिषेकः ।

अथ घृतच्छायापात्रदानम् –

यजमानः घृतपूरितकांस्यपात्रे मुखावलोकनार्थं सङ्कल्पं कुर्यात् ।

देशकालौ सङ्कीर्त्य ''गोत्रः शर्माऽहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्) कृतस्य अमुकयागकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं सर्वारिष्टविनाशार्थं चाज्यावेक्षणं करिष्ये'' ।

ॐ रूपेण वो रूपमभ्यागां तुथो वो विश्ववेदा विभजतु । ऋतस्य पथा प्रेत चन्द्रदक्षिणा वि स्वः पश्य व्यन्तरिक्षं यतस्व सदस्यैः ॥ इति मन्त्रमुक्त्वा आज्यावेक्षणं कुर्यात् ।

ततो ब्राह्मणाय आज्यपात्रप्रदानार्थं सङ्कल्पं कुर्यात् ।

देशकालौ सङ्कीर्त्य ''अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहम् (अमुकवर्माऽहम्, अमुकगुप्तोऽहम्) इदमवलोकितमाज्यं कांस्यपात्रस्थितं ससुवर्णं मृत्युञ्जयदैवतं मृत्युञ्जय-देवताप्रीतये सर्वारिष्टविनाशार्थं चामुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे'' इति ब्राह्मणाय आज्यपात्रं दद्यात् ।

ब्राह्मणश्च आज्यपात्रं गृहीत्वा 'स्वस्ति' इति यजमानायाशिषं दद्यात् । इति घृतच्छायापात्रदानम् ।

आवाहनंन जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥१॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर ।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥२॥
जपच्छिद्रं तपश्छिद्रं यच्छिद्रं शान्तिकर्मणि ।
सर्वं भवतु मेऽच्छिद्रं ब्राह्मणानां प्रसादतः ॥३॥
अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया ।
दासोऽयमिति मां मत्त्वा क्षमस्व परमेश्वर ॥४॥

ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि यन्न्यूनमधिकं कृतम् ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ॥५॥
कर्मणा मनसा वाचा अमुकयागकर्मया कृता ।
तेन तुष्टिं समासाद्य प्रसीद परमेश्वर ॥६॥

अथ देवविसर्जनम् –

यजमानः देशकालौ सङ्कीर्त्य ''गोत्रः शर्माऽहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्) अमुकयागकर्माङ्गत्वेन स्थापितानां नवग्रहादि मण्डलदेवता नामुत्थापनं करिष्ये'' इति सङ्कल्प्य स्थापित-देवानग्निं च सानुनयं पुष्पाक्षतैर्विसृजेत् ।

ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे ।
उप प्रयन्तु मरुतःसुदानव ऽइन्द्र प्राशूर्भवा सचा ॥१॥
ॐ यज्ञ यज्ञं गच्छ यज्ञपतिं गच्छ स्वां योनिं गच्छ स्वाहा ।
एषते यज्ञो यज्ञपते सहसूक्तवाकः सर्व्ववीरस्तं जुषस्व स्वाहा ॥२॥
यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामिकाम् ।
इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च ॥१॥
गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थानं परमेश्वर ।
यत्र ब्रह्मादयो देवा तत्र गच्छ हुताशन ॥२॥
प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषुयत् ।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥३॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु ।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥४॥
चतुर्भिश्च-चतुर्भिश्च द्वाभ्यां पञ्चभिरेव च ।
हूयते च पुनर्द्वाभ्यां तस्मै यज्ञात्मने नमः ॥५॥

''अनेन यथाशक्तिकृतेन अमुकयागकर्मणः श्रीपापापहा महाविष्णुः प्रीयताम्'' । यजमानः-ॐ विष्णवे नमः । ॐ विष्णवे नमः । ॐ विष्णवे नमः । इति त्रिर्वदेत् ।

अथ यजमानरक्षाबन्धनमन्त्रः । ॐ यदाबध्नन्दाक्षायणां हिरण्यर्ठ० शतानीकाय सुमनस्य मानाः । तन्मऽआ बध्नामि

शतशारदाया-युष्माङ्गरदष्टिर्यथासम् ॥ इति मन्त्रेण यजमानस्य दक्षिणहस्ते कङ्कणबन्धनं कुर्यात् ।

अथ यजमानपत्नीरक्षाबन्धनमन्त्रः । ॐ तं पत्नीभिरनु गच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वा हिरण्यैः । नाकं गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठे ऽअधि रोचने दिवः ॥ इति मन्त्रेण यजमानपत्न्याः वामहस्ते कङ्कणबन्धनं कुर्यात् ।

अथ यजमानाय तिलकाशीर्वादः ।

ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रो व्वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा व्विश्ववेदाः स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो ऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥१॥

ॐ पुनस्त्वाऽऽदित्त्या रुद्रा व्वसवः समिन्धतां पुनर्व्ब्रह्माणो व्वसुनीथ यज्ञैः । घृतेन त्वं तन्वं व्वर्द्धयस्व सत्त्याः सन्तु यजमानस्य कामाः ॥२॥

श्रीवर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधाच्छोभमानं महीयते ।
धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ॥१॥
शान्तिरस्तु शिवं चास्तु शुभं चास्तु धनं तथा ।
ऋद्धिरस्तु वृद्धिरस्तु ब्राह्मणानां प्रसादतः ॥२॥
अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणः सन्तु पौत्रिणः ।
निर्धनाः सधनाः सन्तु जीवन्तु शरदां शतम् ॥२॥
मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णा : सन्तु मनोरथाः ।
शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव ॥३॥

अथ यजमानपत्न्या आशीर्वादः

ॐ अनाधृष्टापुरस्तादग्नेराधिपत्यऽआयुर्म्मेदाः पुत्रवती दक्षिणत ऽइन्द्रस्याधिपत्त्ये प्रजां में दाः सुषदा पश्चाद्देवस्य सवितु राधिपत्त्ये चक्षुर्म्मे दा ऽआश्रुतिरुत्तरतो धातुराधिपत्त्ये रायस्पोषं मे दाः ॥ व्विधृतिरुपरिष्टाद बृहस्पतेराधिपत्त्य ऽओजो मे दा व्विश्वाभ्यो मा नाष्ट्राभ्यस्पाहि मनोरश्श्वासि ॥ तत आचार्यः यजमानाय प्रसादार्पणं कुर्यादिति शिवम् ॥

अथ रुद्रसूक्तन्यासः

नमस्ते इति षोडशर्चस्य परमेष्ठी ऋषिः, नमस्ते इत्यस्य गायत्रीछन्दः, याते इति त्रयाणामनुष्टुप्छन्दः, अध्यवोचदिति त्रयाणांपङ्क्तिश्छन्दः, नमोऽस्तु नीलग्रीवायेति सप्तानामनुष्टुप्छन्दः, मा नो महान्तमिति द्वयोः कुत्स ऋषिः, जगतीछन्दः, सर्वएषामेको रुद्रो देवता, न्यासे हवने च विनियोगः ।

१	ॐ नमस्ते	वामकरे ।
२	याते रुद्र शिवा०	दक्षिणकरे ।
३	यामिषुं गिरिशन्त०	वामपादे ।
४	शिवेन वचसा०	दक्षिणपादे ।
५	अध्यवोचदधिवक्ता०	वामजानौ ।
६	असौ यस्ताम्रः०	दक्षिणजानौ ।
७	असौ योऽवसर्पति०	वामकट्याम् ।
८	नमोऽस्तु नीलग्रीवाय०	दक्षिणकट्याम् ।
९	प्रमुञ्च०	नाभौ ।
१०	विज्यन्धनुः०	हृदये ।
११	या ते हेतिः०	वामबाहौ ।
१२	परि ते धन्वनः०	दक्षिणबाहौ ।
१३	अवतत्त्यधनुष्टवम्०	कण्ठे ।
१४	नमस्त ऽआयुधाय०	मुखे ।
१५	मा नो महान्तम्०	नेत्रयोः ।
१६	मा नस्तोके०	मूर्ध्नि ।
	पुनः -	
१	या ते हेति :	हृदयाय नमः ।
२	परि ते धन्वनः०	शिरसे स्वाहा ।
३	अवतत्त्य धनुष्ट्वम्०	शिखायै वषट् ।
४	नमस्त ऽआयुधाय०	कवचाय हुम् ।
५	मा नो महान्तम्०	नेत्राभ्यां वौषट् ।
६	मा नस्तोके०	अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्— ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥

॥ इति रुद्रसूक्तन्यासः ॥

अथ रुद्रयागमन्त्राः

एकषष्ट्युत्तरशतधाविभागपक्षमाश्रित्य रुद्रस्वाहाकारविधिः

ॐ गणानान्त्वा० स्वाहा ।
ॐ अम्बेऽ अम्बिके० स्वाहा । इति हुत्वा,
ॐ यज्जाग्रतः० (६ मन्त्राः) स्वाहा ।
ॐ सहस्रशीर्षा० (१६ मन्त्राः) स्वाहा ।
ॐ अद्भ्यः सम्भृतः० (६ मन्त्राः) स्वाहा ।
ॐ आशुः शिशानः० (१२ मन्त्राः) स्वाहा ।
ॐ विभ्राड् बृहत्पिबतु० (१७ मन्त्राः) स्वाहा ।
ॐ भूः, ॐ भुवः, ॐ स्वः, ॐ नमस्ते रुद्द्र मन्यवऽ उतो तऽ इषवे नमः । बाहुब्भ्यामुत ते नमः स्वाहा ॥११॥
ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरापापकाशिनी ।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि स्वाहा ॥२॥
ॐ यामिषुङ्गिरिशन्त हस्ते व्विभर्ष्यस्तवे ।
शिवाङ्गिरित्र ताङ्कुरु मा हिꣳसीः पुरुषञ्जगत् स्वाहा ॥३॥
ॐ शिवेन व्वचसा त्वा गिरिशाच्छा व्वदामसि ।
यथा नः सर्व्वमिज्जगदयक्ष्मꣳ सुमनाऽ असत् स्वाहा ॥४॥
ॐ अद्ध्यवोचदधिवक्ता प्प्रथमो दैव्व्यो भिषक् । अहींश्च सर्व्वाञ्जम्भयन्त्सर्व्वाश्च्च यातुधान्न्योऽधराचीः परासुव स्वाहा ॥५॥
ॐ असौ यस्ताम्म्रोऽ अरुणऽउतबब्भ्रुः सुमङ्गलः । ये चैनꣳ रुद्द्राऽअभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशो वैषाꣳ हेडऽ ईमहे स्वाहा ॥६॥
ॐ असौ योऽवसर्प्पति नीलग्ग्रीवो व्विलोहितः । उतैनङ्गोपाऽ अदृश्श्रन्नदृश्श्रन्नुदहार्य्यः सः दृष्टो मृडयाति नः स्वाहा ॥७॥
ॐ नमोस्तु नीलग्ग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे ।
अथो येऽ अस्य सत्त्वानोऽहन्तेब्भ्योऽकरन्नमः स्वाहा ॥८॥
ॐ प्रमुञ्च धन्न्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्ज्याम् ।
याश्च्च ते हस्तऽ इषवः परा ता भगवो व्वप स्वाहा ॥९॥
ॐ व्विज्ज्यन्धनुः कपर्द्दिनो व्विशल्ल्यो बाणवाँ२ऽ उत ।
अनेशन्नस्य याऽ इषवऽ आभुरस्य निषङ्गधिः स्वाहा ॥१०॥
ॐ या ते हेतिर्म्मीढुष्ट्टम हस्ते बभूव ते धनुः ।
तयास्म्मान्विश्श्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज स्वाहा ॥११॥
ॐ परि ते धन्न्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु व्विश्श्वतः ।
अथो यऽ इषुधिस्तवारेऽ अस्मन्निधेहि तम् स्वाहा ॥१२॥
ॐ अवतत्त्य धनुष्ट्वꣳ सहस्राक्ष शतेषुधे ।
निशीर्य्य शल्ल्यानाम्मुखा शिवो नः सुमना भव स्वाहा ॥१३॥
ॐ नमस्तऽ आयुधायानातताय धृष्ण्णवे ।
उभाब्भ्यामुत ते नमो बाहुब्भ्यान्तव धन्न्वने स्वाहा ॥१४॥
ॐ मा नो महान्तमुत मा नोऽ अर्ब्भकम्मा नऽ उक्षन्तमुत मा नऽ उक्षितम् । मा नो व्वधीः पितरम्मोत मातरम्मा नः प्प्रियास्तन्न्वो रुद्र रीरिषः स्वाहा ॥१५॥
ॐ मा नस्तोके तनये मा नऽ आयुषि मा नो गोषुमा नो अश्श्वेषु रीरिषः । मा नो व्वीरान् रुद्द्र भामिनी व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे स्वाहा ॥१६॥
ॐ नमो हिरण्यबाहवे सेनान्न्ये दिशाञ्चपतये नमः स्वाहा ॥१७॥
ॐ नमो व्वृक्षेब्भ्यो हरिकेशेब्भ्यः पशूनाम्पतये नमः स्वाहा ॥१८॥
ॐ नमः शष्पिञ्जराय त्विषीमते पथीनाम्पतये नमः स्वाहा ॥१९॥
ॐ नमो हरिकेशायोपवीतिने पुष्ट्टानाम्पतये नमः स्वाहा ॥२०॥
ॐ नमो बब्भ्लुशाय व्व्याधिनेन्नानाम्पतये नमः स्वाहा ॥२१॥
ॐ नमो भवस्य हेत्यै जगताम्पतये नमः स्वाहा ॥२२॥
ॐ नमो रुद्द्रायाततायिने क्षेत्राणाम्पतये नमः स्वाहा ॥२३॥

ॐ नमः सूतायाहन्त्यै व्वनानाम्पतये नमः स्वाहा ॥२४॥
ॐ नमो रोहिताय स्थपतये व्वृक्षाणाम्पतये नमः स्वाहा ॥२५॥
ॐ नमो भुवन्तयेव्वारिवस्कृतायौषधीनाम्पतये नमः स्वाहा ॥२६॥
ॐ नमो मन्त्रिणे व्वाणिजाय कक्षाणाम्पतये नमः स्वाहा ॥२७॥
ॐ नमो उच्चैर्ग्घोषायाक्क्रन्दयते पत्तीनाम्पतये नमः स्वाहा ॥२८॥
ॐ नमः कृत्स्नायतया धावते सत्त्वनाम्पतये नमः स्वाहा ॥२९॥
ॐ नमः सहमानाय निव्व्याधिनऽ आव्व्याधिनीनाम्पतये नमः स्वाहा ॥३०॥
ॐ नमो निषङ्गिणे ककुभाय स्तेनानाम्पतये नमः स्वाहा ॥३१॥
ॐ नमो निचेरवे परिचरायारण्ण्यानाम्पतये नमः स्वाहा ॥३२॥
ॐ नमो व्वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनाम्पतये नमः स्वाहा ॥३३॥
ॐ नमो निषङ्गिणऽ इषुधिमते तस्क्कराणाम्पतये नमः स्वाहा ॥३४॥
ॐ नमः सृकायिब्भ्यो जिघासद्ब्भ्यो मुष्णताम्पतये नमः स्वाहा ॥३५॥
ॐ नमोऽसिमद्ब्भ्यो नक्क्तञ्चरद्ब्भ्यो व्विकृन्तानाम्पतये नमः स्वाहा ॥३६॥
ॐ नमऽउष्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानाम्पतये नमः स्वाहा ॥३७॥
ॐ नमऽइषुमद्ब्भ्यो धन्न्वायिब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥३८॥
ॐ नमऽआतन्न्वानेब्भ्यः प्प्रतिदधानेब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥३९॥
ॐ नमऽआयच्छद्ब्भ्योऽस्यद्ब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥४०॥
ॐ नमो व्विसृजद्ब्भ्यो व्विद्ध्यद्ब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥४१॥
ॐ नमः स्वपद्ब्भ्यो जाग्ग्रद्ब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥४२॥
ॐ नमः शयानेब्भ्यऽ आसीनेब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥४३॥
ॐ नमऽस्तिष्ठद्ब्भ्यो धावद्ब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥४४॥
ॐ नमः सभाब्भ्यः सभापतिब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥४५॥
ॐ नमोऽश्श्वेब्भ्योऽश्श्वपतिब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥४६॥
ॐ नमऽआव्व्याधिनीब्भ्यो व्विविद्ध्यन्तीब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥४७॥
ॐ नमऽउगणाब्भ्यस्तृꣳ हतीब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥४८॥
ॐ नमो गणेब्भ्यो गणपतिब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥४९॥
ॐ नमो व्व्रातेब्भ्यो व्व्रातपतिब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥५०॥
ॐ नमो गृत्सेब्भ्यो गृत्सपतिब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥५१॥

ॐ नमो व्विरूपेब्भ्यो व्विश्श्वरूपेब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥५२॥
ॐ नमः सेनाब्भ्यः सेनानिब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥५३॥
ॐ नमो रथिब्भ्योऽ अरथेब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥५४॥
ॐ नमः क्षत्तृब्भ्यः सङ्ग्रहीतृब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥५५॥
ॐ नमो महद्ब्भ्योऽ अर्ब्भकेब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥५६॥
ॐ नमस्तक्षब्भ्यो रथकारेब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥५७॥
ॐ नमः कुलालेब्भ्यः कर्म्मारेब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥५८॥
ॐ नमो निषादेब्भ्यः पुञ्जिष्ट्ठेब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥५९॥
ॐ नमः श्श्वनिब्भ्यो मृगयुब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥६०॥
ॐ नमः श्श्वब्भ्यः श्श्वपतिब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥६१॥
ॐ नमो भवाय च रुद्द्राय च स्वाहा ॥६२॥
ॐ नमः शर्व्वाय च पशुपतये च स्वाहा ॥६३॥
ॐ नमो नीलग्ग्रीवाय च शितिकण्ठाय च स्वाहा ॥६४॥
ॐ नमः कपर्द्दिने च व्युप्तकेशाय च स्वाहा ॥६५॥
ॐ नमः सहस्राक्षाय च शतधन्वने च स्वाहा ॥६६॥
ॐ नमो गिरिशयाय च शिपिविष्ट्टाय च स्वाहा ॥६७॥
ॐ नमो मीढुष्ट्टमाय चेषुमते च स्वाहा ॥६८॥
ॐ नमो ह्रस्वाय च व्वामनाय च स्वाहा ॥६९॥
ॐ नमो बृहते च व्वर्षीयसे च स्वाहा ॥७०॥
ॐ नमो व्वृद्धाय च सवृधे च स्वाहा ॥७१॥
ॐ नमो ऽग्ग्र्याय च प्प्रथमाय च स्वाहा ॥७२॥
ॐ नमऽआशवे चाजिराय च स्वाहा ॥७३॥
ॐ नमः शीघ्ग्र्याय च शीब्भ्याय च स्वाहा ॥७४॥
ॐ नमऽऊर्म्म्याय चावस्वन्न्याय च स्वाहा ॥७५॥
ॐ नमो नादेयाय च द्द्वीप्प्याय च स्वाहा ॥७६॥
ॐ नमो ज्ज्येष्ट्ठाय च कनिष्ट्ठाय च स्वाहा ॥७७॥
ॐ नमः पूर्व्वजाय चापरजाय च स्वाहा ॥७८॥
ॐ नमो मद्ध्यमाय चापगल्भाय च स्वाहा ॥७९॥

ॐ नमो जघन्याय च बुद्ध्न्याय च स्वाहा ॥८०॥
ॐ नमः सोभ्याय च प्रतिसर्य्याय च स्वाहा ॥८१॥
ॐ नमो याम्याय च क्षेम्याय च स्वाहा ॥८२॥
ॐ नमः श्श्लोक्याय चावसान्याय च स्वाहा ॥८३॥
ॐ नमऽउर्वर्य्याय च खल्ल्याय च स्वाहा ॥८४॥
ॐ नमो व्वन्याय च कक्ष्याय च स्वाहा ॥८५॥
ॐ नमः श्श्रवाय च प्रतिश्श्रवाय च स्वाहा ॥८६॥
ॐ नमऽआशुषेणाय चाशुरथाय च स्वाहा ॥८७॥
ॐ नमः शूराय चावभेदिने च स्वाहा ॥८८॥
ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च स्वाहा ॥८९॥
ॐ नमो व्वर्म्मिणे च व्वरूथिने च स्वाहा ॥९०॥
ॐ नमः श्श्रुताय च श्श्रुतसेनाय च स्वाहा ॥९१॥
ॐ नमो दुन्दुब्भ्याय चाहनन्याय च स्वाहा ॥९२॥
ॐ नमो धृष्णवे च प्रमृशाय च स्वाहा ॥९३॥
ॐ नमो निषङ्गिणे चेषुधिमते च स्वाहा ॥९४॥
ॐ नमः स्तीक्ष्णेषवे चायुधिने च स्वाहा ॥९५॥
ॐ नमः स्वायुधाय च सुधन्वने च स्वाहा ॥९६॥
ॐ नमः स्स्रुत्याय च पत्थ्याय च स्वाहा ॥९७॥
ॐ नमः काट्याय च नीप्प्याय च स्वाहा ॥९८॥
ॐ नमः कुल्ल्याय च सरस्याय च स्वाहा ॥९९॥
ॐ नमो नादेयाय च व्वैशन्ताय च स्वाहा ॥१००॥
ॐ नमः कूप्प्याय चावट्याय च स्वाहा ॥१०१॥
ॐ नमो व्वीद्ध्याय चातप्प्याय च स्वाहा ॥१०२॥
ॐ नमो मेग्घ्याय च व्विद्युत्त्याय च स्वाहा ॥१०३॥
ॐ नमो व्वर्ष्याय चावर्ष्याय च स्वाहा ॥१०४॥
ॐ नमो व्वात्त्याय च रेष्म्याय च स्वाहा ॥१०५॥
ॐ नमो व्वास्तव्याय च व्वास्तुपाय च स्वाहा ॥१०६॥
ॐ नमः सोमाय च रुद्द्राय च स्वाहा ॥१०७॥

ॐ नमस्ताम्राय चारुणाय च स्वाहा ॥१०८॥
ॐ नमः शङ्गवे च पशुपतये च स्वाहा ॥१०९॥
ॐ नमऽउग्राय च भीमाय च स्वाहा ॥११०॥
ॐ नमो ग्ग्रेवधाय च दूरेवधाय च स्वाहा ॥१११॥
ॐ नमो हन्त्रे च हनीयसे च स्वाहा ॥११२॥
ॐ नमो व्वृक्षेब्भ्यो हरिकेशेब्भ्यः स्वाहा ॥११३॥
ॐ नमस्ताराय स्वाहा ॥११४॥
ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च स्वाहा ॥११५॥
ॐ नमः शङ्कराय च मयस्क्कराय च स्वाहा ॥११६॥
ॐ नमः शिवाय च शिवतराय च स्वाहा ॥११७॥
ॐ नमः पार्य्याय चावार्य्याय च स्वाहा ॥११८॥
ॐ नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च स्वाहा ॥११९॥
ॐ नमस्तीर्त्थ्याय च कूल्ल्याय च स्वाहा ॥१२०॥
ॐ नमः शष्प्याय च फेन्याय च स्वाहा ॥१२१॥
ॐ नमः सिकत्त्याय च प्रवाह्याय च स्वाहा ॥१२२॥
ॐ नमः किꣳ शिलाय च क्षयणाय च स्वाहा ॥१२३॥
ॐ नमः कपर्द्दिने च पुलस्तये च स्वाहा ॥१२४॥
ॐ नमऽइरिण्ण्याय च प्रपत्थ्याय च स्वाहा ॥१२५॥
ॐ नमो व्व्रज्ज्याय च गोष्ठ्याय च स्वाहा ॥१२६॥
ॐ नमस्तल्प्याय च गेह्याय च स्वाहा ॥१२७॥
ॐ नमो हृदय्याय च निवेष्प्याय च स्वाहा ॥१२८॥
ॐ नमः काट्याय च गह्वरेष्ठ्याय च स्वाहा ॥१२९॥
ॐ नमः शुष्क्क्याय च हरित्त्याय च स्वाहा ॥१३०॥
ॐ नमः पाꣳसव्याय च रजस्याय च स्वाहा ॥१३१॥
ॐ नमो लोप्प्याय चोलप्प्याय च स्वाहा ॥१३२॥
ॐ नमऽऊर्व्याय सूर्व्याय च स्वाहा ॥१३३॥
ॐ नमः पर्ण्णाय च पर्ण्णशदाय च स्वाहा ॥१३४॥
ॐ नमऽउद्गुरमाणाय चाभिग्घ्नते च स्वाहा ॥१३५॥

ॐ नमऽआखिदते च प्रखिदते च स्वाहा ॥१३६॥
ॐ नमऽइषुकृद्‌भ्यो धनुष्कृद्‌भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥१३७॥
ॐ नमो वः किरिकेभ्यो देवानाᳪ हृदयेभ्यः स्वाहा ॥१३८॥
ॐ नमो व्विचिन्वत्केभ्यो देवानाᳪ हृदयेभ्यः स्वाहा ॥१३९॥
ॐ नमो व्विक्षिणत्केभ्यो देवानाᳪ हृदयेभ्यः स्वाहा ॥१४०॥
ॐ नमऽआनिर्हतेभ्यो देवानाᳪ हृदयेभ्यः स्वाहा ॥१४१॥
ॐ द्रापेऽ अन्धसस्पते दरिद्द्र नीललोहित । आसाम्प्रजानामेषा-
म्पशूनाम्मा भेर्म्मा रोङ्मो च नः किञ्चनाममत् स्वाहा ॥१४२॥
ॐ इमा रुद्द्राय तवसे कपर्द्दिने क्षयद्वीराय
प्रभरामहे मतीः । यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे
व्विश्वम्पुष्टङ्ग्रामेऽ अस्मिन्ननातुरम् स्वाहा ॥१४३॥
ॐ या ते रुद्द्र शिवा तनूः शिवा व्विश्वाहा भेषजी ।
शिवा रुतस्य भेषजी तया नो मृड जीवसे स्वाहा ॥१४४॥
ॐ परि नो रुद्द्रस्य हेतिर्व्वृणक्क्तु परि त्वेषस्य
दुर्म्मतिरघायोः । अव स्थिरा मघवद्‌भ्यस्तनुष्व
मीड्‌ढ्वस्तोकाय तनयाय मृड स्वाहा ॥१४५॥
ॐ मीढुष्टम शिवतम शिवो नः सुमना भव । परमेव्वृक्षऽ आयुधन्निधाय
कृत्तिं व्वसानऽ आचर पिनाकम्बिभ्रदागहि स्वाहा ॥१४६॥
ॐ व्विकिरिद्द्र व्विलोहित नमस्तेऽ अस्तु भगवः ।
यास्ते सहस्रᳪ हेतयोऽन्यमस्मन्निवपन्तुताः स्वाहा ॥१४७॥
ॐ सहस्राणि सहस्रशो बाह्वोस्तव हेतयः ।
तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि स्वाहा ॥१४८॥
ॐ असङ्ख्याता सहस्राणि ये रुद्द्राऽ अधि भूम्म्याम् ।
तेषाᳪ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥१४९॥
ॐ अस्मिन्महत्यर्ण्णवेऽन्तरिक्षे भवाऽ अधि ।
तेषाᳪ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥१५०॥
ॐ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठा दिवᳪरुद्रा उपश्रिताः।
तेषाᳪ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥१५१॥
ॐ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्व्वाऽ अधः क्षमाचराः ।

तेषाᳪ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥१५२॥
ॐ ये व्वृक्षेषु शष्पिञ्जरा नीलग्ग्रीवा व्विलोहिताः ।
तेषाᳪ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥१५३॥
ॐ ये भूतानामधिपतयो व्विशिखासः कपर्द्दिनः ।
तेषाᳪ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥१५४॥
ॐ ये पथाम्पथिरक्षयऽ ऐलबृदाऽ आयुर्य्युधः ।
तेषाᳪ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥१५५॥
ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः ।
तेषाᳪ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥१५६॥
ॐ येऽन्नेषु व्विविद्ध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान् ।
तेषाᳪ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥१५७॥
ॐ यऽ एतावन्तश्च्च भूयाᳪसश्च्च दिशो रुद्द्र व्वितस्थिरे ।
तेषाᳪ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥१५८॥
ॐ नमोऽस्तु रुद्द्रेभ्यो ये दिवि येषां व्वर्षमिषवः ।
तेभ्यो दश प्राचीर्द्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्द्दशोदीचीर्द्दशोर्द्ध्वाः ।
तेभ्यो नमोऽ अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो
यश्च्चनो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे दद्ध्मः स्वाहा ॥१५९॥
ॐ नमोऽस्तु रुद्द्रेभ्यो येऽन्तरिक्षे येषां व्वातऽ इषवः ।
तेभ्यो दश प्राचीर्द्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्द्दशोदीचीर्द्दशोर्द्ध्वाः ।
तेभ्यो नमोऽ अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो
यश्च्चनो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे दद्ध्मः स्वाहा ॥१६०॥
ॐ नमोऽस्तु रुद्द्रेभ्यो ये पृथिव्व्यां येषामन्नमिषवः ।
तेभ्यो दश प्राचीर्द्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्द्दशोदीचीर्द्दशोर्द्ध्वाः ।
तेभ्यो नमोऽ अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते
यन्द्विष्मो यश्च्च नो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे दद्ध्मः स्वाहा ॥१६१॥
ॐ भूः, ॐ भुवः, ॐ स्वः । ॐ व्वयᳪ सोम० (८ मन्त्राः)
(पाठमात्रम्) ।

ॐ उग्रश्च० (७ मन्त्राः) (पाठमात्रम्) ।

ॐ व्वाजश्च० ॥१॥ प्राणश्च० ॥२॥ ओजश्च० ॥३॥ ज्यैष्ठ्यं च ॥४॥ स्वाहा ।

(२) ॐ नमस्ते० (१६१ आहुतयः)

ॐ सत्यञ्च० ॥१॥ ऋतञ्च० ॥२॥ यन्ता च० ॥३॥ शञ्च० ॥४॥ स्वाहा ।

(३) ॐ नमस्ते० (१६१ आहुतयः) ।

ॐ ऊर्क्च० ॥१॥ रयिश्च० ॥२॥ वित्तञ्च० ॥३॥ व्व्रीहयश्च० ॥४॥ स्वाहा ।

(४) ॐ नमस्ते० (१६१ आहुतयः) ।

ॐ अश्मा च० ॥१॥ अग्निश्च० ॥२॥ व्वसु च० ॥३॥ स्वाहा ।

(५) ॐ नमस्ते० (१६१ आहुतयः) ।

ॐ अग्निश्च मऽ इन्द्रश्च० ॥१॥ मित्रश्च० ॥२॥ पृथिवी च० ॥३॥ स्वाहा ।

(६) ॐ नमस्ते० (१६१ आहुतयः) ।

ॐ अᳫंशुश्च० ॥१॥ आग्रयणश्च० ॥२॥ स्रुचश्च० ॥३॥ स्वाहा ।

(७) ॐ नमस्ते० (१६१ आहुतयः) ।

ॐ अग्निश्च० ॥१॥ व्रतञ्च० ॥२॥ स्वाहा ।

(८) ॐ नमस्ते० (१६१ आहुतयः) ।

ॐ एका च० ॥१॥ स्वाहा ।

(९) ॐ नमस्ते० (१६१ आहुतयः) ।

ॐ चतस्रश्च० ॥१॥ स्वाहा ।

(१०) ॐ नमस्ते० (१६१ आहुतयः) ।

ॐ त्र्यविश्च० ॥१॥ पष्ठवाट् च० ॥२॥ स्वाहा ।

(पुनः) ॐ यज्जाग्रतः० (६ मन्त्राः) स्वाहा ।

ॐ सहस्रशीर्षा० (१६ मन्त्राः) स्वाहा ।

ॐ अद्भ्यः सम्भृतः० (६ मन्त्राः) स्वाहा ।

ॐ आशुः शिशानः० (१२ मन्त्राः) स्वाहा ।

ॐ विभ्राड् बृहत् पिबतु० (१७ मन्त्राः) स्वाहा ।

(११) ॐ नमस्ते० (१६१ आहुतयः) ।

ॐ व्वाजाय स्वाहा० ॥१॥ आयुर्यज्ञेन कल्पताम्० ॥२॥ स्वाहा ।

ॐ ऋचं वाचम्० स्वाहा ।

ॐ यन्मे छिद्रम्० स्वाहा ।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुः स्वाहा ।

ॐ कयानश्चित्रः० स्वाहा ।

ॐ कस्त्वा सत्यो मदानाम्० स्वाहा ।

ॐ अभी षु णः० स्वाहा ।

ॐ कया त्वन्नऽ ऊत्याभि० स्वाहा ।

ॐ इन्द्रो व्विश्वस्य० स्वाहा ।

ॐ शं नो मित्रः शं वरुणः स्वाहा ।

ॐ शन्नो व्वातः पवताᳫं शन्नः स्वाहा ।

ॐ अहानि शं भवन्तु नः० स्वाहा ।

ॐ शन्नो देवीः० स्वाहा ।

ॐ स्योना पृथिवि० स्वाहा ।

ॐ आपो हि ष्ठा० स्वाहा ।

ॐ यो वः शिवतमो रसः० स्वाहा ।

ॐ तस्माऽ अरं गमाम वः० स्वाहा ।

ॐ द्यौः शान्तिः० स्वाहा ।

ॐ दृते दृᳫंह मा मित्रस्य मा चक्षुषा० स्वाहा ।

ॐ दृते दृᳫंह मा ज्योक्ते० स्वाहा ।

ॐ नमस्ते हरसे सोचिषे० स्वाहा ।

ॐ नमस्तेऽ अस्तु व्विद्युते० स्वाहा ।

ॐ यतो-यतः समीहसे० स्वाहा ।

ॐ सुमित्रिया नऽ आपः० स्वाहा ।
ॐ तच्चक्षुर्देवहितम्० स्वाहा ।
ॐ सद्योजातम्० (५ मन्त्राः) [पाठमात्रम्] ।
ततः षडङ्गन्यासं कुर्यादिति ।

अथ संक्षिप्तपुरुषसूक्तन्यासः

१	ॐ सहस्रशीर्षा०	वामकरे ।
२	ॐ पुरुष एव०	दक्षिणकरे ।
३	ॐ एतावानस्य०	वामपादे ।
४	ॐ त्रिपादूर्ध्वः०	दक्षिणपादे ।
५	ॐ ततो विराडजायत०	वामजानौ ।
६	ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः०	दक्षिणजानौ ।
७	ॐ तसमाद्यज्ञात् सर्वहुतः०	वामकट्याम् ।
८	ॐ तस्मादश्वाऽअजायन्त०	दक्षिणकट्याम् ।
९	ॐ तं यज्ञं वर्हिषि०	नाभौ ।
१०	ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः०	हृदये ।
११	ॐ ब्राह्मणोऽस्य०	वामबाहौ ।
१२	ॐ चन्द्रमा मनसः०	दक्षिणबाहौ ।
१३	ॐ नाभ्या ऽआसीदन्त०	कण्ठे ।
१४	ॐ यत्पुरुषेण हविषा०	मुखे ।
१५	ॐ सप्तास्यासन्०	नेत्रयोः ।
१६	ॐ यज्ञेन यज्ञम्०	मूर्ध्नि ।

पुनः -

१	ब्राह्मणोऽस्य०	हृदयाय नमः ।
२	चन्द्रमा मनस :०	शिरसे स्वाहा ।
३	नाभ्या ऽआसीदन्त	शिखायै वषट् ।
४	यत्पुरुषेण हविषा०	कवचाय हुम् ।
५	सप्तास्यासन०	नेत्राभ्यां वौषट् ।
६	यज्ञेन यज्ञम्०	अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्— ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती
नारायणः सरसिजासनसन्निविष्ट ।
केयूरवान् मकरकुण्डलवान् किरीटी
हारी हिरण्मयवपुर्धृतशङ्खचक्रः ॥१॥
शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥२॥
॥ इति पुरुषसूक्तन्यासः ॥

अथ विष्णुयागमन्त्राः

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
स भूमिर्ठ० सर्व्वतः स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥१॥
पुरुषऽ एवेदर्ठ० सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् ।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥२॥
एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पुरुषः ।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥३॥
त्रिपादूर्ध्वऽ उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः ।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशनेऽ अभि ॥४॥
ततो विराडजायत विराजोऽ अधि पुरुषः ।
सजातोऽ अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥५॥
तरमाद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृष्टदाज्यम् ।
पशूस्ताँश्चक्रे व्वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये ॥६॥
तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतऽ ऋचः सामानि जज्ञिरे ।
छदाꣳसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥७॥

चोभयादतः ।
तस्मादश्वाऽ अजायन्त ये के
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाताऽ अजावयः ॥८॥
तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रतः ।
तेन देवाऽ अयजन्त साध्याऽ ऋषयश्च ये ॥९॥
यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् ।
मुखं किमस्यासीत्किं बाहू किमूरू पादाऽ उच्येते ॥१०॥
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः ।
उरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या(ँ) शूद्रोऽ अजायत ॥११॥
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽ अजायत ।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥१२॥
नाभ्याऽ आसीदन्तरिक्षर्ठ० शीर्ष्णोद्यौः समवर्त्तत ।
पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ऽ अकल्पयन् ॥१३॥
यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।
व्वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्मऽ इध्मः शरद्धविः ॥१४॥
सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ।
देवा यद्यज्ञं तन्वानाऽ अबध्नन्पुरुषं पशुम् ॥१५॥
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥१६॥
(शुक्ल यजुर्वेद ३१।१-१६)

अथ श्रीसूक्तन्यासः

हिरण्यवर्णामिति पञ्चदशर्चस्य श्रीसूक्तस्य आनन्द-कर्दमचिक्लीतेन्दिरासुता ऋषयः आद्यानां तिसृणामनुष्टप्छन्दः, चतुर्थ्याः प्रस्तारपंक्तिश्छन्दः, पञ्चमीषष्ठ्योस्त्रिष्टुप्छन्दः, ततोऽष्टानामनुष्टुप्छन्दः, अन्त्यायाः प्रस्तारपंक्तिश्छन्दः, न्यासे हवने च विनियोगः ।

१	ॐ हिरण्यवर्णाम्०	वामकरे ।
२	ॐ तां म आवह०	दक्षिणकरे ।
३	ॐ अश्वपूर्वाम्०	वामपादे ।
४	ॐ कां सोस्मिताम्०	दक्षिणपादे ।

५	ॐ चन्द्रां प्रभासाम्०	वामजानौ ।
६	ॐ आदित्यवर्णे०	दक्षिणजानौ ।
७	ॐ उपैतु माम्०	वामकट्याम् ।
८	ॐ क्षुत्पिपासामलाम्०	दक्षिणकट्याम् ।
९	ॐ गन्धद्वाराम्०	नाभौ ।
१०	ॐ मनसः काममाकूतिम्०	हृदये ।
११	ॐ कर्दमेन प्रजा भूता०	वामबाहौ ।
१२	ॐ आपः सृजन्तु०	दक्षिणबाहौ ।
१३	ॐ आर्द्रां पुष्करिणीम्०	कण्ठे ।
१४	ॐ आर्द्रां यष्करिणीम्०	मुखे ।
१५	ॐ तां मऽ आवह०	नेत्रयोः ।
१६	ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा०	मूर्ध्नि ।

पुनः -

१	कर्दमेन प्रजाभूता०	हृदयाय नमः ।
२	आपः सृजन्तु०	शिरसे स्वाहा ।
३	आर्द्रां पुष्करिणीम्०	शिखायै वषट् ।
४	आर्द्रां यष्करिणीम्०	कवचाय हुम् ।
५	तां म आवह०	नेत्राभ्यां वौषट् ।
६	यः शुचिः प्रयतो भूत्वा०	अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्— या सा पद्मासनस्था विपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी
गम्भीरावर्तनाभिस्तनभरनमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया ।
या लक्ष्मीर्दिव्यरुपैर्मणिगणखचितैः स्नापिता हेमकुम्भै-
सा नित्यं पद्महस्ता वसतु मम गृहे सर्वमाङ्गल्ययुक्ता ॥१॥
अरुणकमलसंस्था तद्रजः पुञ्जवर्णा
करयुगलधृतेष्टाभीतियुग्माम्बुजा च।
मणिमयमुकुटाड्यालङ्कृताकल्पजालै-
र्भवतु भुवनमाता सन्ततं श्रीः श्रियै नः॥२॥

॥ इति श्रीसूक्तन्यासः ॥

अथ लक्ष्मीयागस्वाहाकारमन्त्राः

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्त्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥१॥
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥२॥
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम् ।
श्रियं देवीमुप ह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥३॥
कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम् ॥४॥
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मिनीमीं शरणं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि ॥५॥
आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ।
तस्य फलानि तपसानुदन्तु मायान्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥६॥
उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥७॥
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ॥८॥
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम् ॥९॥
मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥१०॥
कर्दमेन प्रजा भूता मयि संभव कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥११॥
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥१२॥
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥१३॥
आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।

सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥१४॥
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान्विन्देयं पुरुषानहम् ॥१५॥
यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहूयादाज्यमन्वहम् ।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥१६॥
(ऋग्वेद, परिशिष्ट भाग)

अथ सूर्यसूक्तन्यासः

विभ्राडित्यस्य विभ्राट्सौर्य ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः सूर्यो देवता, उदुत्यमिति तिसृणां प्रस्कण्व ऋषिर्गायत्रीछन्दः, सूर्यो देवता, तं प्रत्नथेत्यस्य काश्यपवत्सावृषी त्रिष्टुप् छन्दः सोमो देवता, अयं वेन इत्यस्य वेन ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सोमो देवता, चित्रमित्यस्य कुत्साङ्गिरस ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता, आन इत्यस्य अगस्त्य ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता, यदद्येत्यस्य श्रुतकक्षसुतकक्षावृषी गायत्रीछन्दः सूर्यो देवता, तरणिरित्यस्य प्रस्कण्व ऋषिः गायत्रीछन्दः, सूर्यो देवता, तत्सूर्यस्येति द्वयोः कुत्स ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता, बण्महानिति द्वयोर्जमदग्निर्ऋषिः आद्यस्य बृहतीछन्दः द्वितीयस्य सतोबृहतीछन्दः सूर्यो देवता, श्रायन्त इवेत्यस्य नृमेध ऋषिः बृहतीछन्दः सूर्यो देवता, अद्या देवा इत्यस्य कुत्सऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता, आकृष्णेनेत्यस्य हिरण्यस्तूपाङ्गिरसावृषी त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता, न्यासे होमे च विनियोगः ।

१	ॐ विभ्राड् बृहत्०	वामकरे ।
२	ॐ उदुत्यम्०	दक्षिणकरे ।
३	ॐ येना पावक चक्षसा०	वामपादे ।
४	ॐ दैव्यावद्ध्वर्यू०	दक्षिणपादे ।
५	ॐ तं प्रत्नथा०	वामजानौ ।
६	ॐ अयं वेनः०	दक्षिणजानौ ।
७	ॐ चित्रं देवानाम्०	वामकट्याम् ।

८ ३ॐ आन ऽइडाभिः०	दक्षिणकट्याम् ।
९ ३ॐ यदद्य कच्च०	हृदये ।
१० ३ॐ तरणिर्विश्व०	नाभौ ।
११ ३ॐ तत्सूर्यस्य०	कण्ठे ।
१२ ३ॐ तन्मित्रस्य०	वामबाहौ ।
१३ ३ॐ बण्महान्०	दक्षिणबाहौ ।
१४ ३ॐ बट्सूर्य श्रवसा०	मुखे ।
१५ ३ॐ श्रायन्त ऽइव०	अक्ष्णोः ।
१६ ३ॐ अद्या देवाः०	शिरसि ।
१७ ३ॐ आकृष्णेन०	सर्वाङ्गे ।

पुनः —

१ तन्मित्रस्य०	हृदयाय नमः ।
२ बण्महान्०	शिरसे स्वाहा ।
३ वट्सूर्य श्रवसा०	शिखायै वषट् ।
४ श्रायन्त ऽइव०	नेत्रत्रयाय वौषट् ।
५ अद्यादेवा०	कवचाय हुम् ।
६ आकृष्णेन०	अस्त्राय फट् ।

अथ षडङ्गकरन्यासः –

३ॐ विभ्राडिति अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ३ॐ दैव्यावद्ध्वर्य्यूइति तर्जनीभ्यां नमः । ३ॐ चित्रन्देवानामिति मध्यमाभ्यां नमः । ३ॐ तरणिर्विश्वेति अनामिकाभ्यां नमः । ३ॐ बट् सूर्य्येति कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ३ॐ आकृष्णेनेति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

ध्यानम्— ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती
नारायणः सरसिजासनसन्निविष्टः ।
केयूरवान्मकरकुण्डलवान् किरीटी
हारी हिरण्मयवपुर्धृतशङ्खचक्रः ॥

॥ इति श्रीसूक्तन्यासः ॥

अथ सूर्ययागस्वाहाकारमन्त्राः

३ॐ विभ्राड् बृहत्पिबतु सोम्यं मद्ध्वायुर्द्दधद्यज्ञ-पतावविह्रुतम् ॥ व्वातजूतो योऽ अभिरक्षति त्मना प्रजाः पुपोष पुरुधा व्विराजति ॥१॥

उदु त्त्यं जातवेदसं देवं व्वहन्ति केतवः ॥ दृशे व्विश्वाय सूर्य्यम् ॥२॥

येना पावक चक्षसा भुरण्यन्तं जनाँ२ अ नु । त्वं व्वरुण पश्यसि ॥३॥

दैव्यावद्ध्वर्य्यूऽ आगतर्ठ० रथेन सूर्य्यत्वचा ॥ मद्ध्वा यज्ञर्ठ० समञ्जाथे ॥ तं प्रत्नथाऽयं व्वेनश्चित्रं देवानाम् ॥४॥

तं प्रत्नथा पूर्व्वथा व्विश्वथेमथा ज्येष्ठतातिं बर्हिषदर्ठ० स्वर्विदम् ॥ प्रतीचीनं व्वृजनं दोहसे धुनिमाशुं जयन्तमनु यासु व्वर्द्धसे ॥५॥

अयं व्वेनश्चोदयत्पृश्निगर्ब्भा ज्ज्योतिर्ज्जरायू रजसो व्विमाने ॥ इममपाꣳ सङ्गमे सूर्य्यस्य शिशुन्न व्विप्रा मतिभी रिहन्ति ॥६॥

चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्म्मित्रस्य व्वरुणस्याग्नेः ॥ आप्रा द्यावापृथिवीऽ अन्तरिक्षर्ठ० सूर्य्यऽ आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ॥७॥

आ नऽ इडाभिर्व्विदथे सुशस्ति व्विश्वानरः सविता देवऽ एतु ॥ अपि यथा युवानो मत्सथा नो व्विश्वं जगदभिपित्वे मनीषा ॥८॥

यदद्य कच्च व्वृत्रहन्नुदगाऽ अभि सूर्य्य ॥ सर्व्वं तदिन्द्र ते व्वशे ॥९॥

तरनिर्व्विश्वदर्शतो ज्ज्योतिष्कृदसि सूर्य्य ॥ व्विश्वमाभासि रोचनम् ॥१०॥

तत्सूर्य्यस्य देवत्वं तन्महित्वं मद्ध्या कर्त्तोर्व्विततर्ठ० सञ्जभार । यदेदयुक्त हरितः सधस्थादाद्रात्री व्वासस्तनुते सिमस्मै ॥११॥

तन्मित्रस्य व्वरुणस्याभिचक्षे सूर्य्यो रूपं कृणुते द्योरुपस्थे ॥ अनन्तमन्यद्रुशदस्य पाजः कृष्णमन्यद्धरितः सम्भरन्ति ॥१२॥

बण्महाँ२ ॥ असि सूर्य्य बडादित्य महाँ२ ॥ असि ॥ महस्ते सतो महिमा पनस्यतेऽद्धा देव महाँ२ ॥ असि ॥१३॥

वट् सूर्य्य श्रवसा महाँ२ ॥ असि सत्रा देव महाँ२ ॥ असि ॥ मन्हा देवानामसूर्य्यः पुरोहितो व्विभु ज्ज्योतिरदाब्भ्यम् ॥१४॥

श्रायन्तऽ इऽ सूर्य्यं व्विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत ॥ व्वसूनि जाते जनमानऽ ओजसा प्रति भागं न दीधिम् ॥१५॥

अद्या देवाऽ उदिता सूर्य्यस्य निरꣳहसः पिपृता निरवद्यात् ॥ तन्नो मित्रो व्वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवीऽ उत द्यौः ॥१६॥

आ कृष्णेन रजसा व्वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च ॥ हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥१७॥

अथ वास्तुहवनमन्त्राः

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशो अनमी वो भवानः । यत्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे स्वाहा ॥१॥

ॐ वास्तोष्पते प्रतरणो न ऽएधि गयस्फानोभिरश्वे भिरिन्दो अजरासस्ते सख्ये स्याम पितेव पुत्रान्प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे स्वाहा ॥२॥

ॐ वास्तेष्पते शग्मया सꣳ सदा ते सक्षीमहि हिरण्यया गातु मत्या ॥ पाहि क्षेम उतयोगे वरन्नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः स्वाहा ॥३॥

ॐ अमीवहा वास्तोष्पते विश्वा रूपाण्याविशन् ॥ सखा सुशेष एधि नः स्वाहा ॥४॥

इति समित्तिल-चर्वाज्यद्रव्यैः जुहुयात् ॥ ततो वास्तोष्पते ध्रुवास्थूणामिति पञ्च बिल्वाहुतिभिर्बिल्व-बीजा-हुतिभिर्वा जुहुयात् ॥ तत्र मन्त्रः ॥

ॐ वास्तोष्पते ध्रुवास्थूणाꣳ सत्रꣳ सोम्यनां द्रप्सोभेत्ता पुराꣳ शश्वतीनामीन्द्रो मुनीनाꣳ सखा शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे स्वाहा ॥ इदं वाष्तोष्पतये न मम ॥५॥

विष्णुयागस्य बृहत् सङ्कल्पः

विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारते वर्षे आर्यावर्तैकदेशे, अमुकक्षेत्रे अमुकनद्याः अमुके

तटे विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनाम्नि संवत्सरे अमुकायेन अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथास्थानस्थितेषु सत्सु एवं गुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहं अनाद्याविद्यावासनावासितान्तःप्रवृत्त्या प्रवर्त्तमानेऽस्मिन् महति संसारचक्रे विचित्राभिः विचित्रासु योनिषु अनेकधा जनित्वा केनापि पुण्यकर्मविशेषेण भगवत् कृपाकटाक्ष वीक्षमात्मसहायेन साम्प्रतिकं दुर्लभातिदुर्लभं मानवं देहमासादितवतः आजन्मनः सर्वास्ववस्थासु वाक्-पाण-पाद-पायूपस्थ-घ्राण-रसनश्रुति-चक्षस्त्वङ्-मनःसम्पादितैः ऐन्द्रियकव्यापारविशेषैः प्रतिफलितानां ज्ञाताज्ञातावस्थासम्भवानां समेषामेनसामपनोदपूर्वकं मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य अस्मिन् महायज्ञेकायिकवाचिक-मानसिक-आर्थिकसहयोगेन साहाय्यकारिणाम्, सर्वेषां भारतवर्षवास्तव्यानां चतुराश्रमस्थानां चातुर्वर्ण्यानां जनानाम्, विशेषतः एतत्प्रान्तीयानां सर्वेषां आबालवृद्धवनितानां गो-महिष्यादिसमस्ततिरश्चां च कायिक-वाचिक-मानसिक-सांसर्गिक चतुर्विधपापक्षयपूर्वकम् आध्यात्मिक-आधिदैविक-आधिभौतिक-त्रिविध-तापोपशान्तिसकलदुःखा-शेषनिवृत्तिपूर्वकम्, व्याध्यादि-जरा-मृत्यु-रोग-भय-शोकाद्यपसर्गनिवृत्ति-पुरस्सरम्, जन्मकुण्डल्याम्, वर्षकुण्डल्याम्, गोचरे च अरिष्टस्थितानाम् आदित्यादिनवग्रहाणामशुभफलनिरासपूर्वकम्, लग्नस्थमन्दार्क-पातालस्थभौम-मिथुनस्याब्जनवमस्याशिखिगोचराष्टकस्य जीव-ग्रहजन्यजायमानजनिष्यमाणसकलारिष्टनिवृत्तिपूर्वकम्, अङ्गारकादिक्रूर-सम्मेलनसम्भाव्यदिव्यभौमान्तरिक्षसर्वोपप्लवादिसर्वापच्छान्त्यर्थम्, अतिवृष्टि-अनावृष्टि-भूकम्प-राष्ट्रविप्लव-दुर्भिक्षादिविविध-आधि-व्याधि-विविधकष्टनिवृत्तिपूर्वक नित्यकल्याणप्राप्त्यर्थम्, विपुलधन-धान्य-दीर्घायुष्ट्व-नैरुज्य-कीर्तिलाभ-सद्विद्योपार्जन-क्षेम-स्थैर्यैश्वर्य-गो-गजाश्वादिसम्पत्प्रवृद्ध्यर्थम्, सद्धर्मसद्बुद्धि-सद्विद्या-सद्विवेक-

सदाचारादिप्राप्त्यर्थम्, तथैक-विंशतिकुलोद्धरणपूर्वकं समस्तपितृणां निरतिशयानन्दशाश्वतबैकुण्ठलोकप्राप्त्यर्थं च सनातनधर्मेऽस्मिन् निरतिशयश्रद्धाभक्तिसम्पत्त्यर्थं सनातनधर्मप्रतिपादकानां साङ्गानां सरहस्यानां श्रुति-स्मृति-पुराणोपपुराणादीनां धार्मिकग्रन्थानां सर्वासां विद्यानां च अभिवृद्ध्यर्थम्, जाति-देश-धर्म-समाज राष्ट्राभ्युत्थानपूर्वक तत्तत्सम्प्रदायादिविशिष्टस्य समस्तविश्वस्य सर्वविधकल्याणसम्पादनार्थम्, विशेषतः सनातने स्वधर्मे प्रीतिविवर्द्धनार्थम्—

'सर्वे च सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत् ॥

इति सदुद्देश्यसिद्धिद्वारा विश्वस्मिन् जगति सर्वविधशान्त्यर्थं धर्मग्लान्यधर्माभ्युत्थाननिवृत्तिपूर्वकं धर्मसंस्थापनार्थं च पुण्यकालेऽस्मिन् अनन्तकल्याणगुणगुणाकरस्य, ब्रह्म-रुद्रादि-वृन्दारकवृन्दवन्दित-पादारविन्दस्य, प्रपन्नजनपरिपालनपारिजातस्य, वन्दारुजनमन्दारस्य, निखिलवेद-वेदाङ्गैकप्रतिपाद्यस्य, सकललोकपावनस्य, आर्तत्राणपरायणस्य ध्रुव-प्रह्लाद-पुण्डरीक-गजेन्द्र-प्रभृति-भक्ततारण-निपुणस्य, धर्मार्थकाममोक्ष-चतुर्विधपुरुषार्थप्रदस्य, सायुज्य-सालोक्य-सामीप्य-सारूप्यरूप-निर्वाणानन्तसुखप्रदायकस्य, भुक्ति-मुक्तिवितरण-विश्रुतानन्तमहिम्नमणिमण्डितस्य, करणाकरणान्यथाकरणचणस्य, अखण्डब्रह्माण्डमण्डलमण्डनस्य गो-ब्राह्मणप्रतिपालनबद्धदीक्षस्य, हरकोदण्डखण्डनाखण्डनपण्डितस्य, अखर्वगर्वपर्वताधित्यकासञ्चर-द्रात्रिञ्चरनिकरपरिकरलोकरावणविरावणस्य, देश-काल-शक्तिगुणापरिच्छेद्यमहामहिमनित्ययुक्तस्य आनख-शिख-सौन्दर्यह्रीणा-नङ्गमङ्गलस्वरूपस्य, रिङ्गत्तुङ्गतरङ्गगङ्गाप्रादुर्भावपटुपाटल-पादांगुलिभूषितस्य, सर्वमङ्गलाङ्गसङ्गिगङ्गाधरार्च्यमानारुणचरणसरोजस्य, श्रीराम-कृष्णाद्यनेककलिकल्मषापहारिपुण्यागण्यावतारधारकस्य, कर्तुमकर्तु मन्यथाकर्तु समर्थस्य, सर्वसमर्थस्य, सर्वसूत्रधारस्य, सर्वव्यापकस्य, विश्वज्योतिरवभासकस्य, करुणावरुणा-गारस्य, वामदक्षिणतो भार्याभ्यां श्रीभूम्यां भूषितस्य, शङ्ख-चक्र-गदा-पद्मैरलंकृतबाहुचतुष्टयस्य,

अनन्तकोटिब्रह्माण्डनायकस्य, भगवतः श्रीसूर्यमण्डलान्तर्वर्तिजगद्-बीजपुरुषोत्तमवैकुण्ठाधिपतेः श्रीविष्णोः प्रीत्यर्थं सग्रहमखं विष्णुयागं चतुर्णां वेदानां परायणं श्रीमद्भागवत-वाल्मीकियरामायण-विष्णुपुराण-गीता दुर्गादीनां पारायणं नवग्रहादीनां जपं च एभिर्द्विजकुलावतंसैः शमदमादिनिखिल-गुणगणभरितैर्विद्वद्भिः सह अद्यारभ्य पूर्णाहुतिपर्यन्तं करिष्ये ।

विष्णुयागस्य लघुसङ्कल्पः

देशकालौ सङ्कीर्त्य मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य अन्येषां भारतवर्षनिवासिनां, विशेषतः एतत्प्रान्तीयानां सर्वेषामाबालवृद्धवनितानां च नित्यकल्याणप्राप्त्यर्थं कायिक-वाचिक-मानसिक-सांसर्गिकचतुर्विधपापक्षयपूर्वकम्, आध्यात्मिक-आधिदैविक-आधिभौतिक-त्रिविधतापोपशान्तिसकलदुःखाशेषनिवृत्तिपूर्वकम् विपुल-धन-धान्य-पौत्र-दीर्घायुः क्षेमस्थैर्यैश्वर्यादिसम्पत्प्रवृद्ध्यर्थम्, तथैकविंशति कुलोद्धरणपूर्वकं समस्तपितृणां निरतिशयानन्दशाश्वत-वैकुण्ठलोकनिवासार्थं सनातनधर्मेऽस्मिन् निरतिशयश्रद्धाभक्तिवृद्ध्यर्थं सनातनधर्मप्रतिपादकानां साङ्गानां सरहस्यानां श्रुति-स्मृति-पुराणोपपुराणादीनां धार्मिकग्रन्थानां सर्वासां विद्यानां च अभिवृद्ध्यर्थम्, विशेषतः सनातने स्वधर्मे प्रीतिविवर्द्धनार्थम् —

सर्वे च सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत् ॥

—इति सदुद्देश्यसिद्धिद्वारा । विश्वस्मिन् जगति सर्वविधशान्त्यर्थं धर्मग्लान्यधर्माभ्युत्थाननिवृत्तिपूर्वकं धर्मसंस्थापनार्थं च पुण्यकालेऽस्मिन् अनन्तकोटिब्रह्माण्डनायकस्य भगवतः श्रीसूर्यमण्डलान्तर्वर्तिजगद्बीज-पुरुषोत्तमवैकुण्ठाधिपतेः श्रीविष्णोः प्रीत्यर्थं पञ्चकुण्ड्यात्मकं सग्रहमखं विष्णुयागं चतुर्णां वेदानां पारायणं श्रीमद्-भागवत्-वाल्मीकीयरामायण-विष्णुपुराण गीता-दुर्गादीनां पारायणं नवग्रहादीनां जपं च एभिर्द्विजकुलावतंसैः शम-दमादि-निखिल-गुणगणभरितैर्विद्वद्भिः सह अद्यारभ्य पूर्णाहूतिपर्यन्तं करिष्ये ।

रुद्रयागसङ्कल्पः

देशकालौ सङ्कीर्त्य 'अमुकगोत्रः अमुक-शर्माहं मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य तथा च अन्येषां जनानां विशेषतः एतत्प्रान्तीयानां सर्वेषां स्त्रीपुंसानां च नित्यकल्याणप्राप्त्यर्थं कायिक-वाचिक-मानसिक-सांसर्गिकचतुर्विधपापक्षयपूर्वकम् आध्यात्मिक-आधिदैविक-आधिभौतिक त्रिविधतापोपशान्तिसकलदुःखशोषनिवृत्तिपरमपदप्राप्तिव्याध्यादिजरा-मृत्युरोग-भय-शोकाद्युपसर्गानिर्मुक्ति-धन-धान्य-दीर्घायुष्ट्व-नैरुज्य-कीर्तिलाभ - सद्विद्योपार्जन-क्षेमस्थैर्यैश्वर्य-स्थिरलक्ष्मी-गो-गजाश्वादिसम्पत्त्य-वृद्ध्ये पवित्रतमास्मद्भारतदेशनिवासिनां सनातनधर्मश्रद्धावतां इतोऽप्यधिक सनातनधर्मे श्रद्धाभिवृद्ध्यर्थम्, अविद्यमानश्रद्धानाम् अन्येषां सनातनधर्मेऽस्मिन् निरतिशयश्रद्धाभक्तिसम्पत्त्यर्थं सनातनधर्मप्रतिपादकानां पुराणान्तानां धार्मिकग्रन्थानां सर्वासां विद्यानां च अभिवृद्ध्यर्थम्, विशेषतः सनातने स्वधर्मे प्रीतिविवर्द्धनार्थम्—

सर्वे च सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत् ॥

—इति सदुद्देश्यसिद्धिद्वारा विश्वस्मिन् जगति सर्वविधशान्त्यर्थं धर्मग्लान्यधर्माभ्युत्थाननिवृत्तिपूर्वकं धर्मसंस्थापनार्थं च पुण्यकालेऽस्मिन् श्रीसाम्बसदाशिवप्रीत्यर्थं सग्रहमखं हवनात्मकं (अभिषेकात्मकं) महारुद्रयागम् महारुद्राभिषेकम् चतुर्णां वेदानां पारायणं श्रीमद्भागवत-विष्णुपुराण-वाल्मीकियरामायण-गीता-दुर्गादिपाठं नवग्रहादिजपं च एभिर्द्विजैर्निखिलगुणगणभरितैर्विद्वद्भिः सह अद्यारभ्य पूर्णाहुत्यन्तं करिष्ये ।

अथ अवभृथस्नानविधिः —

यजमानः पूर्णाहुत्यनन्तरं पूर्णपात्रादिदानानन्तरं प्रधानवेद्युपरि स्थापितं प्रधानकलशं, हवनकुण्डाद् वहिः पतितं हवनीयद्रव्यं, स्रुवादियज्ञपात्रं पूजनसामग्रीं च गृहीत्वा वेदमन्त्रोच्चारण-भगवन्नामकीर्तन-वाद्यघोषपुरस्सरं आचार्यादिऋत्विग्भिः नगरवासिभिश्च सह नदीं जलाशयं वा गच्छेत् । अर्धे-मार्गोपरि क्षेत्रपालं सम्पूज्य क्षेत्रपालाय बलिं दद्यात् । नदीं जलाशयं वा गत्वा आचार्यादयः ऋत्विजः स्वस्तिवाचनं कुर्युः । पश्चाद् यजमानः सङ्कल्पं कुर्यात्। तद्यथा-

देशाकालौ सङ्कीर्त्य 'मम सर्वेषां परिवाराणां तथान्येषां समुपस्थितानां

जनानाञ्च सर्वविधकल्याणपूर्वकं धर्मार्थकाममोक्ष-चतुर्विधपुरुषार्थ सिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीतिपूर्वकं च कृतस्य अमुकयागकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्ण फलप्राप्त्यर्थं च पुण्यकालेऽस्मिन् अस्यां नद्यां -जलाशये वा माङ्गलिकं अवभृथस्नानं समस्तसमुपस्थितजनैः सह अहं करिष्ये ।

अनन्तरं नद्यां जलाशये वा जलमातृणामावाहनं पूजनञ्च कुर्यात्। तद्यथा- मत्स्यै नमः, मत्सीमावाहयामि स्थापयामि । कूर्म्यै नमः, कूर्मीमावा०। वाराह्यै नमः वाराहीमावा० । दर्दुर्यै नमः, दर्दुरीमावा०। मकर्यै नमः, मकरीमावा० । जलूक्यै नम, जलूकीमावा० । तन्तुक्यै नमः, तन्तुकीमावा० ।

ततो वरुणमावाहयेत् -

आगच्छ जलदेवेश जलनाथ पयस्पते ।
तव पूजां करिष्यामि कुम्भेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥
इत्यावाह्य सम्पूज्य च,
श्वेताभ्र शिखिराकार सर्वभूतहिते रताः ।
गृहाणार्घ्यमिमं देव जलनाथ नमोऽस्तु ते ॥

इति विशेषार्घ्यं दद्यात् । ततः-

ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय ॥ त्वामवस्युराचके॥१॥
ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुणेहबोद्ध्युरुशंस मा न आयुः प्रमोषीः ॥२॥
ॐ त्वन्नोऽअग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो ऽअवयासिसीष्ठाः।
यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाᳬसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् ॥३॥
ॐ सत्वन्नो ऽअग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो ऽअस्या ऽउषसो व्युष्टौ ।
अव यक्ष्वनो वरुणᳬ रराणो वीहि मृडीकᳬ सुहवो न ऽएधि ॥४॥
ॐ मापो मौषधीर्हिᳬ सीर्द्धाम्नो धाम्नो राजँस्ततो वरुण नो मुञ्च ।
यदाहुरघ्न्या ऽइति वरुणेति शपामहे ततो वरुणनो मुञ्च ॥५॥
ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यमᳬ श्रथाय ।
अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो ऽअदितये स्याम ॥ ६॥
ॐ मुञ्चन्तु मा शपथ्यादथो वरुण्यादुत ।
अथो यमस्य पड्वीशात् सर्व्वस्माद्देवकिल्विषात् ॥७॥
ॐ अवभृथ निचुम्पुण निचेरुरसि निचुम्पुणः ।
अव देवैर्देवकृतमेनो यासिषमव मर्त्यैर्मर्त्यकृतं पुरुराव्णो देवरिषस्पाहि ॥

इति मन्त्रैः सम्प्रार्थ्य स्रुवरेखया तीर्थप्रकल्पनं कुर्यात् ।

ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि चाकृष्याङ्कुशमुद्रया ।
तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर ॥
इति रज्वादिना परितश्चतुरस्रं स्नानार्थं व्यवस्थां प्रकल्पयेत्।
ततः- ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः ।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित् ॥
इति मन्त्रेण नदीं जलाशयं वा सम्पूज्य ततो लाजादिना जीवमातृणां वलिं दद्यात् । तद्यथा-
कुमार्यै नमः । धनदायै नमः । नन्दायै नमः विमलायै नमः । मङ्गलायै नमः । अचलायै नमः । पद्मायै नमः ।
पश्चात् विष्णुयागे पुरुक्सूक्तेन, रुद्रयागे रूद्रसूक्तेन, लक्ष्मीयागे श्रीसूक्तेन च जले अभिषेकः कार्यः । ततो होमावसरे हवनकुण्डाद् बहिः पतितं हवनीय-द्रव्यं नद्यां जलशये वा तूष्णीं प्रक्षिपेत् ।
ततो जले 'वडवाग्निरूपायाग्नये नमः इति मन्त्रेण षोडशोपचारैः पञ्चो-पचारैर्वा सम्पूज्य द्वादश आज्याहुतरर्जुहुयान् । तद्यथा-
ॐ अदभ्यः स्वाहा, इदमद्भ्यो न मम ।
ॐ वार्भ्यः स्वाहा, इदं वार्भ्यो न मम ॥
ॐ उदकाय स्वाहा, इदमुदकाय न मम ।
ॐ तिष्ठन्तीभ्यः स्वाहा, इदं तिष्ठन्तीभ्यो न मम ॥
ॐ स्रवन्तीभ्यः स्वाहा, इदं स्रवन्तीभ्यो न मम ।
ॐ स्यन्दमानाभ्यः स्वाहा, इदं स्यन्दमानाभ्यो न मम ॥
ॐ कूप्याभ्यः स्वाहा, इदं कूप्याभ्यो न मम ।
ॐ सूद्याभ्यः स्वाहा, इदं सूद्याभ्यो न मम ॥
ॐ धार्याभ्यः स्वाहा, इदं धार्याभ्यो न मम ॥
ॐ अर्णवाय स्वाहा, इदमर्णवाय न मम ॥
ॐ समुदाय स्वाहा, इदं समुदाय न मम ।
ॐ सरिराय स्वाहा, इदं सरिराय न मम ॥
ततो यजमानः सम्पूजितेन प्रधानकलशोदकेन ॐ इमं मे०। ॐ तत्त्वा यामि० । ॐ त्वन्नो ऽअग्ने व्वरुणस्य० । ॐ सत्वन्नोऽअग्ने० ॐ उदुत्तमम्० । इति वरुणमन्त्रैः स्नानं कुर्यात् । ततः प्रधानकलशोदकेन कुशैः धूर्वाङ्कुरैश्च अन्येषां जनानां सम्मार्जनं कारयेत् ।

पश्चाद् यजमानः यज्ञकुण्डादानीतेन भस्मना सुचिस्थितेन आज्येन च शरीरे अनुलेपनं कृत्वा नद्यां जलाशये वा स्नानं कुर्यात् । स्नानानन्तरं नूतन वस्त्राणि परिधाय तिलकाद्यलङ्करणं कुर्यात् । ततो यजमानः-
ॐ हꣳसः शुचिषद् वसुरन्तरिक्षसद्धोता व्वेदिषदतिथिर्दु रोणसत्।
नृषद्वरसहतसदव्योमसदव्जा गोजा ऽऋतजा ऽअद्रिजा ऽऋतं बृहत्॥
इति मन्त्रेण सूर्योपस्थानं कृत्वा तीर्थदेवतां सम्पूज्य प्रार्थयेत्-
ॐ हिरण्यशृङ्गोऽयो ऽअस्य पाद मनोजवा ऽअवर ऽइन्द्र ऽआसीत्।
देवाा ऽइन्द्रस्य हविराद्यमायन्यो ऽअर्व्वन्तं प्रथमो ऽअदध्यतिष्ठत् ॥१॥
ईर्म्मान्तासः सिलिकमद्ध्यमासः सर्ठ० शूरणासो दिव्यासो ऽआत्याः।
ह- सा ऽइव रश्रेणिशो यतन्ते यदाक्षिषुर्दिव्यमज्ममश्वाः ॥
तव शरीरं पतयिष्णवर्व्वन् तव चित्तं व्वात ऽइवद् ध्रजीमान् ।
तव शृङ्गाणि विष्ठिता पुरूत्रारण्येषु जर्भुराणा चरन्ति ॥
ततो यजमानः आचार्यादिभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दक्षिणां दद्यात् । पश्चात् प्रधानकलशं पूजादिसामग्रीं च गृहित्वा भगवन्नामकीर्तनं कुर्वन् आचार्यादि-ऋत्विग्भिः सह सपत्नीको यजमानः यज्ञस्थलमागत्य हस्तौ पादौ च प्रक्षाल्य यज्ञमण्डपस्य प्रदक्षिणां कृत्वा यज्ञमण्डपस्य पूर्वद्वारेण प्रविशेत् । ततः प्रधान-कलशं प्रधानवेद्युपरि स्थापयेत् । पश्चाद् यज्ञावशिष्टं कर्म समापयेदिति ।
इति अवभृथस्नान विधि : ।

अथ जलयात्राविधिः -

यज्ञप्रारम्भदिने यजमानः पूजासामग्रीं गृहीत्वा आचार्यादिऋत्विजं वरणानंन्तरं पूजासामग्रीं वेदमन्त्रोच्चारण-भगवन्नामकीर्तन -वाद्यघोषपुरस्सरं आचार्यादिऋत्विग्भिः नगरवासिभिः सुवासिनीभिश्च सह नदी जलाशयं वा गच्छेत् । नद्यां जलाशये वा गत्वा प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा उपविश्य यजमानः सङ्कल्पं कुर्यात् । तद्यथा-
देशकालौ सङ्कीर्त्य करिष्यमाणस्य अमुकयागकर्मणः निर्विघ्नतासिदध्यर्थं वरुणदेवताप्रीत्यर्थं वरुणदेवस्य पूजनमहं करिष्ये।
इति सङ्कल्प्य, जलसमीपे रक्ताक्षतैः पीताक्षतैर्वा नव कोष्ठान् निर्माय तेषु दिक्षु-विदिक्षु अष्टौ कलशान् संस्थाप्य, मध्ये कलशमेकं संस्थापयेत् । अनन्तरं तेषु सर्वेषु कलशेषु जलं परिपूर्य तेषां

गन्धाक्षतापुष्पादिना पूजनम् । ततः तत्रैव पट्टवस्त्रे पङक्तित्रये सप्त-सप्त अक्षतपुञ्जान् विधाय तेषु क्रमेण जलमातृणां जीवमातृणां स्थलमातृणाञ्च आवाहनं स्थापनं पूजनञ्च कूर्यात् ।

अथ जलमातृणां पूजनम् -

मत्स्यै नमः, मत्सीमावाहयाभि स्थापयामि । कूर्म्यै नमः, कूर्मीमा० । वाराह्यै नमः, वाराहीमा० । दर्दुर्यै नमः, दर्दुरीमा० । मकर्यै नमः, मकरीमा० । जलूक्यै नमः, जलूकीमा० । तन्तुक्यै नमः, तन्तुकीमा० ।

'मत्स्यादिजलमातृभ्यो नमः इति पञ्चोपचारैः पूजयेत् ।

अथ जीवमातृणां पूजनम्

कुमार्यै नमः, कुमारीमावाहयामि स्थापयामि । धनदायै नमः, धनदामा० । नन्दायै नमः, नन्दामा० । विमलायै नमः, विमलामा०। मङ्गलायै नमः मङ्गलामा० । अचलायै नमः अचलामा० । पद्मायै नमः, पद्मामा० ।

'कुमार्यादिजीवमातृभ्यो नमः इति पञ्चोपचारैः पूजयेत् ।

अथ स्थलमातृणां पूजनम्-

ऊर्म्यै नमः, ऊर्मीमावाहयामि स्थापायामि । लक्ष्म्यै नमः, लक्ष्मीमा० । महामायायै नमः, महामायामा० । पानदेव्यै नमः, पानदेवीमा० । वारूण्यै नमः, वारूणीमा० - निर्मलायै नमः, निर्मलामा० । गोधायै नमः, गोधामा० ।

'ऊर्म्यादिस्थलमातृभ्यो नमः इति पञ्चोपचारैः पूजयेत् ।

पश्चात् दशसु दिक्षु दशदिक्पालानां पूजनम् । ततः नद्यां जलाशये वा नदी स्तीर्थानि चावाहयेत् ।

काशी कुशस्थली मायाऽवन्त्ययोध्या मधोः पुरी ।
शालग्रामः सगोकर्णो नर्मदा च सरस्वती ॥१॥
आगच्छन्तु सरिज्ज्येष्ठा गङ्गा पापप्रणाशिनी ।
नीलोत्पलदलश्यामा पद्महस्ताम्बुजेक्षणा ॥२॥
आयातु यमुना देवी कूर्मयानस्थिता सदा ।
प्राची सरस्वती पुण्या पयोष्णी गौतमी तथा ॥३॥
ऊर्मिला चन्द्रभागा च सरयू गण्डकी तथा ।
वितस्ता च विपाशा च नर्मदा च पुनः पुनः ॥४॥

कावेरी कौशिकी चैव गोदावरी महानदी ।
मन्दाकिनी वसिष्ठा च तुङ्गभद्रा शशिप्रभा ॥५॥
अमरेशः प्रभासश्च नैमिषं पुष्करं तथा ।
कुरुक्षेत्रं प्रयागं च गङ्गासागरसङ्गमे ॥६॥
एता नद्यश्च तीर्थानि यानि सन्ति महीतले ।
तानि सर्वाणि आयान्तु पावनार्थं द्विजन्मनाम् ॥७॥

इति नदीनां तीर्थानाञ्चावाहनं कृत्वा 'गङ्गादिनदीभ्यो नमः 'पुष्करादितीर्थेभ्यो नमः' इति पञ्चोपचारैः पूजनं कुर्यात् । ततः जलमध्ये वरुणदेवस्य पूजनम् । हस्ते गन्धाक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा ॐ 'इमं मे वरुणश्श्रुधी०' इत्यनेन मन्त्रेण वरुणं सम्पूज्य जले ॐ पञ्च नद्यः० इति मन्त्रेण पञ्चामृतस्य प्रक्षेपः । पश्चात् जले द्वादश आज्याहुतीर्जुहुयात् । तद्यथा -

ॐ अद्भ्यः स्वाहा । ॐ वार्भ्यः स्वाहा । ॐ उदकाय स्वाहा । ॐ तिष्ठन्तीभ्यः स्वाहा । ॐ स्रवन्तीभ्यः स्वाहा । ॐ स्यन्दमानेभ्यः स्वाहा । ॐ कुप्याभ्यः स्वाहा । ॐ सूद्याभ्यः स्वाहा । ॐ धार्याभ्यः स्वाहा । ॐ अर्णवाय स्वाहा । ॐ समुद्राय स्वाहा । ॐ सरिराय स्वाहा ।

(शु० य० २२/२५)

अथवा ॐ अदभ्यः सम्भृतः० इत्यादिमन्त्रैः घृतेन दध्ना वा स्रुवेण विंशतिवारं आहुतीर्दद्यात् ।

ततोऽर्घपात्रे जलेन साकं गन्धाक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा नद्यां जलाशये वा वारत्रयमर्घ्यं दद्यात् । पश्चात् नद्यां श्रीफलं प्रक्षिपेत् । ततो देवानां विसर्जनं कृत्वा आचार्यादिऋत्विजां सुवासिनीनाञ्च पूजनं विधाय दक्षिणां च दद्यात् । पश्चात् पूजितान् नवकलशान् उत्थाप्य नवसंख्यानां सुवासिनीनां मस्तकोपरि धारयेत् । ततो यजमानः वेदमन्त्र भगवन्नामकीर्तनं कुर्वन् आचार्यादिऋत्विग्भिः सह यज्ञ स्थलं प्रति गच्छेत् । अर्धमार्गे स्थित्वा इन्द्रादिदशदिक्पालानां क्षेत्रपालस्य च आवाहनं पूजनं च कृत्वा सर्वेभ्योः वलिं दद्यात् । ततो यज्ञमण्डपस्य पश्चिम द्वारस्य पूजनं विधाय तेनैव द्वारेण मण्डपे प्रविश्य पूजितनवकलशान् यज्ञ मण्डपस्य वरुणमण्डलोपरि स्थापयेदिति ।

इति जलयात्राविधिः ।

देव्या विशेषहवनविधानम्

अ०	मन्त्राः	संख्या	वस्तुनाम्
१	बलादाकृष्यमोहाय-	५६	शर्करा
१	आस्तीर्य शेषभजत्	६७	कमलबीज कमलगट्टा
१	वञ्चिताभ्यामिति तदा	१००	कर्पूर
१	क्लिक्य ताभ्यां गदितो-	१०१	कमलगट्टा
१	तथेत्युकत्वा भगवता...	१०३	मधु-केला गुग्गुल नागर पान

अध्यायान्ते मधुपुष्पद्वारा ऊँ सांगायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै वागभवबीजाधिष्ठातृमहाकाल्यै नमः स्वाहा इति एकाहुतिर्देया ।

अ०	मन्त्राः	संख्या	वस्तुनाम्
२	अस्त्राण्यनेकरूपाणि	२८	कर्पूर
२	श्येनानुकारिणः प्रणान्	६०	सरसों
२	क्षणेन तन्महासैन्य	६७	राई
२	देव्या गणैश्चतै	६९	पुष्प विंल्वपत्र

द्वितीयाध्यायान्ते तु गुगुलसहितेन ॐ सांगायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै बीजाधिष्ठात्र्यै महालक्ष्म्यै नमः स्वाहा । एकैवाहुतिः देया ।

अ०	मन्त्राः	सं०	वस्तुनाम
३	बिडालस्यासिना	२०	निम्बू कागजी
३	ततः क्रुद्धा जगन्माता	३४	गुड़, दुग्ध
३	गर्ज गर्ज क्षणं मूढ-	३८	मधु
३	अर्धनिष्क्रान्त एवासौ	४२	घिया (लोकी)
३	तुष्टुवुस्तां सुरा देवीं	४४	पान-सुपारी

तृतीयाध्यायान्ते तु माषदधिगुगुलहविःसहिता ॐ सांगायै सपरिवारायै सशक्तिकायैं सायुधायौ सवाहनायै अष्टाविंशतिवर्णात्मिकायै महालक्ष्म्यै नमः स्वाहा एकैवाहुतिः देया ।

अ०	मन्त्राः	संख्या	वस्तुनाम
४	देव्या यया ततमिदं जगदा	३	कदली फल
४	हेतुः समस्तजगतां त्रिगु	७	बिल्व फल
४	यस्याः समस्तसुरता समु	८	श्वेतचन्दन
४	मेधासि देवि विदिता	११	कर्पूर
४	त्रैलोक्यमेतदखिलं	२३	शरीफा (सीताफल)
४	एवं स्तुता सरैर्दिव्यैः	२९	रक्तचन्दन
४	भक्त्या समस्तैस्त्रि	३०	धूप
४	रक्षणाय च लोकानां	४२	तिल-धूप-मधु

"चतुर्थाध्यायेतु अध्यायस्य प्रथममन्त्रादारभ्य" खड्गशूलगदादीनि इति मन्त्र पर्यन्तं पायसेन अथवा जवागुना (हलुवा) आहुतिविधानं वर्तते । अध्यायान्ते तु घृतपायसयवागुभिः ॐ सांगायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायौ त्रिवर्णात्मिकायै त्रिशक्त्यै महालक्ष्म्यै नमः स्वाहा । इति मन्त्रेण एकाहुतिः देया ।

अ०	मन्त्रः	सं०	वस्तुनाम
५	नमो देव्यै महादेव्यै	९	हलुवा
५	रौद्रायै नमो नित्यायै	१०	आँवला
५	कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै	११	भोजपत्र
५	निधिरेष महापद्मः	९६	कमलगट्टा
५	यो मां जयति संग्रामे	१२०	कज्जल
५	तदागच्छतु शुम्भोत्र	१२१	हिंगुल
५	स त्वं गच्छ	१२९	ताम्बूल-सुपारी इक्षु

पञ्चमाध्यायान्ते श्वेतचन्दनकुंकुमं विल्वपत्रोपरि धृत्वा ॐ सांगायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै विष्णुमायादि चतुर्विंशति देव्यै सरस्वत्यै नमः स्वाहा । मन्त्रेणानेन एकहुतिः देया ।

अ०	मन्त्राः	संख्या	वस्तुनाम
६	हे धूम्रलोचनाशुत्वं स्वसै०	४	गुग्गुल
६	इत्युक्तः सोऽभ्यधावत्ताम्	१३	निम्बूविजौरा
६	विच्छिन्नबाहुशिरसः	१८	केसर
६	क्षणेन तदबलं सर्वं	१९	राई
६	श्रुत्वा तमसुरं देव्या	२०	सुपारी लोहवान् कमलगट्टा
६	केशेष्वाकृष्य बद्ध्वा	२३	भोजपत्र
६	तस्यां हतायां दुष्टायाम्	२४	इक्षु-कनेर-पुष्प

षष्ठाध्यायान्ते कुष्माण्डेन ॐ सांगायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै धुम्राक्ष्यै शक्त्यै नमः स्वाहाः एकाहुति देया।

अ०	मन्त्राः	संख्या	वस्तुनाम
७	ततः कोपं-चकार	५	कस्तूरी
७	उत्थाय च महासिंहं	२०	कदलीफल
७	शिरश्चण्डस्य काली च	२३	निम्बूविजौरा
७	तावानीतौ ततो दृष्ट्वा	२६	कमलगट्टा
७	यस्माच्चण्डं च मुण्डंच	२७	चिरौंजी

सप्तमाध्यायान्ते चिरञ्जिबीजैः सितावादामलज्जावन्तिपुष्पाणि समेल्य ॐ सांगायै ० कर्पूरबीजाधिष्ठात्र्यै कालीचामुण्डादैव्यै नमः स्वाहा । एकाहुतिः देया ।

अ०	मन्त्राः	संख्या	वस्तुनाम
८	इति मातृगणं क्रुद्धं	३९	सरसों
८	रक्तविन्दुर्यदा भूमौ	४१	लाल चन्दन
८	भक्ष्यमाणास्त्वया चोग्रा	५६	लाल चन्दन
८	मुखेनकाली जगृहे	५७	लाल चन्दन
८	तांश्चखादाथ चामुण्डा	६०	इक्षु
८	जघान रक्तबीजं	६१	लाल चन्दन
८	नीरक्तश्च महीपाल	६२	बिजोर निम्बू

अष्टामाध्यायान्ते रक्तचन्दनमधुसहिता ॐ साङ्गायै० अष्टमातृवहितायै रक्ताक्ष्यै देव्यै नमः स्वाहा । एका आहुतिः देया।

अ०	मन्त्राः	संख्या	वस्तुनाम
९	विचित्रमिदमाख्यातं	२	निम्बूविजौरा
९	ततः परशुहस्तं तमायान्तं	१६	कपीठ (चक)
९	पूरयामास ककुभोनिज	२०	केशर
९	भिन्नस्य तस्य शूलेन	३५	निम्बू विजौरा
९	तस्य निष्क्रामतो देवी	३६	कण गुग्गुल और इन्द्रजौ
९	केचिद्विनेशुरसुराः के	४१	पान सुपारी बेलगिरी

नवमाध्यायान्ते विजौरा जावित्रिसहिता ॐ साङ्गायै० भैरवी देव्यै नमः स्वाहा । एकाहुतिः देया ।

अ०	मन्त्राः	संख्या	वस्तुनाम
१०	निशुम्भं निहितं	२	केशर कस्तूरी
१०	तमायान्तं ततो देवी	२६	पक्का केला
१०	स गतासुः पपातोर्व्याम्	२७	भोजपत्र
१०	जज्ज्वलुश्चाग्नयः	३२	इन्द्र जौ कमलगट्टा बटपत्रमें देवें

दशमाध्यायान्ते कस्तूरीसहित ॐ साङ्गायै० सिंहासनाधिष्ठात्र्यै त्रिशूलधारिण्यै देव्यै नमः स्वाहा इति मन्त्रेण एकाहुतिः देया ।

अ०	मन्त्राः	संख्या	वस्तुनाम
११	त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्त	५	विजौरा निम्बू
११	रोगानशेषानपहं सि-	२९	राई या काली मरीच गिलोय
११	सर्वाबाधा प्रशमनंत्रै	३९	काली मरीच
११	वैवस्वतेन्तरे प्राप्ते	४१	सरसों
११	भक्षयन्त्याश्चतानुग्रान्	४४	अनार पुष्प या दाना
११	ततो मां देवताः स्वर्गे	४५	मजीठ
११	भूयश्चशतवार्षिक्या	४६	नारंगी
११	ततः शतेन नेत्राणां	४७	कमलगट्टा
११	शाकम्भरीति विख्यातिं	४९	सोआ पालक
११	भ्रामरीति मां लोका	५४	काली मरीच
११	तदा तदावतीर्याहं	५५	सरसों

एकादशाध्यायस्य प्रथममन्त्रात् आरभ्य अष्टाविंशतिमन्त्रं यावत् पायसेन यवागुना वा आहुतयः देयाः । एकादशान्ते कर्पूरेण वा पायसेन वा शर्करया वा घृतेन ॐ साङ्गायै० नारायण्यै देव्यै नमः स्वाहा एकाहुतिः देया ।

अ०	मन्त्राः	संख्या	वस्तुनाम
१ २	एभिः स्तवैश्च मां नित्यं	२	अगर
१ २	बलिप्रदाने पूजाया	१ ०	पेड़ा
१ २	सर्वाबाधाविनिर्मुक्तो	१ ३	छोटी एलायची
१ २	उपसर्गाः शमंयान्ति	१ ७	भोजपत्र
१ २	सर्वं ममैतन्माहात्म्यम्	२ ०	लौंग बिजौरा-पुष्प कपूर
१ २	पश्यतामेव देवानां तत्रैवाऽन्तर	३ ३	सर्बौषधि
१ २	सैवकाले महामारी	३ ९	अनारफल का छिल्का
१ २	स्तुता सम्पूजिता पुष्पैः	४१	पुष्प

द्वादशाध्यायसमाप्तो अगरकेशरकस्तूरीपुष्पाणि सम्मेल्य ॐ साङ्गायै० बालायै त्रिपुरसुन्दर्यै देव्यै नमः स्वाहा । एकाहुतिः देया।

अ०	मन्त्राः	संख्या	वस्तुनाम
१ ३	ददतुस्तौ बलिं चैव	१ २	गुड पुष्प
१ ३	ततो वव्रे नृपो राज्यं	१ ७	काली मिर्च
१ ३	सूर्य्याज्जन्म समासाद्य	२ ९	पान-सुपारी

त्रयोदशाध्यायसमाप्तौ श्वेततिलकेशरकर्पूरश्वेतपुष्पैः ॐ साङ्गायै० श्रियै त्रिपुर सुन्दर्यै महावैष्णव्यै देव्यै नमः स्वाहा । एकाहुतिः देया ।

बलिवैश्वदेव-विधिः

पवित्र आसन पर पूर्वाभिमुख बैठकर सर्वप्रथम आचमन और प्राणायाम करें । पश्चात् निम्नांकित मन्त्र से अपने दाएँ हाथ की अनामिका अंगुली में कुश की पवित्री धारण करें —

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव ऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः । तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ॥

नीचे लिखे मन्त्र से अपने को पवित्र करें —

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

निम्नांकित संकल्प करें —

देशकालौ सङ्कीर्त्य गोत्रः शर्माऽहं (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्) मम गृहे कण्डनीपेषणी-चुल्ली-सम्मार्जनी-गृहलेपनादि-हिंसाजन्य-दोषपरिहारपूर्वकान्नशुद्ध्यात्मसंस्कारसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं बलिवैश्वदेवकर्म करिष्ये ।

लौकिक अग्नि प्रज्वलित करके अग्निदेव का निम्नांकित मन्त्र पढ़ते हुए ध्यान करें —

ॐ चत्वारि शृङ्गा त्रयो ऽअस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो ऽअस्य ।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्यां ऽआविवेश ॥
(शु० य० १७।९१)

'इस अग्निदेव के चार सींग, तीन पैर, दो सिर और सात हाथ हैं। कामनाओं की वर्षा करनेवाला यह महान् देव तीन स्थानों में बँधा हुआ शब्द करता है और प्राणियों के भीतर जठरानलरूप से प्रविष्ट है।'

फिर नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर अग्निदेव को मानसिक आसन दें—

ॐ एषो ह देवः प्रदिशोऽनु सर्वाः पूर्वो ह जातः स ऽउ गर्भे ऽअन्तः ।
स ऽएव जातः स जनिष्यमाणः प्रत्यङ् जनास्तिष्ठति सर्वतोमुखः ॥
(शु० य० ३२४)

'यह अग्निस्वरूप परमात्मदेव ही सम्पूर्ण दिशा-विदिशाओं में व्याप्त हैं, यही हिरण्यगर्भस्वरूप में सबसे प्रथम उत्पन्न (प्रकट) हुआ था, माता के गर्भ में भी यही रहता है और यही उत्पन्न होनेवाला

है, हे मनुष्यो ! यही सर्वव्यापक और सब ओर मुखोंवाला है ।'

पश्चात् अग्निदेव को नमस्कार करके घर में बने हुए बिना नमक के पाक को अथवा घृताक्त कच्चे चावल को एक पात्र में रख लें और यज्ञोपवीत को सव्य कर अन्न की पाँच आहुतियाँ नीचे लिखे पाँच मन्त्रों को क्रमशः पढ़ते हुए बारी-बारी से अग्नि में छोड़ें। (अग्नि के अभाव में एक पात्र में जल रखकर उसी में आहुतियाँ छोड़ सकते हैं।

(१) देवयज्ञ

१	२
५	अग्नि
४	३

१ ॐ ब्रह्मणे स्वाहा, इदं ब्रह्मणे न ,मम।
२ ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम।
३ ॐ गृह्याभ्यः स्वाहा, इदं गृह्याभ्यो न मम।
४ ॐ कश्यपाय स्वाहा, इद कश्यपाय न मम।
५ ॐ अनुमतये स्वाहा, इदमनुमतये न मम।

पुनः अग्नि के पास ही पानी से एक चौकोना चक्र बनाकर उसका द्वार पूर्व की ओर रखें और उसी में बतलाये जानेवाले स्थानों पर क्रमशः बीस ग्रास अन्न देना चाहिए। जिज्ञासुओं की सुविधा के लिए नक्शा और ग्रास अर्पण करने के मन्त्र नीचे दिये जाते हैं। नक्शे में केवल अङ्क रखा गया है, उसमें जहाँ एक है वहाँ प्रथम ग्रास और दो की जगह दूसरा ग्रास देना चाहिए। इसी प्रकार तीन से चलकर बीस तक क्रमशः निर्दिष्ट स्थान पर ग्रास देना चाहिए। नक्शे के नीचे क्रमशः बीस मन्त्र दिये जाते हैं, एक-एक मन्त्र पढ़कर एक-एक ग्रास अर्पण करना चाहिए।
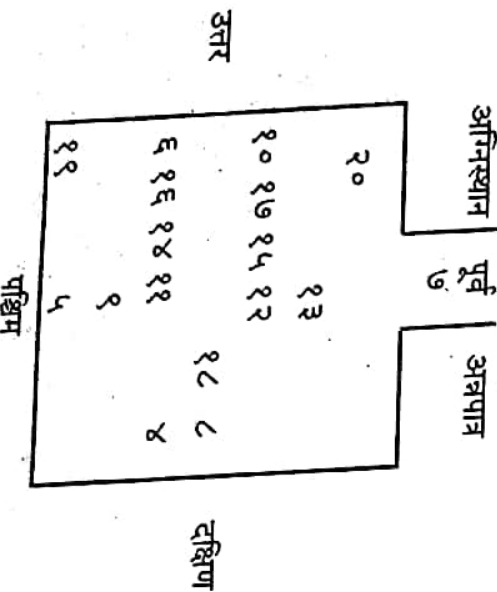
(२) भूतयज्ञ—यज्ञोपवीत को सव्य करके पके हुए अन्न के सत्रह ग्रास अङ्कित मण्डल में यथायोग्य स्थान पर नीचे लिखे हुए मन्त्रों द्वारा क्रमशः छोड़ दें।

१. ॐ धात्रे नमः, इदं धात्रे न मम। २. ॐ विधात्रे नमः इदं विधात्रे न मम। ३. ॐ वायवे नमः, इदं वायवे न मम। ४. ॐ वायवे नमः, इदं वायवे न मम। ५. ॐ वायवे नमः, इदं वायवे न मम। ६. ॐ वायवे नमः, इदं वायवे न मम। ७. ॐ प्राच्यै नमः, इदं प्राच्यै न मम। ८. ॐ अवाच्यै नमः, इदमवाच्यै न मम। ९. ॐ प्रतीच्यै नमः, इदं प्रतीच्यै न मम। १०. ॐ उदीच्यै नमः, इदमुदीच्यै न मम। ११. ॐ ब्रह्मणे नमः, इदं ब्रह्मणे न मम। १२. ॐ अन्तरिक्षाय नमः, इदमन्तरिक्षाय न मम। १३. ॐ सूर्याय नमः, इदं सूर्याय न मम। १४. ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः, इदं विश्वेभ्यो देवेभ्यो न मम। १५. ॐ विश्वेभ्यो भूतेभ्यो नमः, इदं विश्वेभ्यो भूतेभ्यो न मम। १६. ॐ उपसे नमः, इदमुपसे न मम। १७. ॐ भूतानां पतये नमः, इदं भूतानां पतये न मम।

(३) पितृयज्ञ– यज्ञोपवीत को अपसव्य करके बाएँ घुटने को पृथ्वी पर रखकर दक्षिण की ओर मुख करके हो सके तो साथ में तिल लेकर, पक्व अन्न अङ्कन मण्डल में निर्दिष्ट स्थान पर मन्त्र पढ़कर रख दें।

१८ ॐ पितृभ्यः स्वधा नमः, इदं पितृभ्यः स्वधा न मम।

निर्णेजनम्– यज्ञोपवीत को सव्य करके अन्न के पात्र को धोकर वह जल अङ्कित मण्डल में १९वें अङ्क की जगह मन्त्र पढ़कर छोड़ दें।

१९ ॐ यक्ष्मैतत्ते निर्णेजनं नमः, इदं यक्ष्मणे न मम।

(४) मनुष्ययज्ञ– यज्ञोपवीत को माला की भाँति कण्ठ में करके उत्तराभिमुख हो पक्व अन्न अङ्कित मण्डल में २०वें अङ्क की जगह मन्त्र द्वारा छोड़ दें।

२० ॐ हन्त ते सनकादिमनुष्येभ्यो नमः, इदं हन्त ते सनकादिमनुष्येभ्यो न मम।

(१) गोबलि– इसके बाद निम्नांकित मन्त्र पढ़ते हुए सव्य भाव से ही गौओं के लिए बलि अर्पण करें।

ॐ सौरभेय्यः सर्बहिताः पवित्राः पुण्यराशयः ।
प्रतिगृहणन्तु मे ग्रासं गावस्त्रैलोक्यमातरः ॥ इदमन्नं गोभ्यो न मम ।

(२) श्वानबलि – यज्ञोपवीत को कण्ठ में माला की भाँति करके कुत्तों के लिये ग्रास दें ।

ॐ दौ श्वानौ श्यामशबलौ वैवस्वतकुलोद्भवौ ।
ताभ्यामन्नं प्रदास्यामि स्यातामेतावहिंसकौ ॥
इदमन्नं श्वभ्यां न मम ।

(३) काकबलि – पुनः यज्ञोपवीत को अपसव्य करके नीचे लिखे मन्त्र को पढ़ते हुए काग के लिए भूमि पर ग्रास दें ।

ॐ ऐन्द्रवारुणवायव्या याम्या वै नैर्ऋतास्तथा ।
वायसाः प्रतिगृण्हन्तु भूमौ चाऽन्नं मयार्पितम् ॥
इदमन्नं वायसेभ्यो न मम ।

(४) देवादिबलि – सव्यभाव से निम्नाङ्कित मन्त्र पढ़कर आदि के लिए अन्न अर्पण करें ।

ॐ देवा मनुष्याः पशवो वयांसि सिद्धाः सयक्षोरगदैत्यसङ्घाः ।
प्रेताः पिशाचास्तरवः समस्ता ये चान्नमिच्छन्ति मया प्रदत्तम् ॥
इदमन्नं देवादिभ्यो न मम ।

(५) पीपिलिकादिबलि – इसी प्रकार निम्नांकित मन्त्र से चींटी आदि के लिए अन्न दें ।

ॐ पिपीलिकाः कीटपतङ्गकाद्या बुभुक्षिताः कर्मनिबन्धबद्धाः ।
तेषां हि तृप्त्यर्थमिदं मयाऽन्नं तेभ्यो विसृष्टं सुखिनो भवन्तु ॥
इदमन्नं पिपीलिकादिभ्यो न मम ।

तदन्तर हाथ धोकर भस्म लगावें और निम्नांकित मन्त्र से अग्नि का विसर्जन करें ।

ॐ यज्ञ यज्ञं गच्छ यज्ञपतिं गच्छ स्वां योनिं गच्छ स्वाहा ।
एष ते यज्ञो यज्ञपते सहसूक्तवाकः सर्ववीरस्तं जुषस्व स्वाहा ॥
शु० य० ८।२२

अनेन बलिवैश्वदेवाख्येन कर्मणा परमेश्वरः प्रीयतां न मम ।
ॐ विष्णवे नमः । ॐ विष्णवे नमः । ॐ विष्णवे नमः ॥

स्तुति-प्रकरणम्

१. श्रीसङ्कटनाशनं गणेशस्तोत्रम्

नारद उवाच

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम् ।
भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायुःकामाऽर्थसिद्धये ॥१॥
प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम् ।
तृतीयं कृष्णपिङ्गाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम् ॥२॥
लम्बोदरं पञ्चमं च षष्ठं विकटमेव च ।
सप्तमं विघ्नराजं धूम्रवर्णं च तथाष्टमम् ॥३॥
नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम् ।
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम् ॥४॥
द्वादशैतानि नामानि त्रिसध्यं यः पठेन्नरः ।
न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं परम् ॥५॥
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम् ।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान् मोक्षार्थी लभते गतिम् ॥६॥
जपेद् गणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासैः फलं लभेत् ।
संवत्सरेण सिद्धिं स्यात् लभते नात्र संशयः ॥७॥
अष्टाभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत् ।
तस्य विद्या भवेत् सर्वा गणेशस्य प्रसादतः ॥८॥

॥ श्रीनारदपुराणे सङ्कटनाशनं गणेशस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

२. श्रीगणपत्यथर्वशीर्षम्

हरिः ॐ ॥ नमस्ते गणपतये । त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि । त्वमेव केवलं कर्तासि । त्वमेव केवलं धर्तासि । त्वमेव केवलं हर्तासि । त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि । त्वं साक्षादात्मासि नित्यम् । ऋतं वच्मि । सत्यं वच्मि । अव त्वं माम् । अव वक्तारम् । अव श्रोतारम् । अव दातारम् । अव धातारम् । अवानूचानमवशिष्यम् । अव पश्चात्तात् । अव पुरस्तात् । अवोत्तरातात् । अव दक्षिणात्तात् । अव चोर्ध्वात्तात् । अवाधरात्तात् । सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात् । त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः । त्वमानन्द-मयस्त्वं ब्रह्ममयः । त्वं

सच्चिदानन्दाद्वितीयोऽसि । त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि । त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि । सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते । सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति । सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति । सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति । त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो नभः । त्वं चत्वारि वाक्पदानि । त्वं देहत्रयातीतः । त्वं कालत्रयातीतः । त्वं गुणत्रयातीतः । त्वमवस्था त्रयातीतः । त्वं मूलाधार-स्थितोऽसि नित्यम् । त्वं शक्तित्रयात्मकः । त्वां योगीनो ध्यायन्ति नित्यम् । त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् । गणादीन् पूर्वमुच्चार्य वर्णादीन्स्तदनन्तरम् । अनुस्वारः परतरः । अर्धेन्दुलसितम् ॥ १ ॥ तारेणरुद्धम् । एतत्तव मनुस्वरूपम् । गकारः पूर्वरूपम् । अकारो मध्यमरूपम् । अनुस्वार-श्चान्त्यरूपम् । बिन्दुरुत्तररूपम्। नादः सन्धनम् । संहिता सन्धिः । सैषा गणेशविद्या । गणक् ऋषिः निचृद्गायत्री छन्दः । गणपति-र्देवता । ॐ गं । (गणपतये नमः।) एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि । तन्नो दन्ती प्रचोदयात् ॥ एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमङ्कुश-धारिणम् । रदं च वरदं हस्तैर्बिभ्राणं मूषकध्वजम् ॥ रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम् । रक्तगन्धानुलिप्ताङ्गं रक्तपुष्पैः सुपूजितम् ॥ भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम् । आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम् ॥ एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः । नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्तेऽस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्नविनाशिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमः ॥ एतदथर्वशिरो योऽधीते सब्रह्मभूयाय कल्पते । स सर्वविघ्नैर्न बाध्यते । स सर्वतः सुखमेधते। स पञ्चमहापातकोपपातकात् प्रमुच्यते । सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति । प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति । सायं प्रातः प्रयुञ्जानोऽपापो भवति । धर्मार्थकाममोक्षं च विन्दति ॥ इदमथर्वशीर्षमशिष्याय न देयम् । यो यदि मोहाद्दास्यति स पापीयान् भवति । सहस्रावर्तनाद्यं यं काममधीते तं तमनेन साधयेत्। अनेन गणपतिमभिषिञ्चति स वाग्मी भवति । चतुर्थ्यामनश्नञ्जपति स विद्यावान् भवति । इत्यथर्वणवाक्यम् ।

ब्रह्माद्याचरणं विद्यात् । न बिभेति कदाचनेति । यो दूर्वाङ्कुरैर्यजति स वैश्रवणोपमो भवति। यो लाजैर्यजति स यशोवान् भवति । स मेधावान् भवति । यो मोदकसहस्रेण यजति स वाञ्छितफलमवाप्नोति । यः साज्यसमिद्भिर्यजति स सर्वं लभते स सर्वं लभते । अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग्ग्राहयित्वा सूर्यवर्चस्वी भवति । सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासंनिधौ वा जप्त्वा सिद्धमन्त्रो भवति । महाविघ्नात् प्रमुच्यते । महापापात् प्रमुच्यते । महादोषात् प्रमुच्यते । स सर्वविद्भवति। स सर्वविद्भवति । य एवं वेद ॥

॥ इति श्रीगणपत्यथर्वशीर्षम् ॥

३. अथ ऋणहर्ता गणेशस्तोत्रम्

कैलासे पर्वते रम्ये शंम्भु चन्द्रार्द्धशेखरम् ।
षडाम्नायसमायुक्तं पप्रच्छ नगकन्यका ॥ १॥

पार्वत्युवाच

देवेश परमेशान सर्वशास्त्रार्थपारग ।
उपायमृणनाशस्य कृपया वद साम्प्रतम् ॥२॥

शिव उवाच

सम्यक्पृष्टं त्वया भद्रे लोकानां हितकाम्यया ।
तत्सर्वं संप्रवक्ष्यामि सावधानावधारय ॥ ३॥

ॐ अस्य श्रीऋणहरणकर्तृगणपतिस्तोत्रमन्त्रस्य सदाशिव ऋषिः । अनुष्टुप् छंदः। श्रीऋणहर्तृगणपतिर्देवता । ग्लौं बीजम् । गः शक्तिः गों कीलकम्। मम सकलऋणनाशने जपेविनियोगः ॥

ॐ सदाशिवऋषये नमः शिरसिः । अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे । श्रीऋणहर्तृगणेशदेवतायै नमः हृदि । ग्लौं बीजाय नमः गुह्ये । गः शक्तये नमः पादयोः । गों कीलकाय नमः सर्वाङ्गे । इति ऋष्यादिन्यासः ॥

ॐ गणेश अंगुष्ठाभ्यां नमः । ऋणं छिन्धि तर्जनीभ्यां नमः । वरेण्यं मध्यमाभ्यां नमः । हुं अनामिकाभ्यां नमः । नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः । फट् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः । इति करन्यासः ॥

ॐ गणेश हृदयाय नमः । ऋणं छिन्धि शिरसे स्वाहा । वरेण्यं शिखायै वषट् । हुं कवचाय हुम् । नमः नेत्रत्रयाय वौषट् । फट् अस्त्राय फट् । इति हृदयादिषडंगन्यासः॥

अथ ध्यानम्

"ॐ सिंदूरवर्ण द्विभुजं गणेशं लम्बोदरं पद्मदले निविष्टम् ।
ब्रह्मादिदेवैः परिसेव्यमानं सिद्धैर्युतं तं प्रणमामि देवम् ॥४॥

सृष्ट्यादौ ब्रह्मणा सम्यक् पूजितः फलसिद्धये ।
सदैव पार्वतीपुत्रः ऋणनाशं करोतु मे ॥५॥
त्रिपुरस्य वधात्पूर्वं शम्भुना सम्यगर्चितः ।
सदैव पार्वतीपुत्रः ऋणनाशं करोतु मे ॥६॥
हिरण्यकश्यप्वादीनां वधार्थे विष्णुनार्चितः ।
सदैव पार्वतीपुत्रः ऋणनाशं करोतु मे ॥७॥
महिषस्य वधे देव्या गणनाथः प्रपूजितः ।
सदैव पार्वतीपुत्रः ऋणनाशं करोतु मे ॥८॥
तारकस्य वधात्पूर्वं कुमारेण प्रपूजितः ।
सदैव पार्वतीपुत्रः ऋणनाशं करोतु मे ॥९॥
भास्करेण गणेशो हि पूजितश्छविसिद्धये ॥
सदैव पार्वतीपुत्रः ऋणनाशं करोतु मे ॥१०॥
शशिना कान्तिवृद्ध्यर्थं पूजितो गणनायकः ।
सदैव पार्वतीपुत्रः ऋणनाशं करोतु मे ॥११॥
पालनाय च तपसां विश्वामित्रेण पूजितः ।
सदैव पार्वतीपुत्रः ऋणनाशं करोतु मे ॥१२॥
इदं तु ऋणहरस्तोत्रं तीव्रदारिद्र्यनाशनम् ।
एकवारं पठेन्नित्यं वर्षमेकं समाहितः ॥१३॥
दारिद्र्यं दारुणं त्यक्त्वा कुबेरसमतां व्रजेत् ।
फडण्तोऽयं महामंत्रः सार्द्धपंचदशाक्षरः ॥१४॥

मन्त्रो यथा - "ॐ गणेश ऋणं छिन्धि वरेण्यं हुं नमः फट् ।"
इति सार्द्धपंचदशाक्षरो मंत्रः ।
इमं मन्त्रं पठेदन्ते ततश्च शुचिभावनः ॥
एकविंशतिसंख्याभिः पुरश्चरणमीरितम् ॥१५॥
सहस्त्रावर्तनात्सम्यंक् षण्मासं प्रियतां व्रजेत् ॥
बृहस्पतिसमो ज्ञाने धने धनपतिर्भवेत् ॥१६॥
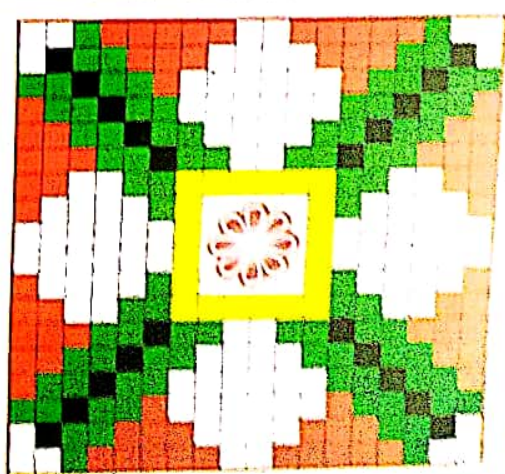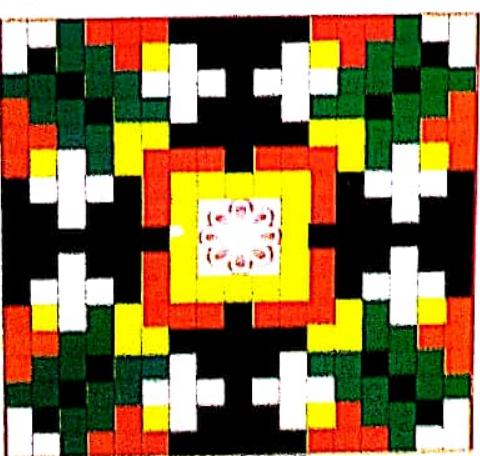
चतुःषष्टपादं वास्तुमण्डलचक्रम्
गृहवास्तुचक्रम्
श्री गौरीतिलक मण्डलम्
क्षेत्रपालचक्रम्
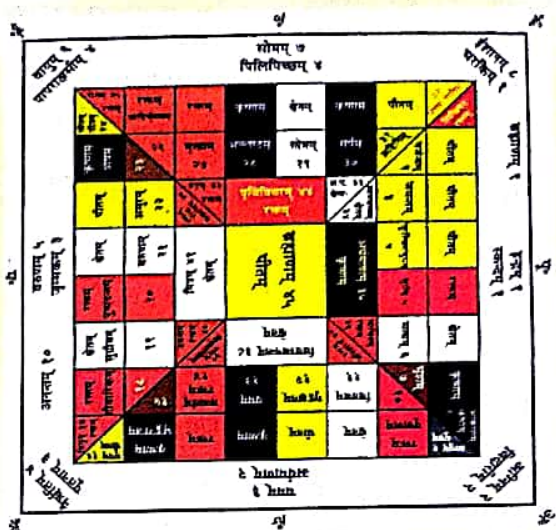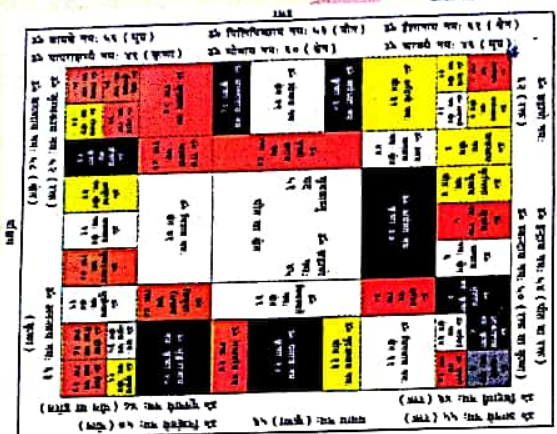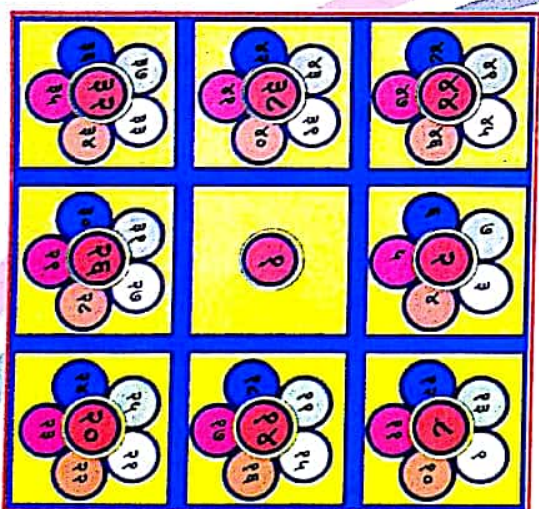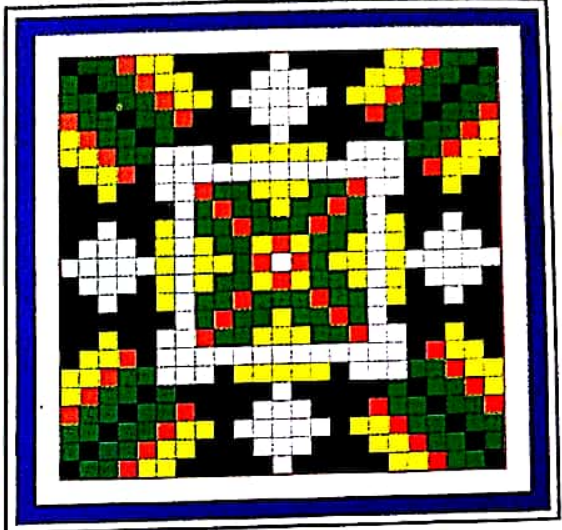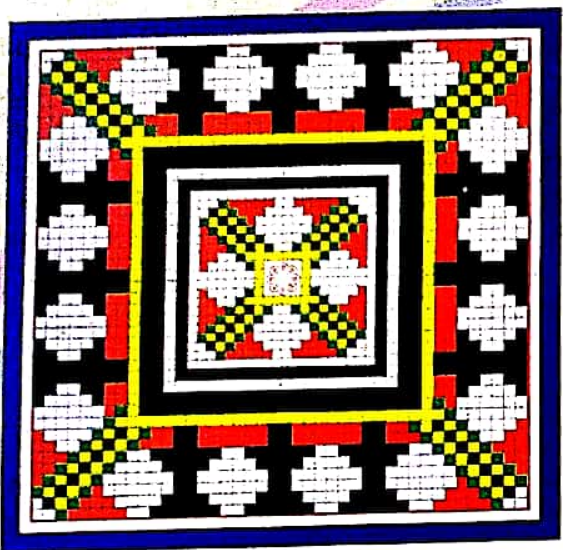
अस्यैवायुतसंख्याभिः पुरश्चरणमीरितम् ।
लक्ष्मावर्तनात्सम्यग् वांछितं फलमाप्नुयात् ॥१७॥
भूतप्रेतपिशाचानां नाशनं स्मृतिमात्रतः ॥१८॥
इति श्रीकृष्णयामलतन्त्रे उमामहेश्वर संवादे ऋणहरणकर्तृगणेशस्तोत्रं समाप्तम् ॥

४. अथ सूर्यस्तवराजप्रारम्भः

वसिष्ठ उवाच

स्तुवंस्तत्र ततः साम्बः कृशो धमनिसंततः ।
राजन्नामसहस्रेण सहस्रांशु दिवाकरम् ॥१॥
खिद्यमानं तु तं दृष्ट्वा सूर्यः कृष्णात्मजं तदा ।
स्वप्ने तु दर्शनं दत्त्वा पुनर्वचनमब्रवीत् ॥२॥

श्रीसूर्य उवाच

साम्ब-साम्ब महावाहो श्रृणु जाम्बवतीसुतः ।
अलं नामसस्रेण पठं स्तवमिमं शुभम् ॥३॥
यानि नामानि गुह्यानि पवित्राणि शुभानि च ।
तानि ते कीर्तयिष्यामि श्रुत्वा वत्सावधारय ॥४॥
विकर्तनो विवस्वांश्च मार्तण्डो भास्करो रविः ।
लोकप्रकाशकः श्रीमाँल्लोकचक्षुर्ग्रहेश्वरः ॥५॥
लोकसाक्षी त्रिलोकेशः कर्ता हर्ता तमिस्रहा ।
तपनस्तापनश्चैव शुचिः सप्ताश्ववाहनः ॥६॥
गभस्तिहस्तो विघ्नश्च सर्वदेवनमस्कृतः ।
एकविंशतिरित्येष स्तव इष्टः सदा मम ॥७॥
देहारोग्यंकरश्चैव धनवृद्धिर्यशस्करः ।
स्तवराज इति ख्यातास्त्रिषु लोकेषु विश्रुतः ॥८॥
य एतेन महाबाहो द्वे सन्ध्ये स्तवनोदये ।
स्तौति मां प्रणतो भूत्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥९॥
कायिकं वाचिकं चैव मानसं यश्च दुष्कृतम् ।
एतज्जाप्येन तत्सर्वं प्रणश्यति न संशयः ॥१०॥
एष जाप्यश्च होमश्च सन्ध्योपासनमेव च ।
बलिमन्त्रोऽर्घ्यमन्त्रश्च धूपमंत्रस्तथैव च ॥११॥
अन्नप्रदाने स्नाने च प्रणिपाते प्रदक्षिणे ।

पूजितोऽयं महामन्त्रः सर्वपापहरः शुभः ॥१२॥
एवमुक्त्वा तु भगवान् भास्करो जगदीश्वरः ।
आमंत्र्य कृष्णतनयं तत्रैवांतरधीयत ॥१३॥
साम्बोऽपि स्तवराजेन स्तुत्वा सप्ताश्ववाहनम् ।
पूतात्मा नीरुजः श्रीमांस्तस्माद्दु र्गाद्विमुक्तवान् ॥१४॥
इति साम्बपुराणे सूर्यस्तवराजः समाप्तः ॥

५. अथ सूर्यस्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रप्रारम्भः

वैशम्पायन उवाच

श्रृणुष्वावहितो राजन् शुचिर्भूत्वा समाहितः ।
क्षणं च कुरु राजेन्द्र गुह्यं वक्ष्यामि ते हितम् ॥१॥
धौम्येन तु यथा प्रोक्तं पार्थाय सुमहात्मने ।
नाम्नामष्टोत्तरं पुण्यं शतं तच्छृणु भूपते ॥२॥

धौम्य उवाच

ॐ सूर्योऽर्यमा भगस्त्वष्टा पूषार्कः सविता रविः ।
गभस्तिमानजः कालो मृत्युर्दाता प्रभाकरः ॥३॥
पृथिव्यापश्च तेजश्च खं वायुश्च परायणम् ।
सोमो बृहस्पतिः शुक्रो बुधोऽङ्गारक एव च ॥४॥
इन्द्रो विवस्वान्दीप्तांशुः शुचिः सौरिः शनैश्चरः ।
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै वरुणो यमः ॥५॥
वैद्युतो जठरश्चाग्निरैंधन स्तेजसांपतिः ।
धर्म्मध्वजो वेदकर्ता वेदाङ्गो वेदवाहनः ॥६॥
कृतं त्रेता द्वापरश्च कलिः सर्वमलाश्रयः ।
कला काष्ठा मुहूर्तश्च क्षपा यामस्तथा क्षणः ॥७॥
संवत्सरकरोऽश्वत्थः कालचक्रो विभावसुः ।
पुरुषः शाश्वतो योगी व्यक्ताव्यक्तः सनातनः ॥८॥
कलाध्यक्षः प्रजाध्यक्षो विश्वकर्मा तमोनुदः ।
वरुणः सागरांशश्च जीमूतो जीवनारिहा ॥९॥
भूताश्रयो भूतपतिःसर्वलोकनमस्कृतः ।
स्रष्टा संवर्तको वह्निः सर्वस्यादिरलोलुपः ॥१०॥
अनन्तः कपिलो भानुः कामदः सर्वतोमुखः ।

शयो विशालो वरदः सर्वधातुनिषेवितः ॥११॥
मनः सुपर्णो भूतादिः शीघ्रगः प्राणधारणः ।
धन्वंतरिर्धूमकेतुरादिदेवोऽदितेः सुतः ॥१२॥
द्वादशात्माऽरविन्दाक्षः पिता माता पितामहः ।
प्रजाद्वारं सर्गद्वारं मोक्षद्वारं त्रिविष्टरम् ॥१३॥
देहकर्ता प्रशांतात्मा विश्वात्मा विश्वतोमुखः ।
चराचरात्मा सूक्ष्मात्मा मैत्रेयः करुणान्वितः ॥१४॥
एतद्वै कीर्तनीयस्य सूर्यस्यामिततेजसः ।
नामाष्टशतकं चेदं प्रोक्तमेतत्स्वयंभुवा ॥१५॥
सुरगणपितृयक्षसैवितं ह्यसुरनिशाचरसिद्धवंदितम् ।
वरकनकहुताशनप्रभं प्रणिपतितोऽस्मि हिताय भास्करम् ॥१६॥
सूर्योदये यः सुसमाहितः पठेत्स पुत्रदारान्धनरत्नसंचयम् ।
लभेत जातिस्मरतां नरः सदा धृतिं च मेधां च स विंदते पुमान् ॥१७॥
इमं स्तवं देव वरस्य यो नरः प्रकीर्तयेच्छुद्धमनाः समाहितः ।
विमुच्यते शोकदवाग्निसागराल्लभेत कामान्मनसा यथेप्सितान् ॥१८॥
इति श्रीमहाभारते वनपर्वणि धौम्य-युधिष्ठिरसंवादे
श्रीसूर्यस्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं समाप्तम् ॥

६. श्री आदित्यहृदयस्तोत्रम्

ततो युद्धपरिश्रान्तं समरे चिन्तया स्थितम् ।
रावणं चाग्रतो दृष्ट्वा युद्धाय समुपस्थितम् ॥१॥
दैवतैश्च समागम्य द्रष्टुमभ्यागतो रणम् ।
उपगम्याब्रवीद्राममगस्त्यो भगवांस्तदा ॥२॥
राम राम महाबाहो श्रृणु गुह्यं सनातनम् ।
येन सर्वानरीन् वत्स समरे विजयिष्यसे ॥३॥
आदित्यहृदयं पुण्यं सर्वशत्रुविनाशनम् ।
जयावहं जपं नित्यमक्षयं परमं शिवम् ॥४॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वपापप्रणाशनम् ।
चिन्ताशोकप्रशमनमायुर्वर्धनमुत्तमम् ॥५॥
रश्मिमन्तं समुद्यन्तं देवासुरनमस्कृतम् ।
पूजयस्व विवस्वन्तं भास्करं भुवनेश्वरम् ॥६॥

सर्वदेवात्मको ह्येष तेजस्वी रश्मिभावनः ।
एष देवासुरगणाँल्लोकान् पातु गभस्तिभिः ॥७॥
एष ब्रह्मा च विष्णुश्च शिवः स्कन्दः प्रजापतिः ।
महेन्द्रो धनदः कालो यमः सोमो ह्यपाम्पतिः ॥८॥
पितरो वसवः साध्या अश्विनौ मरुतो मनुः ।
वायुर्वह्निः प्रजाः प्राणा ऋतुकर्ता प्रभाकरः ॥९॥
आदित्यः सविता सूर्यः खगः पूषा गभस्तिमान् ।
सुवर्णसदृशो भानुर्हिरण्यरेता दिवाकरः ॥१०॥
हरिदश्वः सहस्रार्चिः सप्तसप्तिर्मरीचिमान् ।
तिमिरोन्मथनः शम्भुस्त्वष्टा मार्तण्डकोंऽशुमान् ॥११॥
हिरण्यगर्भः शिशिरस्तपनोऽहस्करो रविः ।
अग्निगर्भोऽदितेः पुत्रः शङ्खः शिशिरनाशनः ॥१२॥
व्योमनाथस्तमोभेदी ऋग्यजुः सामपारगः ।
घनवृष्टिरपां मित्रो विन्ध्यवीथीप्लवङ्गमः ॥१३॥
आतपी मण्डली मृत्युः पिङ्गलः सर्वतापनः ।
कविर्विश्वो महातेजा रक्तः सर्वभवोद्भवः ॥१४॥
नक्षत्रग्रहताराणामधिपो विश्वभावनः ।
तेजसामपि तेजस्वी द्वादशात्मन् नमोऽस्तु ते ॥१५॥
नमः पूर्वाय गिरये पश्चिमायाद्रये नमः ।
ज्योतिर्गणानां पतये दिनाधिपतये नमः ॥१६॥
जयाय जयभद्राय हर्यश्वाय नमो नमः ।
नमो नमः सहस्रांशो आदित्याय नमो नमः ॥१७॥
नम उग्राय वीराय सारङ्गाय नमो नमः ।
नमः पद्मप्रबोधाय प्रचण्डाय नमोऽस्तु ते ॥१८॥
ब्रह्मेशानाच्युतेशाय सूरायादित्यवर्चसे ।
भास्वते सर्वभक्षाय रौद्राय वपुषे नमः ॥१९॥
तमोघ्नाय हिमघ्नाय शत्रुघ्नायामितात्मने ।
कृतघ्नघ्नाय देवाय ज्योतिषां पतये नमः ॥२०॥
तप्तचामीकराभाय हरये विश्वकर्मणे ।
नमस्तमोऽभिनिघ्नाय रुचये लोकसाक्षिणे ॥२१॥

नाशयत्येष वै भूतं तमेव सृजति प्रभुः ।
पायत्येष तपत्येष वर्षत्येष गभस्थिभिः ॥२२॥
एष सुप्तेषु जागर्ति भूतेषु परिनिष्ठितः ।
एष चैवाग्निहोत्रं च फलं चैवाग्निहोत्रिणाम् ॥२३॥
देवाश्च क्रतवश्चैव क्रतूनां फलमेव च ।
यानि कृत्यानि लोकेषु सर्वेषु परमप्रभुः ॥२४॥
एनमापत्सु कृच्छ्रेषु कान्तारेषु भयेषु च ।
कीर्तयन् पुरुषः कश्चिन्नावसीदति राघव ॥२५॥
पूजयस्वैनमेकाग्रो देवदेवं जगत्पतिम् ।
एतत् त्रिगुणितं जप्त्वा युद्धेषु विजयिष्यसि ॥२६॥
अस्मिन् क्षणे महाबाहो रावणं त्वं जहिष्यसि ।
एवमुक्त्वा ततोऽगस्त्यो जगाम स यथागतम् ॥२७॥
एतच्छ्रुत्वा महातेजा नष्टशोकोऽभवत् तदा ।
धारयामास सुप्रीतो राघवः प्रयतात्मवान् ॥२८॥
आदित्यं प्रेक्ष्य जप्त्वेदं परं हर्षमवाप्तवान् ।
त्रिराचम्य शुचिर्भुत्वा धनुरादाय वीर्यवान् ॥२९॥
रावणं प्रेक्ष्य दृष्टात्मा जयार्थं समुपागमत् ।
सर्वयत्नेन महता वधेस्तस्य धृतोऽभवत् ॥३०॥
अथ रविरवदन्निरीक्ष्य रामं मुदितमनाः परमं प्रहृष्यमाणः।
निशिचरपतिसंक्षयं विदित्वा सुरगणमध्यगतो वचस्त्वरेति ॥३१॥

॥ इति श्री वाल्मीकीय रामायने अगस्त्यप्रोक्तमादित्यहृदयस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

७. चाक्षुषोपनिषद् (चाक्षुषी विद्या)

विनियोग—ॐ अस्याश्चाक्षुषीविद्याया अहिर्बुध्न्य ऋषिर्गायत्री छन्दः सूर्यो देवता चक्षूरोगनिवृत्तये विनियोगः ।

ॐ चक्षुः चक्षुः चक्षुः तेजः स्थिरो भव । मां पाहि पाहि । त्वरितं चक्षूरोगान् शमय शमय । मम जातरूपं तेजो दर्शय दर्शय । यथा अहम् अन्धो न स्यां तथा कल्पय कल्पय । कल्याणं कुरु कुरु । यानि मम पूर्वजन्मोपार्जितानि चक्षुः प्रतिरोधकदुष्कृतानि सर्वाणि निर्मूलय निर्मूलय ।

ॐ नमः चक्षुस्तेजोदात्रे दिव्याय भास्कराय । ॐ नमः करुणाकरायामृताय । ॐ नमः सूर्याय । ॐ नमो भगवते सूर्याक्षितेजसे नमः । ॐ खेचराय नमः । महते नमः । रजसे नमः । तमसे नमः । असतो मा सद्गमय । तमसो मा ज्योतिर्गमय । मृत्योर्मा अमृतं गमय । उष्णो भगवाञ्छुचिरूपः । हंसो भगवान् शुचिरप्रतिरूपः ।

य इमां चाक्षुष्मतीविद्यां ब्राह्मणो नित्यमधीते न तस्याक्षिरोगो भवति । न तस्य कुले अन्धो भवति । अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग् ग्राहयित्वा विद्यासिद्धिर्भवति । ॐ नमो भगवते आदित्याय अहोवाहिनी अहोवाहिनी स्वाहा ।

॥ श्रीकृष्णयजुर्वेदीया चाक्षुषी विद्या सम्पूर्णा ॥

८. श्रीनवग्रहस्तोत्रम्

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् ।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥१॥
दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम् ।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम् ॥२॥
धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम् ।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम् ॥३॥
प्रियङ्गुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम् ।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ॥४॥
देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसंनिभम् ।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ॥५॥
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् ।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ॥६॥
नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम् ॥७॥
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम् ।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ॥८॥

पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम् ।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ॥९॥
इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः ।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति ॥१०॥
नरनारीनृपाणां च भवेद्दुःस्वप्ननाशनम् ।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम् ॥११॥

॥ महर्षिव्यासविरचितं नवग्रहस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

९. दुःस्वप्ननाशनसूर्यस्तुतिः

आदित्यः प्रथमं नाम द्वितीयं तु दिवाकरः ।
तृतीय भास्करः प्रोक्तं चतुर्थं च प्रभाकरः ॥१॥
पञ्चमं च सहस्रांशुः षष्ठं चैव त्रिलोचनः ।
सप्तमं 'हरिदश्वश्च अष्टमं च विभावसुः ॥२॥
नवमं दिनकृत् प्रोक्तं दशमं द्वादशात्मकः ।
एकादशं त्रयीमूर्तिं द्वादशं सूर्य एव च ॥३॥
द्वादशैतानि नामानि प्रातःकाले पठेन्नरः ।
दुःस्वप्ननाशनं सद्यः सर्वसिद्धि प्रजायते ॥४॥

१०. चन्द्राऽष्टाविंशतिनामस्तोत्रम्

चन्द्रस्य श्रृणु नामानि शुभदानि महीपते ।
यानि श्रुत्वा नरो दुःखान्मुच्यते नात्र संशयः ॥१॥
सुधाकरश्च सोमश्च ग्लौरब्जः कुमुदप्रियः ।
लोकप्रियः शुभ्रभानुश्चन्द्रमा रोहिणीपतिः ॥२॥
शशी हिमकरो राजा द्विजराजो निशाकरः ।
आत्रेय इन्दुः शीतांशुरोषधीशः कलानिधिः ॥३॥
जैवातृको रमाभ्राता क्षीरोदार्णवसंभवः ।
नक्षत्रनायकः शंभुशिरश्चूडामणिर्विभुः ॥४॥
तापहर्ता नभोदीपो नामान्येतानि यः पठेत् ।
प्रत्यहं भक्तिसंयुक्तस्तस्य पीडा विनश्यति ॥५॥

तद्दिने च पठेद्यस्तु लभेत्सर्वं समीहितम् ।
ग्रहादीनां च सर्वेषां भवेचन्द्रबलं सदा ॥६॥

॥ इति श्रीचन्द्राष्टाविंशतिनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

११. ऋणमोचकमङ्गलस्तोत्रम्

मङ्गलो भूमिपुत्रश्च ऋणहर्ता धनप्रदः ।
स्थिरासनो महाकायः सर्वकर्मविरोधकः ॥१॥
लोहितो लोहिताक्षश्च सामगानां कृपाकरः ।
धरात्मजः कुजो भौमो भूतिदो भूमिनन्दनः ॥२॥
अङ्गारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः ।
वृष्टेः कर्ताऽपहर्ता च सर्वकामफलप्रदः ॥३॥
एतानि कुजनामानि नित्यं यः श्रद्धया पठेत् ।
ऋणं न जायते तस्य धनं शीघ्रमवाप्नुयात् ॥४॥
धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम् ।
कुमारं शक्तिहस्तं च मङ्गलं प्रणमाम्यहम् ॥५॥
स्तोत्रमङ्गारकस्यैतत्पठनीयं सदा नृभिः ।
न तेषां भौमजा पीडा स्वल्पाऽपि भवति क्वचित् ॥६॥
अङ्गारक महाभाग भगवन्भक्तवत्सल ।
त्वां नमामि ममाशेषमृणमाशु विनाशय ॥७॥
ऋणरोगादिदारिद्र्यं ये चान्ये ह्यपमृत्यवः ।
भयक्लेशमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा ॥८॥
अतिवक्र दुराराध्य भोगमुक्तजितात्मनः ।
तुष्टो ददासि साम्राज्यं रुष्टो हरषि तत्क्षणात् ॥९॥
विरञ्चिशक्रविष्णूनां मनुष्याणां तु का कथा ।
तेन त्वं सर्वसत्वेन ग्रहराजो महाबल ॥१०॥
पुत्रान्देहि धनं देहि त्वामस्मि शरणं गतः ।
ऋणदारिद्र्यदुःखेन शत्रूणां च भयात्ततः ॥११॥
एभिर्द्वादशभिः श्लोकैर्यः स्तौति च धरासुतम् ।
महतीं श्रियमाप्नोति ह्यपरो धनदो युवा ॥१२॥

॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे भार्गवप्रोक्तं ऋणमोचकमङ्गलस्तोत्रम् ॥

१२. बुधपञ्चविंशतिनामस्तोत्रम्

बुधो बुद्धिमतां श्रेष्ठो बुद्धिदाता धनप्रदः ।
प्रियङ्गुकलिकाश्यामः कञ्जनेत्रो मनोहरः ॥१॥
ग्रहोपमो रौहिणेयो नक्षत्रेशो दयाकरः ।
विरुद्धकार्यहन्ता च सौम्यो बुद्धिविवर्धनः ॥२॥
चन्द्रात्मजो विष्णुरूपी ज्ञानी ज्ञो ज्ञानिनायकः ।
ग्रहपीडाहरो दारपुत्रधान्यपशुप्रदः ॥३॥
लोकप्रियः सौम्यमूर्तिगुणदो गुणिवत्सलः ।
पञ्चविंशतिनामानि बुधस्यैतानि यः पठेत् ॥४॥
स्मृत्वा बुधं सदा तस्य पीडा सर्वा विनश्यति ।
तद्दिने वा पठेद्यस्तु लभते स मनोगतम् ॥५॥

॥ इति श्रीपद्मपुराणे बुधपञ्चविंशतिनामस्तोत्रं समाप्तम् ॥

१३. बृहस्पतिस्तोत्रम्

गुरुर्बृहस्पतिर्जीवः सुराचार्यो विदाम्वरः ।
वागीशो धिषणो दीर्घश्मश्रुः पीताम्बरो युवा ॥१॥
सुधादृष्टिर्ग्रहाधीशो ग्रहपीडापहारकः ।
दयाकरः सौम्यमूर्तिः सुरार्च्यः कुङ्कुमद्युतिः ॥२॥
लोकपूज्यो लोकगुरुर्नीतिज्ञो नीतिकारकः ।
तारापतिश्चाङ्गिरसो वेदवेद्यः पितामहः ॥३॥
भक्त्या बृहस्पतिं स्मृत्वा नामान्येतानि यः पठेत् ।
अरोगी बलवान् श्रीमान् पुत्रवान् स भवेन्नरः ॥४॥
जीवेद्वर्षशतं मर्त्यो पापं नश्यति नश्यति ।
यः पूजयेद् गुरुदिने पीतगन्धाक्षताम्बरैः ॥५॥
पुष्पदीपोप् हारैश्च पूजयित्वा बृहस्पतिम् ।
ब्राह्मणान्भोजयित्वा च पीडाशान्तिर्भवेद गुरोः ॥६॥

॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे बृहस्पतिस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

१४. शुक्रस्तोत्रम्

शुक्रः काव्यः शुक्ररेताः शुक्लाम्बरधरः सुधीः ।
हिमाभः कुन्दधवलः शुभ्रांशुः शुक्लभूषणः ॥१॥
नीतिज्ञो नीतिकृन्नीतिमार्गगामी ग्रहाधिपः ।
उशना वेदवेदाङ्गपारगः कविरात्मवित् ॥२॥
भार्गवः करुणासिन्धुर्ज्ञानगम्यः सुतप्रदः ।
शुक्रस्यैतानि नामानि शुक्रं स्मृत्वा तु यः पठेत् ॥३॥
आयुर्धनं सुखं पुत्रं लक्ष्मीर्वसतिमुत्तमम् ।
विद्यां चैव स्वयं तस्मै शुक्रस्तुष्टो ददाति हि ॥४॥

॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे शुक्रस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

१५. शनिस्तोत्रम्

अस्य श्रीशनैश्चरस्तोत्रस्य । दशरथ ऋषिः शनैश्चरो देवता ।
त्रिष्टुप् छंदः । शनैश्चरप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

दशरथ उवाच

कोणोऽन्तको रौद्रयमोऽथ बभ्रुः कृष्णः शनिःपिंगलमंदसौरिः ।
नित्यं स्मृतो यो हरते च पीडां तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय ॥१॥
सुरासुराः किंपुरुषोरगेन्द्रा गंधर्वविद्याधर पन्नगाश्च ।
पीड्यन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय ॥२॥
नरो नरेन्द्राः पशवो मृगेन्द्राः वन्याश्च ये कीटपतंगभृंङ्गाः ।
पीड्यन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय ॥३॥
देशाश्च दुर्गाणि वनानि यत्र सेना निवेशाः पुरपत्तनानि ।
पीड्यन्ति सर्वे विषमस्थितेन तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय ॥४॥
तिलैर्यवैर्माषगुडान्नदानैर्लोहेन नीलाम्बरदानतो वा ।
प्रीणाति मन्त्रैर्निजवासरे च तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय ॥५॥
प्रयागकूले यमुनातटे च सरस्वतीपुण्यजले गुहायाम् ।
यो योगिनां ध्यानगतोऽपि सूक्ष्मस्तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय ॥६॥
अन्यप्रदेशात्स्वगृहं प्रविष्टस्तदीयवारे स नरः सुखी स्यात् ।
गृहाद् गतो यो न पुनः प्रयाति तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय ॥७॥

स्रष्टा स्वयंभु र्भुवनत्रयस्य त्राता हरीशो हरते पिनाकीः ।
एकस्त्रिधा ऋग्यजुः साममूर्तिस्तस्मै नमः श्रीरविनन्दनाय ॥८॥
शन्यष्टकं यः प्रयतः प्रभाते नित्यं सुपुत्रैः पशुबांधवैश्च ।
पठेत्तु सौख्यं भुवि भोगयुक्तः प्राप्नोति निर्वाणपदं तदन्ते ॥९॥
कोणस्थः पिंगलो बभ्रुः कृष्णो रौद्रोऽन्तको यमः ।
शौरिः शनैश्चरो मंदः पिप्पलादेन संस्तुतः ॥१०॥
एतानि दशनामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत् ।
शनैश्चरकृता पीडा न कदाचिद्भविष्यति ॥११॥

पिप्लाद उवाच

नमस्ते कोणसंस्थाय पिंगलाय नमोऽस्तुते । नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोस्तु ते । नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च । नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते शौरये विभो । नमस्ते मंदसंज्ञाय शनैश्चर नमोस्तु ते । प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च ॥

॥ इति श्रीशनैश्चरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

१६. राहुस्तोत्रम्

राहुर्दानवमन्त्री च सिंहिकाचित्तनन्दनः ।
अर्धकायः सदा क्रोधी चन्द्रादित्यविमर्दनः ॥१॥
रौद्रो रुद्रप्रियो दैत्यः स्वर्भानुर्भानुभीतिदः ।
ग्रहराजः सुधापायी राकातिथ्यभिलाषकः ॥२॥
कालदृष्टिः कालरूपः श्रीकण्ठहृदयाश्रयः ।
विधुंतुदः सैंहिकेयो घोररूपो महाबलः ॥३॥
ग्रहपीडाकरो दंष्ट्री रक्तनेत्रो महोदरः ।
पञ्चविंशतिनामानि स्मृत्वा राहुं सदा नरः ॥४॥
यः पठेन्महती पीडा तस्य नश्यति केवलम् ।
आरोग्यं पुत्रमतुलां श्रियं धान्यं पशूंस्तथा ॥५॥
ददाति राहुस्तस्मै यः पठेत स्तोत्रमुत्तमम् ।
सततं पठते यस्तु जीवेद्वर्षशतं नरः ॥६॥

॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे राहुस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

१७. केतुपञ्चविंशतिनामस्तोत्रम्

केतुः कालःकलयिता धूम्रकेतुर्विवर्णकः ।
लोककेतुर्महाकेतुः सर्वकेतुर्भयप्रदः ॥१॥
रौद्रो रुद्रप्रियो रुद्रः क्रूरकर्मा सुगन्धधृक् ।
पलास धूम्र संकाशश्चित्र यज्ञोपवीतधृक् ॥२॥
तारागणविमर्दी च जैमिनेयो ग्रहाधिपः ।
पञ्चविंशतिनामानि केतोर्यः सततं पठेत् ॥३॥
तस्य नश्यति बाधा च सर्वाः केतुप्रसादतः ।
धनधान्यपशूनां च भवेद् वृद्धिर्न संशयः ॥४॥
इति श्रीस्कन्दपुराणे केतुपञ्चविंशतिनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

१८. श्रीशिवमानसपूजा

रत्नैः कल्पितमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरं
नानारत्न विभूषितं मृगमदा मोदाङ्कितं चन्दनम् ।
जाती चम्पक बिल्वपत्र रचितं पुष्पं च धूपं तथा
दीपं देव दयानिधे पशुपते हृत्कल्पितं गृह्यताम् ॥१॥
सौवर्णे नवरत्नखण्डरचिते पात्रे घृतं पायसं
भक्ष्यं पञ्चविधं पयोदधियुतं रम्भाफलं पानकम् ।
शाकानामयुतं जलं रुचिकरं कर्पूर खण्डोज्वलं ।
ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरु ॥२॥
छत्रं चामरयोर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलं
वीणाभेरिमृदङ्गकाहलकला गीतं च नृत्यं तथा ।
साष्टाङ्गं प्रणतिः स्तुतिर्बहुविधा ह्येतत्समस्तं मया
सङ्कल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण प्रभो ॥३॥
आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः ।
सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम् ॥४॥

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम् ।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो ॥५॥
॥ इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं शिवमानसपूजा समाप्तम् ॥

१९. श्रीशिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय
भस्माङ्गरागाय महेश्वराय ।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय
तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय॥१॥
मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय
नन्दी-श्वरप्रमथनाथमहेश्वराय ।
मन्दारपुष्प बहुपुष्प सुपूजिताय
तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय ॥२॥
शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द-
सूर्याय दक्षाऽध्वर-नाशकाय ।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय
तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय ॥३॥
वसिष्ठ कुम्भोद्भव गौतमार्य-
मुनीन्द्र देवा-र्चित शेखराय ।
चन्द्रार्क वैश्वानर लोचनाय ।
तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय ॥४॥
यक्षस्वरूपाय जटाधराय
पिनाकहस्ताय सनातनाय ।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय ।
तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय ॥५॥
पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसंनिधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥६॥
॥ इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

२०. श्री शिवताण्डवस्तोत्रम्

जटाटवीगलगज्जल प्रवाह पावितस्थले
गलेऽवलम्ब्यलम्बितां भुजंग तुंगमालिकाम् ।
डमड्डमड्डमड्डम न्निनाद वड्डमर्वयं
चकार चण्ड ताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम् ॥१॥
जटाकटाहसम्भ्रमभ्रमन्निलिम्पनिर्झरी
विलोलवीचिवल्लरीविराजमानमूर्धनि ।
धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके
किशोरचद्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम ॥२॥
धराधरेन्द्रनन्दिनीविलासबन्धुबन्धुर-
स्फुरद्दिगन्त सन्ततिप्रमोदमानमानसे ।
कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्धरापदि
क्वचिद्दिगम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि ॥३॥
जटाभुजङ्गपिङ्गलस्फुरत्फणामणिप्रभा
कदम्बकुङ् कुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे ।
मदान्धसिन्धुरस्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे
मनो विनोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि ॥४॥
सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखर-
प्रसूनधूलिधोरणीबिधूसराङ घ्रिपीठभूः ।
भुजङ्गराजमालया निबद्धजाटजूटकः
श्रियै चिराय जायतां चकोरबन्धुशेखरः ॥५॥
ललाटचत्वरज्वलद्धनञ्जयस्फुलिङ्गभा
निपीतपञ्चसायकं नमन्निलिम्पनायकम् ।
सुधामयूखलेखया विराजमानशेखरं
महाकपालि सम्पदे शिरो जटालमस्तु नः ॥६॥
कराल भालपट्टिकाधगद्धगद्धगज्ज्वल-
द्धनञ्जयाधरीकृतप्रचण्डपञ्चसायके ।
धराधरेन्द्रनन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रक-
प्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने मतिर्मम ॥७॥

नवीनमेघमण्डलीनिरुद्धदुर्धरस्फुरत्-
कुहूनिशीथिनीतमःप्रबन्धबन्धुकन्धरः ।
निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसिन्धुरः
कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्धुरन्धरः ॥७॥
प्रफुल्लनीलपङ्कजप्रपञ्चकालिमच्छटा-
विडम्बिकण्ठकन्धरारुचिप्रबन्धकन्धरम् ।
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं
गजच्छिदान्धकच्छिदं तमन्तकच्छिदं भजे ॥८॥
अखर्वसर्वमङ्गलाकलाकदम्बमञ्जरी-
रसप्रवाहमाधुरीविजृम्भणामधुव्रतम् ।
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं
गजान्तकान्धकान्तकं तमन्तकान्तकं भजे॥९॥
जयत्वदभ्र-विभ्रमदभ्रमद-भुजङ्गमस्फुर-
द्धगद्धगद्विनिर्गमत्कराल भालहव्यवाट् ।
धिमिद्धिमिद्धिमिध्वनन्मृदङ्गतुङ्गमङ्गल-
ध्वनिक्रमप्रवर्तितप्रचण्डताण्डवः शिवः ॥१०॥
दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौक्तिकस्रजो-
र्गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः ।
तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः
समं प्रवर्तयन्मनः कदा सदाशिवं भजे ॥११॥
कदा निलिम्पनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे वसन् ।
विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरःस्थमञ्जलिं वहन् ।
विमुक्तलोललोचनो ललामभाललग्नकः
शिवेति मन्त्रमुच्चरन् कदा सुखी भवाम्यहम् ॥१२॥
इमं हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं
पठन्स्मरन्ब्रु वन्नरो विशुद्धिमेति सन्ततम् ।
हरे गुरौ स भक्तिमाशु याति नान्यथा गतिं
विमोहनं हि देहिनां सु शङ्करस्य चिन्तनम् ॥१३॥
पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं

यः शम्भुपूजनमिदं पठति प्रदोषे ।
तस्य स्थिरां रथगजेन्द्रतुरङ्गयुक्तां
लक्ष्मीं सदैव सुमुखीं प्रददाति शम्भुः ॥१४॥

इति श्रीरावणविरचितं शिवताण्डवस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

२१. श्रीकालभैरवाष्टकम्

देवराज-सेव्यमान-पावनाघ्रिपङ्कजं
व्यालयज्ञसूत्रमिन्दुशेखरं कृपाकरम् ।
नारदादि-योगिवृन्द-वन्दितं दिगम्बरं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे॥१॥

भानुकोटि-भास्वरं भवाब्धितारकं परं
नीलकण्ठमीप्सितार्थदायकं त्रिलोचनम् ।
कालकालमम्बुजाक्षमक्षशूलमक्षरं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥२॥

शूलटङ्कपाशदण्डपाणिमादिकारणं
श्यामकायमादिदेवमक्षरं निरामयम् ।
भीमविक्रमं प्रभुं विचित्रताण्डवप्रियं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे॥३॥

भुक्ति-मुक्ति-दायकं प्रशस्तचारुविग्रहं
भक्तवत्सलं स्थितं समस्तलोकविग्रहम् ।
विनिक्वणन्-मनोज्ञ-हेमकिङ्किणी-लसत्कटिं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥४॥

धर्मसेतुपालकं त्वधर्ममार्गनाशकं
कर्मपाशमोचकं सुशर्मदायकं विभुम् ।
स्वर्णवर्णशेषपाशशोभिताङ्गमण्डलं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥५॥

रत्नपादुका-प्रभाभिराम-पादयुग्मकं
नित्यमद्वितीयमिष्टदैवतं निरञ्जनम् ।
मृत्युदर्पनाशनं करालदंष्ट्रमोक्षणं

काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥६॥

अट्टहास-भिन्नपद्मजाण्डकोश-सन्तति
दृष्टिपात-नष्टपाप-जालमुग्रशासनम् ।
अष्टसिद्धिदायकं कपालमालिकन्धरं
काशिकापुराधिनाथ-कालभैरवं भजे ॥७॥

भूतसंघनायकं विशालकीर्तिदायकं
काशिवास-लोकपुण्य-पापशोधकं विभुम् ।
नीतिमार्गकोविदं पुरातनं जगत्पतिं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥८॥

कालभैरवाष्टकं पठन्ति ये मनोहरं
ज्ञानमुक्तिसाधनं विचित्रपुण्यवर्धनम् ।
शोक-मोह-दैन्यलोभ-कोपताप-नाशनं
ते प्रयान्ति कालभैरवाङ्घ्रिसंनिधिं नरा ध्रुवम् ॥९॥

॥ श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं कालभैरवाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

२२. देव्यापराधक्षमापनस्तोत्रम्

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः ।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम् ॥१॥

विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया
विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत् ।
तदेतत् क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥२॥

पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः
परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः ।
मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवित ॥३॥

जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता,

न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया ।
तथाऽपित्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत् प्रकुरुषे,
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥४॥
परित्यक्ता देवा विविध-विधि-सेवाकुलतया
मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि ।
इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता
निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम् ॥५॥
श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा
निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटिकनकैः ।
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं
जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ ॥ ६ ॥
चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो
जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः ।
कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं
भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम् ॥७॥
न मोक्षस्याकाङ्क्षा भवविभववाञ्छापि च न मे
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः ।
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै
मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः ॥८॥
नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः
किं रुक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः ।
श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे
धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव ॥९॥
आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं
करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि ।
नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः
क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति ॥१०॥
जगदम्ब विचित्रमत्र किं
परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि ।

अपराधपरम्परापरं
न हि माता समुपेक्षते सुतम् ॥११॥
मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि ।
एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु ॥१२॥
॥ इति श्रीशङ्कराचार्यविरचितं देव्यापराधक्षमापनस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

२३. अन्नपूर्णा स्तोत्रम्

नित्यानन्दकरी वराभयकरी सौन्दर्यरत्नाकरी
निर्धूताखिल-घोर पावनकरी प्रत्यक्षमाहेश्वरी ।
प्रालेयाचलवंशपावनकरी काशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥१॥
नानारत्नविचित्रभूषणकरी हेमाम्बराडम्बरी,
मुक्ताहारविलम्बमानविलसद्वक्षोजकुम्भान्तरी ।
काश्मीरागुरुवासितारुचिकरी काशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥२॥
योगानन्दकरी रिपुक्षयकरी धर्मार्थनिष्ठाकरी,
चन्द्रार्कानलभासमानलहरी त्रैलोक्यरक्षाकरी ।
सर्वैश्वर्यसमस्तवाञ्छितकरी काशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥३॥
कैलासाचलकन्दरालयकरी गौरी उमा शङ्करी,
कौमारी निगमार्थगोचरकरी ओङ्कारबीजाक्षरी ।
मोक्षद्वारकपाटपाटनकरी काशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥४॥
दृश्याऽदृश्यविभूतिवाहनकरी ब्रह्माण्डभाण्डोदरी,
लीलानाटकसूत्रभेदनकरी विज्ञानदीपाङ्कुरी ।
श्री विश्वेशमनःप्रसादनकरी काशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥५॥
उर्वीसर्वजनेश्वरी भगवती माताऽ, कृपासागरी
वेणीनीलसमानकुन्तलहरी नित्यान्नदानेश्वरी ।

सर्वानन्दकरी सदा शुभकरी काशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥६॥
आदिक्षान्तसमस्तवर्णनकरी शम्भोस्त्रिभावाकरी,
काश्मीरात्रिजलेश्वरी त्रिलहरी नित्याङ्कुरा शर्वरी ।
कामाकाङ्क्षकरी जनोदयकरी काशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥७॥
देवी सर्वविचित्ररत्नरचिता दाक्षायणी सुन्दरी,
वामं स्वादु पयोधरप्रियकरी सौभाग्यमाहेश्वरी ।
भक्ताभीष्टकरी सदाशुभकरी काशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥८॥
चन्द्रार्कानल-कोटिकोटिसदृशा चन्द्रांशुबिम्बाधरी,
चन्द्रार्काग्नि-समान-कुन्तलधरी चन्द्रार्कवर्णेश्वरी ।
माला-पुस्तक-पाश-साङ्कुशधरी काशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥९॥
क्षत्रत्राणकरी महाऽभवकरी माता कृपासागरी,
साक्षान्मोक्षकरी सदा शिवकरी विश्वेश्वरीश्रीधरी ।
दक्षाक्रन्दकरी निरामयकरी काशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥१०॥
अन्नपूर्णे सदापूर्णे शङ्करप्राणवल्लभे ।
ज्ञानवैराग्यसिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वति ॥११॥
माता च पार्वती देवी पिता देवो महेश्वरः ।
बान्धवाः शिवभक्ताश्च स्वदेशो भुवनत्रयम् ॥१२॥
॥ इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितम् अन्नपूर्णास्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

२४. श्रीकनकधारास्तोत्रम्

वन्दे वन्दारु-मन्दार-मिन्दिरानन्द-कन्दलम् ।
अमन्दानन्द-सन्दोह-बन्धुरं सिन्धुराननम् ॥
अङ्गं हरेः पुलकभूषणमाश्रयन्ती
भृङ्गाङ्गनेव मुकुलाभरणं तमालम् ।

अङ्गीकृताखिलविभूतिरपाङ्गलीला
माङ्गल्यदाऽस्तु मम मङ्गलदेवतायाः ॥१॥
मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः
प्रेमत्रपाप्रणिहितानि गतागतानि ।
माला दृशोर्मधुकरीव महोत्पले या
सा मे श्रियं दिशतु सागरसम्भवायाः ॥२॥
विश्वामरेन्द्रपदविभ्रमदानदक्ष-
मानन्दहेतुरधिकं मुरविद्विषोऽपि ।
ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्ध-
मिन्दीवरोदरसहोदरमिन्दिरायाः ॥३॥
आमीलिताक्षमधिगम्य मुदा मुकुन्द-
मानन्दकन्दमनिमेषमनङ्गतन्त्रम् ।
आकेकरस्थितकनीनिकपक्ष्मनेत्रं
भूत्यै भवेन्मम भुजङ्गशयाङ्गनायाः ॥४॥
बाह्वन्तरे मधुजितः श्रितकौस्तुभे या
हारावलीव हरिनीलमयी विभाति ।
कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला
कल्याणमावहतु मे कमलालयायाः ॥५॥
कालाम्बुदालिललितोरसि कैटभारे-
र्धाराधरे स्फुरति या तडिदङ्गनेव ।
मातुः समस्तजगतां महनीयमूर्ति-
र्भद्राणि मे दिशतु भार्गवनन्दनायाः ॥६॥
प्राप्तं पदं प्रथमतः किल यत्प्रभावात्
माङ्गल्यभाजि मधुमाथिनि मन्मथेन ।
मय्यापतेत्तदिह मन्थर मीक्षणार्धं
मन्दाऽलसं च मकरालय कन्यकायाः ॥७॥
दद्याद्दयानुपवनो द्रविणाम्बुधारा-
मस्मिन्नकिञ्चन विहङ्गशिशौ विषण्णे ।
दुष्कर्म धर्ममपनीय चिराय दूरं

नारायण प्रणयिनीनयानाम्बुवाहः ॥८॥
इष्टा-विशिष्ट मतयोऽपि यया दयार्द्र-
दृष्ट्या त्रिविष्टपपदं सुलभं लभन्ते।
दृष्टिः प्रहृष्टकमलोदर दीप्तिरिष्टां
पुष्टिं कृषीष्ट मम पुष्कर विष्टरायाः ॥९॥
गीर्देवतेति गरुड़ध्वज सुन्दरीति
शाकम्भरीति शशिशेखर वल्लभेति।
सृष्टि स्थिति प्रलय केलिषु संस्थितायै
तस्यै नमस्त्रिभुवनैकगुरोस्तरुण्यै ॥१०॥
श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभकर्म फलप्रसूत्यै
रत्यै नमोऽस्तु रमणीय-गुणार्णवायै ।
शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्र निकेतनायै
पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तम-वल्लभायै ॥११॥
नमोऽस्तु नालीक निभाननायै
नमोऽस्तु दुग्धोदधि जन्मभूत्यै ।
नमोऽस्तु सोमामृत सोदरायै
नमोऽस्तु नारायण वल्लभायै ॥१२॥
नमोऽस्तु हेमाम्बुज-पीठिकायै
नमोऽस्तु भूमण्डलनायिकायै ।
नमोऽस्तु देवादि-दयापरायै
नमोऽस्तु शार्ङ्गायुध-वल्लभायै ॥१३॥
नमोऽस्तु देव्यै भृगुनन्दनायै
नमोऽस्तु विष्णोरुरसि स्थितायै ।
नमोऽस्तु लक्ष्म्यै कमलालयायै
नमोऽस्तु दामोदरवल्लभायै ॥१४॥
नमोऽस्तु कान्त्यै कमलेक्षणायै
नमोऽस्तु भूत्यै भुवनप्रसूत्यै ।
नमोऽस्तु देवादिभिरर्चितायै

नमोऽस्तु नन्दात्मज-वल्लभायै ॥१५॥
सम्पत्कराणि सकलेन्द्रिय नन्दनानि
साम्राज्य दान विभवानि सरोरुहाक्षि।
त्वद्-वन्दनानि दुरिताहरणोद्यतानि
मामेव मातरनिशं कलयन्तु नान्ये ॥१६॥
यत्कटाक्षसमुपासनाविधिः
सेवकस्य सकलार्थसम्पदः ।
संतनोति वचनाङ्गमानसै-
स्त्वां मुरारि-हृदयेश्वरीं भजे ॥१७॥
सरसिजनिलये ! सरोजहस्ते !
धवलतमांशुक-गन्ध-माल्यशोभे
भगवति हरिवल्लभे ! मनोज्ञे !
त्रिभुवन भूतिकरि ! प्रसीद मह्यम् ॥१८॥
दिग्धस्तिभिः कनक कुम्भ मुखावसृष्ट-
स्वर्वाहिनी विमल चारुजल प्लुताङ्गीम्।
प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेष-
लोकाधिनाथ गृहिणीममृताब्धि पुत्रीम् ॥१९॥
कमले ! कमलाक्षवल्लभे !
तं करुणापूर-तरङ्गितैरपाङ्गैः ।
अवलोकय मामकिञ्चनानां
प्रथमं पात्रमकृत्रिमं दयायाः ॥२०॥
स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरमूभिरन्वहं
त्रयीमयीं त्रिभुवनमातरं रमाम्।
गुणाधिका गुरुतर भाग्य भाजिनो
भवन्ति ते भुवि बुधभाविताशयाः ॥२१॥
सुवर्णधारा-स्तोत्रं यच्छङ्कराचार्य-निर्मितम्।
त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नित्य स कुबेरसमो भवेत् ॥२२॥
॥ श्रीशङ्कराचार्यविरचितं कनकधारास्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

२५. महाकाली स्तोत्रम्

(अथ काली तंत्रोक्त ध्यानम्)

ॐ शवा रूढ़ां महा भीमां घोर दंष्ट्रां हसन्मुखीम् ।
चतुर्भुजां खण्ड मुण्ड बराभय करां शिवाम् ॥
मुण्ड माला धरां देवीं लल जिह्वां दिगम्बराम् ।
एवं संचिन्तयेत् कालीं श्मशाना लय वासिनीम् ॥
ॐ करालवदनां घोरां मुक्तकेशीं चतुर्भुजाम् ।
दक्षिणां कालिकां दिव्यां मुण्डमालाविभूषिताम् ॥
सद्यश्छिन्नशिरः खड्गवामोर्ध्वाधः कराम्बुजाम् ।
अभयं वरदं चैव दक्षिणाधोर्ध्व पाणिकाम् ॥
महामेघप्रभां श्यामां तथा चैव दिगम्बराम् ।
कण्ठाव सक्त मुण्डाली गलद्रुधिर चर्चिताम् ॥
कर्णावतं सतानीत शवयुग्म भयानकाम् ।
घोरदंष्ट्रां करालास्यां पीनोन्नतपयोधराम् ॥
सृक्कद्रय गलद्रक्त धाराविस्फुरिताननाम् ।
घोररूपां महारौद्रीं श्मशानालय वासिनीम् ॥
दन्तुरां दक्षिणव्यापिमुक्तालम्बकचोच्चयाम् ।
शवरूप महादेवहृदयोपरिसंस्थिताम् ॥
शिवाभिर्घोररूपाभिश्चतुर्दिक्षु समन्विताम् ।
महाकालेन सार्द्धौर्द्ध्वमुपविष्ट रतातुराम ॥
सुखप्रसन्नवदनां स्मेरानन सरोरुहाम् ।
एवं संचिन्तयेत् कालीं श्मसानालय वासिनीम् ॥

॥ इति दक्षिणकालिका स्तोत्रम् ॥

२६. अथ (श्यामा) दक्षिणकाली कवचम्

भैरव्युवाच

कालीपूजा श्रुता नाथ भावाश्च विविधाः प्रभो ।
इदानीं श्रोतुमिच्छामि कवचं पूर्वसूचितम् ॥१॥

त्वमेव श्रेष्ठः पाता च संहर्ता च त्वमेव हि ।
त्वमेव शरणं नाथ पाहि मां दुःखसंकटात् ॥२॥

भैरव उवाच

रहस्यं शृणु वक्ष्यामि भैरवि प्राणवल्लभे ।
श्रीजगन्मंगलं नाम कवचं मन्त्रविग्रहम् ॥३॥
पठित्वा धारयित्वा च त्रैलोक्यं मोहयेत्क्षणात् ।
नारायणोऽपि यद्धृत्वा नारी भूत्वा महेश्वरम् ॥४॥
योगिनं क्षोभमनयद्यद्धृत्वा च रघूत्तमः ।
वरतृप्तौ जघानैव रावणादिनिशाचरौ ॥५॥
यस्य प्रसादादीशोऽपि त्रैलोक्यविजयी विभुः ।
धनाधिपः कुवेरोऽपि सुरेशोऽभूच्छचीपतिः ॥६॥
एवं हि सकला देवाः सर्वसिद्धीश्वराः प्रिये ।
श्रीजगन्मंगलस्यापि कवचस्य ऋषिः शिवः ॥७॥
छन्दोऽनुष्टुब्देवता च कालिका दक्षिणेरिता ॥८॥
जगतां मोहने दुष्टविजये भुक्तिमुक्तिषु ।
योषिदाकर्षणे चैव विनियोगः प्रकीर्तितः ॥९॥
शिरो मे कालिका पातु क्रींकारैकाक्षरी परा ।
क्रीं क्रीं क्रीं मे ललाटं च कालिका खड्गधारिणी ॥१०॥
हूँ हूँ पातु नेत्रयुग्मं ह्रीं ह्रीं पातु श्रुती मम ।
दक्षिणे कालिका पातु घ्राणयुग्मं महेश्वरी ॥११॥
क्रीं क्रीं क्रीं रसनां पातु हूँ हूँ पातु कपोलकम् ।
वदनं सकलं पातु ह्रीं ह्रीं स्वाहास्वरूपिणी ॥१२॥
द्वाविंशत्यक्षरा स्कन्धौ महाविद्या सुखप्रदा ।
खड्गमुण्डधरा काली सर्वांगमभितोऽवतु ॥१३॥
क्रीं हूँ ह्रीं त्र्यक्षरा पातु चामुण्डा हृदयं मम ।
ऐं हूँ ॐ ऐं स्तनद्वन्द्वं ह्रीं फट् स्वाहा ककुत्स्थलम् ॥१४॥
अष्टाक्षरा महाविद्या भुजौ पातु सकर्तृका ।
क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं करौ पातु षडक्षरी मम ॥१५॥
क्रीं नाभिं मध्यदेशं च दक्षिणे कालिकावतु ।
क्रीं स्वाहा पातु पृष्ठं च कालिका सा दशाक्षरा ॥१६॥

क्रीं मे गुह्यं सदा पातु कालिकायै नमस्ततः ।
सप्ताक्षरा महाविद्या सर्वतन्त्रेषु गोपिता ॥१७॥
ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिका हूँ हूँ पातु कटिद्वयम् ।
काली दशाक्षरा विद्या स्वाहा ममोरुयुग्मकम् ॥१८॥
ॐ ह्रीं क्रीं मे स्वाहा पातु कालिका जानुनी सदा ।
काली हृदयविद्येयं चतुर्वर्गफलप्रदा ॥१९॥
क्रीं ह्रीं ह्रीं पातु सा गुल्फं दक्षिणे कालिकावतु ।
क्रीं हूँ ह्रीं स्वाहा पदं पातु चतुर्दशाक्षरा मम ॥२०॥
खड्गमुण्डधरा काली वरदा भयहारिणी ।
विद्याभिः सकलाभिः सा सर्वांगमभितोऽवतु ॥२१॥
काली कपालिनी कुल्ला कुरुकुल्ला विरोधिनी ।
विप्रचित्ता तथोग्रोग्रप्रभा दीप्रा घनत्विषा ॥२२॥
नीला घना बलाका च मात्रा मुद्रामिता च मा ।
एताः सर्वाः खड्गधारा मुण्डमालाविभूषणाः ॥२३॥
रक्षन्तु दिग्विदिक्षु मां ब्राह्मी नारायणी तथा ।
माहेश्वरी च चामुण्डा कौमारी चापराजिता ॥२४॥
वाराही नारसिंही च सर्वाश्चामितभूषणाः ।
रक्षन्तु स्वायुधैर्दिक्षु विदिक्षु मां यथा तथा ॥२५॥
इति ते कथितं दिव्यं कवचं परमाद्भुतम् ।
श्रीजगन्मंगलं नाम महाविद्यौघविग्रहम् ॥२६॥
त्रैलोक्याकर्षकं ब्रह्मन् कवचं मन्मुखोदितम् ।
गुरुपूजां विधायाथ विधिवत् प्रपठेत्ततः ॥२७॥
कवचं त्रिः सकृद्वापि यावज्जीवं च वा पुनः ।
एतच्छतार्द्धमावर्त्त्य त्रैलोक्यविजयी भवेत् ॥२८॥
त्रैलोक्यं क्षोभयत्येव कवचस्य प्रसादतः ।
महाकविर्भवेन्मासात्सर्वसिद्धीश्वरो भवेत् ॥२९॥
पुष्पाञ्जलिं कालिकायै मूलेनैवार्पयेत्सकृत् ।
शतवर्षसहस्राणां पूजायाः फलमाप्नुयात् ॥३०॥
भूर्जे विलिखितं चैतत्स्वर्णस्थं धारयेद्यदि ।
शिखायां दक्षिणे बाहौ कण्ठे वा धारयेद्यदि ॥३१॥

त्रैलोक्यं मोहयेत्क्रोधात्त्रैलोक्यं चूर्णयेत्क्षणात् ।
पुत्रवान्धनवान्श्रीमान्नानाविद्यानिधिर्भवेत् ॥३२॥
ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि तद्गात्रस्पर्शनात्ततः ।
नाशमायान्ति या नारी वन्ध्या च मृतपुत्रिणी ॥३३॥
कण्ठे वा वामबाहौ वा कवचस्य च धारणात् ॥
बह्वपत्या जीववत्सा भवत्येवं न संशयः ॥३४॥
न देयं परशिष्येभ्यो ह्यभक्तेभ्यो विशेषतः ।
शिष्येभ्यो भक्तियुक्तेभ्यश्चान्यथा मृत्युमाप्नुयात् ॥३५॥
स्पर्द्धामुद्धूय कमलावाग्देवीमन्दिरे मुखे ।
पौत्रान्तं स्थैर्यमास्थाय निवसत्येव निश्चितम् ॥३६॥
इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेत्कालिदक्षिणम् ।
शतलक्षं प्रजप्त्वापि तस्य मन्त्रो न सिद्ध्यति ॥
स शस्त्रघातमाप्नोति सोऽचिरान्मृत्युमाप्नुयात् ॥३७॥
इति भैरवतंत्रे भैरवभैरवीसंवादे श्यामादक्षिणकालिकाकवचं समाप्तम् ॥

२७. सङ्कटास्तुतिः

सदावृन्दारकोद्वृन्दाऽऽनन्द-सन्दोह-दायकम् ।
अमन्दमङ्गलागारं वन्दे शङ्करनन्दनम् ॥१॥
किं कार्यं कठिनं कुतः परिभवः कुत्रापवादाद् भयं
किं मित्रं न हि किन्तु राजसदनं गम्यं न विद्या च का ।
किं वाऽन्याज्जगतीतले प्रवद यत्तेषामसम्भावितं
येषां हतकमले सदा वसित सा तोषप्रदां सङ्कटा ॥२॥
अयि गिरिनन्दिनि नन्दितमेदिनि विश्वविनोदिनि नन्दिनुते ।
गिरिवरविन्ध्य-शिरोऽधि निवासिनि विष्णुविलासिनि जिष्णुनुते ।
भगवति हे शितिकण्ठ-कुटुम्बिनि भूदिकुटुम्बिनि भूतिकृते ।
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥१॥
सुरवरवर्षिणि दुर्धरधर्षिणि दुर्मुख-मर्षिणि हर्षरते ।
त्रिभुवनपोषिणि शङ्करतोषिणि कल्मषमोषिणि घोषरते ।
दनुजनिरोषिणि दुर्मदशोषिणि दुर्मुनिरोषिणि सिन्धुसुते

जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥२॥
अयि जगदम्ब कदम्बवन-प्रियवासिनि तोषिणि हासरते
शिखर-शिरोमणि-तुङ्गहिमालय-शृङ्गनिजालय-मध्यगते ।
मधुमधुरे मधु-कैटभ-गञ्जिनि महिषविदारिणि रासरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनी रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥३॥
अयि निजहुंकृति-मात्रनिराकृत-धूम्रविलोचन-धुम्रशते
समरविशोषित-रोषित-शोणित-बीजसमुद्भव-बीजलते ।
शिव-शिव शुम्भ-निशुम्भ-महाहव-तर्पित-भूत-पिशाचरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥४॥
अयि शतखण्ड-विखण्डित-रुण्ड-वितुण्तित-शुण्ड-गजाधिपते
निजभुजदण्ड-निपातितचण्ड-विपाटितमुण्ड-भटाधिपते ।
रिपुगजगण्ड-विदारण-चण्डपराक्रम-शौण्ड-मृगाधिपते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥५॥
धनुरनुषङ्ग-रणक्षणसङ्ग-परिस्फुरदङ्ग-नटत्कटके
कनक-पिशङ्ग-पृषत्कनिषङ्ग-रसद्भटशृंङ्ग-हताबटुके ।
हतचतुरङ्गबल-क्षितिरङ्ग-घटद्-बहुरङ्ग-रटद्-बटुके
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥६॥
अयि रणदुर्मद-शत्रुबधाद्धुर-दुर्धर-निर्भर-शक्तिभृते ।
चतुर-विचार-धुरीण-महाशयदूतकृत-प्रमथाधिपते ।
दुरित-दुरीह-दुराशय-दुर्मति-दानवदूत-दूरन्तगते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥७॥
अयि शरणागत-वैरिवधूजन-वीरवराभय-दायिकरे
त्रिभुवनमस्तक-शूलविरोधि-शिरोधिकृतामल-शूलकरे ।
दुमिदुमितामर-दुन्दुभिनाद-मुहुर्मुखरीकृत-दिङ्निकरे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥८॥
सुरललना-ततथेयित-थेयित-थाभिनयोत्तर-नृत्यरते
कृतकुकुथा-कुकुथोदि-डदाडिक-तालकुतूहल-गानरते ।
धुधुकुट-धूधुट-धिन्धि-मितध्वनि-धीरमृदङ्ग-निनादरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥९॥

जय जय जाप्यजये जयशब्द-परस्तुति-तत्पर-विश्वनुते
झणझण-झिंझिम-झिंकृत-नूपुर-शिञ्जित-मोहित-भूतपते ।
नटितनटार्ध-नटीनटनायक-नाटन-नाटित-नाट्यरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥१०॥
अयि सुमनः सुमनः सुमनः सुमनः सुमनोरमकान्तियुते
श्रितरजनी-रजनी-रजनी-रजनी-रजनीकर वक्त्रभृते
सुनयन-विभ्रमर-भ्रमर-भ्रमर-भ्रमर-भ्रमराभिदृते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥११॥
महित-महाहव-मल्लमतल्लिक-वल्लिक-रल्लित-भल्लिरते
विरचितवल्लि-कपालिक-पल्लिक-झिल्लिक-भिल्लिकवर्गवृते ।
श्रुतकृतफुल्ल-समुल्लसितारुण-तल्लज-पल्लव-सल्ललिते ।
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥१२॥
अयि सुदतीजन-लालस-मानस-मोहन-मन्थरराजसुते
अविरल-गण्ड-गलन्-मदमेदुर-मत्त-मतङ्गजराजगते ।
त्रिभुवन-भूषण-भूत-कलानिधिरूप-पयोनिधिराजसुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥१३॥
कमलदलामल-कोमलकान्ति-कलाकलितामल-भालतले
सकल-विलास-कलानिलय-क्रमकेलिचलत्-कलहंसकुले ।
अलिकुलसंकुल-कुन्तलमण्डल-मौलिमिलद्-बकुलालिकुले
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥१४॥
करमुरलीरव-वर्जित-कूजित-लज्जित-कोकिल-मञ्जुमते
मिलित-मिलिन्द-मनोहरगुञ्जित-रञ्जित-शैलनिकुञ्जगते ।
बिजगण-भूतमहाशबरीगण-रङ्गणसम्भृत-केलिरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥१५॥
कटितटपीत-दुकूलविचित्र-मयूख-तिरस्कृत-चण्डरुचे
जितकनकाचल-मौलिमदोर्जित-गर्जितकुञ्जर-कुम्भकुचे ।
प्रणत-सुराऽसुर-मौलिमणि-स्फुरदंशुलसन्नखचन्द्ररुचे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥१६॥
विजित-सहस्रकरैक-सहस्रकरैक-सहस्रकरैकनुते

कृतसुरतारक-सङ्गरतारक-सङ्गरतारक-सूनुनुते ।
सुरथसमाधि-समानसमाधि-समानसमाधि-सुजाप्यरते ।
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥१७॥
पदकमलं करुणानिलये वरिवस्यति योऽनुदिनं सुशिवे
अयि कमले कमलानिलये कमलानियः स कथं न भवेत् ।
तव पदमेव परं पदमस्त्विति शीलयतो मम किं न शिवे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥१८॥
कनकलसत्-कलशीकलजलैरनुषिञ्चति तेऽङ्गणरङ्गभुवम् ।
भजति स किं न शचीकुचकुम्भ-नटीपरिरम्भ-सुखानुभवम् ।
तव चरणं शरणं करवाणि सुवाणि पथं मम देहि शिवम्
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥१९॥
तव विमलेन्दुकलं वदनेन्दुमलं वदनेन्दुमलं कलयन्ननुकूलयते
किमु पुरुहूत-पुरीन्दमुखी-सुमुखीभिरसौ विमुखीक्रियते ।
मम तु मतं शिवमानधने भवती कृपया किमु न क्रियते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥२०॥
अयि मयि दीनदयालुतया कृपयैव त्वया भवतिव्यमुमे
अयि जगतो जननीति यथाऽसि मयाऽसि तथाऽनुमतासि रमे ।
यदुचितमत्र भवत्पुरगं कुरु शाम्भवि देवि दयां कुरु मे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥२१॥
स्तुतिमिमां स्तिमितः सुसमाधिना नियमतो यमतोऽनुदिनं पठते ।
परमया रमया स निषेव्यते परिजनोऽरिजनोऽपि च तं भजेत् ॥२२॥

॥ इति सङ्कटास्तुतिः समाप्ता ॥

२८. शीतलाष्टकम्

ॐ अस्य श्रीशीतलाष्टकस्तोत्रस्य महादेव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, शीतलादेवता, लक्ष्मीबीजम्, भवानी शक्तिः, सर्वविस्फोटकनिवृत्तये जपे विनियोगः ।

ईश्वर उवाच

वन्देऽहं शीतलां देवीं रासभस्थां दिगम्बराम् ।
मार्जनीकलशोपेतां शूर्पालङ्कृतमस्तकम् ॥१॥

वन्देऽहं शीतलां देवीं सर्वरोगभयापहाम् ।
यामासाद्य निवर्तेत विस्फोटकभयं महत् ॥२॥
शीतले शीतले चेति यो ब्रूयाद् दाहपीड़ितः ।
विस्फोटकभयं घोरं क्षिप्रं तस्य प्रणश्यति ॥३॥
यसत्वामुदकमध्ये तु धृत्वा पूजयते नरः ।
विस्फोटकभयं घोरं गृहे तस्य न जायते ॥४॥
शीतले ज्वरदग्धस्य पूतिगन्धयुतस्य च ।
प्रणष्टचक्षुषः पुंसस्त्वामाहुर्जीवनौषधम् ॥५॥
शीतले तनुजान् रोगान्नृणां हरसि दुस्त्यजान् ।
विस्फोटक-विदीर्णानां त्वमेकाऽमृतवर्षिणी ॥६॥
गलगण्डग्रहा रोगा ये चाऽन्ये दारुण नृणाम ।
त्वदनुध्यानमात्रेण शीतले यान्ति संक्षयम् ॥७॥
न मन्त्रो नौषधं तस्य पापरोगस्य विद्यते ।
त्वामेकां शीतले धात्रीं नाऽन्यां पश्यामि देवताम् ॥८॥
मृणालतन्तुसदृशीं नाभिहृन्मध्यसंस्थिताम् ।
यस्त्वां सञ्चिन्तयेद देवि तस्य मृत्युर्न जायते ॥९॥
अष्टकं शीतलादेव्या यो नरः प्रपठेत् सदा ।
विस्फोटकभयं घोरं गृहे तस्य न जायते ॥१०॥
श्रोतव्यं पठितव्यं च श्रद्धा-भक्ति-समन्वितैः ।
उपसर्गविनाशाय परं स्वस्त्ययनं महत ॥११॥
शीतले त्वं जगन्माता शीतले त्वं जगत-पिता ।
शीतले त्वं जगद्धात्री शीतलायै नमो नमः ॥१२॥
रासभो गर्दभश्चैव खरो वैशाखनन्दनः ।
शीतलावाहनश्चैव दूर्वाकन्दनिकृन्तनः ॥१३॥
एतानि खरनामनि शीतलागरे तु यः पठेत् ।
तस्य गेहे शिशूनां च शीतलारुङ् न जायते ॥१४॥
शीतलाष्टकमेवेदं न देयं यस्य-कस्यचित् ।
दातव्यं च सदा तस्मै श्रद्धा-भक्ति-युताय वै ॥१५॥

॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे शीतलाष्टकस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

श्रीसूक्तम्

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥१॥
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥२॥
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम् ।
श्रियं देवीमुप ह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥३॥
कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम् ॥४॥
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मनेमीं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि ॥५॥
आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वंनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तुमायान्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥६॥
उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥७॥
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ॥८॥
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम् ॥९॥
मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतांयशः ॥१०॥
कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥११॥
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय, मे कुले ॥१२॥
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥१३॥
आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥१४॥
तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।

यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योऽश्वान्विन्देयं पुरुषानहम् ॥१५॥
यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥१६॥
पद्मानने पद्मनिपद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि ।
विश्वप्रिये विष्णुमनोऽनुकूले त्वत्पादपद्मं मयि सं नि धत्स्व ॥१७॥
पद्मानने पद्मऊरू पद्माक्षि पद्मसम्भवे ।
तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम् ॥१८॥
अश्वदायि गोदायि धनदायि महाधने ।
धनं मे जुषतां देवि सर्वकामांश्च देहि मे ॥१९॥
पुत्रपौत्रधनं धान्यं हस्त्यश्वादिगवे रथम् ।
प्रजानां भवसि माता आयुष्मन्तं करोतु मे ॥२०॥
धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः ।
धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणो धनमश्विनौ ॥२१॥
वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा ।
सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः ॥२२॥
न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः ।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तानां श्रीसूक्तंजपेत् ॥२३॥
सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभे ।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवन भूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥२४॥
विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम् ।
लक्ष्मीं प्रियसखीं भूमिं नमाम्यच्युतवल्लभाम् ॥२५॥
महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि ।
तन्नो लक्ष्मीः प्र चोदयात् ॥२६॥
आनन्दः कर्दमः श्रीदश्चिक्लीत इति विश्रुताः ।
ऋषयः श्रियः पुत्राश्च श्रीर्देवीर्देवता मताः ॥२७॥
ऋणरोगादिदारिद्र्य पापक्षुद् अपमृत्यवः ।
भयशोकमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा ॥२८॥
श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात् पवमानं महीयते ।
धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ॥२९॥

॥ ऋग्वेदोक्तं श्रीसूक्तं सम्पूर्णम् ॥

पुरुषसूक्तम्

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
स भूमिँ सर्वत स्पृत्वाऽत्यातिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥१॥
पुरुष एवेदँ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् ।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥२॥
एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पुरुषः ।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि ॥३॥
त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः ।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि ॥४॥
ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः ।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥५॥
तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् ।
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये ॥६॥
तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे ।
छन्दाँसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मदजायत ॥६॥
तस्मादश्वा अजायन्त ये के चो भयादतः ।
गावो हजज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः ॥८॥
तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः ।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये ॥९॥
यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् ।
मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमूरू पादाऽ उच्येते ॥१०॥
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः ।
उरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याँ शूद्रो अजायत ॥११॥
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत ।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥१२॥
नाभ्या आसीदन्तरिक्षँ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ अकल्पयन् ॥१३॥
यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥१४॥

सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम् ॥१५॥
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥१६॥

३१. रामरक्षास्तोत्रम्

विनियोगः

अस्य श्रीरामरक्षास्तोत्रमन्त्रस्य बुधकौशिक ऋषिः श्रीसीतारामचन्द्रो देवता अनुष्टुप् छन्दः सीता शक्तिः श्रीमद् हनुमान् कीलकं श्रीरामचन्द्रप्रीत्यर्थे रामरक्षास्तोत्रजपे विनियोगः ।

ध्यानम्

ध्यायेदाजानुबाहुं धृतशरधनुषं बद्धपद्मासनस्थं
पीतं वासो वसानं नवकमलदलस्पर्धिनेत्रं प्रसन्नम् ।
वामाङ्कारूढसीतामुखकमलमिलल्लोचनं नीरदाभं
नानालंकारदीप्तं दधतमुरुजटामण्डलं रामचन्द्रम् ॥

स्तोत्रम्

चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरम् ।
एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम् ॥१॥
ध्यात्वा नीलोत्पलश्यामं रामं राजीवलोचनम् ।
जानकीलक्ष्मणोपेतं जटामुकुटमण्डितम् ॥२॥
सासितूणधनुर्बाणपाणिं नक्तंचरान्तकम् ।
स्वलीलया जगत्त्रातुमाविर्भूतमजं विभुम् ॥३॥
रामरक्षां पठेत् प्राज्ञः पापघ्नीं सर्वकामदाम् ।
शिरो में राघवः पातु भालं दशरथात्मजः ॥४॥
कौसल्येयो दृशौ पातु विश्वामित्रप्रियः श्रुती ।
घ्राणं पातु मखत्राता मुखं सौमित्रिवत्सलः ॥५॥
जिह्वां विद्यानिधिः पातु कण्ठं भरतवन्दितः ।
स्कन्धौ दिव्यायुधः पातु भुजौ भग्नेशकार्मुकः ॥६॥
करौ सीतापतिः पातु हृदयं जामदग्न्यजित् ।
मध्यं पातु खरध्वंसी नाभिं जाम्बवदाश्रयः ॥७॥

सुग्रीवेशः कटी पातु सक्थिनी हनुमत्प्रभुः ।
ऊरू रघूत्तमः पातु रक्षः कुलविनाशकृत् ॥८॥
जानुनी सेतुकृत् पातु जङ्घे दशमुखान्तकः ।
पादौ विभीषणश्रीदः पातु रामोऽखिलं वपुः ॥९॥
एतां रामबलोपेतां रक्षां यः सुकृती पठेत् ।
स चिरायुः सुखी पुत्री विजयी विनयी भवेत् ॥१०॥
पातालभूतलव्योमचारिणश्छद्मचारिणः ।
न द्रष्टुमपि शक्तास्ते रक्षितं रामनामभिः ॥११॥
रामेति रामभद्रेति रामचन्द्रेति वा स्मरन् ।
नरो न लिप्यते पापैर्भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति ॥१२॥
जगज्जैत्रैकमन्त्रेण रामनाम्नाऽभिरक्षितम् ।
यः कण्ठे धारयेत्तस्य करस्थाः सर्वसिद्धयः ॥१३॥
वज्रपञ्जरनामेदं यो रामकवचं स्मरेत् ।
अव्याहताज्ञः सर्वत्र लभते जयमङ्गलम् ॥१४॥
आदिष्टवान् यथा स्वप्ने रामरक्षामिमां हरः ।
तथा लिखितवान् प्रातः प्रबुद्धो बुधकौशिकः ॥१५॥
आरामः कल्पवृक्षाणां विरामः सकलापदाम् ।
अभिरामस्त्रिलोकानां रामः श्रीमान् स नः प्रभुः ॥१६॥
तरुणौ रुपसम्पन्नौ सुकुमारौ महाबलौ ।
पुण्डरीकविशालाक्षौ चीर कृष्णाजिनाम्बरौ ॥१७॥
फलमूलाशिनौ दान्तौ तापसौ ब्रह्मचारिणौ ।
पुत्रौ दशरथस्यैतौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ॥१८॥
शरण्यौ सर्वसत्त्वानां श्रेष्ठौ सर्वधनुष्मताम् ।
रक्षःकुलनिहन्तारौ त्रायेतां नो रघूत्तमौ ॥१९
आत्तसज्जधनुषाविषुस्पृशावक्षयाशुगनिषङ्गसङ्गिनौ ।
रक्षणाय मम राम लक्ष्मणावग्रतः पथि सदैव गच्छताम् ॥२०॥
संनद्धः कवची खड्गी चापवाणधरो युवा ।
गच्छन् मनोरथोऽस्माकं रामः पातु सलक्ष्मणः ॥२१॥
रामो दाशरथिः शूरो लक्ष्मणानुचरो बली ।

काकुत्स्थः पुरुषः पूर्णः कौसल्येयो रघूत्तमः ॥२२॥
वेदान्तवेद्यो यज्ञेशः पुराणपुरुषोत्तमः ।
जानकीवल्लभः श्रीमनप्रमेयपराक्रमः ॥२३॥
इत्येतानि जपन् नित्यं मद्भक्तः श्रद्धयाऽन्वितः ।
अश्वमेधाधिकं पुण्यं सम्प्राप्नोति न संशयः ॥२४॥
रामं दूर्वादलश्यामं पद्माक्षं पीतवाससम् ।
स्तुवन्ति नामभिर्दिव्यैर्न ते संसारिणो नराः ॥२५॥
रामं लक्ष्मणपूर्वजं रघुवरं सीतापतिं सुन्दरं
काकुत्स्थं करुणार्णवं गुणनिधिं विप्रप्रियं धार्मिकम् ।
राजेन्द्रं सत्यसन्धं दशरथतनयं श्यामलं शान्तिमूर्तिं
वन्दे लोकाभिरामं रघुकुलतिलकं राघवं रावणारिम् ॥२६॥
रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे ।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥२७॥
श्रीराम राम रघुनन्दन राम राम श्रीराम राम भरताग्रज राम राम ।
श्रीराम राम रणकर्कश राम राम श्री राम राम शरणं भव राम राम ॥२८॥
श्री रामचन्द्रचरणौ मनसा स्मरामि श्रीरामचन्द्रचरणौ वचसा गृणामि ।
श्रीरामचन्द्रचरणौ शिरसा नमामि श्री रामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये ॥२९॥
माता रामो मत्पिता रामचन्द्रः स्वामी रामो मत्सखा रामचन्द्रः ।
सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयालुर्नान्यं जाने नैव जाने न जाने ॥३०॥
दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे च जनकात्मजा ।
पुरुतो मारुतिर्यस्य तं वन्दे रघुनन्दनम् ॥३१॥
लोकाभिरामं रणरंङ्गधीरं राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम् ।
कारुण्यरूपं करुणाकरं तं श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये ॥३२॥
मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥३३॥
कूजन्तं रामरामेति मधुरं मधुराक्षरम् ।
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम् ॥३४॥
आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पादाम् ।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥३५॥

भर्जनं भवबीजानामर्जनं सुखसम्पदाम् ।
तर्जनं यमदूतानां रामरामेति गर्जनम् ॥३६॥
रामो राजमणिः सदा विजयते रामं रमेशं भजे
रामेणाभिहता निशाचरचमू रामाय तस्मै नमः ।
रामान्नास्ति परायणं परतरं रामस्य दासोऽस्म्यहं
रामे चित्तलयः सदा भवतु में भो राम मामुद्धर ॥३७॥
राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे ।
सहस्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने ॥३८॥

॥ इति श्रीबुधकौशिकमुनिविरचितं श्रीरामरक्षास्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

३२. गजेन्द्रमोक्ष

श्रीशुक उवाच

एवं व्यवसितो बुद्ध्या समाधाय मनो हृदि ।
जजाप परमं जाप्यं प्राग्जन्मन्यनुशिक्षितम् ॥१॥

गजेन्द्र उवाच

ॐ नमो भगते तस्मै यत एतच्चिदात्मकम् ।
पुरुषायादिबीजाय परेशायाभिधीमहि ॥२॥
यस्मिन्निदं यतश्चेदं येनेदं य इदं स्वयम् ।
योऽस्मात्परस्माच्च परस्तं प्रपद्ये स्वयम्भुवम् ॥३॥
यः स्वात्मनीदं निजमाययार्पितं क्वचिद् विभातं क्व च तत् तिरोहितम् ।
अविद्धदृक् साक्ष्युभयं तदीक्षते स आत्ममूलोऽवतु मा परात्परः ॥४॥
कालेन पञ्चत्वमितेषु कृत्स्नशो लोकेषु पालेषु च सर्वहेतुषु ।
तमस्तदाऽऽसीद् गहनं गभीरं यस्तस्य पारेऽभिराजते विभुः ॥५॥
न यस्य देवा ऋषयः पदं विदुर्जन्तुः पुनः कोऽर्हति गन्तुमीरितुम् ।
यथा नटस्याकृतिभिर्विचेष्टतो दुरत्ययानुक्रमणः स मावतु ॥६॥
दिदृक्षवो यस्य पदं सुमङ्गलं विमुक्तसङ्गा मुनयः सुसाधवः ।
चरन्त्यलोकव्रतमव्रणं वने भूतात्मभूताः सुहृदः स मे गतिः ॥७॥
न विद्यते यस्य च जन्म कर्म वा न नामरूपे गुणदोष एव वा ।
तथापि लोकाप्ययसम्भवाय यः स्वमायया तान्यनुकालमृच्छति ॥८॥

तस्मै नमः परेशाय ब्रह्मणेऽनन्तशक्तये ।
अरूपायोरुरूपाय नम आश्चर्यकर्मणे ॥९॥
नम आत्मप्रदीपाय साक्षिणे परमात्मने ।
नमो गिरां विदूराय मनसश्चेतसामपि ॥१०॥
सत्त्वेन प्रतिलभ्याय नैष्कर्म्येण विपश्चिता ।
नमः कैवल्यनाथाय निर्वाणसुखसंविदे ॥११॥
नमः शान्ताय घोराय मूढाय गुणधर्मिणे ।
निर्विशेषाय साम्याय नमो ज्ञानघनाय च ॥१२॥
क्षेत्रज्ञाय नमस्तुभ्यं सर्वाध्यक्षाय साक्षिणे ।
पुरुषायात्ममूलाय मूलप्रकृतये नमः ॥१३॥
सर्वेन्द्रियगुणद्रष्ट्रे सर्वप्रत्ययहेतवे ।
असताच्छाययोक्ताय सदाभासाय ते नमः ॥१४॥
नमो नमस्तेऽखिलकारणाय निष्कारणायाद्भुतकारणाय ।
सर्वागमाम्नायमहार्णवाय नमोऽपवर्गाय परायणाय ॥१५॥
गुणारणिच्छन्नचिदूष्मपाय तत्क्षोभविस्फूर्जितमानसाय ।
नैष्कर्म्यभावेन विवर्जितागमस्वयंप्रकाशाय नमस्करोमि ॥१६॥
मादृक्प्रपन्नपशुपाशविमोक्षणाय मुक्ताय भूरिकरुणाय नमोऽलयाय ।
स्वांशेन सर्वतनुभृन्मनसि प्रतीतप्रत्यग्दृशे भगवते बृहते नमस्ते ॥१७॥
आत्मात्मजाप्तगृहवित्तजनेषु सक्तैर्दुष्प्रापणाय गुणसङ्गविवर्जिताय ।
मुक्तात्मभिः स्वहृदये परिभाविताय ज्ञानात्मने भगवते नम ईश्वराय ॥१८॥
यं धर्मकामार्थविमुक्तिकामा भजन्त इष्टां गतिमाप्नुवन्ति ।
किं त्वाशिषो रात्यपि देहमव्ययं करोतु मेऽदभ्रदयो विमोक्षणम् ॥१९॥
एकान्तिनो यस्य न कंचनार्थं वाञ्छन्ति ये वै भगवत्प्रपन्नाः ।
अत्यद्भुतं तच्चरितं सुमङ्गलं गायन्त आनन्दसमुद्रमग्नाः ॥२०॥
तमक्षरं ब्रह्म परं परेशमव्यक्तमाध्यात्मिकयोगगम्यम् ।
अतीन्द्रियं सूक्ष्मविवातिदूरमनन्तमाद्यं पूरिपर्णमीडे ॥२१॥
यस्य ब्रह्मादयो देवा वेदा लोकाश्चराचराः ।
नामरूपविभेदेन फल्ग्व्या च कलया कृताः ॥२२॥

यथार्चिषोऽग्नेः सवितुर्गभस्तयो निर्यान्ति संयान्त्यसकृत् स्वरोचिषः ।
तथा यतोऽयं गुणसम्प्रवाहो बुद्धिर्मनः खानि शरीरसर्गाः ॥२३॥
स वै न देवासुरमर्त्यतिर्यङ् न स्त्री न षण्ढो न पुमान् न जन्तुः ।
नायं गुणः कर्म न सन्न चासन् निषेधशेषो जयतादशेषः ॥२४॥
जिजीविषे नाहमिहामुया किमन्तर्बहिश्चावृतयेभयोन्या ।
इच्छामि कालेन न यस्य विप्लवस्तस्यात्मलोकावरणस्य मोक्षम् ॥२५॥
सोऽहं विश्वसृजं विश्वमविश्वं विश्ववेदसम् ।
विश्वात्मानमजं ब्रह्म प्रणतोऽस्मि परं पदम् ॥२६॥
योगरन्धितकर्माणो हृदि योगविभाविते ।
योगिनो यं प्रपश्यन्ति योगेशं तं नतोऽस्म्यहम् ॥२७॥
नमो नमस्तुभ्यमसह्यवेगशक्तित्रयायाखिलधीगुणाय ।
प्रपन्नपालाय दुरन्तशक्तये कदिन्द्रियाणामनवाप्यवर्त्मने ॥२८॥
नायं वेद स्वमात्मानं यच्छक्त्याहंधिया हतम् ।
तं दुरत्ययमाहात्म्यं भगवन्तमितोऽस्म्यहम् ॥२९॥

श्रीशुक उवाच

एवं गजेन्द्रमुपवर्णितनिर्विशेषं
ब्रह्मादयो विविधलिङ्गभिदाभिमानाः ।
नैते यदोपससृपुर्निखिलात्मकत्वात्
तत्राखिलामरमयो हरिराविरासीत् ॥३०॥
तं तद्वदार्त्तमुपलभ्य जगन्निवासः
स्तोत्रं निशम्य दिविजैः सह संस्तुवद्भिः ।
छन्दोमयेन गरुडेन समुह्यमान
श्चक्रायुधोऽभ्यगमदाशु यतो गजेन्द्रः ॥३१॥
सोऽन्तःसरस्युरुबलेन गृहीत आर्त्तो
दृष्ट्वा गरुत्मति हरिं ख उपात्तचक्रम् ।
उत्क्षिप्य साम्बुजकरं गिरमाह कृच्छ्रा-
न्नारायणाखिलगुरो भगवन् नमस्ते ॥३२॥

तं वीक्ष्य पीडितमजः सहसावतीर्य
सग्राहमाशु सरसः कृपयोज्जहार ।
ग्राहाद् विपाटितमुखादरिणा गजेन्द्रं
सम्पश्यतां हरिरमूमुचदुस्त्रियाणाम् ॥३३॥
॥ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे अष्टमस्कन्धे गजेन्द्रमोक्षणे तृतीयोध्यायः ॥

३३. विष्णुशतनामस्तोत्रम्

ॐ वासुदेवं हृषीकेशं वामनं जलशायिनम् ।
जनार्दनं हरिं कृष्णं श्रीवक्षं गरूड़ध्वजम् ॥
वाराहं पुण्डरीकाक्षं नृसिंह नरकान्तकम् ।
अव्यक्तं शाश्वतं विष्णुमनन्तमजमव्ययम् ॥
नारायणं गदाध्यक्षं गविन्दं कीर्तिभाजनम् ।
गोवर्धनोद्धरं देवं भूधरं भुवनेश्वरम् ॥
वेत्तारं यज्ञपुरुषं यज्ञेशं यज्ञवाहकम् ।
चक्रपाणिं गदापाणिं शङ्खपाणिं नरोत्तमम् ॥
बैकुण्ठं दुष्टदमनं भूगर्भं पीतवाससम् ।
त्रिविक्रमं त्रिकालज्ञं त्रिभूमिं नन्दकेश्वरम् ॥
रामं रामं हयग्रीवं भीमं रौद्रं भवोद्भवम् ।
श्रीपतिं श्रीधरं श्रीशं मंगलं मंगलायुधम् ॥
दामोदरं दमोपेतं केशवं केशसूदनम् ।
वरेण्यं वरदं विष्णुमानन्दं वसुदेवजम् ॥
हिरण्यतनुसंकाशं सूर्यायुतसमप्रभम् ।
सर्वज्ञं सर्वरूपस्थं सर्वेशं सर्वतोमुखम् ॥
ज्ञानं कूटस्थमचलं ज्ञानदं परमं प्रभुम् ।
योगीशं योगनिष्णातं योगिनं योगरूपिणम् ॥
ईश्वरं सर्वभूतानां वन्दे भूतमयं प्रभुम् ।
इति नामशतं दिव्यं बैष्णवं खलु पापहम् ॥

३४. श्रीसप्तश्लोकी दुर्गा

शिव उवाच

देवि त्वं भक्तसुलभे सर्वकार्यविधायिनी ।
कलौ हि कार्यसिद्ध्यर्थमुपायं ब्रूहि यत्नतः ॥

देव्युवाच

शृणु देव प्रवक्ष्यामि कलौ सर्वेष्टासाधनम् ।
मया तवैव स्नेहेनाप्यम्बास्तुतिः प्रकाश्यते ॥

विनियोगः– अस्य श्रीदुर्गासप्तश्लोकीस्तोत्रमन्त्रस्य नारायण ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः, श्रीदुर्गाप्रीत्यर्थं सप्तश्लोकीदुर्गापाठे विनियोगः ।

ॐ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा ।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति ॥१॥
दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ॥२॥
सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥३॥
शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तुते ॥४॥
सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥५॥
रोगानशेषानपहंसि तुष्टा
रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान् ।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां
त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ॥६॥
सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि ।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् ॥७॥

॥ श्रीसप्तश्लोकी दुर्गा सम्पूर्णा ॥

३५. तुलसीस्तोत्रम्

जगद्धात्रि नमस्तुभ्यं विष्णोश्च प्रियवल्लभे ।
यतो ब्रह्मादयो देवाः सृष्टिस्थित्यन्तकारिणः ॥१॥
नमस्तुलसि कल्याणि नमो विष्णुप्रिये शुभे ।
नमो मोक्षप्रदे देवि नमः सम्पत्प्रदायिके ॥२॥
तुलसी पातु मां नित्यं सर्वापद्भ्योऽपि सर्वदा ।
कीर्तितापि स्मृता वापि पवित्रयति मानवम् ॥३॥
नमामि शिरसा देवीं तुलसीं विलसत्तनुम् ।
यां दृष्ट्वा पापिनो मर्त्या मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषात् ॥४॥
तुलस्या रक्षितं सर्वं जगदेतच्चराऽचरम् ।
या विनिर्हन्ति पापानि दृष्ट्वा वा पापिभिर्नरैः ॥५॥
नमस्तुलस्यतितरां यस्यै बद्ध्वाञ्जलिं कलौ ।
कलयन्ति सुखं सर्वं स्त्रियो वैश्यास्तथाऽपरे ॥६॥
तुलस्या नाऽपरं किंचिद्दैवतं जगतीतले ।
यथा पवित्रितो लोको विष्णुसंगेन वैष्णवः ॥७॥
तुलस्याः पल्लवं विष्णोः शिरस्यारोपितं कलौ ।
आरोपयति शर्वाणि श्रेयांसि वरमस्तके ॥८॥
तुलस्यां सकला देवा वसन्ति सततं यतः ।
अतस्तामर्चयेल्लोके सर्वान् देवान् समर्चयन् ॥९॥
नमस्तुलसि सर्वज्ञे पुरुषोत्तमवल्लभे ।
पाहि मां सर्वपापेभ्यः सर्वसम्पत्प्रदायिके ॥१०॥
इति स्तोत्रं पुरा गीतं पुण्डरीकेण धीमता ।
विष्णुमर्चयता नित्यं शोभनस्तुलसीदलैः ॥११॥
तुलसी श्रीमहालक्ष्मीर्विद्याऽविद्या यशस्विनी ।
धर्म्या धर्मानना देवी देवीदेवमनःप्रिया ॥१२॥
लक्ष्मीप्रियसखी देवी द्यौर्भूमिरचला चला ।

षोडशैतानि नमानि तुलस्याः कीर्तयन्नरः ॥१३॥
लभते सुतरां भक्तिमन्ते विष्णुपदं लभेत् ।
तुलसी भूर्महालक्ष्मीः पद्मिनी श्रीहरिप्रिया ॥१४॥
तुलसी श्रीसखि शुभे पापहारिणि पुण्यदे ।
नमस्ते नारदनुते नारायणमनःप्रिये ॥१५॥

॥ श्रीपुण्डरीककृतं तुलसीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

३६. सप्तश्लोकी गीता

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन् मामनुस्मरन् ।
यः प्रयाति त्यजन् देहं स याति परमां गतिम् ॥१॥
स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या
जगत् प्रहृष्यत्यनुरज्यते च ।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति
सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः ॥२॥
सर्वतःपाणिपादं तत्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम् ।
सर्वतःश्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति ॥३॥
कविं पुराणमनुशासितारमणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः ।
सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूपमादित्यवर्णं तमसः परस्तात् ॥४॥
ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम् ।
छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित् ॥५॥
सर्वस्य चाहं हृदि संनिविष्टो
मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च ।
वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो
वेदान्तकृद्वेदविदेव चाऽहम् ॥६॥
मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु ।
मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः ॥७॥

॥ सप्तश्लोकी गीता सम्पूर्णा ॥

३६. चतुःश्लोकि भागवतम्

ज्ञानं परमगुह्यं मे यद्विज्ञानसमन्वितम् ।
स-रहस्यं तदङ्गं च गृहाण गदितं मया ॥१॥
यावानहं यथाभावो यद्रूपगुणकर्मकः ।
तथैव तत्त्वविज्ञानमस्तु ते मदनुग्रहात् ॥२॥
अहमेवासमेवाग्रे नान्यद्यत्सदसत्परम् ।
पश्चादहं यदेतच्च योऽवशिष्येत सोऽस्म्यहम् ॥३॥
ऋतेऽर्थं यत् प्रतीयेत न प्रतीयेत चात्मनि ।
तद्विद्यादात्मनो मायां यथाऽऽभासो यथा तमः ॥४॥
यथा महान्ति भूतानि भूतेषूच्चावचेष्वनु ।
प्रविष्टान्यप्रविष्टानि यथा तेषु न तेष्वहम् ॥५॥
एतावदेव जिज्ञास्यं तत्त्वजिज्ञासुनाऽऽत्मनः ।
अन्वयव्यतिरेकाभ्यां यत् स्यात् सर्वत्र सर्वदा ॥६॥
एतन्मतं समातिष्ठ परमेण समाधिना ।
भवान् कल्पविकल्पेषु न विमुह्यति कर्हिचित् ॥७॥

इति श्रीमद्भागवतान्तर्गतं चतुःश्लोकीभागवतम् ॥३१२॥

३७. एकश्लोकि रामायणम्

आदौ रामतपोवनादिगमनं हत्वा मृगं काञ्चनं
वैदेहीहरणं जटायुमरणं सुग्रीवसम्भाषणम् ।
बालीनिग्रहणं समुद्रतरणं लङ्कापुरीदाहनं
पश्चात् रावणकुम्भकर्णहनन-मेतद्धि रामायणम् ॥

॥ एकश्लोकि रामायणं सम्पूर्णम् ॥

३७. एकश्लोकि-भागवतम्

आदौ देवकिं-देवगर्भ-जननं गोपीगृहे वर्धनं
मायापूतन-जीवितापरहणं गोवर्धनोद्धारणम् ।

कंसच्छेदन-कौरवादिहननं कुन्तीसुतापालनं
एतद् भागवतं पुराणकथितं श्रीकृष्णलीलामृतम् ॥

३८. एकश्लोकि-महाभारतम्

आदौ पाण्डव-धार्तराष्ट्रजननं लाक्षागृहे दाहनं
द्यूते श्रीहरणं वने विचरणं मत्स्यालये वर्तनम् ।
लीला-गो-ग्रहणं रणे विहरणं सन्धिक्रियाजृम्भणं
पश्चाद् भीष्म-सुयोधनादि-हननं चैतन्महाभारतम् ॥

३९. तुलसीस्तुतिः

देवैस्त्वं निर्मिता पूर्वमर्चिताऽसि मुनीश्वरैः ।
नमो नमस्ते तुलसि ! पापं हर हरिप्रिये ॥१॥
यन्मूले सर्वतीर्थानि यन्मध्ये सर्वदेवताः ।
यदग्रे सर्ववेदाश्च तुलसिं ! त्वां नमाम्यहम् ॥२॥

४०. अश्वत्थपूजनम्

अश्वत्थ हुतभुग्वास गोविन्दस्य सदाप्रियः ।
अशेषं हर मे पापं वृक्षराज नमोऽस्तु ते ॥

४१. विल्वदर्शन मन्त्र

बिल्ववृक्षमहाभाग महेशस्य सदाप्रिय ।
शिवदर्शनं हृदज्ज्योतिः प्रसीदाब्धिसुतास्तन ॥

४२. पत्रग्रहणमन्त्र :

अमृतोद्भव श्रीवृक्ष महादेवप्रियः सदा ।
महेशपूजनार्थाय त्वत्पत्राणि चिनोम्यहम् ॥

४३. गायत्री-कवचम्

विनियोगः — अस्य श्री गायत्रीकवचस्तोत्रमन्त्रस्य ब्रह्म-विष्णु-महेश्वरा ऋषयः, ऋग्-यजुः-सामा-ऽथर्वाणि छन्दांसि, परब्रह्मस्वरूपिणी

गायत्री देवता, तद्बीजम्, भर्गः शक्तिः, धियः कीलकम्, मोक्षार्थे जपे विनियोगः ।

न्यासः- ॐ तत्सवितुर्ब्रह्मात्मने हृदयाय नमः, ॐ वरेण्यं विष्णवात्मने शिरसे स्वाहा, ॐ भर्गो देवस्य रुद्रात्मने शिखायै वषट्, ॐ धीमहि ईश्वरात्मने कवचाय हुम्, ॐ धियो यो नः सदाशिवात्मने नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ प्रचोदयात् परब्रह्मतत्त्वात्मने अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्

मुक्ता-विद्रुम-हेम-धवलच्छायैर्मुखस्त्रीक्षणै-
र्युक्तामिन्दुकला-निबद्धमुकुटां तत्त्वार्थवर्णात्मिकाम् ।
गायत्रीं वरदा-ऽभया-ङ्कुश-कशाः शुभ्रं कपालं गुणं
शङ्खं चक्रमथारविन्दुयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे ॥

कवचम्

गायत्री पूर्वतः पातु सावित्री पातु दक्षिणे ।
ब्रह्मसन्ध्या तु मे पश्चादुत्तरस्यां सरस्वती ॥१॥
पावकीं च दिशं रक्षेत् पावमानी विलासिनी ।
दिशं रौद्रीं च मे पातु रुद्राणी रुद्ररूपिणी ॥२॥
ऊर्ध्वं ब्रह्माणी मे रक्षेदधस्ताद् वैष्णवी तथा ।
एवं दश दिशो रक्षेत् सर्वाङ्गे भुवनेश्वरी ॥३॥
तत्पदं पातु मे पादौ जङ्घे मे सवितुः पदम् ।
वरेण्यं कटिदेशे तु नाभिं भर्गस्तथैव च ॥४॥
देवस्य मे तु हृदयं धीमहीति च गल्लयोः ।
धियःपदं च मे नेत्रे यःपदं मे ललाटके ॥५॥
नःपदं पातु मे मूर्ध्नि शिखायां मे प्रचोदयात् ।
तत्पदं पातु मूर्धानं सकारः पातु भालकम् ॥६॥
चक्षुषी तु विकारार्णं तुकारस्तु कपोलयोः ।
नासापुटे वकारश्च रेकारस्तु मुखे तथा ॥७॥
णिकार ऊर्ध्वं ओष्ठे तु यकारस्त्वधरोष्ठके ।
आस्यमध्ये भकारस्तु र्गोकारश्चिबुके तथा ॥८॥

देकारः कण्ठदेशे तु वकारः स्कन्धदेशके ।
स्यकारो दक्षिणे हस्ते धीकारो वामहस्तके ॥९॥
मकारौ हृदयं रक्षेद्धकार उदरे तथा ।
धिकारो नाभिदेशे तु योकारस्तु कटिं तथा ॥१०॥
गुह्यं रक्षतु योकार ऊरुणी नःपदाक्षरम् ।
प्रकारो जानुनी रक्षेच्चोकारो जङ्घदेशकम् ॥११॥
दकारो गुल्फदेशेषु याकारः पादयुग्मकम् ।
तकारव्यञ्जनं चैव देवताभ्यो नमो नमः ॥१२॥
इदं तु कवचं दिव्यं बद्ध्वा शत्रून् विनाशयेत् ।
चतुःषष्टिकला विद्या अङ्गाद्यखिलपातकैः ॥
मुच्यते सर्वपापेभ्यः परं ब्रह्माधिगच्छति ॥१३॥

॥ इति गायत्रीकवचं समाप्तम् ॥

सन्तानगोपालस्तोत्रम्

श्रीशं कमलपत्राक्षं देवकीनन्दनं हरिम् ।
सुतसंप्राप्तये कृष्णं नमामि मधुसूदनम् ॥१॥
नमाम्यहं वासुदेवं सुतसं प्राप्तये हरिम् ।
यशोदाङ्कगतं बालं गोपालं नन्दनन्दनम् ॥२॥
अस्माकं पुत्रलाभाय गोविन्दं मुनिवन्दितम् ।
नमाम्यहं वासुदेवं देवकी नन्दनं सदा ॥३॥
गोपालं डिभकं वन्दे कमलापतिमच्युतम् ।
पुत्रसंप्राप्तये कृष्णं नमामि यदुपुङ्गवम् ॥४॥
पुत्रकामेष्टि फलदं कंजाक्षं कमलापतिम् ।
देवकी नन्दनं वन्दे सुतसंप्राप्तये मम ॥५॥
पद्मापते पद्मनेत्र पद्मनाभ जनार्दन ।
देहि मे तनयं श्रीशं वासुदेव जगत्पते ॥६॥
यशोदाङ्कगतं बालं गोविन्दं मुनिवन्दितम् ।
अस्माकं पुत्रलाभाय नमामि श्रीशमच्युतम् ॥७॥

श्रीपते देवदेवेश दीनार्तिहरणाच्युत ।
गोविन्द मे सुतं देहि नमामि त्वां जनार्दन ॥८॥
भक्तकामद गोविन्द भक्त रक्षशुभप्रद ।
देहि मे तनयं कृष्ण रुक्मिणी वल्लभ प्रभो ॥९॥
रुक्मिणीनाथ सर्वेश देहि मे तनयं सदा ।
भक्त मन्दार पद्माक्ष त्वामहं शरणं गतः ॥१०॥
देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥११॥
वासुदेव जगद्वन्द्य श्रीपते पुरुषोत्तम ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥१२॥
कंजाक्ष कमलानाथ परकारुणिकोत्तम ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥१३॥
लक्ष्मीपते पद्मनाभ मुकुन्दं मुनिवन्दितं ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥१४॥
कार्यकारण रूपाय वासुदेवाय ते सदा ।
नमामि पुत्रलाभार्थं सुखदाय बुधाय ते ॥१५॥
राजीवनेत्र श्रीराम रावणारे हरे कवे ।
तुभ्यं नमामि देवेश तनयं देहि मे हर ॥१६॥
अस्माकं पुत्रलाभाय भजामि त्वां जगत्पते ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥१७॥
श्रीमानिनीमानचोर गोपीवस्त्रापहारक ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥१८॥
अस्माकं पुत्रसम्प्राप्ति कुरुष्व यदुनन्दन ।
रमापते वासुदेव मुकुन्दं मुनिवन्दितं ॥१९॥
वासुदेव सुतं देहि तनयं देहि माधव ।
पुत्रं मे देहि श्री कृष्ण वत्सं देहि महाप्रभो ॥२०॥
डिम्भकं देहि श्रीकृष्ण आत्मजं देहि राघव ।
भक्त मन्दार मे देहि तनयं नन्दनन्दन ॥२१॥

नन्दनं देहि में कृष्ण वासुदेव जगत्पते ।
कमलानाथ गोविन्द मुकुन्दं मुनिवन्दितं ॥२२॥
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ।
सुतं देहि श्रियं देहि श्रियं पुत्रं प्रदेहि मे ॥२३॥
यशोदास्तन्यपानज्ञं पिवन्तं यदुनन्दनम् ।
वन्देऽहं पुत्रलाभार्थं कपिलाक्षं हरिं सदा ॥२४॥
नन्दनन्दन देवेश नन्दनं देहि में प्रभो ।
रमापते वासुदेव श्रियं पुत्रं जगत्पते ॥२५॥
पुत्रं श्रियं श्रियं पुत्रं-पुत्रं मे देहि माधव ।
अस्माकं दीनवाक्यस्य अवधारय श्रीपते ॥२६॥
गोपाल डिम्भ गोविन्द वासुदेव रमापते ।
अस्माकं डिम्भकं देहि श्रियं देहि जगत्पते ॥२७॥
मद्वाञ्छितफलं देहि देवकीनन्दनाच्युत ।
मम पुत्रार्थितं धन्यं कुरुष्व यदुनन्दन ॥२८॥
याचेऽहं त्वां श्रियं पुत्रं देहि में पुत्र सम्पदम् ।
भक्तचिन्तामणे राम कल्पवृक्ष महाप्रभो ॥२९॥
आत्मजं नन्दनं पुत्रं कुमारं डिंभकं सुतम् ।
अर्भकं तनयं देहि सदा में रघुनन्दन ॥३०॥
वन्दे संतान गोपालं माधवं भक्तकामदम् ।
अस्माकं पुत्र संप्राप्त्यै सदा गोविन्दमच्युतम् ॥३१॥
अकारयुक्तं गोपालं श्री युक्तं यदुनन्दनम् ।
क्लींयुक्तं देवकीपुत्रं नमामि यदुनायकम् ॥३२॥
वासुदेव मुकुन्देश गोविन्द माधवाच्युतम् ।
देहि में तनयं कृष्ण रमानाथ महाप्रभो ॥३३॥
राजीवनेत्र गोविन्द कपिलाक्षं हरे प्रभो ।
समस्तकाम्यवरद देहि में तनयं सदा ॥३४॥
अब्जपद्म नभःपद्म वृन्दरूप जगत्पते ।
देहि में वर सत्पुत्रं रमानायक माधव ॥३५॥

नन्द पालधरापाल गोविन्द यदुनन्दन ।
देहि में तनयं कृष्ण रुक्मिणीवल्लभ प्रभो ॥३६॥
दासमन्दार गोविन्द मुकुन्द माधवच्युत ।
गोपाल पुण्डरीकाक्ष देहि में तनयं श्रियम् ॥३७॥
यदुनायक पद्मेश नन्दगोपवधू सुत ।
देहि मे तनयं कृष्ण श्रीधरं प्राण नायक ॥३८॥
अस्माकं वांछित देहि देहि पुत्र रमापते ।
भगवन्कृष्ण सर्वेश वासुदेव जगतपते ॥३९॥
रमाहृदयसंभार सत्यभामामनः प्रिय ।
देहि में तनयं कृष्ण रुक्मिणीवल्लभ प्रभो ॥४०॥
चन्द्रसूर्याक्ष गोविन्द पुण्डरीकाक्ष माधव ।
अस्माकं भाग्यसंपुत्रं देहि देव जगत्पते ॥४१॥
कारुण्यरूपं पद्माक्षं पद्मनाभसमर्चितं ।
देहि में तनयं कृष्ण देवकीनन्दनन्दन ॥४२॥
देवकीसुत श्रीनाथ वासुदेव जगत्पते ।
समस्त काम फलद देहि में तनयं सदा ॥४३॥
भक्त मन्दारगम्भीर शंकराच्युतमाधव ।
देहि में तनयं गोप बालवत्सल श्रीपते ॥४४॥
श्रीपते वासुदेवेश देवकीप्रियनन्दन ।
भक्त मन्दार मे देहि तनयं जगतां प्रभो ॥४५॥
जगन्नाथ रमानाथ भूमिनाथ दयानिधे ।
वासुदेवेश सर्वेश देहि मे तनयं प्रभो ॥४६॥
श्रीनाथ कमलपत्राक्ष वासुदेव जगत्पते ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरण गतः ॥४७॥
दासमन्दारगोविन्द भक्तचिन्तामणे प्रभो ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥४८॥
गोविन्द पुण्डरीकाक्ष रमानाथ महाप्रभो ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥४९॥

श्रीनाथ कमल पत्राक्ष गोविन्द मधुसूदन ।
मत्पुत्रफलसिद्ध्यर्थं भजामि त्वां जनार्दन ॥५०॥
स्तन्यं पिवतं जननीमुखाम्बुजं, विलोक्य मन्दस्मितमुज्ज्वलांगम् ।
स्पृशन्तमन्यस्तनयं गुलीभिर्वन्दे, यशोदांकगतं मुकुन्दम् ॥५१॥
याचेऽहं पुत्रसंतानं भवन्तं पदमलोचन ।
देहि में तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥५२॥
अस्माकं पुत्रसंपत्तेश्चिन्तयामि जगत्पते ।
शीघ्रं मे देहि दातव्यं भवता मुनिवन्दित ॥५३॥
वासुदेव जगन्नाथ श्रीपते पुरुषोत्तम ।
कुरू मां पुत्रदत्तं च कृष्ण देवेन्द्र पूजित ॥५४॥
कुरू मां पुत्रदत्तं च यशोदा प्रियनन्दन ।
मह्यंच पुत्रसन्तानं दातव्यं भवता हरे ॥५५॥
वासुदेव जगन्नाथ गोविन्द देवकीसुत ।
देहि मे तनयं राम कौशल्या प्रिय नन्दन ॥५६॥
पद्मपत्राक्ष गोविन्द विष्णु वामन माधव ।
देहि मे तनयं सीताप्राणनायक राघव ॥५७॥
कंजाक्ष कृष्ण देवेन्द्र मण्डितं मुनिवन्दितम् ।
लक्ष्मणाग्रज श्रीराम देहि मे तनयं सदा ॥५८॥
देहि मे तनयं राम दशरथ प्रिय नन्दन ।
सीतानायक कंजाक्ष मुचुकुन्द वरप्रद ॥५९॥
विभिषणस्य या लंका प्रदत्ता भवता पुरा ।
अस्माकं तत्प्रकारेण तनयं देहि माधव ॥६०॥
भवदीयपदांभोजे चिन्तयामि निरन्तरम् ।
देहि मे तनयं सीता प्राणवल्लभ राघव ॥६१॥
राम मत्काम्यवरद पुत्रोत्पत्तिफलप्रद ।
देहि मे तनयं श्रीश कमलासनवन्दित ॥६२॥
राम राघव सीतेश लक्ष्मणानुज देहि मे ।
भागयवत्पुत्रसन्तानं दशरथात्मज श्रीपते ॥६३॥

देवकीगर्भसंजात यशोदाप्रिय नन्दन ।
देहि मे तनयं राम कृष्ण गोपाल माधव ॥६४॥
कृष्ण माधव गोविन्द वामनाच्युत शंकर ।
देहि में तनयं श्रीश गोपबालकनायक ॥६५॥
गोपबाल महा धन्य गोविन्दाच्युत माधव ।
देहि में तनयं कृष्ण वासुदेव जगत्पते ॥६६॥
दिशतु दिशतु पुत्रं देवकीनन्दनोऽयं ।
दिशतु दिशतु श्रीघ्रं भाग्यवत्पुत्रलाभम् ॥६७॥
दिशतु दिशतु श्रीशो राघवो रामचन्द्रो ।
दिशतु दिशतु पुत्रं वंशविस्तारहेतोः ॥ ६८॥
दीयतां वासुदेवेन तनयं मत्प्रियं सुतम् ।
कुमारं नन्दनं सीता नायकेन सदा मम ॥६९॥
राम राघव गोविन्द देवकीसुत माधव ।
देहि मे तनयं श्रीश गोपबालकनायक ॥७०॥
वंशविस्तारकं पुत्रं देहि में मधुसूदन ।
सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं गतः ॥७१॥
चन्द्रार्क कल्पपर्यन्त तनयं देहि माधव ।
सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं गतः ॥७२॥
विद्यावन्तं बुद्धिमन्तं श्रीमन्तं तनयं सदा ।
देहि में तनयं कृष्ण देवकीनन्दन प्रभो ॥७३॥
नमामि त्वां पद्मनेत्र सुत लाभाय कामदम् ।
मुकुन्दं पुण्डरीकाक्षं गोविन्दं मधुसूदनम् ॥७४॥
भगवन्कृष्ण गोविन्द सर्वकामफलप्रद ।
देहि में तनयं स्वामिस्त्वामहं शरणं गतः ॥७५॥
स्वामिस्तवं भगवन् राम कृष्ण माधव कामद ।
देहि में तनयं नित्यं त्वामहं शरणं गतः ॥७६॥

तनयं देहि गोविन्द कञ्जाक्ष कमलापते ।
सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं गतः ॥७७॥
पद्मापते पद्मनेत्र प्रद्युम्नजनक माधव ।
सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरण गतः ॥७८॥
शंखचक्रगदाखड्ग शार्ङ्ग पाणे रमापते ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥७९॥
नारायण रमानाथ राजीवनेत्रलोचन ।
सुतं मे देहि देवेश पद्मपद्मानवन्दित ॥८०॥
राम राघव गोविन्द देवकीवरनन्दन ।
रूक्मिणीनाथ सर्वेश नारदादिसुरार्चित ॥८१॥
देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते ।
देहि में तनयं श्रीश गोपबालकनायक ॥८२॥
मुनिवन्दित गोविन्द रुक्मिणीवल्लभनायक ।
देहि मे तनयं श्रीश गोपबालकनायक ॥८३॥
गोपिकार्जितपंकेज मरन्दासक्तमानस ।
देहि में तनयं श्रीश गोपबालकनायक ॥८४॥
रमाहृदयपंकज लाल माधव कामद ।
ममाभीष्टसुतं देहि त्वामहं शरणं गतः ॥८५॥
वासुदेव रमानाथ दासानां मंगलप्रद ।
देहि में तनयं श्रीश गोपबालकनायक ॥८६॥
कल्याणप्रद गोविन्द मुरारे मुनिवन्दित ।
देहि में तनयं श्रीश गोपबालकनायक ॥८७॥
पुत्रप्रदमुकुन्देश रुक्मिणीवल्लभप्रभो ।
देहि में तनयं श्रीश गोपबालकनायक ॥८८॥
पुण्डरीकाक्ष गोविन्द वासुदेव जगत्पते ।
देहि में तनयं श्रीश गोपबालकनायक ॥८९॥
दयानिधे वासुदेव मुकुन्द मुनिवन्दित ।
देहि में तनयं श्रीश गोपबालकनायक ॥९०॥
पुत्रसम्पत्प्रदातारं गोविन्दं देव पूजितम ।
वन्दामहे सदा कृष्ण पुत्रलाभप्रदाय ते ॥९१॥

कारुण्यनिधये गोपी बल्लभाय मुरारये ।
वन्दामि पुत्रलाभार्थं देहि में तनयं विभो ॥९२॥
नमस्तस्मै रमेशाय रूक्मिणीवल्लभाय ते
देहि में तनयं श्रीश गोपबालकनायक ॥९३॥
नमस्ते वासुदेवाय नित्यश्रीकामुकाय च ।
पुत्रदाय च शेषेन्द्र शायिने रंगशायिने ॥९४॥
रंगशायिन् रमानाथ मंगलप्रद माधव ।
देहि में तनयं श्रीश गोपबालकनायक ॥९५॥
दासस्य मे सुतं देहि दीनमन्दार राघव ।
सुतं देहि सुतं देहि पुत्रं देहि रमापते ॥९६॥
यशोदातनयाभीष्ट पुत्रदानरतः सदा ।
देहि में तनयं श्रीश गोपबालकनायक ॥९७॥
मदिष्टदेव गोविन्द वासुदेव जनार्दन ।
देहि मे तनयं श्रीश गोपबालकनायक ॥९८॥
नीति मानधनवान्पुत्रो, विद्यावांश्च प्रजाय ते ।
भगवंस्त्वत्कृपायाश्च वासुदेवेन्द्रपूजित ॥९९॥
यः पठेत्पुत्रशतकं सोऽपि सत्पुत्रवान् भवेत ।
श्रीवासुदेवकथितंस्तोत्ररत्नं सुखाय च ॥१००॥
जपकाले पठेन्नित्यं पुत्रलाभं धन श्रियम् ।
ऐश्वर्य राजसम्मानं सद्यो याति न संशयः ॥१०१॥
॥ इति संतानगोपालस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

श्री अच्युतनामाष्टकम्

अच्युतं केशवं विष्णुं हरिं सत्यं जनार्दनम् ।
हंसं नारायणं चैव एतन् नामाष्टकं पठेत् ॥
त्रिसन्ध्यं यः पठेत् नित्यं दारिद्र्यं तस्य नश्यति ।
शत्रु सैन्यं क्षयं याति दुःस्वप्नं सुखदो भवेत् ॥
गङ्गायां मरणं चैव दृढ़ा भक्तिस्तु केशवे ।
ब्रह्म विद्या प्रबोधश्च तस्मान्नित्यं पठेन्नरः ॥

गोविन्द दामोदर स्तोत्रम्

करारविन्देन पदारविन्दं, मुखारविन्दे विनवेशयन्तम् ।
वटस्य पत्रस्य पुटे शयानं, बालंमकुन्दं मनसा स्मरामि ॥१॥

श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे, हे नाथ नारायण वासुदेव ।
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव, गोविन्द दामोदर माधवेति ॥२॥

विक्रेतुकामाखिल गोपकन्या, मुरारिपादार्पितचित्तवृत्तिः ।
दध्यादिकं मोहवशादवोचद्, गोविन्द दामोदर माधवेति ॥३॥

गृहे गृहे गोपवधू कदम्बाः, सर्वे मिलित्वा समवाय योगम् ।
पुण्यानि नामानि पठन्ति नित्यं, गोविन्द दामोदर माधवेति ॥४॥

सुखे शयाना निलये निजेऽपि, नामानि विष्णोः प्रवदन्ति मर्त्याः ।
ते निश्चितं तन्मयतां व्रजन्ति, गोविन्द दामोदर माधवेति ॥५॥

जिह्वे सदैवं भज सुन्दराणि, नामानि कृष्णस्य मनोहराणि ।
समस्त भक्तार्तिविनाशनानि, गोविन्द दामोदर माधवेति ॥६॥

सुखावसाने त्विदमेवसारं, दुःखावसाने त्विदमेव ज्ञेयम् ।
देहावसाने त्विदमेव जाप्यं, गोविन्द दामोदर माधवेति ॥७॥

श्रीकृष्ण राधावर गोकुलेश, गोपाल गोवर्धननाथ विष्णो ।
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव, गोविन्द दामोदर माधवेति ॥८॥

जिह्वे रसज्ञे मधुरप्रिया त्वं, सत्यं हितं त्वां परमं वदामि ।
आवर्णयेथा मधुराक्षराणि, गोविन्द दामोदर माधवेति ॥९॥

त्वामेव याचे मम देहि जिह्वे, समागते दण्डधरे कृतान्ते ।
वक्तव्यमेवं मधुरं सुभक्त्या, गोविंन्द दामोदर माधवेति ॥१०॥

अथ नूतनगृहादीनां शिलास्थापनविधिः

तत्र कर्ताऽऽग्नेयदिशि खातभूमेः पश्चिमतः उपविश्य आचम्य प्राणानायम्य स्वस्तिं वाचयित्वा प्रतिज्ञासंङ्कल्पं कुर्यात्-देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रोऽमुकशर्म्माऽहं करिष्यमाणस्यास्य वास्तोः शुभतासिद्ध्यर्थं निर्विघ्नता गृह-(प्रसाद)-सिद्ध्यर्थमायुरारोग्यैश्वर्य्याभिवृद्ध्यर्थं च वास्तोस्तस्य भूमिपूजनं शिलान्यासञ्च करिष्ये तदङ्गभूतं श्रीगणपत्यादिपूजनञ्च करिष्ये ॥ इति सङ्कल्प्य गणेशषोडशमातृब्रह्मा-दिसूर्यादिनवग्रहोङ्कारमृत्युञ्जयादिपूजनं कुर्यात् । तत आचार्यः —

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः ।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥

अनेन गौरसर्षपानवकीर्य पञ्चगव्येन संप्रोक्ष्य वायुकोणपीठे पञ्चशिलाः स्थापयेत् ततः सर्पाकारं वास्तुमावाह्य —

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मानस्वावेशोऽनमीवो भवा नः ।
यत्वेमहे प्रति तन्ना जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥

इति मन्त्रेण सम्पूज्य दध्योदनबलिर्देयः । ततो नागानां पूजनम् —

ॐ वासुकिं धृतराष्ट्रञ्च कर्कोटकधनञ्जयौ ।
तक्षकैरावतौ चैव कालेयमणिभद्रको ॥

इत्यष्टनागान् पृथक् पृथक् सहैव वा नाममन्त्रेणावाह्य पूजयेत् । ततो धर्मरूपवृषमावाह्य सम्पूज्य चाञ्जलिं बद्ध्वा प्रार्थयेत् —

ॐ धर्मोसि धर्मदैवस्य वृषरूप नमोस्तु ते ।
सुखं देहि धनं देहि देहि पुत्रमनुत्तमम ॥
गृहे गृहे निधिं देहि वृषरूप नमोस्तु ते ।
आयुर्वृद्धिं च धान्यं च आरोग्यं देहगेहयोः ॥
आरोग्यं मम भार्याया पितृमातृसुखं सदा ।
भ्रातृणां परमं सौख्यं पुत्राणां सौख्यमेव च ॥
सर्वस्वं देहि में विष्णो गृहे सविशतां प्रभो ।
नवग्रहयुतां भूमिं पालयस्व वरप्रद ॥

ततः पञ्चशिलाः —

ॐ आपः शुद्धा ब्रह्मरूपाः पावयन्ति जगत्रयम् ।
ताभिरद्भिः शिलां स्नाप्य स्थापयामि शुभे स्थले ॥

इति शुद्धोदकेन प्रक्षाल्य —

ॐ गजाश्वरथ्यावल्मीकसद्भिर्मृद्भिः शिलेष्टकान् ।
प्रक्षलयामि शुद्ध्यर्थं गृहनिर्माणकर्मणि ॥

इति सप्तमृत्तिकाभिः प्रक्षालयेत् । ततो गायत्र्या पञ्चगव्येन दध्ना तीर्थोदकेन चप्रक्षाल्य शुद्धवस्त्रेण संमार्ज्य ताः शिलाः कुङ्कुम चन्दनाभ्यां विलिप्य, वस्त्रेणाऽऽच्छाद्य नामभिः पूजयेत् । तत्र नामानि । नन्दा भद्रा जया रिक्ता पूर्णा नामा यथाक्रमम ।

नन्दायां पद्ममालिख्य भद्रा सिंहासनं तथा ।
जयायां तारणं छत्रं रिक्तायां कूर्ममेव च ॥
पूर्णायां तु चतुर्बाहुं विष्णुं संलेखयेद् बुधः ।
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ईश्वरश्च सदाशिवः ॥

एते पञ्चैव पञ्चषु भूतानामावाहयेत् पुनः —

ॐ नन्दायै नमः (१) ॐ भद्रायै नमः (२) ॐ जयायै नमः (३) ॐ रिक्तायै नमः (४) ॐ पूर्णायै नमः (५) इति नामभिः पूजयेत् नंदायां पद्ममालिख्यं भद्रा सिंहासनं तथा जयायां तोरणं क्षत्रे रिक्तायां कूर्ममिव च पूर्णायां तु चतुर्बाहुं विष्णुं संलेखयेत् बुधः । तासां पञ्चानां सन्निधावेते पञ्च कुम्भाः स्थाप्याः ॐ पद्माय नमः (१) ॐ महापद्माय नमः (२) ॐ शंखाय नमः (३) ॐ मकराय नमः (४) ॐ समुद्राय नमः (५)

ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ईश्वरश्च सदाशिवः ।
एते पञ्चैव पंचेषु भूतानावाहयेत् बुधः ॥

तत आचार्यः खातभूमिमुपलिप्य तत्र ध्यायेत्कूर्मपृष्ठोपरि स्थितां शुक्लवर्णां चतुर्भुजां पद्मशंखचक्रशूलधरां भूमिं ध्यात्वा

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरानिवेशनी यच्छा नः शर्म सप्रथाः । इति भूमिमावाहयेत् ।

ततः नाममन्त्रैः ॐ कूर्माय नमः इति कूर्मम् (१) ॐ अनन्ताय नमः इति अनन्तम् (२) ॐ वराहाय नमः इति वराहम् (३) इत्यावाह्य आसनाद्युपचारैः सम्पूज्य भूम्यै अर्घं दद्यात्-जानुभ्यां धरणीं स्पृष्ट्वा तोयक्षीरतिलतण्डुलयवसर्षपपुष्पाणि अर्घपात्रे प्रक्षिप्य—

ॐ हिरण्यगर्भे वसुधे शेषस्योपरि शायिनि ।

उद्धृतासि वराहेण सशैलवनकानने ॥
प्रसादं (गृहं वा) कारयाम्यद्य त्वदूर्ध्व शुभलक्षणम् ।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं प्रसन्ना शुभदा भव ॥

भूम्यै नमः इदमर्घ्यं समर्पयामि । ततः भूम्यै आम्र (वा पलाश) पत्रोपरि सदीपं घृतौदनवलिं दत्त्वा प्रार्थयेत् —

ॐ समुद्रमेखले देवि पर्वतस्तनमण्डले ।
विष्णु-पत्नि नमस्तुभ्यं शस्त्रपातं क्षमस्व में ॥
इष्ट मेत्वं प्रयच्छेष्ट त्वामहं शरणं गतः ।
पुत्रदारधनायुष्यंधर्मवृद्धिकरी भव ॥

ततः खाते स्नेहं दत्वा तस्योपरि गौरसर्षपान् क्षिपेत् ।

तत्र मन्त्राः —

ॐ भूतप्रेतपिशाचाद्या अपक्रामन्तु राक्षसाः ।
स्थानादस्माद् व्रजन्त्वन्यत्स्वीकरोमि भुवं त्विमाम् ॥

तस्योपरि दध्योदनं भक्तमाषान्नबलिं च दत्त्वा तस्योपरि पर्णपात्राणि ७ संस्थाप्य तस्योपरि द्वाशांगुललौहशंकु भूमौ प्राविषेत् । तत्र मन्त्रः —

ॐ विशन्तु भूतले नागाः लोकपालाश्च सर्वतः ।
अस्मिन् स्थानेऽवतिष्ठन्तु आयुर्बलकराः सदा ॥

इति कीलकं निखन्य तस्योपरि मध्वाज्यपारदसुवर्ण (मुद्रा वा) पंचरत्नगर्भगन्धादिभूषितं सुपूजितं ताम्रादि निर्मितं पद्माख्यकुम्भं विहितमुखं कुसुमवस्त्रवेष्टितं नारिकेलयुतं मध्ये स्थापयेत् एवं पूर्वादिचतुर्दिक्षु चत्वारः कुम्भाः स्थाप्याः । पूर्वादिषु क्रमेण महापद्म २, शंखं ३, मकरं ४, समुद्रं५ ,च सम्पूज्य तदुपरि कुंभसमां मृत्तिकां दत्त्वा अक्षतान् क्षिपेत् । ततः सुलग्ने मध्ये सुपुजितां पूर्णाख्यामिष्टकां स्थापयेत् तत्र मन्त्रः—

ॐ पूर्ण त्वं सर्वदा भद्रे सर्वसन्दोहलक्षणे ।
सर्वं सम्पूर्णमेवात्र कुरुष्वाङ्गिरसः सुते ॥

ततः पूर्वस्यां —

ॐ नन्दे त्वं नन्दिनी पुंसां त्वामत्र स्थापयाम्यहम् ।
अस्मिन् रक्षा त्वाया कार्या प्रसादे यत्नतो मम ॥

ततो दक्षिणस्यां —

ॐ भद्रे त्वं सर्वदा भद्रं लोकानां कुरु काश्यपि ।

आयुर्दा कामदा देवि सुखदा च सदा भव ॥

ततः पश्चिमायां —

ॐ जये त्वं सर्वदा देवि तिष्ठि त्वं स्थापिता मया ।
नित्यं जयाय भूत्यै च स्वामिनो भव भार्गवि ॥

तत उत्तरस्यां —

रिक्ते त्वरिक्ते दोषघ्ने सिद्धिवृद्धिप्रदे शुभे ।
सर्वदा सर्वदोषघ्ने तिष्ठास्मिन्मम मन्दिरे ॥

इति मन्त्रेण स्थापयित्वा पूर्णादिनाममन्त्रैः गन्धादिना पूजयेत् ।

ततः परितो दिक् पालन् संपूज्य सदीपदधि माषतण्डुलवलिं दद्यात् ।

ततः विश्वकर्मणे नमः इत्यायुधपूजां कृत्वा प्रार्थयेत् —

ॐ अज्ञानात् ज्ञानतो वापि दोषाः स्युश्च यदुद्भवाः ।
नाशयन्त्वहितान्सर्वान् विश्वकर्मन्नमोस्तु ते ॥

ततः खनित्रं संपूज्य प्रार्थयेत् —

ॐ त्वट्रा त्वं निर्मितः पूर्वं लोकानां हितकाम्यया ।
पूजतोऽसि खनित्र त्वं सिद्धिदो भव नो ध्रुवम् ॥

अथ वास्तोष्पतिमृत्युञ्जयादीनां जपार्थं प्रतिज्ञासंकल्पं कुर्यात्-

ॐ अद्येत्याद्युक्त्वा अनवधिवर्षावच्छिन्नबहुकालपर्यन्तं पुत्रकलत्रारोग्यधनादिसमृद्धिप्राप्तिकामो गृहनिर्माणार्थं कर्त्तव्यशिलास्थापनाङ्गत्वेन वास्तुदेवतामृत्युञ्जयादिप्रसाद-लाभाय यथासंख्यापरिमितं ब्राह्मणद्वारा जपमहं कारयिष्ये । ततो दक्षिणां वरणसंभारमादाय —

ॐ अद्येत्यादि गृह निर्माणार्थं कर्तब्य शिलास्थापनांगभूत् ब्राह्मणद्वारा वास्तोष्पति मृत्युंजयजपं कारयितुमेभिर्वरणद्रब्यैरमुकामुकगोत्रान् अमुकामुकशर्मणः ब्राह्मणान् जापकत्वेन युष्मानहं वृणे । ततो मिष्टान्नं गुडं वा वितरेत् ।

इति शिलान्यासविधिः।

अथ गृहप्रतिष्ठाविधिः वास्तुशान्तिः

ततो मण्डपात् पश्चिदेशे गोमयोपलिप्तायां भूमौ प्रत्यङ्मुखो यजमान उपविश्य आचम्य देवान्गुरून्नमस्कृत्य सङ्कल्पं कुर्यात् —

ॐ अद्येत्यादि ज्ञाताज्ञातकायबाङ्मनः कृत सकलपापक्षयपूर्वक शाला-कर्माहं करिष्ये । कुरुष्वेति ब्राह्मणो वदेत् । ततो गणेशादि

पूजनं कृत्वा गौरसर्षपैः दिग्रक्षणम् मंडपोपरि एका ध्वजा रक्तवर्णा स्थापनीया तदनु पूर्वादिदिक्षु क्रमात् पताकाः स्थापनीयाः ताश्च पीताः, रक्ताः, श्यामाः, नीलाः, शुक्लाः, धूम्राः हरिताः, पञ्चवर्णा, रक्ताः, गौराः दुग्धधारा त्रिसूत्री च हवनं ब्राह्मण भोजनम् ।

समन्त्रकगृहप्रवेशविधिः

अथ प्रवेशसमये गणपतिं सम्पूज्य ब्राह्मणैः कृतस्वत्ययनः मङ्गलयुतशान्तिपाठेन सजलकलशः ब्राह्मणपुरस्सरं पुत्रपौत्रकलत्रादियुः सतोरण सध्वजपताकं (१) गृहमागत्यद्वार समीपे उपविस्य ''अस्मिन्पुण्याहे श्रौतस्मार्त्तकर्मकरणार्थ संस्कारानेकभोगैश्वर्यादि विविधमङ्गलोदयसिद्धये एतन्नवीनगृहप्रवेशमहं करिष्ये । द्वारशाखा पूजनम् । तत्र तन्मन्त्रौ —

स्थापितेयं मया शाखा शुभदा ऋद्धिदाऽस्तु मे ।
सुपुजिता मया शाखा सर्वदा सुस्थिराऽस्तु मे ॥
यो धारयति सर्वेशो जगन्ति स्थावराणि च ।
धारा दक्षिणशाखायां पूजितो वरदोऽस्तु में ॥ ॐ धात्रे नमः ।
यः समुत्पाद्य विश्वेशो भुवनानि चतुर्दश ।
विधाता वामशाखायां स्थिरो भवति पूजितः ॥ ॐ विधात्रे नमः।

ऊर्ध्वम्- गजवक्त्र गणाध्यक्ष हे हेरम्बाम्बिकात्मज ।
विघ्नान् निवारयाशुत्वमूर्ध्वोदुम्बरसंस्थितः ॥ ॐ गणपतये नमः

अधो देहल्याम् —

यस्याः प्रसादात् सुखिनो देवाः सेन्द्राः सहोरगाः ।
सा वै श्रीदेहलीसंस्था पूजिता ऋद्धिदाऽस्तु में ॥ देहल्यै नमः ।

अथ द्वाराभिमुखो भूत्वा —

''धर्मार्थकामसिद्ध्यर्थं पुत्रपौत्राभिवृद्धये ।
त्वामहं प्रविशाम्यद्य भगो मन्दिर ते नमः ॥१॥
यावच्चन्द्रश्च सूर्यश्च यावत्तिष्ठति मेदिनी ।
तावत्त्वं मम वंशस्य मङ्गलाभ्युदयं कुरु ॥२॥

इत्युक्त्वा प्रविशेत् । तत्र मन्त्रः - (पार० गृ० ३/४)

ॐ धर्मस्थूणा राजश्रीरस्तुमहोरात्रे द्वारफलके इन्द्रस्य गृहा ।
वसुमन्तो वरुथिनस्तानंह प्रपद्ये सह प्रजया पशुभिः सह ॥
यन्मे किञ्चिदस्त्युपहूतः सर्वगणः सखायः साधु संवृतः ।

तां त्वा शालेऽरिष्ठवीरागृहात्र सन्तु सर्वतः ॥''

इति देहलीमस्पृशन् दक्षिणपादपुरः सरमन्तः प्रविश्य प्रधान गृहमध्ये आग्नेय्यां दिशि तं कलशं संस्थाप्य अस्मिन्नूतन गृहे पुण्याहे कल्याणं श्रीरस्तुवाचयित्वा लक्ष्मीं सम्पूजयेत-गृहस्य धारकं स्तंभं पूजयेत् —

धारणार्थ महाभाग निर्मितो विश्वकर्मणा ।
स्थापितः शुभदो नित्यं गृभारक्षमो भव ।।१ ॥

दीपस्थाने दीपं प्रज्वाल्य —

तिमिरस्य तिरस्कर्त्ता ज्योतिरूपः सुविश्रुतः ।
विघ्नान्धकारनाशाय पूजयामि सुसिद्धिदम् ॥ ॐ दीपाय नमः।
महानस इति ख्यातो देवयज्ञादिसिद्धिकृत् ।
अन्नासिधनं स्थानं धर्ममूलं शुभप्रदम् ॥ चुल्ह्यां धर्माय नमः ।
सम्मार्जनस्थानेपूतना शुभदा ज्येष्ठा सदा सन्धानसंथिता ।
स्थानं चोत्करसम्पत्तेरस्तु में सर्वसिद्धिदम् ॥ ज्येष्ठायै नमः ।

जलस्थाने —

शङ्खस्फटिकवर्णाभ-श्वेतहाराम्बरावृत ।
पाशहस्त महाबाहो दयां कुरु दयानिधे। वरुणाय नमः ॥

पेषण्याम् —

सौभाग्यं सुभगे देहि पेषणी संस्थिता सदा ।
पिष्ठनिष्पादनार्थं त्वं पूजिता शुभदाऽस्तु मे ॥ ॐ सुभगायै नमः ।

उलुखले —

व्रीहीणां कण्डनं यच्च तुषाणाञ्च विमोचनम् ।
त्वदधीनमतः पूजां करोमि तव सिद्धये । रौद्रपीठाय नमः।

शय्यायाम् —

कामः कामप्रदो मेऽस्तु शयनीये सुपूजितः
पूजां गृण सुमुख धनधान्यसमृद्धये ॥ ॐ कामाय नमः ॥

गृहमध्ये —

मध्ये सुपूजिता देवाः सन्तु में सर्वसिद्धिदाः ।
नश्यन्तु सर्वबिघ्नानि देवानां पूजनादिह । सर्वदेवेभ्यो नमः।

पशुस्थाने —

सर्वाधिपो महादेव ईशानः शुक्लशङ्करः ।
पशूनां पतिरस्माकं पूजितः शुभदः सदा ॥ ॐ पशुपतये नमः।

एतदन्तरं वा पूर्ण विसर्जनान्तं पूर्वोक्तं कुर्यात ।

इति गृहप्रवेशः ।

अपराजितास्तोत्रम्

ॐ अस्य श्री अपराजिता मन्त्रस्यवेदव्यास ऋषिरनुष्टुप् छन्दः क्लीं बीजं हूँ शक्तिः सर्वाभिष्टसिद्धयर्थे जपे पाठे विनियोगः ।

मार्कण्डेय उवाच -

''शृणुध्वं मुनयः सर्वे सर्वकामार्थसिद्धिकाम् ।
असिद्धसाधनीं देवीं वैष्णवीमपराजिताम् ॥''

ध्यानम्–

नीलोत्पल-दलश्यामां भुजङ्गाभरणोज्वलाम्,
बालेन्दु-मौलिसदृशीं नयनत्रितयान्विताम् ।
शंखचक्रधरां देवीं वरदां भयशालिनीम्,
पीनोत्तुङ्गस्तनीं साध्वीं बद्ध-पद्मासनां शिवाम् ।
अजितां चिन्तयेद्देवीं वैष्णवीमपराजिताम् ॥
शुद्धस्फटिक संकाशां चन्द्रकोटि-सुशीतलाम्,
अभयां वर-हस्तां च श्वेतवस्त्रैरलंकृताम् ।
नानाभरण-संयुक्तां जयन्तीमपराजिताम्,
त्रिसध्यं यः स्मरेद्देवीं ततः स्तोत्रंपठेत्सुधीः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । ॐ नमोस्त्वनन्ताय सहस्रशीर्षाय क्षीरार्णवशायिने, शेषभोग-पर्यङ्काय गरुड़-वाहनाय अमोघाय अजाय अजिताय अपराजिताय पीतवाससे । वसुदेव-संकर्षण-प्रद्युम्नानिरुद्ध-हयशीर्ष-मत्स्यकूर्मवराहनृसिंहवामनरामराम वर-प्रद ! नमोस्तु ते । असुर दैत्यदानव-यक्ष-राक्षस-भूत-प्रेत-पिशाचकिन्नर-कुष्माण्ड-सिद्ध-योगिनी-डाकिनी-स्कन्दपुरोगान् ग्रहान्नक्षत्रग्रहांश्चान्यान् हन हन, पच, पच, मथ, मथ विध्वंसय, विध्वंसय, विद्रावय, विद्रावय, चूर्णय, चूर्णय शंखेन चक्रेण वज्रेण शूलेन गदया मुसलेन हलेन भस्मीकुरु कुरु स्वाहा ॥ ॐ सहस्रवाहो सहस्रप्रहरणायुध जय, जय विजय, विजय, अजित अमित अपराजित अप्रतिहत सहस्र नेत्र, ज्वल,

ज्वल, प्रज्वल, प्रज्वल, विश्वरूप, बहुरूप, मधुसूदन महावराहच्युत महापुरुष पुरुषोत्तम पद्मनाभ वैकुण्ठानिरुद्ध-नारायणगोविन्द दामोदर हृषीकेश केशव सर्वासुरोत्सादन सर्वमन्त्रप्रभञ्जन, सर्वदेवनमस्कृत सर्वबन्धनविमोचन, सर्वशत्रुवशंकर, सर्वाहितप्रमर्दन, सर्वग्रहनिवारण, सर्वरोगप्रशमन, सर्व-पाप-विनाशन, जनार्दन नमोस्तु ते स्वाहा । य इमां अपराजितां परमवैष्णवीं पठति, सिद्धां जपति, सिद्धां महाविद्यां पठति, जपति, स्मरति, शृणोति, धारयति, कीर्तयति वा न तस्याग्निवायु-वज्रोपलाशनिभयं नववर्षणि भयं, न समुद्रभयं न ग्रह भयं न चोर भयं वा भवेत् । कचिद्रात्र्यन्धकारस्त्रीराजकु विषोपविषगरल- वशीकरण-विद्वेषोच्चाटन-वधबन्धभयं वा न भवेत् । एतैर्मन्त्रैः सदाहतैः सिद्धैः संसिद्धपूजितैः, तद्यथा ॐ नमस्तेस्त्वनघेऽजितेऽपराजिते, पठति सिद्धे, पठति सिद्धे, जपति सिद्धे, जपति सिद्धें, स्मरति सिद्धे, महाविद्ये एकादशे उमें ध्रुवे अरुन्धति सावित्रि, गायत्रि, जातवेदसि मानस्तोके सरस्वति धरणि धारिणि सौदामिनि अदिति दिति गौरि गांधारी मातंगी कृष्णे यशोदे सत्यवादिनि ब्रह्मवादिनि कालि कपालिकरालनेत्रे सद्योपयाचितकरिजल-गतस्थलगतमंतरिक्षगं वा मां रक्ष रक्ष सर्वभूतेभ्यः सर्वोपद्रवेभ्यः, स्वाहा ।

यस्याः प्रणश्यते पुष्पं गर्भो वा पतते यदि ।
म्रियन्ते बालका यस्याः काकबन्ध्या च या भवेत् ॥
भूर्जपत्रेत्विमां विद्यां लिखित्वा धरयेद्यदि ।
एतैर्दोषैर्न लिप्येत सुभगा पुत्रिणी भवेत् ॥
शस्त्रं वार्यते ह्येषां समरेकाण्डवारिणी ।
गुल्मशूलाक्षि-रोगाणां क्षिप्रं नाश्यते व्यथाम् ॥

शिरोरोगज्वराणां च नाशिनी सर्वदेहिनाम् तद्यथा-एकाहिकद्व्याहिक त्र्याहिक-चातुर्थिकार्धमासिक-द्वैमासिक-त्रैमासिक- चातुर्मासिक पञ्चमासिकषाण्मासिक-वातिक-पैचिक श्लेष्मिक, सान्निपातिक-सततज्वर-विषमज्वराणां नाशिनी सर्व देहिनां ओं हर हर कालि सर गौरि धम धम विद्ये आले ताले माले गन्धे पच पच विद्ये मथ मथ विद्ये, नाशय पापं, हर दुःस्वप्नं, विनाशय मातः, रजनि सन्ध्ये दुन्दुभिनादे मानसवेगे शंखिनी चक्रिणी वज्रिणी शूलिनी अपमृत्यु-विनाशिनी विश्वेश्वरी द्राविडि द्राविडि केशवदयिते, पशुपति सहिते, दुन्दुभिनादे मानसवेगे, दुन्दुभि-दमनी शवरि किराती मातंगी ॐ ह्रां ह्रीं ह्रुं ह्रैं ह्रौं ह्रः ओं ओं श्रां

मानसवेगे, दुन्दुभि-दमनी शवरि किराती मातंगी ॐ ह्रां ह्रीं ह्रुं ह्रैं ह्रौं ह्रः ओं ओं श्रां श्रुं श्रैं श्रौं श्रः ॐ क्ष्वौ तुरु तुरु स्वाहा । ॐ ये इमां द्विषन्ति प्रत्यक्षं परोक्षं वा तान् दम दम मर्दय मर्दय पातय पातय शोषय शोषय उत्सादय उत्सादय ब्रह्माणि माहेश्वरि ।

वैष्णवी वैनायकी कौमारी नारसिंही ऐन्द्री चान्द्री आग्नेयी चामुंडे वारणि वायव्ये रक्ष रक्ष प्रचण्डविद्ये ॐ इन्द्रोपेन्द्र-भगिनी जये विजये शान्तिपुष्टितुष्टिविवर्द्धिनी । कामांकुशे कामदुधे सर्वकामफलप्रदे सर्वभूतेषु मां प्रियं कुरु कुरु स्वाहा । ॐ आकर्षणी आवेशिनी तापिनी, धरणि धारिणी मदोन्मादिनी शोषिणी सम्मोहिनी महानीले नीलपताके महागौरि महाप्रिये महानान्द्रिका महासौरि महामायूरि आदित्यरश्मिनी जाह्नवी यमघण्टे किलि किलि चिन्तामणि सुरभिसुरोत्पन्ने सर्व-काम-दुधे यथाभिलषितं कार्यं तन्मे सिध्यतु स्वाहा । ॐ भूःस्वाहा । ॐ भूर्भुवःस्वःस्वाहा । ॐ यत एवागतं पापं तत्रैव प्रतिगच्छतु स्वाहा । ॐ बले बले महाबले असिद्धि साधिनी स्वाहा ।

इति श्रीत्रैलोक्यविजया अपराजिता सम्पूर्णा ।

●

यह स्तोत्र सुख शान्ति के लिए, धन के लिए, समृद्धि के लिए और सर्वत्र विजय प्राप्ति के लिए है ।

अथ श्री वटुक भैरव स्तोत्रम्

ॐ अस्य श्रीआपदुद्धारवटुकभैरवस्तोत्रस्य बृहदारण्यक ऋषिरनुष्टुप्छन्दः श्री वटुकभैरवो देवता ह्रीं बीजं बटुकाय शक्तिः प्रणवः कीलकं बटुकभैरवप्रसादसिद्ध्यर्थे (पाठे) होमे विनियोगः ।

ॐ भैरवो भूतनाथश्च, भूतात्मा भूतभावनः ।
क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालश्च, क्षेत्रदः क्षत्रियो विराट ॥१॥
श्मसानवासी मांसाशी, खर्पराशी स्मरान्तकृत् ।
रक्तपः पानपः सिद्धिः, सिद्धिदः सिद्धसेवितः ॥२॥
कङ्कालः कालशमनः, कलाकाष्ठातनुः कविः ।
त्रिनेत्रो बहुनेत्रश्च, तथा पिङ्गललोचनः ॥३॥

शूलपाणिः खड्गपाणिः, कङ्काली धूम्रलोचनः ।
अभीरुर्भैरवीनाथो, भूतपो योगिनीपतिः ॥४॥
धनदो धनहारी च, धनवान् प्रतिभानवान् ।
नागहारो नागपाशो, व्योमकेशः कपालभृत् ॥५॥
कालः कपालमाली च कमनीयकलानिधिः ।
त्रिलोचनो ज्वलन्नेत्रः, त्रिशिखी च त्रिलोकपः ॥६॥
त्रिनेत्रतनयो डिम्भः, शान्तः शान्तजनप्रियः ।
बटुको बहुवेषश्च, खट्वाङ्गवरधारकः ॥७॥
भूताध्यक्षः पशुपतिर्भिक्षुकः परिचारकः ।
धूर्त्तो दिगम्बरः शौरिर्हरणिः पाण्डुलोचनः ॥८॥
प्रशान्तः शान्तिदः सिद्धः शङ्करप्रियबान्धवः ।
अष्टमूर्त्तिनिधीशश्च, ज्ञानचक्षुस्तपोमयः ॥९॥
अष्टाधारः षडाधारः, सर्पयुक्तः शिखी सखा ।
भूधरो भूधराधीशो, भूपतिर्भूधरात्मजः ॥१०॥
कङ्कालधारी मुण्डी च, नागयज्ञोपवीतकः ।
जृम्भणो मोहनः स्तम्भी, मारणः क्षोभणस्तथा ॥११॥
शुद्धो नीलाञ्जनप्रख्यो, दैत्यहा मुण्डभूषितः ।
बलिभुग् बलिभुङ् नाथो, बालो बालपराक्रम ॥१२॥
सर्वापतारणो दुर्गो, दुष्टभूतनिषेवितः ।
कामी कलानिधिकान्तः, कामिनीवशकृशद् वशी ॥१३॥
सर्वसिद्धिप्रदो वैद्यः प्रभुविष्णुरितीव हि ।
अष्टोत्तरशतं नाम्ना भैरवस्य महात्मनः ॥१४॥

गणेश वन्दना

गौरी शङ्कर बल्लभो गणपति लक्ष्मी सदा वृद्धिदा ॥
विघ्नं व्यूह विनायकेन पूर्णा लक्ष्मी श्रीया सौर्यदा ॥
इच्छा पूरण कामधेनु ललिता सन्तान वृद्धिप्रदा ॥
नित्यं मूषकवाहन् प्रिय हरो लम्बोदरं सुन्दरम् ॥

श्री रुद्राष्टकम्

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं ।
विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपम् ॥
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं ।
चिदाकाशमाकाशवाशं भजेऽहम् ॥
निरंकारमोंकारमूलं तुरीयं ।
गिराग्यान गोतीतमीशं गिरीशं ॥
करालं महाकाल कालं कृपालं ।
गुणागार संसारपारं नतोऽहम् ॥
तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं ।
मनोभूत कोटिप्रभा श्री शरीरं ॥
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनी चारु गङ्गा ।
लसद्भालबालेन्दु कण्ठेभुजङ्गा ॥
चलत्कुण्डलं भ्रू सुनेत्रं विशालं ।
प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालं ॥
मृगाधीश चर्माम्बरं मुण्डमालं ।
प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ॥
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं ।
अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशम् ॥
त्रयः शूलनिर्मूलनं शूलपाणिं ।
भजेऽहं भवानिपतिं भावगम्यम् ॥
कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी ।
सदा सज्जनानन्द दाता पुरारी ॥
चिदानन्दसन्दोह मोहापहारी ।
प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥

न यावद् उमानाथ पादारविन्दं ।
भजंतीह लोके परे वा नराणाम् ॥
न तावत्सुखं शांति संतापनाशं ।
प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम्
न जानामियोगं जपं नैव पूजा ।
नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यम्
जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं ।
प्रभो पाहि आपन्नमामीश शम्भो ॥
रुद्राष्टकमिंद प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये ।
ये पठन्ति नरा भक्तया तेषां शंभुः प्रसीदति ॥

॥ इति गोस्वामीतुलसीदासकृत श्रीरुद्राष्टकं सम्पूर्णम्॥

दारिद्रय-दहन शिवस्तोत्रम्

विश्वेश्वराय नरकार्णव तारणाय कर्णामृताय शशिशेखरधारणाय।
कर्पूरकान्तिधवलाय जटाधराय दारिद्रय दुःखदहनाय नमः शिवाय॥१॥
गौरीप्रियाय रजनीशकलाधराय कालान्तकाय भुजगाधिपकङ्कणाय।
गंगाधराय गजराजविमर्दनाय दारिद्रयदुःखदहनाय नमः शिवाय॥२॥
भक्तिप्रियाय भवरोगभयापहाय उग्राय दुर्गभवसागरतारणाय।
ज्योतिर्मयाय गुणनामसुनृत्यकाय दारिद्रयदुःखदहनाय नमः शिवाय॥३॥
चर्मम्बराय शवभस्मविलेपनाय भालेक्षणाय मणिकुण्डलमण्डिताय।
मञ्जीरपादयुगलाय जटाधराय दारिद्रयदुःखदहनाय नमः शिवाय॥४॥
पञ्चाननाय फणिराजविभूषणाय हेमांशुकाय भुवनत्रयमण्डिताय।
आनन्दभूमिवरदाय तमोमयाय दारिद्रयदुःखदहनाय नमः शिवाय॥५॥
भानुप्रियाय भवसागरतारणाय कालान्तकाय कमलासनपूजिताय।
नेत्रत्रयाय शुभलक्षण लक्षिताय दारिद्रयदुःखदहनाय नमः शिवाय॥६॥
रामप्रियाय रघुनाथवरप्रदाय नागप्रियाय नरकार्णवतारणाय।
पुण्येषु पुण्यभरिताय सुरार्चिताय दारिद्रयदुःखदहनायं नमः शिवाय॥७॥
मुक्तेश्वराय फलदाय गणेश्वराय गीतप्रियाय वृषभेश्वरवाहनाय।
मातङ्गचर्मवसनाय महेश्वराय दारिद्रयदुःखदहनाय नमः शिवाय॥८॥
वसिष्ठेन कृतं स्तोत्रं सर्वरोग निवारणम्।
सर्वसम्पत् करं शीघ्र पुत्रपौत्रादिवर्द्धनम्।
त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नित्यं स हि स्वर्गमवाप्नुयात्॥९॥

॥ इति श्रीवशिष्ठविरचितं दारिद्रयदहनशिवस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

शिवनामावल्यष्टकम्

हे चन्द्रचूड़ मदनान्तक शूलपाणे
स्थाणो गिरीश गिरिजेश महेश शम्भो।
भूतेश भीतभयसूदन सोमनाथं
संसार दु:ख-गहनाज्जगदीश रक्ष।।१।।

हे पार्वति-हृदय वल्लभ चन्द्रमौले
भूताधिप प्रमथनाथ गिरीशजाप।
हे वामदेव भवरुद्र पिनाकपाणे
संसार-दु:ख-गहनाज्जगदीश रक्ष।।२।।

हे नीलकंठ वृषभध्वज पञ्चवक्त्र
लोकेश शेषवलयं प्रमथेश शर्व।
हे धूर्जटे पशुपते गिरिजापते मां
संसार-दु:ख-गहनाज्जगदीश रक्ष।।३।।

हे विश्वनाथ शिवशंकर देवदेव
गङ्गाधर प्रमथनायक नन्दिकेश।
विश्वेश्वरान्धकरिपो हर लोकनाथ
संसार-दु:ख-गहनाज्जगदीश रक्ष।।४।।

वाराणसीपुरपते मर्णिकर्णिकेश
वीरेश दक्षमखकाल विभो गणेश।
सर्वज्ञ सर्वहृदयैकनिवास नाथ

संसार-दु:ख-गहनाज्जगदीश रक्ष।।५।।

श्रीमन् महेश्वर कृपामय हे दयालो
हे व्योमकेश शितिकण्ठ गणाधिनाथ।
भस्माङ्गराग नृकपाल-कलापमाल
संसार-दु:ख-गहनाज्जगदीश रक्ष।।६।।

कैलास-शैल-विनिवास वृषाकपे हे
मृत्युञ्जय त्रिनयन त्रिजगन्निवास।
नारायणप्रिय मदापह शक्तिनाथ
संसार-दु:ख-गहनाज्जगदीश रक्ष।।७।।

विश्वेश विश्वभव-नाशित-विश्वरूप
विश्वात्मक त्रिभुवनैक-गुणाभिवेश।
हे विश्वबन्धु करुणामय हे दीनबन्धो
संसार-दु:ख-गहनाज्जगदीश रक्ष।।८।।

गौरी विलासभुवनाय महेश्वराय
पञ्चाननाय शरणागतरक्षकाय।
शर्वाय सर्वजगतामधिपाय तस्मै
दारिद्रय-दु:ख-दहनाय नम: शिवा।।९।।

।। इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं शिवनामावल्यष्टकं सम्पूर्णम्।।

यज्ञ पात्राणि

प्रणीता
प्रोक्षणी
ध्रुवास्रुक्
पुष्करस्रुक्
जुहूस्रुक्
हवनी (स्रुक्)
स्फ्यः
इडापात्री
अरणिः
उत्तरारणिः
प्रमन्थः
नवग्रह चक्रम्
पूर्व
बुध
शुक्र
चन्द्र
गुरु
सूर्य
भौम
केतु
शनि
राहु
पश्चिम